

OM
THE RAMAYANA

OF
VALMIKI
BALAKANDA

(North-Western Recension)

CRITICALLY EDITED FOR THE FIRST TIME
FROM ORIGINAL MSS.

BY

Bhagavad Datta B.A.

WITH THE CO-OPERATION OF PROF. RAM LABHAYA M.A.
AND THE SHASTRIS OF THE DEPT.

First Edition }
500 Copies }

1931

{ *Price*
{ *Rs. 5-0-0*

ओम्
दयानन्द महाविद्यालय संस्कृत-ग्रन्थमाला

अनेक विद्वानों की सहायता से
भगवद्दत्त

संस्कृताध्यापक वा अध्यक्ष अनुसन्धान-विभाग
दयानन्द महाविद्यालय, लाहौर द्वारा
सम्पादित

ग्रन्थाङ्क १२ ।

* ओम् *

वाल्मीकीय-रामायणम्

बाल-काण्डम्

(पश्चिमोत्तरशास्त्रीयम्)

पं० रामलभाया एम. ए. तथा अनुसन्धान-विभाग के
शास्त्रियों की सहायता से

भगवद्दत्त बी. ए.

अध्यक्ष अनुसन्धान विभाग, दयानन्द कालेज, लाहौर
द्वारा
सम्पादित

आवर्ष्य संवत् १९६०=६३०३

विक्रम सं० १९८८

सन् १९३१ ई०

दयानन्दाब्द १०७

प्रथम संस्करण ५०० प्रति

मूल्य ५) रु०



Printed by Pt. Mahavir Prasad
MANAGER VIDYA PRAKASH PRESS, CHANGAR ROAD, LAHORE
And Published By
The Research Department, D. A. V. College, Lahore.



PREFACE.

The last fasciculus of the Ayodhya Kanda of Valmiki Ramayana edited by Pt. Ram Labhaya, M.A. was published towards the end of the year, 1927. But the printing of the further Kandas was altogether abandoned for want of money and also because Pt. Ram Labhaya joined the Khalsa College, Amritsar as Professor of Sanskrit. In the middle of 1928 I sought an interview with Sir Geoffrey Fitz Hervey de Montmorency, the present Governor and the then Vice Chancellor of the Punjab University, and requested him to help our Department in completing the publication of the remaining kandas of Valmiki Ramayana. He showed much interest in this work and promised some help, with the result that our Dept. received a grant of Rs. 2000/- soon after this. Manohar Lal, Esq., M.A., the then Minister of Education, the Director of Education and A. C. Woolner, Esq., M.A., the Dean of the Punjab University, also came to our rescue with the result that an annual grant of Rs. 2000/- was extended for the subsequent period of five years. But for their timely help this Kanda would never have seen the light of day ; nor would it have been possible for us to assure the public that the remaining Kandas will also be published in a reasonably short time. It is, therefore, my pleasant duty to render my most sincere thanks to those who made the publication of this work possible.

BHAGAVAD DATTA

ABBREVIATIONS.

N=Nil=(नास्ति)

पू=पूर्वार्ध=(1st. half of a verse)

उ=उत्तरार्ध=(2nd. half of a verse.)

व=वंगशास्त्रीयं वाल्मीकीय-रामायणम् ।

(Gorresio's Edition).

दा=दक्षिणात्यशास्त्रीयं वाल्मीकीय-रामायणम् ।

(Gujrati Press Edition Bombay, 1913)



* ओम् *

भूमिका

कोशविवरण

१. कै, संख्या १९६९। यह कोश कैथल से प्राप्त किया गया था। इसीका अयोध्याकाण्ड रामायण के अयोध्याकाण्ड के सम्पादन में पं० रामलभाया वर्त चुके हैं। इसका आकार लम्बाई १३ इंच और चौड़ाई ८ इंच है। इस के ५४ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रायः १६ पंक्तियां हैं। इसकी लिपि साधारणतया प्राचीन नागरी लिपि से मेल खाती है, परन्तु बाहुल्येन आजकल की प्रचलित लिपि से मिलती है हमारे अनुमानानुसार यह कोश लगभग १२५ वर्ष प्राचीन प्रतीत होता है। इस के मौलिक पाठ प्रायः शुद्ध हैं। कोश के जीर्ण होने के कारण कई जीर्ण स्थलों की पूर्ति किसी शोधक ने किसी दूसरी पुस्तक के आधार पर की है, परन्तु हम यह नहीं कह सकते कि संशोधक ने इसे इसी शाखा के शुद्ध कोशानुसार शोधा है। क्योंकि पूर्ण पाठ कई स्थानों पर इस शाखा से न मिल कर अन्य शाखा के पाठों से मिलते हैं और कई स्थलों पर अशुद्ध ही हैं। वे इसके साथी रा-पुस्तक से प्रायः भिन्न हैं। पाठकने न केवल पाठों को ही पूरा किया है अपितु कई स्थलों पर अन्य शाखा के पाठ भी प्रान्तभाग पर लिख दिये हैं। उन में से बहुत से पाठ तो हमारे अन्य एक दो पुस्तकोंमें हैं, परन्तु कई पाठ अन्य शाखाओं के हैं। देखिये पृ० १२२ टिप्पण ५। यह सम्पूर्ण पाठ जो बङ्गशाखा में मिलता है पूरा नकल किया हुआ है। और भी देखिए पृ० १२४ नो० ३ और ११। पृ. १३३ नो ६। पृ० १५२ नो १०। इत्यादि।

१ देखिये पृ० १२६ नो १-गवमूले। पृ० २०४ नो० ६-चारिकुम्बनम्।
पृ० १२५ नो० १-अष्टात्वाजच०, नो० २-पुवैले, नो ११-बबूचे। पृ० ८४ नो०
१३-भद्रमदसुगान्धवैः। पृ० ६५ नो २-स्वकी।

इतना होने पर भी इस पुस्तक के मौलिक पाठ प्रायः शुद्ध हैं। इसी कारण हमने इसे अपने सम्पादनकार्य का आधार पुस्तक बनाया है।

कै पुस्तक के साथ रा, ब पुस्तकें अन्त तक मिलती गई हैं। इन्हीं पुस्तकों का पाठ प्राचीनता के भाव से हृदयप्राही है। यद्यपि रा, ब में भी दो चार स्थानों पर कै पुस्तक से वैषम्य है, परन्तु इस प्रकार का नहीं जो इस से पार्थक्य को द्योतित करे। कै पुस्तक के प्रान्तभाग पर कितने ही ऐसे पाठ भी उद्धृत हैं जो हमारे प्र, प-पुस्तकों में हैं। देखो पृ० ३१, नो० १५, पृ० ५० नो० ६, इत्यादि। परन्तु प्र प-पुस्तकें हमारी शाखा से भिन्न प्रतीत हुई हैं। इसी कारण हमने इन्हें १३वें सर्ग से आगे छोड़ दिया है। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि कै कोश के प्रान्तस्थ पाठ प्रायः अन्य-शाखास्थ हैं। हमने उन पाठों को टिप्पणीमें रख दिया है। इसके बालकाण्ड में ७७ सर्ग हैं। इसका आरम्भ निम्नलिखित मङ्गलश्लोकों से होता है --

ओं नमो विघ्नहर्त्रे श्रीगणेशाय नमः श्री गुरवे नमः

ओं नमः सरस्वत्यै ओं नमो भगवते वासुदेवाय नमः

ओं जयति रघुवंशतिलकः कौसल्याहृदयनन्दनो रामः ।

दशवदननिघनकारी दाशरथिः पुण्डरीकः ॥१॥

नमस्तस्मै मुनीशाय प्रयताय तपस्विने ।

सर्वज्ञाननिवासाय वाल्मीकिमुनये नमः ॥२॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।

आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलाम् ॥३॥

वाल्मीकेर्मुनिर्भृगस्य कवितावनचारिणः ।

शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥४॥

यः पिबन् सततं लोके रामायणकथामृतम् ।

अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्रचेतःसमविक्रमम् ॥५॥

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् ।

रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥६॥

अजनीनन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् ।

कपीशमक्षहर्तारं वन्दे लोकामयंकरम् ॥७॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।

पकैकमक्षरं प्रोक्तं महापातकनाशनम् ॥८॥

जितं भगवता तेन हरिणा लोकधारिणा ।

अजेन विष्णुरूपेण निर्गुणेन गुणात्मना ॥६॥

२. रा, सं० २९७३ । यह पुस्तक नासिक पञ्चवटी के राममन्दिर के पाससे प्राप्त हुई थी । इसका आकार १३×५ इंच है । इस के प्रत्येक पृष्ठ पर प्रायः १० पंक्तियां हैं । पाठ अतिशुद्ध है ।

इसका आरम्भ निम्नलिखित प्रकार से है—

ओं नमो ? श्रीगणेशाय नमः ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्.

देवीं सरस्वतीं व्यासे ततो जयमुदीरयेत् ।

जयति रघुवंशतिलकः कौशल्याहृदयनन्दनो रामः ।

दशवदननिघनकारी दाशरथिः पुंडरीकाक्षः ।

नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने ॥

सर्वज्ञानाधिवासाय वाल्मीकिमुनये नमः ॥

कूजंतं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।

आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकैलिकं ॥

वाल्मीकेर्मुनिर्सिंहस्य कवितावनचारिणः ।

शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिं ॥

यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरं ।

अतृप्तस्तं मुनिं वंदे प्राचेतसमकल्मषं ॥

गोःपदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसं ।

रामायणमहामालारत्नं वंदेनिजात्मजं ॥

अंजनीनंदनं वीरं जानकीशोकनाशनं ॥

कपीशरक्षहंतारं वंदे लंकाभयंकरं ।

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरं ॥

एकैकमक्षरं प्रोक्तं महापातकनाशनं ॥

यह आदि से अन्तपर्यन्त कै पुस्तक के साथ मिलती है । पाठभेद कम हैं । कहीं कहीं लेखक के अशुद्ध लिखने के कारण पाठभेद हुए हैं । उन पाठभेदों में से शुद्ध पाठ ही टिप्पण में दिये गये हैं ।

कहीं कहीं किसी २ श्लोक का एक पाद और दूसरे का अन्यपाद मिलाकर श्लोक पूरा किया गया है । देखो पृ० १८ नोट २। परन्तु कई स्थलों पर एक २

दो दो श्लोक 'कै' की अपेक्षा न्यूनाधिक हो गए हैं। उन को यथोचित स्थान पर रखा गया है। यह पुस्तक लगभग २०० वर्ष प्राचीन है। प्रतीत होता है कि इस पुस्तक का नकल करने वाला वैष्णव होगा। उसने कई स्थानों पर स्वमतानुसारी पाठ बनाए हैं, जैसे पृ० ७ नो ४ पर श्रीवैश्रवणशङ्करैः के स्थान पर श्रीमुकुन्दहरीश्वरैः, इत्यादि। अन्यत्र भी देखें। अयोध्याकाण्ड छापते हुए पं० रामलभायाने हस्तलेखों के विभाग में लिखा था कि रा पुस्तक विलक्षण गौणविभाग दिखाती है अर्थात् मौलिक पाठ जो हमारी शाखा से मिलते हैं उन से भिन्न है, परन्तु बालकाण्ड में यह पुस्तक सर्वप्रकार से हमारी ही शाखा के मौलिक पाठ देती हुई हमारी आधार पुस्तक कै के साथ बिल्कुल मिलती है। इसके बालकाण्ड में ७८ सर्ग हैं। सर्गविभाग में कै से कुछ अन्तर अवश्य है।

३. ब, स० २९६२। यह पुस्तक बहावलपुर से प्राप्त किया गया था। इसका आकार १२ इंच लम्बा ७ इंच चौड़ा है। इस का आरम्भ निम्नलिखित प्रकार से है—

ओं श्रीरामचन्द्राय नमः।

ओं जयति रघुवंशतिलकः कौसल्याहृदयनन्दनो रामः।

दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ॥

नमस्तस्मै मुनीशाय प्रयताय तपस्विने।

सर्वज्ञाननिवासाय वाल्मीकिमुनये नमः ॥

ओं कूजन्तं राम रामंति मधुरं मधुराक्षरं।

आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलं ॥

वाल्मीकेर्मुनिभृङ्गस्य कवितावनचारिणः।

शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिं ॥

यः पिबन् सततं लोके रामायणकथामृतं।

अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचीतसमविक्रमम् ॥

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसं।

रामायणमहामालारबं वन्देनिष्ठात्मजं ॥

यह पुस्तक कै रा के साथ अन्त तक मिलती है। सर्ग १२ तक यह पुस्तक ज त ल प्र भ के साथ भी कई स्थानों पर मिलती रही है। परन्तु आगे चलकर इसने उनका साथ छोड़ दिया है और कै रा के पाठ से

अन्त तक अधिकांश में मिलती गई है। यदि कै रा से भेद भी किया है तो वह भेद प्रायः स्वतन्त्र है। देखो पृष्ठ ४७१ नोट ७। यह पुस्तक प्रायः स और म का भेद बहुत कम दिखाती है।

४. ल, सं० ४८४८। यह पुस्तक लाहौर से प्राप्त की गई थी। इसका आकार ११½ इंच लम्बा और ७½ चौड़ा है। यह प्रायः १०० वर्ष प्राचीन है। इस का आरम्भ निम्नलिखित प्रकार से है—

ओं नमो नारायणाय ।

ओं नमः कमलदलविपुलनयनाभिरामाय श्रीरामचन्द्राय नमः ॥

ओं जयति रघुवंशतिलकः कौसल्याहृदयनन्दनो रामः

दशवदननिघनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ॥

नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने ।

सर्वज्ञाननिवासाय वाल्मीकिमुनये नमः ॥

कूजन्तं राम रामंति मधुरं मधुराक्षरम् ।

आरुह्य कवितां शाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥

वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः ।

शृण्वन् रामकथानार्दं कौ नु याति परां गतिं ॥

यः पिबन् सततं लोके रामायणकथामृतम् ।

अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्रचेतःसमविक्रमम् ॥

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् ।

रामायणमहामालारत्नं वन्देनिजात्मजम् ॥

इसका पाठ १२ सर्ग पर्यन्त तो कै रा से मिलता गया है, परन्तु १३ वें सर्ग से ज ल भ इन पुस्तकों का समूह पृथक् बन गया है, और पाठ भी भिन्न ही हो गया है। देखो पृष्ठ १४९ से लेकर अन्त तक। आगे चलकर, पाठ में अधिकाधिक भिन्नता दृष्टिगत होती है। यह पुस्तक प्रायः स और म का भेद स्पष्टतया नहीं दिखाती। इसी कारण से कई पाठभेद भी पृथक् दीखने लगते हैं। कई स्थानों पर पाठभेद अथवा अधिक पाठ देने में यह पुस्तक त प्र प ट का अनुकरण करती है।

५. ज, सं० १७७२। यह पुस्तक अमृतसर से प्राप्त की गई थी। इसका

आकार १३ इच्छ लम्बा ७ इच्छ चौड़ा है । यह पुस्तक लगभग १०० वर्ष प्राचीन है । यह आरम्भ में मङ्गलरलोक इस प्रकार देती है—

श्री स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीरामचन्द्राय नमः ॥ श्रीगुरवे नमः ॥

जयति रघुवंशतिष्ठकः कौसल्याहृदयनन्दनो रामः ।

दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ॥ १ ॥

नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने ।

सर्वज्ञानाधिवासाय वाल्मीकिमुनये नमः ॥ २ ॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरं ।

आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलं ॥ ३ ॥

वाल्मीकेः मुनिर्सिंहस्य कवितावनचारिणः ।

शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥ ४ ॥

यः पिबन् सततं लोके रामायणकथामृतं ।

अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्मषम् ॥ ५ ॥

गोपदीकृतवाराणं मशुक्रीकृतराक्षसं ।

रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजं ॥ ६ ॥

अंजनीनन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनं ।

कपीशमक्षहतरं वन्दे लोकामयंकरं ॥ ७ ॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरं ।

एकैवमक्षरं प्रोक्तं महापातकनाशनं ॥ ८ ॥

जितं मगवता तेन हरिणा लोकचारिणा ।

अजेन विश्वरूपेण निर्गुणेन गुणात्मना ॥ ९ ॥

यह पुस्तक ८१ पत्र पर समाप्त हुई है । इस का पाठ प्रायः शुद्ध है । आरम्भ से लेकर १३ वें सर्ग के आरम्भ तक यह अन्य पुस्तकों के साथ मिलती गई है । १३वें सर्ग तक इसके पाठभेद अधिकांश रा के पाठभेदों से मिलते हैं । १३ सर्ग से इसका पाठ प्रायः भिन्न होकर ज ल भ से मिला है और ज ल भ इन तीनों का एक समूह बन गया है । अन्य पुस्तकों की तरह यह न तो अधिक पाठ देती है और न ही पाठ को छोड़ती है । किन्तु पूर्णरूपसे शुद्ध पाठ देती है । म और स का भेद नहीं देती । इस के बालकाण्ड में ६४ सर्ग हैं ।

६. अ, सं० १९५९। यह पुस्तक भरतपुर से प्राप्त की गई थी। इसका आकार १३ इंच लम्बा ६ इंच चौड़ा है। आरम्भ में मङ्गलाचरण निम्न प्रकार से है—

श्रीगणेशाय नमः ।

ओं नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने,

संज्ञानाधिवासाय बाल्मीकिमुनये नमः ॥

श्रीजानकीवल्लभाय नमः ॥ श्रीरघुनाथाय नमः ॥

जितं भगवता तेन हरिणा लोकधारिणा ।

अजेन विश्वरूपेण निर्गुणेन गुणात्मना ॥१॥

जयीत रघुवंशतिलकः कौशल्याहृदयनन्दनो रामः

दशवदननिघनकारी दाथरथिः पुण्डरीकान्धः ॥२॥

यह पुस्तक २५० वर्ष प्राचीन है। इस में कई स्थानों पर पाठ विशेष भी हैं। जैसे पृ. ६ नोट १०। पृ. १७ नोट ६। पृ. ३१ नोट १५। ये पाठ प्रायः अन्य शाखाओं के हैं। जहां तक हमने प्र प पुस्तकों को बर्ता है वहां तक अधिक पाठों में यह उनका साथ देती है। भेद यह है कि भ अधिक पाठ का थोड़ा हिस्सा देती है और प्र प पूर्ण। इस से सिद्ध है कि प्र प ग्रन्थ हमारी शाखा के नहीं हैं। यह कई स्थानों पर कम भी पाठ देती है। जैसे पृ. २ नो*। पृ. १६ नोट ५,८। पृ. ३६ नोट १६ इत्यादि। इसके पाठभेद प्रायः दूसरी ही शाखाओं से मिलते हैं, परन्तु श्लोक नहीं। यह भी १३ वें सर्ग से ज ल के समूह से मिलता गया है और अन्त तक पृथक् पाठ भेद देता गया है। इसके बालकाण्ड में ५७ सर्ग हैं।

७. प्र, सं० २९६६। यह पुस्तक प्रयागसे प्राप्त हुआ था। इसकी लम्बाई ११ इंच और चौड़ाई ६३ है। इसका लेखन काल सं० १८६९ है। यह पुस्तक कुछ दूर तक तो हमारे ग्रन्थों से मिली है, परन्तु आगे बिल्कुल भिन्न हो गई है। इसको हमने ७ वें सर्ग तक अपने उपयोग में लिया है। इसका आरम्भ निम्न प्रकार से है—

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं ।

काकुत्स्थं करुणाकरं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकं ।

रोजन्द्रे सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं ।

वन्दे लोकभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिं ॥

जयति रघुवंशतिलकः कौशल्यानन्दिवर्द्धनो रामः ।

दशवदननिघनकारी दामराधिः पुण्डरीकाक्षः ॥

राम रामेति रामेति कूजन्तं मधुराक्षरं ।

भारुढकविताशास्त्रं वन्दे वाल्मीकिकेकिलं ।

नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने ।

सर्वज्ञानाधिवासाय तस्मै वाल्मीकये नमः ॥

इसके पाठ न तो पश्चिमोत्तर, न दक्षिणात्य और न वङ्ग शाखा से यथाक्रम मिलते हैं । परन्तु जहाँ अधिक श्लोक हैं वे प्रायः वङ्ग शाखा के हैं । परन्तु वङ्ग शाखा और सिरामपुर में छपी हुई शाखा (जो चौथे प्रकार की शाखा का पाठ देती है) से इसमें अधिक भेद नहीं । अधिक विचार और पूरी तुलना करने से ज्ञात हुआ है कि हमारी प्र. पुस्तक भी इसी शाखा की है । यह शाखा माधारणतया हमारी शाखा से मिलती है । इसी से हमने इसे अपने सम्पादन के सहायक पुस्तकों में रखा था, परन्तु आगे विशेषभेद देखने पर हमने इसे छोड़ दिया । यह पुस्तक पश्चिमोत्तर शाखा के सूत्रभूत को विशेष विस्तारसे वर्णन करती है और एक श्लोक के किसी स्थान पर कई कई श्लोक बना देती है । निरर्थक के लिए २७ वें सर्ग में ९ श्लोक के द्वितीय पाद से ११ श्लोक के द्वितीयपाद तक निम्न श्लोकों की तुलना करें—

स त्वं त्रैलोक्यराज्यं नो हतं भूयो जगत्पते ।

दातुमर्हसि निर्जित्य विक्रमै मूर्धिरिम्बिभिः ॥

अयं सिद्धाश्रमो नाम सिद्धकर्मा भविष्यति ।

तस्मिन् कर्मणि संसिद्धे तव सत्यपराक्रम ॥

ये २ श्लोक हैं, जिन में अपने हरे हुए राज्य को पुनः लौटाने के लिये देवताओं ने वामन से प्रार्थना की है । इतने ही पाठ के स्थान में प पुस्तक पूरा ऐतिहास्य जोड़ कर अच्छी तरह खोलती है—

स त्वं सुरहितार्थाय मायायोगसुपाश्रितः ।

वामनत्वं गतो विष्णो कुरु कल्याणमुत्तमम् ॥

पतस्मिन्नन्तरं राम कश्यपोऽग्निसमप्रभः ।

अदित्या सहितो राम दीप्यमान इवौजसा ॥

इन उपर्युक्त दोनों पाठों की परस्पर तुलना करने से प्रतीत होता है कि प-पुस्तकस्थ पाठ पश्चिमोत्तर शाखा के पाठ से विस्तृत तथा मिश्र हैं। उस के सारे श्लोकों में से केवल—

वामनत्वं गतो विष्णो कुरु कल्याणमुत्तमम् ।

यह आधा श्लोक ही ऐसा है जो पश्चिमोत्तर शाखा के श्लोकार्ध—

स त्वं वामनरूपेण कुरु कल्याणमुत्तमम् ।

से मिलता है। प-पुस्तक का शेष पाठ सर्वथा स्वतन्त्र है और वह पाठ सिरामपुर की रामायण के पाठ से मिलता है।

८. प, संख्या २९६७। यह पुस्तक पञ्चकटो से प्राप्त की थी। यह लगभग १५० वर्ष प्राचीन है। यह आकार में १४ इञ्च लम्बी और ६ इञ्च चौड़ी है। इसका आरम्भ निम्न लिखित प्रकार से है—

श्रीगणेशाय नमः । श्रीरामचन्द्राय नमः ॥

जयति रघुवंशतिलकः कौशल्याहृदयनन्दनन्दनो रामः ।

दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ॥

जितं भगवता तेन हरिणा विश्वधारिणा ।

अजेन विश्वरूपेण निर्गुने १ गुणात्मना ॥

नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने ।

सर्वज्ञानाधिवासाय वाल्मीकिमुनये नमः ॥

कूजंतं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरं ।

आरुह्य कविताशलां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥

वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः ।

शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥

यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरम् ।

अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्मषं ॥

गोष्पदीकृतवारीशं मशक्रीकृतराक्षसं ।

रामायणमहामालारत्नं वन्दे निलात्मजम् ॥

अंजनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनं ।

कपीशमक्षहंतारं वन्दे लंकामयंकरं ॥

चरित्रं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरं ।

पदैकमक्षरं प्रोक्तं महापातकनाशनं ॥

मङ्गलाचरण का यह क्रम हमारे किसी अन्य कोश से नहीं मिलता । दक्षिण, वङ्ग और सिरामपुर में मुद्रित शाखा से भी यह नहीं मिलता । कई स्थलों पर इस के अधिक पाठ वङ्ग शाखा की रामायण में मिलते हैं । प—पुस्तक के वराम सर्ग की समाप्ति और एकादश सर्ग का आरम्भ वङ्ग और दक्षिण शाखा के समान ही है, परन्तु पाठभेद और श्लोक-संख्या में प—पुस्तक उन का साथ न दे कर पश्चिमोत्तर शाखा का अनुसरण करती है । इस से यह सिद्ध होता है कि सम्भवतः इस प्रकार के पाठ और क्रम देने वाली कोई अन्य ही पाँचवीं शाखा हो ।

१० सर्ग पर्यन्त हम ने इस कोश से काम लिया है, परन्तु आगे अधिक भेद होने से छोड़ दिया है ।

यह पुस्तक अनेक स्थलों पर ऐसे पाठ देती है, जो कहीं रा—पुस्तक से मिलते हैं और कहीं ज भ से । परन्तु रा ज भ—पुस्तकों में जहां जहां अधिक पाठ हैं वे कई स्थानों पर तो इस से मिलते हैं और कई स्थानों पर सर्वथा स्वतन्त्र हैं । देखो पृष्ठ २।११॥ ५।८॥ ३।१२॥ इत्यादि ॥

९. ट, संख्या २९७० । इसकी लम्बाई १२ इंच और चौड़ाई ६ इंच है । यह कोश वि० सं० १८४६ का लिखा हुआ है । इस का मङ्गलाचरण निम्न लिखित प्रकार से है—

श्रीगणेशाय नमः । श्रीशारदायै नमः ॐ नमः परमात्मने ।

ॐ नमः कमलदलविपुलनयनाभिरामाय श्रीरामचन्द्राय ॥

ॐ जगति रघुवंशतिलकः कौसल्याहृदयनन्दनो रामः ॥

दशवदननिघनकारी दाशराथिः पुण्डरीकान्तः १

नमस्तस्मै मुनीशाय श्रियुताय तपस्विने

सर्वज्ञाननिवासाय बाल्मीकिमुनये नमः २

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरं

आरुह्य कविताशाखां बन्दे बाल्मीकिकोकिलं ३

बाल्मीकेर्मुनिभृंगस्य कवितावनचारिणः

शृण्वन्रामकथानार्दं को न याति परां गतिं ४

यः पिबन् सततं लोके रामायणकथामृतं

अतृप्तस्तं मुनिं बन्दे प्राचेतसमकल्मषं ५

गोप्यदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसं

रामायणमहामालारत्नं बंदेनितारमजं ६
 अञ्जनीनंदनं वीरं जानकीशोकनाशनं
 कपीशमदहर्तारं वन्दे लोकामर्यकरम् ७
 चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरं
 एकैकमच्चरं पुंसां महापातकनाशनं ८
 जितं भगवता तेन हरिणा लोकघारिणा
 अजेन विष्णुरूपेण निर्गुणेन गुणात्मना ९

शति ।

इसके पाठभेद साधारणतया कई स्थलोंपर वङ्ग शाखा से मिलते हैं । जहाँ तक देखा गया है, सर्गसमाप्ति भी वङ्ग शाखा के समान ही है । परन्तु अनेक स्थल ऐसे हैं जिन के साथ तुलना से प्रतीत होता है कि यह कोश पाठ और क्रम में वङ्ग शाखा से प्रर्याप्त भिन्न है । यथा—वङ्ग शाखा में अनुक्रमणी के दो सर्ग हैं । एक तृतीय और दूसरा चतुर्थ^१ तृतीय सर्ग विस्तृत है । उसकी श्लोकसंख्या १४५ है । चतुर्थ कुछ संक्षिप्त है । इस की श्लोक संख्या ७१ है । दक्षिणात्य और सिरामपुर में मुद्रित शाखा में भी अनुक्रमणी दो ही सर्गों में है । परन्तु ट—पुस्तक में अनुक्रमणी का केवल एक चतुर्थ सर्ग ही है । इस के तृतीय सर्ग में केवल थोड़े से श्लोक रामायण की प्रशंसामात्र के हैं । ये सब शाखाओं में मिलते हैं ।^२ ट—पुस्तक के चतुर्थ सर्ग के श्लोक वङ्ग और दक्षिण शाखीय रामायण के विस्तृत तृतीय सर्ग में यत्र तत्र दृष्टिगत होते हैं । सम्भव हैं कि प्राचीन काल में अनुक्रमणी का यही एक सर्ग हो । क्योंकि इसी सर्ग में रामायण का काण्डक्रम, कथाक्रम और प्रत्येक काण्ड की सर्गसंख्या तथा श्लोकसंख्या आदि समस्त बातें आ जाती हैं ।

ट—पुस्तक की श्लोक संख्या और क्रमभेद की तुलना के लिए देखिए वङ्ग शाखा सर्ग ३०—

१ पश्चिमोत्तर शाखा का चतुर्थ सर्ग ट—पुस्तक और वङ्ग तथा दक्षिण शाखा का तृतीय है ।

२ इन श्लोकों को हमारे इस बालकाण्ड के तृतीय सर्ग पृ० ३७ से लेकर पृ० ५५ तक की ट—टिप्पण को चतुर्थ सर्ग के मूल श्लोक ११ से ३२ तक भिन्न कर देंगे ॥

अथ तां रजनीं व्युष्टां विश्वामित्रो महामुनिः ।
प्रहसन् राममामाष्य मधुरं वाक्यमब्रवीत् ॥१॥
तुष्टोऽस्मि राम भद्रं ते कर्मणा त्वत्कृतेन वै ।
श्रीतिदायं च दास्यामि सर्वाण्यस्त्रायशेषतः ॥२॥

ये श्लोक बङ्गशाखा की रामायण के सर्ग ३० के आरम्भ के हैं । ट—
के भी ३० वें सर्ग का आरम्भ यहीं से है, परन्तु वहां इन दो के स्थान
पर केवल—

प्रमातायां तु सर्वयां विश्वामित्रो महामुनिः ।
श्रीतिदायं तु दास्यामि सर्वाण्यस्त्रायशेषतः ॥१॥

यह एक ही श्लोक है । इससे यह बात स्पष्ट होती है कि सर्ग
समाप्ति समान होने पर भी श्लोकक्रम और पाठ में भेद है ।

इसके बालकाण्ड को समाप्ति भी सब शाखाओं से भिन्न है ।

ट—कोश के पाठभेद प्रायः शुद्ध और सार्थक हैं । जो पाठ अशुद्ध
हैं वे केवल लेखक-प्रमाद से हैं ।

१० त, संख्या १९७२ । यह कोश लैहौर से रचित किया गया था ।
लम्बाई में यह १३३ इंच और चौड़ाई में ८ इंच है । इसका आरम्भ
निम्नलिखित प्रकार से है—

ओं स्वस्ति प्रजाभ्यः श्रीगणेशाय नमः ॐ श्रीरामचन्द्राय
नमो नमः ॐ नमः सरस्वत्यै ।
ओं जयति रघुवंशतिलकः कौसल्याहृदयनन्दनो रामः
दशवदननिघनकारी दाशराथिः पुण्डरीकाक्षः
नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने
सर्वज्ञाननिवासाय वाल्मीकिमुनये नमः
कूर्जंतं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरं
आरुह्य कविताशाखां बन्दे वाल्मीकिकोकिलम्
वाल्मीकेर्मुनिर्मृगस्य कवितावनचारिण्यः
श्रुयन् रामकथानादं को नु ? [न] याति परां गतिं
यः पिबन् सततं लोके रामायणकथामृतम्
अट्टसस्तं मुनिं बन्दे प्रचीतःसमविक्रमम्
गोष्पदीकृतवारीष (शं) मशकीकृतराक्षसम्
रामायणमहाभाष्यारत्नं बन्देनिष्ठात्मजम्

यह पुस्तक लगभग १०० वर्ष प्राचीन है। इसका पाठ प्रायः शुद्ध है और पाठभेद प्रायः ज - कोश से मिलते हैं। अष्टम सर्ग पर्यन्त तो यह हमारे आधार पुस्तकों से मिलता गया है, इससे आगे इसका क्रम सर्वथा भिन्न हो गया है। कहीं कहीं इसमें सर्ग अत्यन्त छोटे हैं। एक स्थान पर हमारी परिचमोत्तर शाखा में जो श्लोक केवल एक सर्ग में आ गए हैं वे ही श्लोक त—पुस्तक में तीन चार सर्गों में विभक्त कर दिए हैं। कहीं कहीं दो दो तीन तीन सर्गों के श्लोक एक ही सर्ग में रख दिए हैं। परन्तु यह क्रम सर्वत्र नहीं।

इसके बालकाण्ड में ७८ सर्ग हैं।

इन दश कोशों में से हमने छः कोशों को आरम्भ से अन्त तक बतौ है। इन छः के भी दो समूह हैं। कै, रा, व, का एक समूह है और ज, ल, भ का दूसरा। इन दोनों में हमारा आधार पहले समूह पर हो रहा है।

११

बालकाण्ड का सम्पादन

अयोध्या काण्ड का सम्पादन पं० रामलभाया एम. ए. ने किया था। उसके छपने के बीच ही में वे अमृतसर खालसा कालेज के प्रोफेसर हो गए थे। कै, ल और व इन तीन कोशों से उन्होंने बालकाण्ड की प्रेस कापी भी तय्यार की थी। उनके जाने के पश्चात् मैं ने बहुत सी नई सामग्री हस्तगत की। उसकी सहायता से उनकी तय्यार की हुई प्रेस कापी का दोबारा शोधन किया गया है। अनेक स्थानों पर उनके पाठ शोधे गए हैं। नई सामग्री के उपयोग से यही नहीं, वरन् उनकी सारी कापी दोबारा लिखी गई है। इस शोधनमें हमारे विभाग के तीन शास्त्रियों ने मेरी बड़ी सहायता की है। उनके नाम पं० प्रेमनिधि शास्त्री, पं० विजयानन्द शास्त्री और पं० पीताम्बर शास्त्री हैं। कोशों के मिलाने में ये तीनों ही शास्त्री समय समय पर काम करते रहे हैं। कई बार इन्होंने मिल कर भी काम किया है और पहले आठ सर्गों में तो तीनों मेरे साथ काम करते रहे हैं। परन्तु सम्पादन का सारा भार मेरे सिर पर रहा है। कोशों के समूहों का बनाना, पाठों का अन्तिम निश्चय करना, कहीं तक कौन सा कोश काम में लाया जाए, इस सबके लिए मैं ही उत्तरदायी हूँ। अन्तिम प्रूफ भी मैं ने अपने देखे बिना कभी छपने नहीं दिया। परन्तु बालकाण्ड का छपना असम्भव हो जाता यदि ये तीनों शास्त्री प्रारम्भिक

काम न करते । कोशों के विवरण की सामग्री पं० प्रेमनिधि ने तय्यार की है और अन्त में छपी हुई ग्यारह सूचियाँ भी उन्होंने ही बनाई हैं ।

रामायण के मुद्रण में गवर्नमेण्ट की सहायता

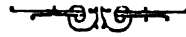
पं० रामलभाया के चले जाने के पश्चात् मैं ने रामायण का मुद्रण एक प्रकार से बन्द ही कर दिया था । हमारी कालेज कमेटी धनाभाव से इस के मुद्रण का भार अपने ऊपर नहीं लेती थी । सन् १९२८ के मध्य में मैं श्रीयुत सर जाफरो फिट्ज हर्वे डी मॉण्टमोरेन्सी से मिला । वे उन दिनों पञ्जाब यूनिवर्सिटी के वाईस चान्सलर थे । उन्होंने मेरे काम में बड़ी सहायभूति प्रकाशित की । उनकी प्रेरणा से उन दिनों के प्रान्तीय शिक्षाविभाग के मन्त्री श्रीयुत मनोहर लाल एम. ए. ने पञ्जाब सरकार से २०००) रु० की सहायता की । इस विषय में शिक्षा-विभाग के डायरेक्टर महोदय और पञ्जाब यूनिवर्सिटी के डीन श्री वूलनर महोदय ने भी परामर्श दिया । अगले वर्ष वह सहायता भावी पाँच वर्षों के लिए और बढ़ा दी गई । यदि यह समयोचित सहायता न मिलती तो बालकाण्ड प्रकाशित न हो सकता । अब तो अगले काण्डों के भी छपने की पूरी आशा है । इस भारी सहायता के लिए मैं पञ्जाब के गवर्नर महोदय का, शिक्षाविभाग के भूत-पूर्व मन्त्री श्रीयुत मनोहर लाल एम. ए. का, डायरेक्टर महोदय का और श्री ए. सी. वूलनर महोदय का अत्यन्त आभारी हूँ ।

भगवदत्त





वाल्मीकीय रामायणम्
बालकाण्डम्



वाल्मीकीय-रामायणम्

* बालकाण्डम् *

[वं=१]

[प्रथमः सर्गः]

[दा=१]

तपः स्वाध्यायनिरतस्^१ तेजस्वी^२ वाग्विदां वरः^३ ।

१.] नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिसत्तमः^४ ॥ १ ॥ [१]

को हस्मिन्^५ प्रथितो लोके सदगुणैर्गुणवत्तरः ।

२.] धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्^६ मुहृद्व्रतः ॥ २ ॥ [२]

उक्षाराचारसंयुक्तः^७ सर्वभूतहिते रतः ।

३.] वीर्यवान्^८श्च वदान्यश्च सदा^९ च^{१०} प्रियदर्शनः ॥ १ ॥ [३]

जितक्रोधो महान्कश्च^{११} धृतिमान्^{१२} कोऽनसूयकः^{१३} ।

४.] संजातरोषात् कस्माच्च देवता अपि बिभ्यति ॥ ४ ॥ [४]

१. रा त ल—०निरतं ।

२. रा प्र प भ —तपस्वी वा० । त ल—सर्वशास्त्रविशारदम् ।

३. ट—०सत्तमं । रा—०गिपुंगवः । प—०गिपुंगव ।

४. प्र—न्वस्मिन् ।

५. त ल—सद्गुणो गुण० ।

६. ज रा भ त ल प्र प ट—सत्यवाक्यो हृदव्रतः ।

७. व त ल—कः सदाचारसंपन्नः । ज रा ट प्र प भ —०रसम्यक् ।

८. व रा ल प ट—०तहितज्ञ कः ।

९. व त ल—वीर्यवान् बलवान्वापि ।

१०. व ल षं ल प्र प भ—कश्चापि ।

११. ट—कश्चि ।

१२. प भ—कृतज्ञत्वम् ।

१३. त ल—कृतज्ञमानम् ।

- क उदारः समर्थश्च त्रैलोक्यस्यापि रक्षणे ।
 ५] कः प्रजानुग्रहरतः^१ को निधिर्गुणसंपदाम्^२ ॥ ५ ॥ [N
 समग्रा रूपिणी लक्ष्मीः कमेकं^३ संश्रिता नरम् ।
 ६] अनिलानलसूर्येन्दुशक्रोपेन्द्रसमश्च कः ॥ ६ ॥ [N
 चारित्र्येण च संयुक्तः^४ सर्वभूतेषु को हितः ।
 N] *को विद्वांश्च समर्थश्चाप्यात्मवान् कोऽतिथिमियः ॥७॥ [N
 एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं त्वत्तो नारद तत्त्वतः ।
 ७] देवर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम् ॥ ८ ॥ [५
 कालत्रयज्ञस्तच्छ्रुत्वा वाल्मीकेर्नारदो वचः ।
 ८] श्रूयतामित्युपामन्व्य तं^५ मुनिं^६ प्रत्यभाषत ॥ ९ ॥ [६
 नारद उवाच^६
 बहवो दुर्लभाश्चैव त्वयैते^७ कीर्तिदा गुणाः ।
 ९] एकेन^८ हि नृलोके^९ ऽस्मिन् गुणप्रपन्ते सुदुर्लभाः ॥१०॥ [७
 देवेष्वपि न पश्यामि कश्चिदेभिर्गुणैर्षुतम् ।
 १०] श्रूयतां तु गुणैरेभिर्यो युक्तो नरसत्तमः^{१०} ॥११॥ [N

१. प भ—०हकरः ।
 २. कै—०गुणसंपदाम् ।
 ३. त, ल—कमेका ।
 ४. ट—को युक्तः ।
 * त ल प्र प भ—नास्ति ।
 ५. त ल प्र प भ—तस्यैव ।
 ६. कै—अत्रैव । नाम्यत्र ।
 ७. रा—त्वयैव ।
 ८. व त ल प्र प भ—एकस्मिन् । रा—एकत्र ।
 ९. त ल प्र—त्रिलोके ।
 १०. त ल प्र भ ट—नरसत्तमः ।
 ११. प—किन्तु वक्ष्याम्यहं तुभ्यं भविष्यति महाबलः ।

- इक्ष्वाकुवंशमभवो रामो नाम गुणाकरः । [८पृ
 ११] एतैरभ्यधिकैश्चैव^१ गुणैर्युक्तो महाद्युतिः^२ ॥ १२ ॥^३ [N
 संयतात्मा^४ प्रद्युतिमानं^५ धृतिमान् गुणवान्^६ वशी । [८उ
 १२] बुद्धिमान् नीतिमान्^७ वाग्मी धीमान्^८ शत्रुनिबर्हणः ॥ १३ ॥ [९पृ
 विशालाक्षो^९ महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः । [९उ
 १३] महेश्वासो महातेजा गूढजन्तुररिन्दमः ॥ १४ ॥ [१०पृ
 आजानुबाहुः सुशिरा^{१०} बलवान्^{११} सत्यविक्रमः^{१२} । [१०उ
 १४] समः समविभक्ताङ्गः स्निग्धवर्णः प्रतापवान् ॥ १५ ॥ [११पृ
 पीनवक्षा^{१३} विशालाक्षो^{१३} लक्ष्मीवान् कुलनन्दनः^{१४} । [११उ
 १५] धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च जितक्रोधो^{१५} जितेन्द्रियः^{१६} ॥ १६ ॥ [१२पृ

१. भ—एतैश्चाम्ब० । प्र प—एतैरप्य० ।

२. ब ल—महामतिः ।

३. प्र—छोके पूर्वाकारार्थव्यत्ययः ।

४. प्र—नियतात्मा ।

५. त ल प्र भ ट—महात्मा च ।

६. त ल प्र प भ ट—द्युतिमान् ।

७. ल—प्रीतिमान् ।

८. ब त ल प्र प भ ट—धीमान् ।

९. ब—विपुलाक्षो । त ल भ ट—विपुलाङ्गो । प्र प—विपुलाङ्गो ।

१०. प—सुशुक्लो ।

११. प्र—सुशुक्लः ।

१२. प्र—सुविक्रमः ।

१३. त—विशालाक्षः पीनवक्षा । ल प्र प भ ट—विशालाक्षः पीनवक्षाः ।

१४. त ल प्र प भ ट—सुभक्तवर्णः ।

१५. ज—जितात्मा च । प्र—प्रजापतिं च ।

१६. प्र—द्विषे रवः ।

मनस्वी ^१ ज्ञानसम्पन्नः शुचिबीर्यसमन्वितः ^२ । ^३	[१२उ
१६] रक्षिता सर्वलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता ॥१७॥ ^४	[१३
१७पू] सर्ववेदाङ्गविधैव ^५ सर्वशास्त्रविशारदः । ^६	[१४पू
१८पू] सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा बहुश्रुतः ॥१८॥	[१५पू
१८उ] सर्वदाऽनुगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभिः ।	[१५उ
१९पू] स सत्यश्च ^७ समश्चैव सौम्यश्च ^८ प्रियदर्शनः ॥ ^९ १९॥	[१६पू
१९उ] रामः ^{१०} सर्वगुणोपेतः कौसल्याऽऽनन्दवर्धनः ।	[१६उ
२०पू] समुद्र इव गाम्भीर्ये स्थैर्ये च हिमवानिव ॥२०॥	[१७पू
२०उ] विष्णुना सदृशो वीर्ये सोमवत्प्रियदर्शनः ^{११} ।	[१७उ
२१पू] कालाग्निसदृशः कोपे ^{१२} क्षमया पृथिवीसमः ॥२१॥	[१८पू

१. प्र—यज्ञस्वी ।

२. प्र—शुचिर्बैर्यः समाधिमान् । व रँ, ल प भ ट—शुचिर्बीर्यं ।

३. प—अतः परमधिकः पाठः—प्रजापतिप्रमः श्रीमान्-ज्ञातारिपुरिक्षुदनः ।

४. प—अतः परमधिकः पाठः—

स्वस्य धर्मस्य सर्वत्र स्वजनस्य च रक्षिता ।

५. प्र—वेदवेदाङ्गवि० । रा—सर्ववेदार्थवि० ।

६. त ल ट—अतः परमधिकः पाठः—

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो महिमान्* प्रतिभाजवान् ।

प्र— सत्यवान् सर्वसत्यज्ञो भीतिमान् प्रतिभाजवान् ।

७. व रा—सम्बन्ध ।

८. रा—सदा च ।

९. व त—स शून्यसमरः सौम्यः स वैकः प्रियदर्शनः ।

ल— स शूरः समरः " " " "

प्र प— स सत्यः स समः सौम्यः स वैकः प्रियदर्शनः ।

ट— स सम्बन्ध च समः स्तुत्यः सौम्यश्च प्रि० ।

१०. कै ज रा ट—सौम्यः ।

११. त—वैर्ये चाङ्गुपमः सदा । ल—वैर्ये च महत्वाग्निव ।

१२. ज रा त ल प्र प भ ट—श्लोके ।

- २१उ] धनदेन^१ समध्वार्ये^२ सत्ये चानुपमद्युतिः^३ । [१८उ
 २२पू] रञ्जयामास स्वगुणैरुदारैर्य इमाः प्रजाः ॥^४ २२ ॥ [N
 २२उ] यस्मादतो राम इति नामैतत्तस्य विश्रुतम् । [N
 २३पू] तमेवं गुणसम्पन्नं रामं सत्यपराक्रमम् ॥२३॥^५ [१९पू
 २३उ] ज्येष्ठं^६ श्रेष्ठगुणैर्युक्तं^७ पिता दशरथः सुतम्^८ ।^९ [१९उ
 २४पू] यौवराज्येन संयोक्तुमियेष स महाद्युतिः^९ ॥२४॥ [२०उ
 २४उ] तस्याभिषेकसंभारं दृष्ट्वा केकयवंशजा ।
 २५पू] पूर्वं^{१०} दत्तवरा^{१०} राज्ञा वरमेनमयाचत ॥
 २५] विवासनं च रामस्य भरतस्याभिषेचनम् ॥२५॥ [२१
 स सत्यवचनाद् राजा धर्मपाशेन^{११} यन्त्रितः^{१२} ।
 २६] विवासयामास सुतं राजा^{१३} दशरथः प्रियम् ॥२६॥ [२२
 स जगाम वनं वीरः प्रतिज्ञामनुपालयन् ।

१. त ल प्र भ—धनवत्स्य ।

२. त ल प्र भ प—समस्त्यागे ।

३. ल प्र—०ऽप्यनुपमः सदा । त भ प—चानुपमः सदा ।

४. त ल—जास्ति ।

५. त ल—जास्ति ।

६. त—राममन्युगु० । ल—रामममेर् ।

प भ—राममार्यगु० । रा ज—०ऽश्रेष्ठगु० ।

७. त ल ट—स्ववम् ।

८. प—भतः परमधिकः पाठः—

प्रकृतीनां हिते युक्तं प्रकृतिप्रियकाम्यया ।

९. रा प्र—महामतिः । ल—महान्युतिः । प—महीपतेः [०तिः ?] ।

१०. रा प्र प भ—पूर्वदत्तवरा ।

११. ट—सत्यपाशेन ।

१२. रा त प प्र भ—संबतः । ल ट—संयुतः ।

१३. त ल प्र प भ—समं ।

- २७] पितुर्बन्धननिर्देशात् कैकेय्याः^१ प्रियकारणात् ॥२७॥ [२३
 तं याप्तमनुजो धीमान् भ्रातरं^२ राममग्रजम्^३ ।
- २८] लक्ष्मणो नाम^४ विनयादनुव्रजान् वीर्यवान् ॥२८॥^५ [२४
 सर्वलक्षणसंप्रज्ञा भार्या चैनमनुव्रता^६ ।
- २९] अनुव्रजान् वैदेही सीता रामं^७ शुभव्रता ॥२९॥ [२६
 रूपयौवनमाधुर्यशीलाचारसमन्विता ॥
- ३०] बभौ साऽनुगता रामं^८ निष्ठाकरमिव प्रभा ॥३०॥ [२६
 पौरैरनुगतो ह्यं पित्रा दक्षरथेन च ।
- ३१] ऋगवेरपुरे^९ सृतं गङ्गाकूले^९ ध्यसर्जयत् ॥३१॥ [२७
 सोऽतीत्य वनदुर्गाणि सस्तिश्च सरांसि च ।^{१०}

१. ज प—कैकेय्याः ।

२. रा—भ्राता ज्ञातस्म० ।

३. ट—राम— ।

४. प— अतः परं दक्षिणात्यक्षायास्थो ऽधिकः पाठः—

स्नेहाद्विनयसम्पन्नः सुमित्रानम्बुवर्द्धनः ।

भ्रातरं धवितो भ्रातुः सौभ्रात्रमनुवर्षयन् ॥

५. प—वैचमनु० ।

६. ल प्र प भ—पुत्रं ।

७. प—पुत्रं ।

८. रा त ल—शङ्खीरपुरे ।

९. भ —गंगातीरे ।

१०. प भ—अतः परं दक्षिणात्यक्षायास्थो ऽधिकः पाठः—

द्वन्द्वमन्वयं भर्तात्मा निष्ठाकरमिति निष्कम् ।

गुदेन सहितो रामो लक्ष्मणेन च स्त्रीकथा ॥*

प—अतोऽपि परमधिकः पाठः—

उत्तारत ततो गङ्गां कथं चैव विवेक इ ।

*प—अत्रं पाठः ३१ श्लोकादेव परं विज्ञेयः ।

- ३२] चित्रकूटं वचनैः कैलं मरुद्गजस्य^१ वासुदेवः ॥३६॥ [२९
 रम्यमाकसर्षं तत्र कुत्वा रामः सलक्ष्मणः ।
- ३३] उवास सीतया सार्धं वल्कलाजिनसंयुतः^२ ॥३७॥ [३०
 श्रीमद्भिस्तैस्त्रिभिः सार्धं चित्रकूटो रराज^३ सः ।
- ३४] अधिष्ठितो यथा मेरुः श्रीवैश्रवणकङ्करैः^४ ॥३८॥ [N
 चित्रकूटं गते रामे पुत्रशोकादितस्तदा^५ ।
- ३५] राजा^६ दक्षरथः^७ स्वर्गपगमद्^८ विलपन्मुतमः ॥३९॥ [३१
 गतेः तु तस्मिन्^९ भरतो वसिष्ठप्रभुसुतैर्द्विजैः ॥
- ३७] प्रचोदितोऽपि राज्याय नैच्छद् राज्यं महायज्ञाः ॥३९॥ [३२
 मृते पितरि धर्मात्मा भरतश्च^{१०} महायज्ञाः^{११} ।
- ३८] राज्यलोभं परित्यज्य रामं द्रष्टुमुपागतः ॥३७॥^{१२} [N

१. रा त ट भ—भारद्वाजस्य ।
२. ज रा ल त प्र प भ—संवृतः ।
३. ल—ऽधिराज ।
४. रा—श्रीमुकुन्दहरीश्वरेः । प—श्रीनारायणकङ्करैः ।
५. रा—राजा दक्षरथस्तदा ।
६. रा—पुत्रशोकादितः ।
७. प—स्वर्ग जगाम (अथं पाठो दक्षिणात्यसम्मतः ।)
८. प्र—भतः परं ब्रह्मज्ञात्वासम्मतो ऽधिकः पाठः—
 रामप्रवासनं श्रुत्वा पितुश्च निधनं तथा ।
 भरतो बिलकापार्षो मातृकादागतो बहुः ॥
९. रा ल —तस्मिन् । प—गतेषु तेषु ।
१०. त ल—राजराष्ट्रपुरस्कृतः । प—राजत्वेन पुरस्कृतः ।
 प्र भ—राजत्वे स पुरस्कृतः ।
११. रा—नास्ति ।
१२. प्र— भतः परं दक्षिणात्यसम्मतो ऽधिकः पाठः—
 अथापद् आसन्नं राममार्धभाषपुरस्कृतः ।
 तमेव राजा धर्मज्ञ इति रामं वचोऽप्यधीदुः ॥

- पादुके चास्य राज्याय न्यासं दत्त्वा पुनः पुनः ।
 ४०] निर्वर्तयामास तदा भरतं भरताग्रजः ॥ ३८ ॥ [३६
 स काममनवाप्येव गृहीत्वा रामपादुके ।
 ४१] नन्दिग्रामेऽकरोद्राज्यं रामागमनकांसया ॥३९॥' [३७
 आशङ्कमानश्च पुनः पौरजानपदागमम् ।
 ४२] रामोऽपि हित्वा तं कैलं प्रययौ^२ दण्डकं वनम् ॥४०॥ [३८
 विरार्षं राक्षसं हत्वा शरभङ्गं ददर्श ह ।
 ४३] सुतीक्ष्णं चाप्यगस्त्यं^५ चाप्यगस्त्यभ्रातरं^५ तथा ॥४१॥ [३९
 भगस्त्यवचनाच्चैव जग्राहैन्द्रं धनुस्तदा^५ ।
 ४४] लब्ध्वा^५ च परमप्रीतस्तृणौ चाक्षयसायकौ ॥४२॥ [४०
 ४५.७] वसतस्तस्य रामस्य वने वनचरैः सह ।

रामोऽपि परमोदारः सुमुखः सुमहावशाः ।

व कैष्ण्व् पितुरादेसाद्राज्यं रामो महाबलः ॥

प—अस्य स्थाने इत्थं पाठः—

राममेवाज्जगामाद्यु वर्यायन् विभवं स्वकं ।

गृह्णाज् राज्ये धर्मात्मचिति राममभाक्त् ॥

मिथुज्वमानो राज्याय कैष्ण्व्द्राज्यं महावशाः ।

१. प—अतः परं दक्षिणात्यसम्मतो ऽधिकः पाठः—

गते तु भरते श्रीमान् सत्यवाक्यो जितेन्द्रियः ।

२. दा—अगमत् ।

३. प्र—वास्ति ।

४. प्र—च तथागस्त्यं ।

५. दा त ल प भ ट—च भगस्त्यभ्रा० । प्र—भगस्त्यभ्रा० ।

६. ट—महबलुः ।

७. ल भ—आकम्ब । प्र—सर्ग ।

प—सोऽभिवाच्य बभौ श्रीमान्पुत्र्यां च सुव्रताम् ।

देसः पञ्चवटी नाम तत्र वासमकल्पयत् ॥

८. दा त ल प्र प भ ट—वसतस्तत्र ।

९. प—सोऽभिवाच्य बभौ श्रीमान्पुत्र्यां च सुव्रताम् ।

देसः पञ्चवटीनाम तत्र वासमकल्पयत् ॥ इत्यधिकम् ।

- रक्षोभ्यः कामरूपिभ्य ऋषयो ऽभ्यागमन्मयात् ॥४३॥ [४१
 ४६] रामं कमलपत्राक्षं क्षरप्यं क्षरणैषिणैः ।
 महेन्द्रमिव दुर्धर्षं बाणखड्गधनुर्धरम् ॥ ४४ [N
 ४७] तेन तत्र सह भ्रात्रा जनस्थाननिवासिनी ।
 विरूपिता शूर्पनखा राक्षसी कामरूपिणी ॥ ४५ ॥ [४४
 ४८] ततः शूर्पनखावाक्यादागतान् सर्वराक्षसान् ।
 स्वरं च दूषणं चैव रक्षस्त्रिधिर एव च ॥ ४६ ॥ [४५
 ४९] निजघान वने रामो घोरांस्तान् सर्वराक्षसान् ।
 तेषामनुबलं चैव सहस्राणि चतुर्दश ॥ ४७ ॥ [४६
 ५०] ततो ज्ञातिवधं श्रुत्वा रक्षसैलोक्यविभ्रुतैः । [४७पू
 नामतो रावणो नाम कामरूपो महाबलः ॥ ४८ ॥ [N

१. रा ट—कामरूपेभ्यः ।

२. कै—ऽभ्यागमन्० ।

३. प्र—क्षरणार्थिनाम् । ट—क्षरणार्थिनः ।

४. रा—वारिधेरिव दुर्धरं ।

५. प्र—अतः परं दक्षिणात्यसम्मतो ऽधिकः पाठः—

स तेषां प्रति ह्युभाव राक्षसानां तदा बने ।

प्रतिज्ञासन्न रामेण बधः संयति राक्षसां ॥

शूचीजामाप्रिकव्यानां दृष्टकारण्यवासिनां ।

६. रा त म ट—०निवासिनां ।

७. छ—०दागताः सर्वराक्षसाः ।

८. छ—नास्ति ।

९. म प्र प—बधे राम ।

१०. म प्र प—पृक्त्याम् ।

११. छ—नास्ति ।

१२. प—तेषामनुचरांश्चैव ।

१३. व छ प्र प म—०विभ्रुतैः ।

१४. छ प्र म—कामरूपी । प—कामरूप- ।

- ५१] राक्षसाधिपतिः शूरो रावणः क्रोधमूर्च्छितः ॥
साहाय्ये वरयामास मारीचं नाम राक्षसम् ॥ ४९ ॥ [४७
- ५२] वार्यमाणोऽपि बहुशो मारीचेन स रावणः ।
न विरोधो बलवता क्षमो रावण तेन ते ॥ ५० ॥ [४८
- ५३] अनाहत्य तु तद्वाक्यं रावणः क्रोधमूर्च्छितः ।
जगाम सहमारीचो रामाश्रमपदं ततः ॥ ५१ ॥ [४९
- ५४] तेन मायाविना दूरमपसार्यं नृपात्मजम् ।
रावणोऽन्तरमासाद्य सीतां सुरसुतोपमाम् ।
- ५५] जहार भार्यां रामस्य हत्वा गृह्णं जटायुषम् ॥५२॥ [५०
गृह्णं च निहतं दृष्ट्वा हृतां भार्यां च दुर्लभाम् ।
- ५६] शायवः शोकसन्तप्ती विललापाकुलेन्द्रियैः ॥५३॥ [५१
ततः स तत्र काकुत्स्थो दग्ध्वां गृह्णं जटायुषम् ।
- ५७] कर्बुंधं ददृशे भूंयो दनोः पुत्रं महाबलम् ॥५४॥ [५२

१. ट—कूरो । प—वीरो ।

२. रा ल प्र भ—सहायम् ।

३. ब त—क्रोधचोदितः । प्र—काकचोदितः ।

रा ल भ—काकदेशितः । प—काकदाशितः ।

४. रा ल प्र प भ—मपसाद्य ।

५. प्र भ—नृपात्मजौ ।

६. प्र—जटायुषं ।

७. प्र—रामोपि हतमारीचो निवृत्तो बहु चिन्तयन् ।

शून्यं दृष्ट्वाश्रमपदं विललाप सक्रमणः ॥ प—वास्ति ।

विचिन्तन् बहुशोऽन्यं दृष्ट्वा गृह्णं जटायुषं ।

तस्यैव बचनान्नामो दाक्षिणामिमुर्जे ययौ ॥

प—मार्गमाजौ बने वीरो राक्षसं संददर्शतु (?) ।

८. ल—सु ।

९. ट—सु—

१०. भ—विकलाप सुदुःखितः ।

११. ल—दृष्ट्वा ।

१२. कर्बुंधमपदं नृपां ।

तं सं तेनैव कोपेन कवन्धं खोरद्वेषमम् ।

५७]	मिहस्य काष्ठैरयश्च स्मेडमृदं दिव्यवपुस्तदा ॥२५॥	[B
५८]	कथयामास रामायैः श्रमणैः शर्वरीं ततः ।	[२४पू
५९]	तस्यैव वचनाद्गामो लक्ष्मणेन सहानकः ॥२६॥	[B
६०]	शर्वरीं धर्मनिपुणामभ्यगच्छद्रघुद्वहः ।	[२४उ
६१]	शर्वर्याऽयं कुतः संन्यग् रामो दशरथात्मजः ॥२७॥	[५५उ
६२]	पम्पातीरे हनुमता सङ्गतो वानरेण हे ।	
६३]	हनुमद्वचनाच्चैव मुग्धिवेण च सङ्गतः ॥२८॥	[५६

१. भ—वृत्तस्—

२. प्र—स. च ।

३. ज ट—खोरं वपुस्तदा ।

४. त—भास्ति ।

५. ल भ—रामस्य श्रम० ।

त—रामायाश्रमायां ।

रा प—रामस्य श्रवणं । प्र—रामस्य श्रमणीं ।

६. ल—शर्वरीं ।

७. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

श्रमणीधर्मनिपुतां स निर्गम्य रघूत्तमः ।

८. रा ल प्र प—पूर्वापरपादाविपर्यासः ।

के रा ल प्र—अतः परमधिकः समानाद्यै एव पाठो दृश्यते—

अभ्यगच्छन्महातेजाः शर्वरीं* शत्रुसूदनः ।

९. रा ष प भ—शर्वर्यां पृथितः ।

१०. प—रामः संन्यग् ।

११. रा प भ—वानरेण स सङ्गतः ।

१२. रा ज त ल प्र प भ ट—समागतः ।

७६२]	सुग्रीवस्य च तत्सर्वं रामो ऽशंसन्महाबलः । ^१	[५७पू
पू६३]	सुग्रीवस्तस्य रामस्य श्रुत्वा वाक्यं महात्मनः ॥५९॥	[५८पू
N]	चकार सख्यं रामेण प्रीतश्चैवाग्निसाक्षिकम् । ^२	[५८उ
६३]	ततो वानरराजेन वैरानुकथनं महत् ॥६०॥	[५९पू
	रामे निवेदितं सर्वं प्रणयाद् दुःखितेन हि ^३ ।	[५९उ
६४]	वालिनश्च बलं तत्र कथयामास वानरः ॥६१॥	[६०उ
	प्रतिज्ञांते तु ^४ रामेण तर्दा वालिवधं प्रति ।	[६०पू
६५]	राघवे वालिवीर्येण सुग्रीवः शङ्कितोऽभवत् ॥६२॥ ^५	[६१
	रामंः संमत्पयं कर्तुं सुग्रीवे वानराधिपे ।	[N
६६]	पादेन दुन्दुभेः कायं चिक्षेप शतयोजनम् ॥६३॥	[६३उ

१. उ—रामः पृष्टो महा० ।

२. प—अतः परं वाचिष्यात्प्रसम्मतो ऽधिकः पाठः—
आदितस्तथापुत्रं सीतायाश्च विक्षेपतः ।

३. ज ष त उ भ ट—नास्ति ।

कौ—उत्तरपार्श्वे शोधनरूपेण विन्ध्यस्तः ।

४. त उ प्र भ—चक्रे ।

५. कौ ज त ट—०राज्येन ।

६. त ज प्र ट—ह । रा उ भ प—च ।

७. प्र—प्रतिज्ञातं तु ।

प—प्रतिज्ञातं च ।

८. उ—ततो ।

९. प्र प—अतः परं वाचिष्यात्प्रसम्मतो ऽधिकः पाठः—
राघवस्य* प्रत्ययार्थं दुन्दुभेः कायमुत्तमम् ।

द्वयंयामास रामाय† महापर्वतसञ्चिभम् ॥††

१०. रा उ प भ—रामोऽसंप्रत्ययं दृष्ट्वा ।

* प्र—राघवे ।

† प्र—सुग्रीवः ।

†† प्र—अतः परमन्वधिकः पाठः—

उक्तं [क्व ?] शिल्पा महाबाहुः प्रेक्ष [क्व ?] आसि महाबलः ।

विभेद सप्ततालान्ध्रं शरेणानतपर्वणां ।

६७] गिरिं^१ रसातलं चैव जनयंस्तस्य विस्मयम् ॥६७॥ [६४

ततः प्रीतमनास्तेर्न कर्मणा तस्यै सोऽभवद्वै ।

६८] सुग्रीवो वानरश्रेष्ठः परं हर्षमवाप च ॥६८॥ [६५पू

ततो वानरराजेन कृत्वा सख्यं महाबलः ।

६९] प्रत्ययं जनयामास तदाऽन्योन्यस्य वै मिथः ॥६९॥ [N

समयं तौ ततः कृत्वा नरवानरपुङ्गवौ ।

७०] किष्किन्धां रामसुग्रीवौ जग्मतुर्वालिरक्षिताम् ॥६७॥ [६५उ

ततोऽगर्जद्हरिवरः सुग्रीवो भीमनिःस्वनः ।

७१] तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ॥६८॥'' [६६

१. प—सप्ततालान्ध्र ।

२. प.—शरेणानुतपेतसा ।

३. ब—गिरिसारं बह्वं ।

४. रा ल प्र प भ—०स्तस्य ।

५. रा ल प्र भ—तेन सो ।

प—व्यशसत्कपिः ।

६. ल—ततो वां नरराजेन्द्रः कृत्वा सख्यं महाबलः । इत्यपपाठः ।

७. के प ब त ल—किष्किन्धां । प्र—किष्किन्धां ।

८. ट—०वाकिपाकिताम् । प्र भ—०गुस्तां गुहां तथा ।

रा प—०गुस्तां गुहां तथा । ल—०गुस्तं गुहां तथा ।

९. भ—ततो गर्जन् हरिवरः ।

१०. रा ज त ल प्र प भ ट—मेघनिःस्वनः ।

११. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

अनुमान्य तदा तारां सुग्रीवेण समागतः ।

निजघान च तत्रैवं शरेणैकेन राघवः ॥

प—अनुमान्य ततस्तारां सुग्रीवेण समागतः ।

निजघान च रामो ऽपि शरेणैकेन वाकिन्धम् ॥

ततः सुग्रीववचसां इत्वां वाल्मिनिमाह्वे ।

७१] सुग्रीवात्यैव तद्गार्ज्यं राघवः प्रत्यपादयत् ॥६९॥ [६८

अनुज्ञातस्तु रामेण किष्किन्धां प्रविवेद्य ह ।

७२] चत्वारो वार्षिकान् मासानुवासैः समवेन सः ॥७०॥ [६९

स च सर्वान् समानाद्यैः वानरान् वानरर्षभः ।

७३] दिक्षः प्रस्थापयामास विचेतुं जनकात्मजाम् ॥७१॥ [६९

ततो गृह्यस्य वचसां सम्पातेर्हेनुमान् कपिः ।

७४] शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवे मकराकरम् ॥७२॥ [७०

ततो लङ्कां समासाद्य पुरीं रावणपालिताम् ।

७५] ददर्श सीतां ध्यायन्तीमशोकवनिक्कां मताम् ॥ ७३॥ [७१

निवेद्य चाप्यभिज्ञानं प्रवृत्तिं विनिवेद्य च ।

७६] गृहीत्वा प्रत्यभिज्ञानं मर्हयामास नैर्ऋतम् ॥७४॥ [७२

पथं मन्त्रिसुताने इत्वा पथं सेनाऽग्रगामपि १ । १

१. रा ल प्र प भ—वचनादत्वा ।

२. के ज ब त भ—किष्किन्धां ।

३. ज ट त प्र प—मासानुवासा ।

४. रा ल—नास्ति ।

५. प्र—समानीय ।

६. रा ल प्र प भ—विष्णुर ।

७. ज रा. ल ल प्र प भ ट—वचनात् ।

८. रा ब ल प्र प भ—मकराकरम् ।

९. त—तत्र ।

१०. ज ब त ट—नास्ति ।

कै—उत्तरपार्श्वे शोषनकणेन पुनर्विन्ध्यसः ।

११. रा—सप्तमः ।

प—पथं सेनाग्रगाम् ।

१२. प—पथं मन्त्रिसुतानपि ।

१३. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

मन्त्रिसुतानपि इत्वा पथं सेनाऽग्रगामपि १ । १

- ७८] कुमारमक्षं निष्पिष्य ब्रह्मणं समुपागमत् ॥७५॥ [७३
 अस्त्रादुन्मोच्ये चात्मानं ज्ञात्वा पैतामहार्न वरान् ।
 ७९] ममर्ष यन्त्रणां तत्र रक्षसां तां यदृच्छया ॥७६॥ [७४
 ततो दग्ध्वा पुरीं लङ्कां पुनर्दृष्ट्वा च मैथिलीम् ।
 ८०] क्षमाश्वस्य च वैदेहीं पुनरायान् महाकपिः ॥७७॥ [७५
 सोऽभिगम्य महात्मानं कृत्वा रामं प्रदक्षिणम् ।
 ८१] निवेदयामास तदा दृष्ट्वा सीता मयेति वै ॥ ७८ ॥ [७६
 ततः सृग्रीवसहितो गत्वा तीरं महोदधेः ।
 ८२] समुद्रं क्षोभयामास शरैरादित्यवर्चसैः ॥ ७९ ॥ [७७
 दर्शयामास चात्मानं संभुद्रो राघवस्य हि^१ ।
 ८३] समुद्रवचनाच्चैव नलः सेतुमकारयत् ॥ ८० ॥ [७८
 तेन गत्वा पुरीं लङ्कां हत्वा तं राक्षसेश्वरम् । [७९प
 ८४] अभ्यसिञ्चत्सै लङ्कायां राक्षसेन्द्रं विभीषणम् ॥८१॥ [८३पू

१. ट—०रमक्षं ।
 २. रा ल प्र प भ—अस्त्रादुन्मोच्य ।
 ३. भ—स्त्रवा ।
 ४. प्र—पेतवहात् । इत्यपपाठः ।
 ५. भ ट त ल प्र प—रक्षसां वीरो बन्धनां ।
 रा—यन्त्रणां वीरो राक्षसानां ।
 ६. प्र—च ।
 ७. कै व रा—पुनर्दृष्ट्वा ।
 ८. प्र—कृते सीतां ।
 ९. प्र—रामाय प्रियमाख्यातुं पुनरायान् महाकपि ॥
 १०. ल—नास्ति ।
 ११. ज व रा त ल प्र प भ ट—०त्यसन्निभैः ।
 १२. प्र—समुद्रः करिणां वृत्तिः । ज स—०वस्य ह ।
 ल प—०वस्य च । भ—०वस्य वा ।
 १३. भ—अभ्यसिञ्चत् ।
 १४. ल—नास्ति । प—कलः कलशशिकः शतः—
 शतः शतशतशतशत शतं श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री ॥

- ७८६] सीतामूचे ततो रामः परुषं जनसंसदि ।
 ७८७] अयुष्यमाणा तत्सीता विवेकं ज्वलनं तर्तः ॥८२॥^१ [८०
 ७८७] ततो वायुः प्रादुरासीद् वागुवाचाशरीरिणी ।
 ७८८] देवदुन्दुभयो नेदुः पुष्पवृष्टिः पपात चै ॥८३॥^२ [N
 ७८८] स चाभिवचनात् सीतां ज्ञात्वा विगतकल्मषाम् ।^३ [८१पु
 कर्मणा तेन महता देवा इन्द्रपुरोगमाः ।
 ८५] सदेवर्षिगणास्तुष्टा राघवं प्रत्यपूजयन् ॥ ८४ ॥ [८२
 ७८६] तथा परमसन्तुष्टैः पूजितः सर्वदैवतैः ।^४
 ७८९] कृतकृत्यस्तदा रामो विज्वरः समपद्यत ॥८५॥ [८३
 देवेभ्यः सं बरान् प्राप्य रामैः सीतामवाप्य चै ।^५

१. प्र प--तामुवाच ।
 २. प--तत् स संसदि ।
 ३. प्र--वैदेही । प--सा सीता ।
 ४. प्र--ततोऽग्निं प्रविषेत्त ह ।
 ५. छ भ--नास्ति ।
 ६. प्र--दिवि दुन्दुभयो ।
 ७. प्र प--ह ।
 ८. छ भ--नास्ति । प--अतः परमधिकः पाठः—
 अग्रहीदमकां रामो वचनाच्च गुरोस्तदा ।
 ९. व--विशनात् ।
 १०. प्र रा छ प भ--तेऽभ्यपूजयन् ।
 ११. ट छ प्र भ--अवं पाठः ८० श्लोकादनन्तरमेव ।
 कै--८० श्लोकादनन्तरं उत्तरपार्श्वे विन्यासः । इह च मूलरूपेणैव ॥
 १२. प्र प--वेद्यताम्बो ।
 १३. प्र प--समुत्थाप्य च वानरान् ।
 १४. प्र प--अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतो ऽधिकः पाठः—
 अचोण्यां प्रस्थितो रामः पुष्पकेन सुहृद्भृतः ।
 भरद्वाजाभ्रं गत्वा रामः सत्यपराक्रमः (प--सीतामवाप्य च) ॥
 भरतस्यान्तिकं रामो हनुमन्तं व्यवर्जयत् ।
 पुनराव्यापिकां वदन् सुग्रीवसहितस्तदा (प--सुग्रीवसहिता वती) ॥

- ९०] पुष्पकं च समासाद्य नन्दिग्राममुपगतः ॥८६॥ [८६
 नन्दिग्रामे जटाश्लिष्वी भ्रातृभिः सह राघवः ।
 ९१] रामः सीतामनुप्राप्य राज्यं च पुनराप्तवान् ॥ ८७॥ [८७
 ९२] सीतया सहितः श्रीमान् रेमे च सुस्वितैः सुखी ।
 पालयामास चैवेमाः पितृवन्मुदितः प्रजाः ॥८८॥ [N
 ९३] अयोध्याऽधिपतिः श्रीमान् राजा दशरथात्मजः । [N
 हृष्टः प्रमुदितो लोकैस्तुष्टः पुष्टः सुधार्मिकः ॥८९॥ [८८पू
 ९४] निरामयोऽभिरामश्च दुर्भिक्षायासवर्जितः । [८८च
 न पुत्रमरणं किञ्चित् पश्यन्ति स्म नराः क्वचित् ॥९०॥ [८९पू
 ९५] नार्यश्चाविधवा नित्यं भर्तृशुश्रूषणे रताः । [८९उ

१. ज व त ल प भ ट--च समासाद्य । प्र--तत् समासाद्यः ।

२. प्र--नन्दिग्रामं ययौ तदा ।

३. भ--जटा हित्वा ।

४. प्र प--अयोध्यां नगरीं प्राप्य । भ--रामः सीतामवाप्याद्य ।

५. ल प्र प भ ट--राज्यं पुनरवाप्तवान् ।

६. प्र प भ--हृजे च विविधैर्बन्धैर्हत्वा तं लोककण्टकम् । इत्याधिकः पाठः ।

७. त प्र प भ ट--मुदितः ।

८. ल--रेमे ... श्रीमान् । इत्यन्तं नास्ति ।

९. प्र--रामो ।

१०. त प्र प भ ट--लोकस्तु० ; ल--लोकस्तु० । इत्यपपाठः ।

११. ल प भ--निरोगम् । वस्तुतस्तु रकारकोपे दीर्घत्वाच्चीरोग इत्येव
 साधुपाठः । परन्तु कश्चीनङ्गमवादादर्थत्वाच्च निरोगोऽपि
 स्थादेव । प्र--विक्षोकम् ।

१२. प्र प--०द्यावावच० ।

रा--०द्यावामव० । अयं हि सकारमकारबोलीपिसाम्बाद् अमचूडःपाठः

१३. ज त ल प्र प भ ट--वतिष्ठतु० ।

- न वातजं भयं किञ्चिन्नाप्सु मज्जन्ति जन्तवः ॥९१॥ [९०उ
 ९६] न चाग्निजं भयं किञ्चिद्यथा कृतयुगं तथा ।^३ [९०पृ
 नै तस्य राज्ये बधिरो नैवान्धस्तत्र नाबुधैः ।
 ९७] न दुःखितो न कृपणो न व्याध्यातोऽभवज्जनः ॥९२॥ [N
 अश्वमेधज्ञतैरिष्ट्वा तथा बहुसुवर्णकैः ।
 ९८] गवां शतसहस्राणि बहूनि स हि^५ दास्यति ॥९३॥^६ [९२
 बहून् वर्षांश्च^७ राज्ञ्यं सं^८ राघवो हि^९ विधास्यति । [N
 ९९] चातुर्वर्ण्यं च लोकेऽस्मिन् स्वधर्मे स्थापयिष्यति ॥९४॥ [९३उ
 दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च ।

१. ल प भ—कृतयुगे ।

२. रा—अस्य श्लोकस्य प्रथमं पादं तुरीयेषु संयोज्य द्वितीयं तृतीयञ्च पादं
 त्यक्तयेषं श्लोको विन्यस्तः—
 न वातजं भयं किञ्चिद्यथा कृतयुगं तथा ।

प्र—अतः परं वाचिद्यात्ससम्मतोऽधिकः पाठः—
 न चापि भुञ्ज्यं तत्र न तस्करभयस्तथा ।
 नागराणि च राष्ट्राणि धनधाम्ययुतानि च ॥

३. ट—न राज्ये तस्य । इति विपर्ययेण पाठः ।

४. ल प्र प भ—न तस्य राष्ट्रे बिधवा नानाधस्तत्र नाबुधः ।

५. ल प—दुर्गतो । भ—दुर्मतो ।

६. ल प—ऽभवत्तरः । प्र भ—भवेत्तरः ।

७. प्र—पु ।

८. प्र—अतः परं वाचिद्यात्ससम्मतोऽधिकः पाठः—
 असंख्येषं धनं दत्त्वा ब्राह्मणेभ्यो महावक्त्राः ।
 राजबंसान् सतयुवान् स्थापयिष्यति राजवः ॥

९. ल—बंदयाञ्च । प्र—बंदयाञ्चु ।

१०. ल प—राज्ञस्त । रा—राज्यञ्च ।

११. ल प्र प भ—वै करिष्यति ।

१००] रामो राज्यमुपास्यासौ विष्णुलोकं गमिष्यति ॥१५॥ [१४

स सर्वगुणसम्पन्नः श्रीमानूर्जितज्ञासनः ।

१०१] यन्मां पृच्छसि बाल्मीके^१ राम एभिर्गुणैर्युतः ॥१६॥ [N

पृ१०२] नारदस्य वचः श्रुत्वा बाल्मीकिरिदमब्रवीत् ।

उ१०२] देवर्षे ये त्वर्यो प्रोक्ता गुणाः पुरुषदुर्लभाः ।

पृ१०३] तेषामेवं समाचार्यः सार्धतं राममाश्रितः ॥१७॥ [N

उ१०३] इदमारुख्यानमायुष्यं यशस्यं बलवर्धनम् । [१६पू

पृ१०४] यः पठेद्रामचरितं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥^२१८॥ [१५उ

उ१०४] इदं^३ पठेत्^४ सदाध्यायं पुण्यश्रवणकीर्तनम् । [१५पू

पृ१०५] सपुत्रपौत्रस्वर्जनो नरः कृच्छ्राद्विमुच्यते ॥१९॥^५ [१६उ

उ१०५] रामायणमशेषं च तेनैव^६ श्रीवितं भवेत् ।

१. कं ब--०मपास्यासौ । प्र--मुपास्येह ।

२. प्र-- लोके ।

३. ल--बाल्मीक । इत्यपपाठः ।

४. ट--गुणाः प्रोक्तास्त्वया ।

५. ल प भ--तेषाम्यु । प्र--तेषाञ्चैव ।

६. ल प भ--समाचार्यस्तं । प्र--मसाञ्जायः ।

७. त--संग्राहं ।

८. ल प्र--०श्रितम् ।

९. ल--बालवर्धनम् ।

१०. प--वास्ति ।

११. ट त ल प्र प--इमं ।

१२. रा त ल प्र प भ ट--पठन् ।

१३. ल--सदाध्याय । रा प्र--सदा ध्यायन् ।

१४. त ल--०त्रस्यज० । भ--०त्रपौप्रभावेन ।

१५. ज--वास्ति ।

१६. प--०मशेषेण ।

१७. ट त--तेन वै । ल प्र भ--तेन च । प--तेन ।

१८. प--संग्राहितं ।

२०

वाल्मीकीय-रामायणम् ।

१०६] य ईषं विदुषां मध्ये पठेच्छ्रद्धासमन्वितः ॥ १०० ॥ [N

पठन् द्विजो वागृषभस्त्वमीयात्

क्षत्राम्बयो भूमिपतित्वमीयात् ।

वणिग्जमः पुण्यफलत्वमीवाचं—

१०७] कृष्णंश्च शूद्रोऽपि महस्त्वमीयात् ॥ १०१ ॥ [२७

इत्यायं रामावने बालकाण्डे आदिकाण्डपर्याये नारदवाक्ये

संग्रहणं नाम प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

१. ल प्र प भ—इदं ।

२. कं व ल त रा—पुण्यफलत्व० । वणिजां पण्यसम्बन्धेन
पुण्यफलत्वस्यैवोचितत्वात् ।

३. ल प्र प—०कृष्णं हि ।

४. प—वाल्मीकिविरचिते बालकाण्डे । कै—आदिका० ।

५. ज ट ल प्र प त भ—नास्ति ।

६. ल प्र प भ—नारदवाक्यं नाम ।

७. व त—सर्गः । ल—संग्रहवाक्यायः । भ—संग्रहकः सर्गः ।

[वं=२]

[द्वितीयः सर्गः]

[दा=२]

- नारदस्याथ तद्वाक्यं श्रुत्वा वाक्यविष्णारदः । [१पू
 १.] वाल्मीकिः शिष्यसहितो विस्मयं परमं ययौ ॥१॥ [N
 मनसैव च रामाय पुजां चक्रे महामतिः । [१३
 २.] तं चापि शिष्यसहितो नारदं प्रत्यपूजयत् ॥२॥ [N
 यथावत् पूजितस्तेन देवर्षिर्नारदस्तदा ।
 ३.] तमापृच्छयाभ्यनुज्ञातो जगाम त्रिदशालयम् ॥३॥ [२
 स मुहूर्तं गते तस्मिन् देवलोकाय नारदे ।
 ४.] जगाम तमसातीरं वाल्मीकिर्मुनिसत्तमः ॥४॥ [३
 स च तृतीयमासाद्यं तमसार्यां महामुनिः ।
 ५.] शिष्यमाहं स्थितं पार्श्वे दृष्ट्वा तीर्थमकल्पमम् ॥५॥ [४
 निःशर्करमिदं तीर्थं भारद्वाजं निशामय ।
 ६.] पुण्यं चैव प्रसन्नं च सज्जमानां बर्था मनः ॥६॥ [५

१. ल—नारदस्य तथा वा० । रा—०स्य च तद्वा० ।

२. त ल प भ ट—महामुनिः ।

३. ल—जगाम त्रिदिवालयम् । मन्वे वाक्चतुष्टयं त्यक्त्वा पंचमेन
 सम्बन्धः कृतः ।

४. रा ज त प्र प भ—०नारदस्ततः ।

५. प भ त्रिदिवालयम् ।

६. ज—गुह्ये ।

७. ल—चरं तीर्थं० । प—बदं तीर्थं० ।

८. भ प्र- तमसायाः ।

९. पृ—उवाच शिष्यं पार्श्वस्थं ।

१०. ज व त ल प्र प भ ट—तीर्थमकल्पमम् ।

११. ज व ट त ल—भरद्वाज ।

१२. ज—मन इत् ।

- इदं तीर्थधरं सौम्यं स्रुजलं मूक्ष्मबालुकम् । [N
 ७] अस्मिन्नेवावगाहिष्ये तीर्थेऽहं तमसाजलम् ॥१७॥ [६३
 बल्कलं त्वमिहादाय शीघ्रमेवाश्रमात् पुनः ।
 ८] यथा कालात्ययो न स्यात्तथा साधु विधीयताम् ॥८॥ [N
 स गुरोर्वचनाच्छीघ्रमागम्यं पुनराश्रमात् । [N
 ९] आनीय बल्कलं तस्मै गुरवे प्रत्यपादयत् ॥९॥ [७३
 स शिष्यहस्तादादाय परिधाय च बल्कलम् [८पू
 १०] अवगाह्य जलं स्नात्वा जप्त्वा जप्यं च वाग्यतः ॥१० [N
 तर्पयित्वा च विधिं ततोयेन पितृदेवताः । [N
 ११] निरीक्षमाणो व्यचरत् तत्तीर्थं तमसां च ताम् ॥११॥ [N
 ततः स तमसातीरे विचरन्तमभीतवदं ।"
 १२] ददर्श क्रौञ्चयोस्तत्र मिथुनं चारुदर्शनम् ॥१२॥ [९
 तस्माच्च मिथुनादेकमागत्यानुपलक्षितः ।

१. ल प—तीर्थसमं । प्र भ—तीर्थं समं ।

२. ब—प्राप्य । ज—सौम्य ।

३. ज—नास्ति ।

प—अतः परं दाहिष्यात्यसम्मतोऽधिकः पाठः—

अस्यतां कक्षास्तावदीयतां बल्कलं मम ।

४. रा—विगाह्यतां ।

५. ल—च्छीघ्रं पुनरागत्य ।

६. ल—वाश्रमात् । प—पुनराश्रमं । प्र—पुनरागमात् ।

७. ल प्र प भ—प्रत्यवेदयत् ।

८. त—अत्रे ।

९. प्र—सर्वं तत्तमसावनं । ल भ—सर्वतस्तमसावनं । प—नास्ति ।

१०. ज—विचरन्तमभीतवत् । रा—व्यचरन्तमभी० । ब ट त—विचरन्तावभी० ।

११. प—त्वक्तम् ।

- १३] जघान कश्चिद्द्वानुष्को निषादो मुनिसभिधौ ॥१३॥ [१०
 तं शोणितपरीताङ्गं वेष्टमानं गृहीतले ।
- १४] दृष्ट्वा क्रौञ्चीं रुरोदारतां कृपणं खेपरिभ्रमां ॥१४॥ [११
 तं तथा निहतं दृष्ट्वा निषादेनाण्डजं वने ।
- १५] मुनेः शिष्यसहायस्य कारुण्यं समजायत ॥१५॥ [१३पू
 ततः करुणवेदित्वाद् धर्मात्मा स द्विजोत्तमः ।
- १६] निशम्य करुणं क्रौञ्चीं क्रन्दन्तीं प्रजगाविदर्शम् ॥१६॥ [१४
 मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमंः शार्भङ्गीः समाः ।
- १७] यत् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥१७॥ [१५
 तस्येदमुक्त्वा वचनं चिन्ताऽभुत्तदनन्तरंम् ।
- १८] शकुन्तै शोचतां ह्येवं किमिदं व्याहृतं मया ॥१८॥ [१६

१. ल प्र प भ—बद्धानुष्को ।

२. ब प्र प भ—वेष्टमानं ।

३. ल प्र प भ—कृपणं ।

४. ट ज त—खेपरिभ्रमा । प—च परिभ्रमात् । भ—खेपराभ्रमात् ।

५. प्र—भतः परं दाक्षिणात्यसम्मतोऽधिकः पाठः—
 वियुक्ता पतिना तेन द्विजेन सहचारिणा ।
 ताभ्रपीर्यैव मत्सेन पत्निव्या सहितेन वै ॥

६. प्र—कारुण्यं ।

७. प्र प—क्रौञ्चीं क्रन्दन्ती ।

८. ब ट त ल प भ—तां जगाविदं । प्र—इदं जगाद् च ।

९. ल—प्रतिष्ठात् ।

१०. ल—स्वमागमाः शा० । रा—स्वमगमण्डा० ।

११. प—तस्यैवं प्रवृत्तमिन्ता बभूव तदनन्तरं ।

१२. ल प्र प भ—शकुनं ।

१३. ट ल—शोचतां ।

१४. ल—किमेवं । प्र भ भ—किमेतद् ।

मुहूर्तमिव च ध्यात्वा तद्वाक्यं प्रविष्टुष्यं च ।

१९] शिष्यमाह स्थितं ऋषेः भारद्वाजमिदं वचः ॥१९॥ [१७

पादैश्चतुर्भिः सहितमिदं वाक्यं समाक्षरैः ।

२०] शोचतोक्तं मया यस्मात्तस्माच्छोको भविष्यति ॥२०॥ [१८

शिष्योऽयं तस्य तच्छ्रुत्वा मुनेर्वाक्यमनुत्तमम् ।

२१] 'तथेति प्रतिजग्राह गुरोः प्रीतिं' प्रदर्शयन् ॥२१॥ [१९

संभाषमाणं एवाथ शिष्येण सहितस्तदा । [N

२२] तमेवं चिन्तयन्नर्थमाभ्रमार्यं न्यवर्तत ॥२२॥ [२०

१. व—मुहूर्तमिह ।

२. ल प्र—तद्व्यात्वा ।

३. ल प्र प भ - वाक्यं तत् ।

४. प्र—परिष्टुष्य ।

५. ज त प—भरद्वाज० ।

६. ज ल प्र प भ—संयुक्तमिदं ।

७. भ—वाक्यैः ।

८. रा—०च्छोको । इत्यस्य पाठः ।

९. प—शिष्योऽपि ।

१०. कै—ब्रूवतो । पश्चादपरहस्तेन विन्यस्तम् ।

११. प—तथाति ।

१२. ल—प्रति० ।

१३. ल प—विदर्शयत् । प्र भ—विदर्शयत् ।

१४. ल प भ—संभाषणात् । ज ट त—संभाषणात्० ।

१५. कै—तमेवं ।

१६. ल—चिन्तयन्नार्थं० । भ—अर्थमुपायात् ।

१७. भ—जाश्रमं श्रुतः ।

- तमन्वयाद् विनीतात्मा भारद्वाजो महार्मतिः ।
 २३] पयःकलशमादायै शिष्यैः परमसंमर्तः ॥२३॥ [२१
 सै प्रविश्याश्रमपदं शिष्येण सह धर्मवित् ।
 २४] उपविष्टस्ततस्तस्मिन् बभूव ध्यानमाश्रितः ॥^० २४॥ [२२
 आजगाम स्वयं ब्रह्मा लोककर्ता ततः प्रभुः ।^०
 २५] तत्रै स्वयंभूर्भगवान् द्रष्टुं तमृषिसत्तमम् ॥^१ २५॥ [२३
 वाल्मीकिरपि तं दृष्ट्वा सहस्रोत्थाय वाग्यतः ।
 २६] प्राञ्जलिः प्रणतो भूत्वा तंस्थौ परमविस्मर्तः ॥२६॥ [२४
 पूजयामास चैवैनं पाद्यार्घ्यासनवन्दनैः ।
 २७] प्रणतो विधिवच्चैनं पृष्ट्वाऽनामयमव्ययम् ॥२७॥ [२५
 अथोपविश्य भगवानासने परमार्चिते ।

१. रा ज त—भरद्वाजो ।

२. ज त ल प्र प भ ट—महाशुनिः ।

३. ल प भ—कलशं पूर्वामादाय । प्र—पूर्वं कलशमा० ।

४. ल—पृष्ठतो मुनिसत्तम । भ—पृष्ठतोऽनुजगाम ह ।

५. ज व ल ट—संप्रवि० ।

६. प्र प—ध्यानमास्थितः ।

७. ल भ—उपविरयासने तृष्णीं ध्यानमेवान्वपद्यत ।

८. ज त प्र प ट—ततो ।

९. ज त प्र प ट—स्वयं ।

१०. ल—आजगामाश्रममथो ब्रह्मा लोकपितामहः ।

भ—अथाजगाम भगवान् ब्रह्मा लोकपितामहः ।

११. ल भ—स्वयं ।

१२. प्र प—बभूवो महातेजाः द्रष्टुं त० ।

१३. ल—तस्मै ।

१४. प्र—०विस्मृतः ।

१५. प—प्रबन्ध ।

१६. रा—परमाचिते । ल—परमोचिते । प्र—परमोचित ।

- २८] वाल्मीकयेऽप्यासनं सं दिदेशानन्तरं ततः ॥२८॥ [२६
उपविष्टे च तस्मिस्तु साक्षाल्लोकपितामहे ।
- २९] तद्गतेनैव मनसा वाल्मीकिर्ध्यानमास्थितः ॥२९॥ [२७
शोचन्निव सं तां क्रौञ्चीं ततः श्लोकमिमं पुनः ।
- ३०] जगादार्तमर्ना भूर्त्वा दुःस्वशोकपरायणः ॥३०॥ [२९
कृतं पापात्मना कष्टं व्याधेनानात्मबुद्धिर्ना ।
- ३१] यत् सुचारुस्वनं क्रौञ्चमवधीदात्मकारणात् ॥ ३१॥ [२८
तमुवाच ततो ब्रह्मा प्रहसन् मुनिसत्तमम् । [३०पृ
- ३२] महर्षे यदयं प्रोक्तस्त्वया क्रौञ्चवधाश्रयः ॥३२॥ [N
श्लोकः स चास्त्वंयं बद्धस्तव वाक्यस्य शोचतः । [३०उ
- ३३] स्वच्छन्दादेव ते ब्रह्मण प्रवृत्तैव सरस्वती ॥३३॥ [३१पृ

१. ज—च । प— सं ।

२. ल प भ—ततस्तस्मिन् ।

३. ल प्र प—सुदुः । भ—मुनिः ।

४. प्र प भ—जगादास्तर्गतमनाः । रा त ट—जगादास्तर्मेना भूर्त्वा ।

ल—जगादान्तः[ः]कृतमनाः ।

५. ल प्र प भ—भूर्त्वा शोकः ।

६. ज त—०नानासु० । प्र—०नानर्थि०० ।

ल—०बुद्धिः । प—निषादेनाल्पबुद्धिना ।

७. ल यत्स कामात्[तु?]ं क्रौञ्चमवधीत्तमकारणम् ।

प—यत्स क्रौञ्चं चारुवमवधीत्तमकारणम् ।

भ—सुषारुचं क्रौञ्चमवधीत्तमकारणम् ।

प्र—०क्रौञ्चमवधीत्तमकारणम् ।

८. प—मुनिपुङ्गवः ।

९. प—यपदं । इत्यसत् पाठः ।

१०. ल प्र भ—श्लोक एवास्त्वंयं ।

११. कौ व भ—स्वच्छन्दाश्चैव । ट—स्वच्छन्दं चैव । त—स्वच्छन्दाश्चैव ।

१२. ल ल प्र प भ ट—प्रवृत्तैव ।

- गमस्य चरितं कृत्स्नं कुरु त्वं मुनिसत्तमं । [३१उ
 ३४] धर्मात्मनो मुणवतो लोके रामस्य धीमतः ॥३४॥ [३२पृ
 वृत्तं प्रथय रामस्य यथा ते नारदाच्छ्रुतम् । [३२उ
 ३५] रहस्यं चै प्रकाशयं च यद् वृत्तं तस्य धीमतः ॥३५॥ [३३पृ
 रामस्य ससहायस्य राक्षसानां च सर्वशः । [३३उ
 ३६] वैदेह्याश्चैव यद् वृत्तं प्रकाशं यदि वा रहः ॥३६॥ [३४पृ
 तच्चाप्यवितर्था सर्वं वेदितं ते भविष्यति । [३४उ
 ३७] सराष्ट्रेण सदारेण राज्ञा दशरथेन यत् ॥३७॥ [N
 आसितं भाषितं चैव गतं यच्चाप्यनुष्ठितम् । [३४उ
 ३८] यच्चाप्यविदितं किञ्चिद् विदितं ते भविष्यति ॥ ३८ ॥ [N

१. वृ ट त ल प्र प भ—ऋषिसत्तम ।

२. ल—छोके वामस्य । प्र—छोकरामस्य । प भ—छोके रामस्य ।

३. प—यदा ।

४. प्र—रहस्यैव ।

५. ज ट त प्र भ—प्रकाशं ।

६. ल—वार्तातं ।

७. कै—प्रकारयं ।

८. कै—तथाप्य० ।

प्र भ—तच्चाप्यविदितं सर्वं । प—यद्वाप्यविदितं किञ्चिद् ।

९. प्र प भ—विदितं ।

१०. प—अयं श्लोकार्थः ३८ श्लोकस्योत्तरार्धेन संबद्धः ।

११. ल प्र प भ—सदारेण सराष्ट्रेण ।

१२. प—च ।

१३. ट—नास्ति ।

१४. ल भ—मतं । प—मन्त्रं ।

१५. प—चाप्यनुष्ठितं ।

१६. ट नास्ति ।

१७. ट—तथाप्य० ।

१८. प्र—सर्वं विदितमेतत्ते मन्त्रसादा [इ] भविष्यति ।

न ते वागनृता काचिदत्र काव्ये भविष्यति ।^२

३९] कुहं रामकथं पुण्यां श्लोकवद्धां मनोरमाम् ॥३९॥ [३५

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले ।

४०] तावद् रामायणकथा लोकेषु विचरिष्यति ॥४०॥ [३६

यावद्रामस्य च कथा त्वत्कृतां प्रचरिष्यति ।^५

N] तावदूर्ध्वमधश्च त्वं मल्लोके विचरिष्यसि ॥४१॥ [३७

इत्युक्त्वा भगवान् ब्रह्मा तत्रैवान्तरधीयंतं ।

४१] ततः सशिष्यो वाल्मीकिर्विस्मयं परमं ययौ ॥४२॥ [३८

तस्यै शिष्यास्तंतैः सर्वे गुणैः श्लोकमिमं तदा ।

४२] मुहुर्मुहुः प्रीयमाणाः प्राहुश्च भृशविस्मिताः ॥४३॥ [३९

समाक्षरैश्चतुर्भिर्यः पादैर्गीतो महात्मना ।

१. भ—कार्थे ।

२. ट—नास्ति ।

३. रा—कृते ।

४. प—००ष्वमक० ।

५. ल प्र प भ—प्रचरिष्यति ।

६. ज त ल ट—यावच्च रामस्य क० ।

भ—यावद्रामायणकथा । रा—सराष्ट्रेण सवारेण ।

७. ज त—त्वत्कथा ।

८. प—नास्ति ।

९. ज त ल प भ ट—मल्लोकेषु । प्र—स्वर्गलोके ।

१०. ट—चरिष्यति । ज—विचरिष्यति । ल प्र प भ—निवस्यसि ।

११. प्र—००रधीयते ।

१२. त—सहायो ।

१३. भ—ततः शिष्यास्तस्य ।

१४. प्र प भ—जगुः । ल—जंतुः (जगुः?) ।

१५. प्र—००रैवतुर्भिः ।

१६. स ल—महात्मनः ।

- ४३] सोऽनुव्याहरणाद् भूयः श्लोकःश्लोकत्वमागतम् ॥४४॥ [४०
 तस्य बुद्धिरभूत्तत्र वाल्मीकेरथं धीमर्तः ।
 ४४] कृत्स्नं रामायणं श्लोकैरीदृशैः करवाप्यहम् ॥४५॥ [४१
 धर्मकामार्थसंबद्धं बहुचिन्तार्थविस्तरम् ।
 ४५] समुद्रमिव रम्यार्थं श्लोकेष्वतिरसायणम् ॥४६॥ [N
 उदारवृत्तार्थपदैर् मनोरमैस्ततः स रामस्य चकार कीर्तिमान् ।
 ४६] समाक्षरैःश्लोकेऽशतैर्यशस्विनो यशस्करं काव्यमुदारमग्र्यंधीः॥४७
 इत्थार्थं रामायणे आदिकाण्डे ब्रह्माग्मनं नाम द्वितीयः सर्गः ॥२॥

१. के रा व-ऽनुव्याहरणात् । २. प्र प भ-०मागतः । ३. प-०केर्भावितात्मनः ।
 ४. प-श्लोकैरीदृशं, अतः परमधिकः पाठः—
 कृत्स्नं रामायणं काव्यमेव वै प्रकरोम्यहम् ।
 जगौ स भगवान् कृत्स्नमेतद्वीचं निशाम्य वै ॥
 ५. करवाप्यं । इत्यपपाठः । ६. प्र प भ—रत्नाब्जं ।
 ७. ज-श्लोकैः अतिरसायणं ।
 त ल भ ट-श्लोकेऽतिरसायणम् । प्र प-श्लोकश्लोकायणम् ।
 ८. ल-उदर्थवृत्तार्थप० । प्र-उदारवृत्तानुप० । प-उदानवृत्तार्थप० ।
 रा-उदारवृत्तान्तप० । ९. ल प्र प भ-मनोहरैः । १०. भ-कीर्तनं ।
 ११. प्र-श्लोकपदैर्य० ।
 १२. ल प भ-०मुदारधीमुनिः । प्र-०मुदारधीः परं । रा-०मग्रधीः ।
 १३. ग ज त-रामायणं बाल्मीकीये आदिकाण्डे चतुर्विंशतिसाहस्र्यां संहितायां ।
 ट-रामायणे बाल्मीकीये चतुर्विंशतिसाहस्र्यां संहितायां ।
 प-बाल्मीकीये रामायणे ।
 १४. ज प-बाह्यकाण्डे । प्र-नास्ति ।
 १५. ल-ब्रह्माग्मनं नाम । प्र-नास्ति ।
 १६. व त भ-सर्गः ।

[वं=४]

[तृतीयः सर्गः]

[दा=४]

प्राप्तराज्यस्य रामस्य बाल्मीकिर्भगवानृषिः ।

१] चकार चरितं चित्रं विचित्रपदमर्यवत् ॥१॥ [१

पवित्रं वैष्णवं दिव्यमिदमाख्यानमुत्तमम् ।

२] वेदैश्चतुर्भिः समितमितिहासं पुरातनम् ॥२॥ [N

श्रावयामास वै विमान् सुव्रतान् नियतेन्द्रियान् ।

३] धौम्यमाण्डव्यकुशिकान् सष्टिष्णेनान् सकोहलान् ॥३॥ [N

तौ तु चेद्वशाकुदार्यादौ मुनिर्वैशौ कुशीलवौ ।

४] धैर्यं यज्ञस्यमायुष्यं परं स्वस्त्ययनं महत् ॥४॥ [N

कृतां च तत्वंतः कीर्तिं^२ राघवस्य महत्स्मनः ।

५] इहैवार्थश्च धर्मश्च निखिलेनोपपद्यते ॥^१५॥ [N

१. ल—बाल्मीकिम्भ० ।

२. रा—०मुत्तमः । इत्यसत् पाठः ।

३. ज—समित० । ट प्र भ—सहित० ।

४. ल—साहिषेणान् । रा—सष्टिषणे० ।

प्र—सर्विषसेवान् । प भ—साहिषे० ।

५. प्र—सकोशकान् । भ—सकोसकान् ।

६. ल—भाष वैष्वाकु० । प रा—तौ चेद्वेष्वाकु० ।

प्र—तौ चेद्वेष्वाकुदासदा ।

७. प्र—मुनिवेशो । ज—मुनिर्वैशौ ।

८. क—धाम्यं ।

९. ल प्र प भ—स्वर्यं ।

१०. रा ज ब ट त—कृतं । ल प्र प—कृता । भ—कृत्वा ।

११. ज ब ट त—तन्वता । भ—तद्वतः ।

१२. ल—कीर्तिं । प्र प—कीर्तिः ।

१३. भ—कामश्च ।

१४. ट—व्यवनीतिश्च वर्तते । त ०केनोपलभ्यते ।

प्र—कामश्च परिकीर्तितः ।

१५. प—इहैवार्थश्च निखिलो धर्मश्चैवोपलभ्यते ।

- दण्डनीतिश्च विपुला अयीवार्ता च कृत्स्नसः ।'
 ६] य इदं शृणुयान् नित्यं यश्चेदं परिकीर्तयेत् ॥६॥ [N
 इह भोगान् वरान् प्राप्य देवैर्गच्छति तुल्यताम् ।
 ७] इक्ष्वाकूणामिदं चैव जनकस्य च धीमतः ॥७॥ [N
 पुलस्त्यस्य च देवर्षेः कीर्तनं समुदाहृतम् ।
 ८] अश्वमेधावसानेऽस्यै राघवस्य महात्मनः ॥८॥ [N
 कथितं पुष्टिजननमिदमाख्यानमादितः ।
 ९] अत्र धर्मार्थसंयुक्तं पापानां नाशनं शुभम् ॥९॥ [N
 आदिकाण्डंमिदं प्रोक्तं विस्तरश्चास्यं कथ्यते ।
 १०] प्रथमं नारदप्रश्नो नदीगमनमेव च ॥१०॥ [N
 पृ११] ब्रह्मणो दर्शनं चैव वरप्राप्तेश्च वर्णनम् ।'^x

१. ट—नास्ति ।
 २. अ—यश्चैनं ।
 ३. ट—परिकल्पयेत् । ल—परिकीर्तितम् ।
 ४. प—रम्यं ।
 ५. त ल प्र प भ ट—च ।
 ६. ल प—पुष्टि० । प्र—तुष्ट० ।
 ७. ल—यत्र धर्मा० । प—सर्वधर्मा० । प्र—धर्मकार्थं० ।
 ८. प—पावनानां च । ल—पापानां पावनं ।
 ९. प—पावनम् ।
 १०. ल प—०काण्डमिह ।
 ११. रा भ—विस्तारश्चा० । प्र—विस्तार चा० ।
 १२. प—बाल्मीके ।
 १३. रा—नारदं प्रश्नो । प्र—नारदः प्रश्नो ।
 १४. ल प्र प भ—वरप्राप्तिश्च पुष्कला ।
 १५. ल प्र प भ—अतः परमधिकः पाठः—
 स्त्रोकानां परिमाणं च यत्रैतत् परिकीर्तयेत् ।
 अयोध्यावर्णनं चैव राज्ञो दशरथस्य च ।
 अमात्यवर्णनं चैव कौसल्यायाश्चवर्णनं ।
 कै—उत्तरपार्श्वे पुनर्विम्बासः ।

पुत्रार्थं च नरेन्द्रस्य मन्त्रेण समुदाहृतम् ।

१३] अश्वमेधक्रिया चैव वरप्राप्तिश्च पुष्कलां ॥१३॥ [N

भागार्थिनां च देवानामागमः परिकीर्तितैः ।

१४] रावणस्य बधोपाये मन्त्रोऽर्थे परिकीर्तितैः ॥१४॥ [N

दिव्या च पायसोत्पत्तिः पुत्रजन्म नृपस्य च ।

१५] अंशावतरणं चैव सुराणां समुदाहृतम् ॥१५॥ [N

कौसल्यायां च रामस्य कैकेय्यां भरतस्य च ।

१६] यमयोश्च मुमित्रायां संभवंः समुदाहृतैः ॥१६॥ [N

वानराणां च सर्वेषामुत्पत्तिः परिकीर्तिता ।

१७] ततो दशरथस्येह विश्वामित्रेण सङ्गमः ॥१७॥ [N

प्रदानं चैव रामस्य रक्षेणं च महाक्रतौ ।

१८] लक्ष्मणानुगमश्चैव विद्याप्राप्तिश्च पुष्कलां ॥१८॥ [N

१. कै ल रा—मन्त्रेण । प्र प भ—मन्त्रणं । ज ब ट त—सत्रेण ।

२. ल—वरप्राप्तिस्तु पुष्कला । प—राज्ञो दशरथस्य च ।

३. ल प भ—समुदाहृतः ।

४. भ—बधोपायमन्त्रणं । ट त—बधोपाये मन्त्रणं ।

प्र प—बधोपायमन्त्रणं । ल—समुदाहृतम् ।

५. त ट—समुदाहृतः । ल प्र प भ—समुदाहृतम् ।

६. ल—चात्र । प—वापि ।

७. ट—नास्ति ।

८. प्र प भ—कौश० ।

९. ल—संभवा ।

१०. ल—समुदाहृतम् ।

११. ल प्र प भ—राज्ञो ।

१२. ज त ल प भ—रक्षणां । प्र—रक्षणां ।

१३. प्र—महाक्रतौ ।

१४. त—०बाहुगतस्यै० ।

अनङ्गाश्रमवासश्च ताटकावनदर्शनम् ।

१९] ताटकांनिधनं चैवं असलामश्च कीर्त्यते ॥१९॥ [N

सिद्धाश्रमनिवासश्च सन्नरक्षणमेव च ।

२०] सुबाहोर्मरणं चात्रं मारीचस्य च भर्त्सनम् ॥२०॥ [N

विश्वामित्रस्य चैर्वर्षेः स्ववंशपरिकीर्तनम् ।

२१] गङ्गायाः संभवश्चैवं पवित्रः परिकीर्तितः ॥२१॥ [N

दिव्यगर्भावर्पतनं कार्तिकेयस्य संभवः ।

२२] विशालस्य च राजर्षेर्धर्मस्यं परिकीर्तनम् ॥२२॥ [N

अहल्याशापनिर्मोक्षो मिथिलार्याश्च दर्शनम् ।

२३] दर्शनं यज्ञवाटस्य मैथिलस्य च दर्शनम् ॥^३२३॥^४ [N

चैरितं चैव कात्स्न्येन कौशिकस्य महात्मनः ।

२४] कथितं चात्र रामस्य शतानन्देन धीमता ॥२४॥ [N

धनुषो भेदनं चैव कन्यायाश्च निवेदनम् ।^५

१. ल—ताराकावनद० । प्र प भ—ताडकावनद० ।

२. ज—ताटकायारश्च निधनं । ल—ताराकायारश्च निधनं ।
त प्र प भ—ताडकायाश्च निधनं ।

३. ज त ल प भ—०निधनं ।

४. रा प्र—चैव ।

५. भ—भर्त्सनां ।

६. रा त ल भ—देवर्षेः । प्र—राजर्षेः ।

७. ल प्र प भ—प्रभवश्चैव ।

८. प्र—०गर्भावतरणं ।

९. ल—देवर्षेर् ।

१०. ल प्र प भ—वंशस्य ।

११. ज त ल प्र प भ—०ज्ञापमोक्षश्च ।

१२. के रा व—मैथिलस्य च ।

१३. के रा व—नास्ति ।

१४. प—नास्ति ।

१५. के व—द्वयानं ।

- २५] राज्ञो दशरथस्येह जनकस्य च सङ्गमः ॥२५॥ [N
सीतादीनां च कन्यानां विवाहः समुदाहृतः ।
- २६] वैघृर्गृहीत्वा नृपतेर्यानि दशरथस्य च ॥२६॥ [N
समागमश्च रामस्य जामदग्न्येन धीमता ।
- २७] जामदग्न्यस्य लोकानां वधश्चै पैरिकीर्तितः ॥२७॥ [N
अयोध्यासंप्रवेशश्च प्रवासो भरतस्य च ।
- २८] अयोध्यावासिनां चैव प्रमोदः परिकीर्त्यते ॥२८॥ [N
इत्येतत् प्रथमं काण्डमादिकाण्डमिहोच्यते ।
- २९] सर्गाश्चैव चतुःषष्टिः श्लोकानां चैव कीर्त्यते ॥२९॥ [N
द्वे सहस्रे शतान्यष्टौ श्लोकाः पञ्चाशदेव तु ।
- ३०] बालचर्या च यत्रोक्ता राघवस्य महात्मनः ॥३०॥ [N
N] काण्डः १. श्लोकाः २८५० सर्गाः ६४ ॥ [N
अतः परं द्वितीयं तु अयोध्याकाण्डसंज्ञितम् ।
- ३१] यत्राभिषेकसङ्कल्पो व्याघातश्चैव वर्यते ॥३१॥ [N

१. ल—सम्भवः । इत्यपपाठः ।

२. रा व—वधुं ।

३. ज त ल प भ—वधरचात्रानुकीर्तितः ।

प्र—रोषस्य परिकीर्तिताः ।

४. ल प भ—परिकीर्तितः ।

५. प—०काण्डमिहोच्यते ।

६. ट—सर्गारचात्र । प—सर्गाना[जां] च ।

७. ट प्र—चात्र ।

८. ल प्र प भ—हि ।

९. प्र प भ—तद् ।

१०. ज ल ल प्र प भ ट—कीर्त्यते ।

कैकेय्यनुनयंश्चैव शोको दशरथस्य च ।

३२] वनप्रयाणं रामस्य लक्ष्मणानुगमस्तदा ॥३२॥ [N

विषादः प्रकृतीनां च तथैव च विसर्जनम् ।

३३] निषादाधिपसंवासैः सूतस्यै च विसर्जनम् ॥३३॥ [N

गङ्गायाश्चाभिसन्तारो भारद्वाजस्य दर्शनम् ।

३४] वास्तुकर्मनिवेशश्च चित्रकूटे महागिरौ ॥३४॥ [N

उपावृत्ते सुमित्रे चैव राज्ञो मोहागमः पुनः ।

३५] स्वशापकथनं चैव स्वर्गप्राप्तिर्नृपस्य च ॥३५॥ [N

भरतागमनं तूर्णं तथा राजगृहादपि ।

३६] रामप्रसादनं चार्थं भरतस्यै महात्मनः ॥३६॥ [N

गमनं कीर्त्यते चैव भारद्वाजस्यै चाश्रमे ।^३

३७] दर्शनं चैव रामस्य पितुश्च सलिलाक्रिया ॥३७॥ [N

१. कै रा त—कैकेय्यानुन० । ल—कैकेय्यधनय० ।

ज प्र—कैकेय्यमुन० । प—कैकेय्यनुमतरचैव ।

२. ल प भ—०णानुगतिस्तथा । रा ज त प्र ट—०णानुगमस्तथा ।

३. ज त ल प्र प भ—०पसंवादः ।

४. ल—नास्ति ।

५. ल प्र भ—अतः परमधिकः पाठः—

भरद्वाजाभ्यनुज्ञानाच्चित्रकूटस्य दर्शनम् ।

६. कै—सुमित्रे ।

७. रा—तु ।

८. ल प भ—परः । ट—ततः ।

९. ज त ट—रामप्रसादनार्थं च । ल प्र प भ—रामप्रसादनार्थं च ।

१०. ट—भरतागमनं तथा ।

११. ल प्र प भ—वालो ।

१२. रा व ज प्र प ट—भरद्वाजस्य ।

१३. ट—नास्ति ।

- ३८] प्रसादनं च रामस्य बहुशः परिकीर्त्यते ।
जात्रालेर्यत्र वाक्यानि वामदेवस्य चोभयोः ॥३८॥^१ [N
- ३९] इक्ष्वाकूणां च वंशस्य कीर्तनं समुदाहृतम् ।^२
प्रतिज्ञां चैवं रामस्य गमने कोसलान् प्रति ॥३९॥ [N
- ४०] पादुकाहरणं चैवं भरतस्य विसर्जनम् ।
नन्दिग्रामप्रवेशश्च मातृणां च विसर्जनम् ॥४०॥^३ [N
- ४१] अयोध्यासंप्रवेशश्च शत्रुघ्नस्य महात्मनः ।
काण्डं द्वितीयमित्युक्तमयोध्याकाण्डसंज्ञितम् ॥४१॥ [N
- ४२] अशीतिः संख्यया सर्गाः श्लोकानां चात्र कीर्त्यते^४ ।
त्रीणि श्लोकसहस्राणि नव श्लोकशतानि च ।
- ४३] श्लोकानां द्वे शते चैव पुनैः श्लोकाश्च सप्ततिः ॥४२॥ [N
N] काण्डैः २ सर्गाः ८० श्लोकाः ४१७०^५ ॥^६ [N

१. ज त ल प भ—परिकीर्तितं । ट—परिकीर्तितः ।
२. ल भ—रामदेवस्य चो० । इत्यपपाठः । ट—वंशस्य कथनं तथा ।
३. प्र—नास्ति ।
४. ट—नास्ति ।
५. ल प भ—अप्रतिज्ञा च । प्र—स्वप्रतिज्ञा च ।
६. ल—धर्मस्य ।
७. भ—चापि ।
८. कै—भरतस्यागमः पुनः ।
९. त—नास्ति ।
१०. ल—अतः परमधिकः पाठः—
प्रसादनं च रामस्य बहुशः परिकीर्तितम् ।
११. ल—संख्या ।
१२. ट—कीर्तनम् ।
१३. ल प्र प भ—भूयः ।
१४. त—अयोध्याकाण्डः ।
१५. त—४१७० ।
१६. ल प्र प भ ट—नास्ति ।

अतः परं' तृतीयं तु आरण्यकमिति स्मृतम् ।

४४] यत्र रामो महाबाहुर्दण्डकं प्राविशद्वनम् ॥४३॥ [N

अनसूयासमस्यां चाप्यङ्गरागस्यं चार्पणम् ।

४५] विराधदर्शनं चैव वधश्च समुदाहृतः ॥४४॥ [N

ऋषीणां दर्शनं चैव मैथिल्याश्चैव सान्त्वनम् ।

४६] शरभङ्गाश्रमप्राप्तिर्महेन्द्रस्यं च दर्शनम् ॥४५॥ [N

सुतीक्ष्णाश्रमसंप्राप्तिः संवादः सह सीतया ।

४७] मन्दकर्णेश्च कथितं शक्रस्यं च विसर्जनम् ॥४६॥ [N

इल्वलस्यं च संवादः कीर्तनं च दुरात्मनः ।

४८] अगस्त्याश्रमवासश्चैव तथो संपरिकीर्तितः ॥४७॥ [N

दर्शनं पञ्चवत्यास्तुं जटायोश्चैव दर्शनम् ।

१. ल भ—काण्डं । प्र प—काण्ड० ।

२. ट—०र्षकात् ।

३. ल प्र प—अनुसूया० । ट—०वासमस्यां ।

४. ट प्र प—च अङ्गरागस्य ।

५. ट—नास्ति ।

६. भ—वैदेह्याश्वापि । ल प्र—मैथिल्याश्वापि ।

७. ट—शरभङ्गाश्रमे वासं वासवस्य ।

८. ल—सुतीक्ष्णस्याश्रमप्राप्तिः । भ—सुतीक्ष्णस्याश्रमप्राप्तिः ।

९. प्र प—यत्र शक्रवि० । रा ल—यत्र शत्रुवि० ।

१०. रा—इल्वलस्य ।

११. रा—०श्रमसंवासः ।

१२. ट—अगस्त्याश्च विसर्जनम् ।

१३. ज त ल प्र प भ—पञ्चवत्याश्च ।

१४. ट—समागमं कथंवेन वासं पञ्चवटे तथा ।

- ४९] जनस्थाननिवासश्च शिशिरस्य च वर्णनम् ॥'४८॥ [N
 स्मरणं भरतस्यार्थं कैकेय्याश्चैव गर्हणम् ।'
 ५०] संवादैः मूर्पणखर्या विरूपकरणं तथा ॥४९॥ [N
 खरस्य च वधो घोरो दूषणत्रिशिरोवधः ।'
 ५१] लङ्काप्रवेशो राक्षस्याः शूर्पनख्याः प्रकीर्तितः ॥'५०॥ [N
 सीताया लोभनं चैव रावणस्यानुशब्दितम् ।
 ५२] मारीचाश्रममंप्राप्ती रावणस्य दुरात्मनः ॥५१॥' [N
 मारीचश्च मृगो भूत्वा वैदेहीं समलोभयत् ।
 ५३] लोभयित्वा च वैदेहीं राघवस्यापकर्षणम् ॥५२॥' [N
 मारीचस्य वधश्चैव लक्ष्मणस्य विगर्हणम् ।'
 ५४] सीतायां हरणं चैव सौमित्रेश्चात्र सङ्गमः ॥५३॥' [N

१. ट—नास्ति ।

२. प—भरतस्यापि ।

३. ट—हासः ।

४. ल प भ—शूर्पनख्याश्च । ट—शूर्पनखायाश्च । कै रा ज व त—० नखया ।

५. ज त—खरदूषणयोश्चैव वधश्चिशिरस्तथा ।

ट—वधं खरात्रिशिरसोः कथनं रावणस्य च ।

६. प्र—रावणस्य च वा० ।

७. ज त—राघवस्याभिक० ।

८. भ—लक्ष्मणस्यापकर्षणम् ।

०स्यापगर्हणमिति दृष्टिगोपार्थे पुनर्विन्ध्यस्तः पाठः ।

९. ज—नास्ति ।

१०. प—सीताप्रहरणं ।

११. ज त ल—संकररश्च महात्मनः ।

व रा—सत्काररश्च महात्मनः । प—लक्ष्मणस्य च संगतः ।

१२. ट—मारीचप्रायनाशं च वैदेहीहरणं तथा ।

प्र प भ—भतः परमधिकः पाठः—

जटायुषो वधश्चासीत् सीतायारश्च प्रदेशनम् ।

लक्ष्मणस्य च संवादो रावणेन महात्मना ॥

कै—उत्तरपार्थे पुनर्विन्ध्यासः ।

हृतां च जानकीं मत्वा विलापो गघवस्य च ।

५६] जटायोर्दशनं चैव सत्कारश्च महात्मनः ॥ ५४ ॥^१ [N

गृध्रराजस्यै रामेण कृता चैव जलक्रिया ।

५७] कबन्धस्य बधः प्रोक्तः स्वर्गप्राप्तिस्तु पुष्कला ॥ ५५ ॥ [N

कबन्धस्य च वाक्येन सुग्रीवान्वेषणं परम् ।

५८] शवरीदर्शनं चैव पंपायां परिदेवनम् ॥ ५६ ॥^२ [N

इति कोण्डं तृतीयं तु आरण्यकमिति स्मृतम् ।

५९] सर्गाणां तु शतं चैव सर्गाश्चैव चतुर्दश ॥ ५७ ॥ [N

चत्वारिह सहस्राणि श्लोकानां कथितानि वै ।

१. ट—जटायोर्निधनं चैव विलापो राघवस्य च ।

२. ट—नास्ति ।

३. ज त भ—नास्ति ।

४. ज त—जगराजस्य । प्र—गजराजस्य ।

५. कै—अजलिक्रियेति शोभितः पाठः ।

६. ज त प्र प भ—० प्राक्षिश्च ।

७. ट—कबन्धदर्शनं [चैव] कबन्धस्य बधं तथा ।

८. ज त—ततः ।

९. ट—शवरीं व० ।

१०. ज त ट—पंपायाः ।

११. रा प—परिदेवनम् ।

ज त—चैव दर्शनम् । ट—दर्शनं तथा ।

१२. ट—अतः परमधिकः पाठः—

विलापं चैव पंपायां राघवस्य महात्मनः ।

१३. रा प्र प—काण्डपूर्वीं ।

१४. प—उद् ।

१५. ज त प्र ट—च ।

१६. ज त प्र प भ ट—कीर्तितानि च ।

- ६०] शतं चैवात्र विज्ञेयं श्लोकाः पञ्चाशदेवं तु ॥५८॥ [N
 N] काण्डः ३ सर्गाः ११४ श्लोकाः ४१५०^३ ॥^३ [N
 अतः काण्डं चतुर्थं तु कैष्किन्धिकमिति स्मृतम् ।
- ६१] ऋष्यमूर्कगिरिप्राप्ती राघवस्यै महात्मनः ॥५९॥ [N
 हनुमदर्शनं चैव संवादश्चात्रं कीर्त्यते ।
- ६२] आरोहणं च शैलस्य ऋष्यमूकस्य कीर्तितम् ॥६०॥^४ [N
 रामसुग्रीवंसेख्यं च वालिपौरुषकीर्तनम् ।
- ६३] सप्ततालविमेदश्च प्रत्ययोत्पादनं तथैव ॥६१॥^५ [N
 वालिसुग्रीवयुद्धं चैव वालिनो वध एव च ।^५
- ६४] अन्तःपुरविलापश्च ताराकारुण्यमेवं च ॥६२॥^६ [N

१. त—पञ्चदशेव ।

२. त-४१५० ।

३. ल प्र प भ—नास्ति ।

४. ज त ट—अतः परं प्रवक्ष्यामि ।

प्र—चतुर्थं तु ततः काण्डम् ।

५. कै व ल—कैष्किन्धिक० । प—कैष्किन्धिकमिति संज्ञितम् ।

ट प—कैष्किन्धिकाण्डसंज्ञितम् । प्र—कैष्किन्ध्यां परिकीर्त्यते ।

६. ट—ऋष्यमूकानिगमनं ।

७. ज—रामस्य च । ट—सुग्रीवेण ।

८. ट—समागमः ।

९. प्र प भ—•हरचैव ।

१०. ट—नास्ति ।

११. कै—•सख्यं ।

१२. कै—हरेः ।

१३. ट—प्रत्ययोत्पादनं सख्यं वाक्सुग्रीवविग्रहम् ।

वाक्सुग्रीवविग्रहं राज्ये सुग्रीवप्रतिपादनम् ॥

१४. प्र—पु ।

१५. कै—•प्य एव ।

१६. ट—ताराविलापसमनं वर्षरात्रिनिवासनम् ।

मुग्रीवस्याभिषेकश्च करणं चाश्रमस्य च ।

६५] विलापो राघवस्यात्र लक्ष्मणेन च सान्त्वनम् ॥६३॥^१ [N

प्राहृद्विलापश्चैवात्र शरद्वर्णनमेव च ।

६६] विलापश्चैव शरदि समयस्य च लंघनम् ॥६४॥^२ [N

मुग्रीवं प्रति रामस्य कोपो यत्र च कीर्तितः ।

६७] रामस्य कोपं विज्ञाय लक्ष्मणस्यै च संभ्रमः ॥६५॥^३ [N

प्रैशमो लक्ष्मणस्वाथ दौत्येन गमनं तथा ।

६८] मुग्रीवस्य यथा चात्र गमनं राघवाश्रमे ॥६६॥^४ [N

प्रैसादनं च रामस्य वानराणां च संग्रहः ।

६९] पृथिव्या वर्णनं सर्वं मुग्रीवेण महात्मना ॥^५ ६७॥ [N

प्रस्थापनं वानराणामङ्गुलीयस्य चार्पणम् ।

७०] हनुमत्प्रभृतीनां च विन्ध्यपर्वतलंघनम् ॥६८॥^६ [N

१. प्र—बाह्विपुत्रसमर्पणम् ।

२. ट—नास्ति ।

३. ट—नास्ति ।

४. ज त प भ—प्रकीर्तितः ।

५. प—लक्ष्मणेन ।

६. ट—कोपं राघवसिंहस्य बालानामुपसंग्रहं ? ।

७. प्र—प्रेषणं ।

८. त प्र प—तथा ।

९. प भ—०श्रमम् ।

१०. ट—नास्ति ।

११. त—प्रसादेन ।

१२. ज त—सङ्गमः ।

१३. ज त—वरणं ।

१४. ज त प्र प भ—शैव ।

१५. ट—विष्णु प्रस्थापनं शैव पृथिव्याश्च निवेदनम् ।

स्वर्यप्रभागुहायाश्च प्रवेश इह कीर्तितः ।^{१५}

७१.] अपवृत्तौ च वैदेह्या विषाद्गमनं महत् ॥६९॥ [N

प्रायोपवेशनं चात्र वानराणां महात्मनाम् ।

७२.] दर्शनं चात्रै सम्पातेर्गृध्रराजस्य धीमतः ॥७०॥^{१६} [N

N] निवेदनं च लङ्काया गृध्रराजेन धीमता ।

चतुर्थमेतत् काण्डं तु कैष्किन्धिकमिति स्मृतम् ॥७१॥ [N

७३.] सर्गाश्चैवात्रविज्ञेयाश्चतुःषष्टिस्तु संख्ययां ।

श्लोकानां द्वे संहस्रेण अष्टौ श्लोकशतानि च ।

७४.] श्लोकानां च शतं ज्ञेयं पञ्चविंशतिरेव चं ॥७२॥ [N

N] काण्डः ४ सर्गाः ६४ श्लोकाः २९२५ ॥^{१७} [N

अतः परं प्रवक्ष्यामि काण्डं सुन्दरसंज्ञितम् ।

१५. ट- अङ्गकीयप्रदानं च तथैव विखदर्शनम् ।

१. प्र-गुहायाम् ।

२. ज त प्र- परिकीर्तितः । प-इह कीर्त्यते ।

३. भ-चैव ।

४. ट-प्रायोपवेशनं चैव सम्पातेरथैव दर्शनम् ।

५. त-निदर्शनं ।

६. ज त ट-कीर्तितम् ।

७. प-चै ।

८. व-कैष्किन्दिक० । ज त प्र भ-कैष्किन्धिक० ।

ल-किष्किन्दि० । प ट-किष्किन्दि० ।

९. ज त ल प्र प भ ट-संज्ञितम् ।

१०. ज त ल-संज्ञया ।

११. ज व त ल प भ ट-सहस्रे च ।

१२. रा-वा ।

१३. प्र प भ - नास्ति ।

- ७५] हनुमत्प्लवनं यत्र सुरसायाश्च दर्शनम् ॥७३॥ [N
 मैनाकस्य गिरेश्चैव दर्शनं परिकीर्तितम् ।
- ७६] निधनं सिंहिकायाश्च लङ्कादर्शनमेव च ॥७४॥ [N
 प्रवेशश्चैव लङ्कार्या वर्णनं विचयस्तथा ।
- ७७] मार्गणं चैव वैदेह्या रावणान्तःपुरे शुभे ॥७५॥ [N
 N] दर्शनं पुष्पकस्येह आपानस्यं च दर्शनम् ।^१
 दर्शनं राक्षसेन्द्रस्य रावणस्य दुरात्मनः ॥७६॥ [N
- ७८] विचर्यः पुष्पकस्येह जानक्याश्चैव मार्गणम् ।
 अदर्शने च वैदेह्याः शोकोपगमनं तथा ॥७७॥ [N
- ७९] प्रविश्याशोकवनिकां वैदेह्याश्चैव दर्शनम् ।
 प्रवेशो रवणस्येह रक्षसः प्रमदावनम् ॥७८॥ [N
- ८०] प्रलोभनं च सीताया रावणस्य च भर्त्सनम् ।

१. ल—हनुमत्प्लवनं । कै—०.प्लवनं । रा—०.मल्लबन्धं ।
 २. ज त प्र ट—चैव ।
 ३. ल—स्वरसायाश्च । ज त ट—सिंहिकायाश्च ।
 ४. प्र—मैनाकस्य ।
 ५. व—प्रवेश एव ।
 ६. प्र—लङ्कार्या ।
 ७. कै—विजय० । प्र—निचय० ।
 ८. ट—नास्ति ।
 ९. व रा ल—रक्षसां प्रमदावनम् ।
 १०. ट—नास्ति ।
 ११. ज त—प्रवेशः । ट—प्रवेशे ।
 व रा ल—नास्ति । कै—दक्षिणपार्श्वे अपरहस्तेन पुनर्विन्ध्यासः ।
 १२. प्र—निचयः । भ—विजयः ।
 १३. प्र—अदर्शनं च । ज त ट—अदर्शनेन ।
 १४. कै—राक्षसेन्द्रस्य ।
 १५. प्र—०.दावने ।

- पृ८१] तर्जनं राक्षसीनां च हनुमदर्शनं तथा ॥७९॥^१ [N
 चूडामणिप्रदानं च प्रतिसन्देश एव च ।
 ८२] वनप्रभङ्गः क्रूराणां राक्षसीनां च गर्जनम् ॥८०॥ [N
 पृ८३] किंकराणां वधश्चैव मन्त्रिपुत्रवधस्तथा ।^२
 कीर्तितं दुर्गयुद्धं च हनुमन्मेघनादयोः ॥८१॥^३ [N
 ८४] ब्रह्मास्त्रेण च बन्धो वै^४ मारुतेः परमाद्भुतः ।
 निवेदनं च दूतस्य भर्त्सनं च हनूमतः ॥८२॥^५ [N
 ८५] लोङ्गलोद्दीपनं चैव लङ्कादाहस्तयैव च ।^६
 सीताया हर्षणं भूयः प्रत्यागमनमेव च ॥८३॥ [N
 ८६] जाम्बवत्प्रमुखैश्चैव हरिभिः सहै संगमैः ।
 तथा मधुवनप्राप्तिर्मधुनां च विलोपनम् ॥८४॥ [N

१. भ—तर्जितं । प्र—गर्जितं ।

२. ब—राक्षसानां ।

३. ट—वास्ति ।

ज त प्र प भ—असः परमधिकः पाठः—

अभिज्ञानप्रदानं च सीतासम्भ्रायणं तथा ।

४. ज रा त प्र प भ—राक्षसानां ।

५. ज त प्र भर्त्सनम् । प भ—तर्जनम् ।

६. ट—मणिप्रदानं सीताया वनभङ्गं तथैव च ।

७. रा—किंकरीयां ।

८. ट—राक्षसीविद्रवं चैव किंकराणां वधं तथा ।

९. ज त प्र प—दुर्गयुद्धं ।

१०. रा—संबन्धो । प—०स्य ।

११. ट—ग्रहणं वानरभेद्रस्य लङ्कादाहाभिभवंनम् ।

१२. त प भ—०कवीपनं ।

१३. ज त प्र प भ—दर्शनं ।

१४. प—सङ्गमस्तथा ।

१५. ज त—विभुंठनम् । ब—विद्योभनम् । प—विद्योपवनम् । भ—विज्ञापनम् ।

- ८७] दर्शनं देवमार्गस्य मङ्गो मधुवनस्य च ।
अंगदप्रमुस्वानां च हरीणां रामदर्शनमे ॥८५॥ [N
- ८८] हनूमतः परिष्वंगो राघवेण महात्मना ।
प्रवृत्तिश्चैव सीताया मणिदानं तथैव च ॥८६॥ [N
- ८९] लंकाया दर्शनं चैव दर्शनं रावणस्य च ।
सीताया दर्शनं चैव प्रतिसन्देश एव च ॥८७॥ [N
- ९०] दुर्गकर्षविधानं च राक्षसानां विचेष्टितम् ।
अशोकवनिकार्भङ्गं दुर्गस्य च विनाशनम् ॥८८॥ [N
- ९१] यत्रैतदं कथयामास हनूमान् राघवाय वै ।
यत्र सुग्रीवसहितो राघवः सहलक्ष्मणः ॥८९॥ [N
- ९२] महता हरिसैन्येन प्रययौ दक्षिणामुखः ।
सर्वे च सहितो यत्र निविष्टाः सागरं प्रति ॥९०॥ [N

१. रा ब ल—संगो ।

२. ब—राक्षसानां विचेष्टितम् ।

अयं हि पाठः ८८ श्लोकस्य द्वितीयः पादः ।

हनूमत इत्यादिदुर्गकर्षेत्यन्तो मध्यस्थः पाठो नास्ति ।

प—कपीनां राम० ।

३. ट—प्रतिप्रयाणमेवाऽपि मधूनां मधुणं तथा ।

४. कै—हनूमतः ।

५. ट—राघवाश्वासनं चापि मथिनियार्तनं तथा ।

६. प—राघवस्य ।

७. रा ल ट—नास्ति । कै—पश्चिमेपार्श्वेऽपरहस्तेन पुनर्विन्धासः ।

८. ल—०र्गकम्पा० ।

९. त प—०कामङ्गो ।

१०. ट—नास्ति ।

११. ज त—पदेत् ।

१२. ज त इ—०तास्तत्र ।

- ९३] इत्येतत् सुन्दरं काण्डं पञ्चमं परिकीर्तितम् ।
 सर्गाणामत्र संख्या च काण्डे सुन्दरसंज्ञिते^१ ॥२१॥ [N
- ९४] चत्वारिंशत् त्रयश्चैव सर्गाश्च समुदाहृताः ।
 पू१५] श्लोकानां द्वे सहस्रे च चत्वारिंशच्च पञ्च च ॥२२॥ [N
- N] कौटः ५ सर्गाः ४३ श्लोकाः २०४५ ॥ [N
- ७२५] अतः परं तुं 'षष्ठं च' युद्धकाण्डमिति स्मृतम् ।
 यत्र रामो महाबाहुः सौगरं समुपस्थितः ॥२३॥ [N
- ९६] यत्र लङ्कां जिर्गमिषु मंत्रयामास राघवः ।
 प्राप्तं च राघवं श्रुत्वा मन्त्रयामास रात्रणः ॥^{११}९४॥ [N
- ९७] शर्मार्थी यत्र रामेण ज्येष्ठमाह विभीषणः ।
 मुच्यतां मैथिली^{१२} राजन् स्वस्त्यस्तु नगरस्य नः^{१५} ।

१. ज त प्र प ट—पञ्चमं ।
 २. ज त प्र प ट—सुन्दरं ।
 ३. ल—संज्ञिके ।
 ४. ज त प्र प ट—सर्गाः सम्यगु० ।
 ५. ल—सहस्रं ।
 ६. रा—पञ्चक ।
 ७. त—सुन्दरकाण्डं । ल प्र प भ—नास्ति ।
 ८. ल प्र प भ—नास्ति ।
 ९. प्र प भ—नास्ति ।
 १०. प्र भ ट—च ।
 ११. त—षष्ठे ।
 १२. प्र भ—तु । प—त्रे ।
 १३. रा—समरं ।
 १४. ल प्र—लङ्काजिग० ।
 १५. ट—नास्ति ।
 १६. प्र—समर्थी । भ—समार्थे[च ?] ।
 १७. ज त—जानकी ।
 १८. प्र—च ।

- ९८] एतद्धि परमं श्रेयो विपरीतोऽनयो भवेत् ॥९५॥^२ [N
एवमुक्तो दशग्रीवः क्रोधसंरक्तलोचनैः ।
- ९९] जघान यत्र पादेन भ्रातरं वै विभीषणम् ॥९६॥^२ [N
रावणं च परित्यज्य चतुर्भिः सचिवैः सह ।
- १००] आगच्छद्राघवाभ्यांशं गदापाणिर्विभीषणः ॥९७॥^४ [N
अभिषिक्तश्च रामेण लंकाराज्ये विभीषणः ।^१
- १०१] सागरात्तोयमादाय प्रयतेन महात्मना ॥^५ ९८॥ [N
यत्र रामस्य संरम्भः समुद्रस्य च दर्शनम् ।
- १०२] नलसेतुक्रिया चैव सागरानुमते तथा ॥९९॥^१ [N
तरणं चैव घोरस्य सागरस्य महात्मनः ।
- १०३] सुवेलोसादनं चैव चारप्रणिधिरेव च ॥१००॥^१ [N

१. ज त ल प्र प—विपरीतेऽन० ।

२. ट—नास्ति ।

३. रा—क्रोधः संरक्त० ।

४. प्र—परिसंत्यज्य । ज त—संपरि० । ल—तु परि० ।

५. प्र प भ—०वाभ्यांसं ।

ज ब—पुनः शोधनरूपेण शकारस्थाने सकारः कृतः । रा—०वाधिसं ।

६. ट—विभीषणेन संसर्गःबधोपाय निवेदनम् ।

अत्राभ्यैः सह कथाव्यस्य इति मूलेन विवेचनीयम् ।

७. ज ब रा त ल—नास्ति । कै—उत्तरपार्श्वेऽपरहस्तेन पुनर्विभ्यासः ।

८. ज त प्र—प्रयत्नेन । प—०यमादायाप्रंतेन ।

९. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

यत्र...सङ्गतोसौ महात्मना । ट—नास्ति ।

१०. ट—संग्रामं च समुद्रस्य नले सेतोश्च बंधनम् ।

११. ज त—महाद्भुतम् ।

१२. ल—०कासादरं ।

१३. ट—नास्ति ।

शुकसारणवाक्यं च वानरानीकदर्शनम् ।

- १०४] मन्त्रणं राक्षसेन्द्रस्य मायारामशिरः क्रिया ॥१०१॥ [N
वाक्यानि सरमायाश्च सीताऽऽर्वासनमेव च ।
- १०५] यत्र माल्यवतो वाक्यं लङ्काया गुप्तिरेव च ॥१०२॥ [N
मन्त्रणं राघवबले चरणौ च प्रवेशनम् ।
- १०६] सुवेलारोहणं चैव तथा लंकाऽवरोधनम् ॥१०३॥ [N
समारंभश्च युद्धस्यै द्वन्द्वयुद्धप्रवर्तनम् ।^३
- १०७] सप्तप्रयज्ञकोपाधिर्वधो यत्राशु शब्दितः ॥१०४॥ [N
रात्रियुद्धविधानं च शरबन्धस्तथैव च ।
- १०८] सुपर्णदर्शनं चैव अस्त्रबन्धस्यै मोक्षणंम् ॥१०५॥ [N

१. प्र—शुकसारण० ।

२. रा—रानेकद० ।

३. ट—नास्ति ।

४. प—सीतामन्दनमेव० ।

५. प्र—तत्र ।

६. प्र—वाक्यवतो । प—माख्यावता ।

७. ज व त ल प भ—चाराणां ।

८. व—प्रहर्षणम् ।

९. ट—प्रभावं च समुद्रस्य रौद्रं लङ्कोपमर्दनम् ।

१०. प—वप्रारंभ० । त ज—आरम्भश्चैव ।

११. प्र—युद्धम् ।

१२. प—०द्धप्रवर्तने ।

१३. रा व ल ट—नास्ति । कै—पुनरपरहस्तेनोत्तरपार्श्वे विन्ध्यासः ।

१४. रा व ल प्र भ—०यज्ञकोपादिवधो ।

प—सुप्तप्रयज्ञकोपादिवधो ।

१५. ज त—नास्ति ।

१६. ज त—सर्पबंधस्त० ।

१७. प्र—शरबन्धविमोचनम् ।

- धूम्राक्षस्य वधश्चैव तथैवाकम्पनस्ये च ।
 १०९] प्रहस्तस्य वधश्चैव प्रभङ्गो रावणस्य च ॥१०६॥^१ [N
 दुर्गकर्मविधानं च कुंभकर्णप्रबोधनम् ।
 ११०] दर्शनं कुंभकर्णस्य संप्रभ्रों रावणस्ये च ॥ १०७॥^२ [N
 निर्याणं कुंभकर्णस्य वानराणां च संप्रमः ।
 १११] सुग्रीवग्रहणं चैव प्रमोक्षश्चात्र कीर्त्यते ॥१०८॥ [N
 वधश्च कुंभकर्णस्य राघवात् समुदाहृतः ।^३
 ११२] नरकान्तवधश्चात्र देवान्तकवधस्तथा ॥१०९॥^४ [N
 महापार्श्ववधश्चात्र अतिकार्यवधस्तथा ।
 ११३] मेघनादास्त्रमोहंश्च ससैन्ये राघवे तथा ॥११०॥ [N
 ओषध्यानयनाच्चापि प्रबोधश्च हनूमतो ।

१. प्र—०वानस्यकस्य ।

२. प्र—नास्ति ।

३. ड—नास्ति ।

४. ज त ल प्र प—राघवस्य ।

५. ट—अत आरभ्य १११ श्लोकान्तस्य पाठस्य स्थानेऽथ पाठो विज्ञेयः—
 कुम्भकर्णस्य च वधं मेघनादवधं तथा ।

अतः परमेत्यपि पाठः—रावणस्य विनाशं च स्त्रीतावाप्तिं तथैव च ।

अत्रायं पाठो विचारणीयः ॥

६. ज त—नरकान्तकवधश्चैव ।

प्र प भ—नरकान्तकवधश्चात्र । रा—नरकान्तकवधश्चैव ।

७. व—देवकान्तक० ।

८. ज त प्र प भ—अतः परमधिकः पाठः—

महोदरवधश्चैव वधक्षिरिसस्तथा ।

९. प—महायश्रवधश्चात्र । त भ—०श्ववधश्चैव ।

१०. त—अत्रिकायव० । भ—अतिपार्श्वव० ।

११. ल—मेघनादास्त्रमोहश्च । रा—मेघनादास्तमोहाश्च ।

ज त—मेघनादास्त्रमोहश्च ।

१२. कै ल—ओषध्यानयनाच्चापि । रा ज व त—०ध्यानयनश्चापि ।

प्र—०नयनश्चापि । प—०ध्यानयनं चापि ।

१३. ज त—संप्रबोधो ।

१४. ल—हनूमतः ।

- ११४] उक्तं मिहारयुद्धं च वधः कुंभनिकुंभयोः ॥१११॥ [N
मकराक्षवधश्चात्र निर्गमो^१ रावणेः पुनः ।
- ११५] मायासीतावधश्चात्र मेघनादवधस्तथा ॥११२॥ [N
क्रोधश्च राक्षसेन्द्रस्य तथाऽनिष्टानकं महत् ।
- ११६] रावणस्य च निर्याणं विरूपाक्षवधस्तथा ॥११३॥^१ [N
पृ११७] मत्स्यापि वधश्चात्र उन्मत्तवर्ध एव च ।
राघवस्य च वाक्यानि भर्त्सनं रावणस्य च ॥११४॥ [N
- ११८] रामरावणयोश्चैव अस्त्रयुद्धं मेहात्मनोः ।
लक्ष्मणस्य वधश्चैव विलापो राघवस्य च ॥११५॥ [N
- ११९] ओषध्यानैयनं चैव लक्ष्मणोर्त्यानमेव च ।^१

१. ज त—उत्कानीहारयु० । प्र—उत्कामिहारयु० ।

प—उत्कानीतार यु० । भ—उत्कामीहारयु० ।

२. ज रा त—०धश्चैव ।

३. व—निर्गमं ।

४. ज त प—रावणस्य च ।

५. प्र—०रिष्टानकं । भ—निस्सारणकं ।

६. रा व—नास्ति । कै—पूर्वपार्श्वेऽपरहस्तेन विन्यासः ।

ट—भतः परं ११८ रत्नोक्तान्तः पाठो नास्ति ।

७. ज—वधश्चैव ।

८. त—तम्मन्त्र० ।

९. त—रावणस्य ।

१०. ज त प्र भ—राघवयुद्धं ।

११. रा व—महात्मनः ।

१२. ज त—रावणस्य ।

१३. रा भ—ओषध्यान० । प—उंषध्यान० ।

१४. प्र—सक्ष्मणोर्त्या० ।

१५. ज त—भतः परमधिकः पाठः—

मंदोद्बर्हास्तथा केशाकर्षणं चांगरेण च ।

- प्रदानं देवराजेन रथस्य च महात्मना ॥११६॥ [N]
- १२०] मीतलेदर्शनं चैव शक्रवाक्यनिवेदनम् ।
संग्रामे राक्षसेन्द्रस्य प्रभङ्गो रावणस्य च ॥११७॥ [N]
- १२१] सारथेर्भर्त्सनं चैव रावणेन दुरात्मना ।
देवानां विग्रहश्चैव गगने दानवैः सह ॥११८॥ [N]
- १२२] द्वैरथं च महाघोरं संघ्राहं क्षितिकंपनम् ।
वधश्च राक्षसेन्द्रस्य त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ॥११९॥ [N]
- १२३] इति षष्ठमिदं काण्डं युद्धकाण्डमिति स्मृतम् ।
सर्गाणां तु शतं ज्ञेयं पञ्चसर्गास्तथैव च ॥१२०॥ [N]
- १२४] काण्डे ऋस्मिंस्तथा संख्या श्लोकानां चात्र शब्दार्थेते ।^{१८}

१. त—प्रधानं ।
२. कै—देवराजेन । प्र प—देवराज्येन ।
३. ब ल—महात्मनः । रा—महात्मनाः ।
४. प—मातुषे ६० ।
५. त—राक्षस्येन्द्र० ।
६. रा—रावणेन ।
७. प्र—विग्रहश्चैव ।
८. रा—गगने । ज—गहने । प्र—गगने ।
९. त—द्वेरे । प्र—द्वेरेयञ्च ।
१०. प्र—सहाहभूमिकम्पनं । ज त ट—०हं भूमिकं० ।
११. कै रा ज ब त ल—षष्ठमिदं । प्र—षष्ठिमिदं ।
१२. भ—भृतं ।
१३. प—सर्गाणां ।
१४. ज त प्र ट—च ।
१५. प—सप्तं ।
१६. ज त—चैव । प्र प म—चापि ।
१७. ल—कल्पते ।
१८. ट—वाप्ति ।

- पू१२५] चैत्वार्यत्र सहस्राणि पञ्च श्लोकज्ञतानि च ॥१२३॥^२ [N
 N] कौण्डं ६ सर्गाः १०५ श्लोकाः ४५०० ॥^३ [N
 उ१२५] अतस्त्वभ्युदयं नाम सोत्तरं संप्रचक्षते ।
 यत्र रावणनारीणां विलापः समुदाहृतः ॥१२२॥ [N
 १२६] विभीषणाभिषेकश्चैव सत्कारो रावणस्य चैव ।^४
 हनुमत्संप्रवेशश्च मैथिल्याश्चैव दर्शनम् ॥१२३॥ [N
 १२७] सीताया निर्गमश्चैव रामेण च समागमः ।
 भर्त्सनं चैव सीताया राघवेण महात्मना ॥१२४॥ [N
 १२८] पेरित्यागं चैव वैदेहींस्तथा चाग्निप्रवेशनम् ।
 अग्निप्रवेशे च तर्दा अंदाहं परमान्नतम् ॥१२५॥ [N

१. ज त प भ ट—चत्वार्येव । प्र—चत्वाद्येव ।
 २. ट—अतः परमधिकः पाठः—
 पुनस्त्वंसहस्राणि युद्धकाण्डे निर्दिष्टाः ।
 ३. त—युद्धकाण्डं ।
 ४. ल प्र प भ—नास्ति ।
 ५. ब त ल प्र प ट—संप्रचक्षते ।
 ६. ज त प्र प भ ट—०णदारायां ।
 ७. ट—०भिषेकश्च ।
 ८. कौ व ल—संकारो राव० ।
 ज त—भ्यकारो रावण० । ट—पुष्पकारोहर्ष्य तथा ।
 ९. ट—अत आरभ्य १३ १२काण्डस्य पूर्वार्द्धान्तः पाठो नास्ति ।
 १०. प्र प भ—हनूमत्सं० ।
 ११. रा ल ज—राघवेण ।
 १२. ज त प्र भ—०त्यागश्च ।
 १३. प—सीतायास्त० । ज त प्र—तथैवाग्निप्र० ।
 १४. ज त प—तथा ।
 १५. ज त प—अदाहः परमान्नतः । प्र—अदाहः परमान्नतः ।

- १२९] ब्रह्मादीनां च सर्वेषां देवानामिह दर्शनम् ।
 वृषध्वजस्य देवस्य दर्शनं चात्र कीर्त्यते ॥ १२६ ॥ [N
- १३०] पितामहाद् वरश्चापि पितुर्दर्शनमेव च ।
 कैकेय्याः शापनाशश्च तुष्टिर्दशरथस्य च ॥१२७॥ [N
- १३१] शक्राद्वरस्यै संप्राप्तिर्दरीणां प्रतिजीवनम् ।
 रत्नानां संविभागश्च राक्षसेन्द्रेण धीमता ॥१२८॥ [N
- १३२] पुष्पकारोहणं चैव राघवस्य महात्मनः ।
 वानराणां च सर्वेषां राक्षसानां तथैव च ॥१२९॥^c [N
- १३३] प्रतियानं च कथितं विस्तरेण महात्मना ।^f
 भारद्वाजाश्रमप्रोम्पिर्ऋषेर्दर्शनमेव च ॥१३०॥ [N
- १३४] नन्दिग्रामप्रवेशश्च गुरुणां चैव दर्शनम् ।
 अंयोध्यायां प्रवेशश्चैव व्रतस्यै च समापनम् ॥^g १३१॥ [N
- १३५] अभिषेकश्च रामस्य प्रसादो नगरस्य च ।^h

१. ज त—बिष्यवादीनां ।

२. छ—पितामहवरश्चात्र ।

प भ—पितामहाद् वरश्चात्र । प्र—पितामहाद् वरः प्राप्तिः ।

३. त—पितुर्दर्शनमेव ।

४. भ—पितुर्दृष्टौ ।

५. प—शक्राद् वरस्य देवस्य ।

६. ज त—जीवनं तथा ।

७. प—रत्नानां ।

८. ज—मास्ति ।

९. ज त प्र भ—भरद्वाजाश्रमः ।

१०. ज त प्र प—अयोध्यासंप्रवेशः ।

११. छ—व्रतस्य ।

१२. ट—अयोध्यायां च गमनं भरतेन समापनं ।

१३. ज त प्र प भ—प्रसादो ।

१४. ट—रामाभिषेकान्पुत्रो हरिरजोविसर्जनं ।

- यौवराज्यप्रदानं च भरतस्य महात्मनेः ॥१३२॥^१ [N
 १३६] मुनीनामिह संप्राप्तिरुत्पत्तिश्चैव रक्षसाम् ।
 त्रैलोक्यविजयाख्यानमहल्याकीर्तनं तथा ॥१३३॥^२ [N
 १३७] सीताविर्वासनं चैव लक्ष्मणेन महात्मना ।^३
 वाल्मीक्याश्रमसंप्राप्तिं मैथिल्याश्चार्षं कीर्त्यते^४ ॥१३४॥ [N
 १३८] कुशीलवसमुत्पत्तिरिक्ष्वाकुकुलवृद्धये ।
 लवणस्यं वधश्चात्र शत्रुघ्नेन^५ प्रकीर्तितः^६ ॥१३५॥ [N
 १३९] शम्भुकस्यं वधश्चार्षं कुम्भयोनि समागमः ।^७
 अलङ्कारस्यं संप्राप्तिः श्वेतोपाख्यानमेव च^८ ॥१३६॥ [N
 १४०] अश्वमेधसमारम्भो गीतश्रवणमेव च ।

१. व—यौवराज्ये प्र० । प—यौवराज्यं प्रदानं ।

२. प्र—महात्मना ।

३. व—नास्ति ।

४. ज—मुनीनां चैव ।

५. ज त—रक्षसः । प—रक्षसाम् । व—रक्षसम् ।

६. प्र—० निर्वासने ।

७. व—सीतायाश्च परित्यागं रक्षणं प्रकृतेस्तथा ।

८. ज प्र प भ—वाल्मीकाश्र० ।

९. रा व व भ—० श्वाभावा ।

१०. व—कीर्तते ।

११. रा व—वचनस्य ।

१२. रा व व—नास्ति ।

१३. त—शम्भुकस्य । ज—शम्भुकस्य । प्र—शम्भुकस्य । रा व व—नास्ति ।

१४. रा व व—नास्ति ।

१५. व—जगत्प्रमुखाणां च महर्षीणां समागमः ।

१६. त—अहंकारस्य ।

१७. कै—१३४ श्लोकस्य—मैथि०—इत्यारभ्य १३६ श्लोकस्य—संप्राप्तिरित्य-
 न्तस्य पश्चिमपार्श्वे पुनरपरहस्तेन विन्यासः ।

- काव्यस्य गाने विज्ञेयौ स्वपुत्रौ तौ कुशीलवौ ॥१३७॥ [N
 १४१] वाल्मीकेश्चैव वाक्यानि विलापो राघवस्य च ।
 रसातलप्रवेशश्च वैदेहाः परमाद्भुतः ॥१३८॥ [N
 १४२] राघवस्य च संरंभो दर्शनं परमेष्ठिनः ।
 कालदुर्वाससोः प्राप्तिः सन्त्यागो लक्ष्मणस्य च ॥१३९॥ [N
 १४३] सुहृदां चैव घोरैणां वानराणां महात्मनाम् ।
 महाप्रस्थानगमनं स्वर्गप्राप्तिस्तु पुष्कला ॥१४०॥ [N
 १४४] इत्याभ्युदयिकं काण्डं संभविष्यं सहोत्तरम् ।^{१५}
 नैवैतिः संख्यया सर्गाः श्लोकानां चात्र कीर्त्यते^{१६} ॥१४१ [N

१. ज प्र प भ—चान्ते । त—कान्ते । ल—रागे ।
 २. ज त प्र प भ—विज्ञाय ।
 ३. ज त—तौ सुपुत्रौ । रा—सुपुत्रौ तौ ।
 व—सुपुत्रौ तु । ल—सुपुत्रौ तौ ।
 ४. ज त—वाक्यान्ते ।
 ५. कै रा ज व त ल प्र प—परमेष्ठिनः ।
 ६. कै रा त प्र—सत्यागो ।
 ७. ज त ल प्र प भ—घोरैणां ।
 ८. ज त प्र प—राघवाणां ।
 ९. ज त प्र प भ—प्राप्तिश्च ।
 १०. ट—१३६ त आरभ्य नास्ति ।

अधिकारार्थं पाठः—

अनागतं च यत् किञ्चित् रामस्य वसुधातले । प्राप्तं ।

११. ज त—इत्याभ्युदयिकं । ट—एतदभ्युदयिकं । भ—इत्याभ्युदयिकं ।
 १२. भ—काण्डमभविष्यं ।
 १३. त—सहोत्तरम् । ल प्र—महोत्तरम् ।
 १४. भ—अतः परमधिकः पाठः—
 इति वै सप्तमं काण्डं समाविष्यमिहोत्तरम् ।
 १५. रा ज व प ट—नवतिसंख्यया ।
 १६. त—मर्षाः । प—स्वर्गाः ।
 १७. ज त—चान्ते । ट—पठ्यते ।

१४५] त्रीणि श्लोकसहस्राणि नव श्लोकैस्तानि च ।

षष्टिः श्लोकास्तथा ज्ञेयाः काण्डेऽस्मिन् परिसंख्यया ॥१४२॥^१

१४६] सर्गाणां षट् सैतानीह विंशतिश्चैव संख्यया ।^२

इत्येतद्रामसम्बद्धमाख्यानमृषिसंयतम् ॥१४३॥ [N

१४७] चतुर्विंशतिसाहस्रं सर्वपापभयापहम् ।

आख्यानं रूचिरं दिव्यं कृतं वाल्मीकिना स्वयम् ।

१४८] धन्यं यज्ञस्यमामुष्यं पुत्रीयं पुष्टिवर्धनम् ॥१४४॥ [N

'पठेदिमां पर्वणि यः समाहितः

१४९] कथां शुचिर्दाक्षरैर्येर्महात्मनः ।

विमुच्यतेऽसौ कलुषेण मानवः

सृत्वेन^३ गच्छेच्च मृतोऽपि सद्गतिम्^४ ॥१४५॥ [N

हृत्वार्षे रामायणे^५ आदिकाण्डे^६ अनुक्रमशिकाऽध्यायः^७ ॥३॥

काण्डं ७ सर्गाः ९० श्लोकाः ३३६० ॥^{१०}

१. ज त प्र ट—सावन्त्येव क्षतानि ।

२. त—अतः परमधिकः पाठः—

सुम्बरकाण्डं ७ । सर्गाः २० । श्लोकाः ३९६० । ट—३३६० ।

ज—कांड ७ । सर्ग ९ । श्लोक ३३६० ।

३. कै—षट्सैतानीह । ४. प्र ट—नास्ति ।

५. ज—०सत्तमः । त—०सत्तमम् । प्र—०संस्तुतं ।

रा—०संयुतम् । प—०संस्कृतम् ।

६. त—पंचविंशतिसा० । ७. ज त—सर्वपापप्रणाशनम् ।

८. कै रा व ल प्र प भ—वैष्णवं । ९. ज ल—प्रजीवं । त—पूजीवं ।

१०. त—पठेदिमां । ल—पठेदिमं । ११. ज त ल—शुचेर्दाक्ष० ।

१२. रा ज व त भ—सुखं च । प्र ल—सुखं स० । १३. प्र—सद्गतिः ।

१४. रामायणे महर्षिवाल्मीकीये । १५. भ—नास्ति ।

१६. ज त ल—अनुक्रमशिकाध्याये तृतीयः सर्गः ।

प्र—अनुक्रमशिकानाम तृतीयः सर्गः ।

प—अनुक्रमशिकासर्गः ४ । भ—अनुक्रमशिका ३ ।

१७. ज त ल प्र प भ—नास्ति ।

[वं=३] [चतुर्थः सर्गः] [दा=३]

श्रुत्वा पूर्वं काव्यबीजं देवर्षेर्नारदादृषिः ।

- १] लोकादन्विष्य भूयश्च चरितं चरितव्रतः ॥१॥ [१
 पृ२] उपस्पृश्योदकं सम्यक् मुनिः स्थित्वा कृताञ्जलिः । [२पू
 तपोबलेन चान्विष्य चरितं भूरितेजसैः ॥२॥ [N
 ३] जन्म रामस्य सुमहद् वीर्यं सर्वानुकूलतार्म्यं ।
 लोकस्य प्रियतां क्षान्तिं सौम्यतां सत्यवाक्यतार्म्यं ॥३॥ [१०
 ४] मिथिलोगमनं चैव धेनुषश्चैव भेदनम् । [११उ

१. ल—पूर्ण ।

२. ज त ल—० दाम्भुनिः ।

३. ज त—लोकमन्विष्य । ल—लोकमन्विष्य ।

४. ल—सस्यं ।

५. प—मुनिस्तप्तौ ।

६. ज त ल प्र—अतः परमधिकः पाठः—

प्राचीनाग्नेषु दर्शेषु काव्यस्याम्बोदयन् गतिम् ।

प— " " •स्वान्बोदये मतिम् ॥

७. ज त ल—चरितेन च तेजसा ।

८. ज त ल—वैबानुकूलताम् । भ—सन्धानुकूलतां ।

९. प्र—सत्यशीलताम् ।

१०. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

विश्वामित्रस्य चरितं मन्त्राद्यं तथैव च ।

तादृकाद्यान् निबन्धं यद्वा.....

वाना विनाः कथाश्रम्या विश्वामित्रमहाशुभेः ।

११. प—वैशिव्यागः ।

१२. प्र—वपुषश्च विभेदयत् ।

- रामरामविवादं च गुणं दशरथस्य च ॥४॥ [१२५
 ५] नाना चित्राः कथाश्चान्यो विश्वामित्रमहामुनेः । [११७
 तथाऽभिषेकं रामस्य ककेय्या दुष्टभावनम् ॥५॥ [१२५
 ६] व्याघातञ्चाभिषेकस्यै राघवस्यै विवासनम् ।
 राघ्नः शोकं विलापं च मोहं मरणमेव च ॥६॥ [१३
 ७] प्रकृतीनां विषादं च तथैव च विसर्जनम् ।
 निषादाधिपसंवादं सूतस्य च विसर्जनम् ॥७॥ [१४
 ८] गङ्गायाश्चैव सन्तारं भारद्वाजस्यै दर्शनम् ।
 भारद्वाजाभ्यन्तुज्ञानं चित्रकूटस्य दर्शनम् ॥८॥ [१५
 ९] वास्तुकर्मनिवेशं च भरतागमनं तथा ।
 भ्रंसादनं च रामस्य पितुश्च सलिलैः क्रियाम् ॥९॥ [१६

१. ज त ल प्र—०मविवादश्च ।

२. ज त ल प्र—भयं । प—प्रीति । भ—वाक्यं ।

३. प्र—इयं श्लोकः ४र्थश्लोकात्पूर्वं विशेषः ।

४. प—कथाश्चापि ।

५. ज त ल प्र प—दुष्टभावतां । भ—दुष्टभावना ।

६. कै रा व—व्याघातदरचाभिः । प—०श्च अभिषेकश्च ।

७. ज—रामस्य सुमहात्मनः । त ल—रामस्य च महात्मनः ।

८. ज—विषादं च । त—विषादारच । ल—विषादं च ।

९. भ—विषादरच ।

१०. प—अतः परमधिकः पाठः—

तमसायां विषासं च प्रजानां च निवर्तनं ।

११. रा ज त ल—निवर्तनं । प्र—निवर्तते ।

१२. ज व त ल प्र प भ—भरद्वाजस्य ।

१३. प—वास्ति ।

१४. त ल प्र—भरद्वाजाभ्यन्तुज्ञानात् । प—भरद्वाजाभ्यन्तुज्ञा च ।
 भ—भरद्वाजाभ्यन्तुज्ञां च ।

१५. ज—वास्ति ।

१६. ज त ल—वावासनं ।

१७. कै ज त ल प भ—०क्रियात् । प्र—सलिलैः क्रियात् ।

- १०] पाण्डुकस्याभिषेकं च नन्दिग्रामनिवेशनम् ।
दण्डकारण्यगमनं सुतीक्ष्णेन समागमम् ॥१०॥^१ [१७
- ११] अनसूयासमस्यां च अङ्गरागस्य चार्पणम् ।
शरभङ्गाश्रमाभ्यां वासवस्य च दर्शनम् ॥^११॥ [१८
- १२] अगस्त्याश्रमवासं च अगस्त्यस्यै विसर्जनम् ।
समागमं विराधेन वासं पञ्चवटे तथा ॥१२॥^१ [१९
- १३] हासं शूर्पणखायाश्च विरूपकरायां तथा ।
वधं खरत्रिशिरसोः कथनं रावणस्य च ॥१३॥ [२०
- १४] मारीचस्यै विनाशश्च वैदेहीं हरणं तथा ।

१. अ त प भ—पाण्डुकास्वभिषेकं । ल--०कासु मि० ।

प्र--०काण्डभिषेकम् ।

२. अ त ल--०मगवेदानम् ।

३. प्र--विराधस्य वधं तथा ।

४. प्र--मतः परमधिकः पाठः—

दर्शनं शरभङ्गस्य सुतीक्ष्णेन समागमे ।

५. अ त ल--शरभङ्गाश्रमे वासं । व--०ङ्गाश्रमावासां ।

भ--शरभङ्गाश्रमाभ्यासे ।

६. प--नास्ति ।

७. अ त ल प्र भ--अगस्त्याद्य ।

८. ल--कबंधेन । ल--कबंधेन । त--विबंधेन ।

९. प्र--वर्जनं चाप्यगस्त्यस्य चतुषो ग्रहणं तथा ।

विसर्जनमगस्त्याद्य वासं पञ्चवटे तथा ।

१०. के रा ल त प--शूर्पणखा० ।

११. प्र--विरूपकरायां ।

१२. प--शुत्थानं ।

१३. अ ल--मारीचिप्रविनाशं च । त--मारीचिप्रविनासे च ।

१४. अ त ल प्र--वैदेहीहरणं ।

- जटायुषो वधश्चैव विलापो राघवस्य च ॥१४॥^१ [२१]
 १५] कबन्धग्रहणं चैव कबन्धस्य वधं तथा ।^२
 शर्वर्या दर्शनं चैव पम्पाया दर्शनं तथा ॥१५॥
 १६] विलापं चैव पम्पायां राघवस्य महात्मनः ।^३ [२२
 ऋष्यमूकाभिगमनं सुग्रीवेणं समागमम् ॥१६॥
 १७] प्रत्ययोत्पादनं चैव बालिसुग्रीवविग्रहं । [२३
 बालिप्रमथनं राज्ये सुग्रीवप्रतिपादनम् ॥१७॥
 १८] ताराविलापसमये वर्षारान्निवासनम् । [२४

१. ज त ल प्र प भ—जटायोर्निधनं चैव ।

२. ज त ल प्र भ—विलापं । प—कबन्धस्य ।

३. प—च दर्शनं । ज—राघवस्य च ।

४. व रा—नास्ति ।

प—सीतायाश्च प्रहोभं च मारीचस्य वधे तयो ।

वैदेह्या हरणं चैव शोको वै राघवस्य च ॥

गुह्यराजेन संभासं धर्मज्ञेन महात्मना ।

जटायोर्निधनं चैव कबन्धस्य च दर्शनम् ॥

५. ज त—कबन्धदर्शनं । ल—कबन्धदर्शनं ।

६. ल—शर्वर्या द० । भ—शर्वर्या द० ।

७. प—इत् [मद् ?] दर्शनं तथा ।

८. प्र—नास्ति ।

९. त—ऋषिमूकाभिः ।

१०. रा—सुग्रीवेण ।

११. ज त ल प्र प भ—सक्यं ।

१२. ज व त ल प्र प भ—बालिसु० ।

१३. ज व त प्र भ—बालिप्र० । प—बालिप्रथमनं ।

१४. सुग्रीवस्याभिषेचनं ।

१५. ज त ल प—ताराविलापसमयं । प्र—० कापं समयं । भ—कापसमयं ।

१६. ल भ—वर्षारान्निधिः । प—वर्षारान्निधिः ।

- कोपं राघवसिंहस्य बलानामुपसङ्ग्रहम् ॥१८॥
 १९] दिशंः प्रस्थापनं चैव पृथिव्याश्चैव निवेदनम् । [२५
 अंगुलीयप्रदानं च तथैवं बिलदर्शनम् ॥१९॥
 २०] प्रायोपवेशनं चैव सम्पातिश्चैव दर्शनम् । [२६
 पर्वतारोहणं चैव सागरस्य च लंघनम् ॥२०॥ [२७पू
 २१] सिंहिकादर्शनं चैव लङ्कानिलयदर्शनम् । [२८
 रात्रिप्रवेशे लङ्कायां चिन्तां हनुमतस्तथा ॥२१॥ [२८
 २२] आपानभूमिगमनं अवरोधस्यै दर्शनम् । [२९पू

१. रा ज त—बालानामुप० ।

२. ज त ल—दिशु ।

३. प—पृथिव्याश्चैव बर्णनं ।

४. प्र—अंगुलीयप्र० ।

५. प्र—अप्यस्य ।

६. रा—बलिदर्शनं ।

७. त—लंकानिलयदर्शनम् । अत्राम्मध्यस्थं पाठं त्यक्त्वा २१श्लोक-

द्वितीयपादेन संबन्धः कृतः ।

८. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

समुद्रवचनाश्चैव मैनाकस्य च दर्शनं ।

राक्षसतिर्जनं क्षायाम्राहिण्याश्चैव दर्शनं ॥

९. प्र—सिंहकायारच निघनं ।

१०. रा ब त प भ—नास्ति । कै—उत्तरपाठे पुनर्विध्यासः ।

११. ज त ल—रात्रौ प्रवेशं । रा प्र—रात्रिप्रवेशं ।

प—रात्रिप्रवेशन० । भ—रात्रिप्रवेशो ।

१२. ल प—चिन्तां । त—चित्तां ।

१३. रा ब—आपानभूमिग० ।

१४. रा—अवरोधस्य ।

१५. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

दर्शनं रावणस्यापि पुण्यकस्य च दर्शनम् ।

- अशोकवनिंकायानं सीतायाश्चापि दर्शनम् ॥२२॥ [३०पृ
 २३] राक्षसीदर्शनं चैव रावणस्य च दर्शनम् । [२९उ
 संप्रापणं च मैथिल्या अभिज्ञानस्य चार्पणम् ॥२३॥ [३०उ
 २४] मणिप्रदानं सीताया वृक्षभङ्गं तथैव च । [३१उ
 राक्षसीविद्रवं चैव किङ्कराणां निवर्हणम् ॥२४॥
 २५] अमात्यपुत्रनिधनं सेनापतिवधं तथा । [३२
 अक्षस्य निधनं चापि निर्याणेन्द्रजितस्तथा ॥२५॥
 २६] ग्रहणं वानरेन्द्रस्य लङ्कादाहाभिमर्दनम् । [३३
 प्रतिप्रयाणमेवापि मधूनां भक्षणं तथा ॥२६॥
 २७] राघवाश्वासनं चापि मणिनिर्यातनं तथा । [३४
 संगमं च समुद्रस्य नलसेतोश्च बन्धनम् ॥२७॥^४

१. ज त—अशोकवनिंकायां च ।

२. ज त प—सीतायाश्चैव ।

३. ल—नास्ति ।

४. त प्र प—राक्षसीतर्जनं चापि ।

५. ज—नास्ति ।

६. त—मणिप्रधानं ।

७. ज त प्र प—वनभङ्गं ।

८. ज त प—वधं तथा ।

९. ज प—निर्यातेन्द्रजि० । त—निर्यातेन्द्रजि० । प्र—निर्यातेन्द्रजि० ।

१०. भ——हाभिमर्शनं । ल—लङ्कादाहे..... ।

११. ल—प्रतिप्रयाणमे० ।

१२. प—चापि ।

१३. प—दर्शनं । ल—नास्ति ।

१४. रा—अतः परमधिकः पाठः—

प्रतिप्रयाणमे ।

- २८] तेरणं च समुद्रस्य रौद्रलोकोपरोधनम् ।^१ [३५
विभीषणेन संसर्गो बधोपार्यनिवेदनम् ॥२७॥
- २९] कुम्भकर्णस्य च वधं मेघनादवधं तथा । [३६
रावणस्य विनाशं च सीताऽर्वाप्तिं तथैव च ॥२८॥
- ३०] विभीषणाभिषेकं च पुष्पकारोहणं तथा ।^५ [३७
अयोध्यायां च गमनं भरतेन समागमम् ॥^१ २९॥
- ३१] रामाभिषेकाभ्युदयं हरिरक्षोविसर्जनम् ।^{१२}
सीतायाश्च परित्यागं प्रकृतीनां च^३ रञ्जनम् ॥३०॥ [३८

१. त -- प्रभावं च स० । प्र--प्रत्तारम्ब स० । ल--नास्ति ।

२. त प्र प--रौद्रं लङ्कोपरो० ।

३. ज ल--नास्ति ।

४. कैः रा--संसर्गो । ज त ल प्र--संसर्ग । प--संतु संसर्गो बधो(पा)यवि० ।

५. प--वधं चोरं ।

६. प्र--शोकं राक्षसयोषितां ।

७. प्र--सीतात्यागं तथैव च ।

८. प्र--अतः परमधिकः पाठः--

ब्रह्मादिदेवतानाम्ब दर्शनं वचनं तथा ।

सीतायाः प्रस्थयं चैव सीताप्राप्तिमरे(ः)पुरं ॥

जीवनं वानराणाम्ब पुष्पकारोहणस्तथा ।

९. प--अयोध्यागमनं चैव । भ--अयोध्यायाश्च ग० ।

१०. प्र--अयोध्यायाश्च गमनं भरद्वाजसमागमं ।

प्रेषयं वदु [वायु] पुत्रस्य भरतेन समागमे ॥

११. ज ल--वेकाभ्युदयो ।

१२. त--नास्ति ।

ज ल प--अतः परमधिकः पाठः--

अगस्त्यप्रमुत्तानां च महर्षीणां समागमं ।

प्र--अगस्त्यप्रभृतीनाम्ब

राक्षसानां समुत्पत्ती रावणस्य जयं ततः ॥

१३. ज त ल--रंजयं प्रकृतेस्तथा ।

- ३३] अनागतं च यत्किञ्चिद्रामस्य वसुधातले । [३९५
 प्राप्तं राज्यस्यै रामस्य चरितं यच्च धीमतः ॥३१॥^४ [N
 ३४] अभ्यागममृषीणां च शत्रुघ्नस्य विसर्जनम् ।
 वैनप्रसूतिं सीताया लवणस्य रणे वधम् ॥३२॥^५ [N
 ३५] कालदुर्वाससोः प्राप्तिं लक्ष्मणस्य विसर्जनम् ।
 स्थापयित्वा सुतान् राज्ये यथा रामो दिवं गतः ॥३३॥^६ [N

१. त—तु ।

२. प—प्राप्तं राज्यस्य । व—प्राप्तं राज्यस्य ।

३. ज त ल—तस्य ।

४. ज त ल प—अतः परमधिकः पाठः—

तच्चकारोत्तरे कांठे चरितं भगवान्मुचिः ।

५. प्र—अभ्यागतम् ।

६. ज त ल—नास्ति ।

७. ज त ल प्र प भ—वने प्रसूतिं ।

८. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

मधुरायां निवासश्च मैथिल्यानयनं तथा ।

यज्ञस्यान्ते च सीतायाः प्रत्ययस्य निदर्शनं ॥

भूमौ प्रवेशं सीतायाः सम्तापं राघवस्य च ।

प—मधुराया निवेशं च यज्ञारंभस्तथैव च ।

यज्ञान्ते चैव सीतायाः पातालागमनं तथा ॥

९. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

ऋचवानरगोपुञ्जैः पौरजानघदैरपि ।

पृथक् सुतपसा दृष्ट्वा निखिलेन महामतिः ।

चरितं सत्यसंभवस्य सर्वं काव्ये चकार ह ॥

ततः पुनरहः किञ्चिद्रूपश्लोकावते मुचिः ।

तं ब्रह्मा संप्रहस्येव श्लोक इत्यावधीत् वचः ॥

ततः शिष्याश्च दृष्ट्वाश्च सर्वे चान्दे उपस्थितः ।

अभिवाद्य महात्मानमुचिं वरुणं ज्येष्ठारयम् ।

- ३६] त्रैलोक्यदर्शी तत् सर्वं तपोयोगबलेन च ।
 ददर्श चैव प्रत्यक्षं पाणावामलकं यथा ॥३४॥ [N
- ३७] दृष्ट्वा चानन्तरं चक्रे रामस्य चरितं महत् ।
 धर्मकामार्थसंयुक्तं पुण्यश्रवणकीर्तनम् ॥३५॥ [N
- ३८] श्रुतिरत्नचयाकीर्णं काव्यसागरमद्भुतम् ।
 कृत्वा चेदमशेषेण काव्यं रामायणाह्वयम् ॥३६॥ [N

पादवद्धश्चतुष्पादः शोकः श्लोकेत्वमागतः ॥
 तस्य बुद्धिरियं जाता बाल्मीकेर्भावितात्मनः ।
 कृत्स्नं रामायणं काव्यं स्वयमेव करोम्यहम् ॥
 प्रथमं ब्रह्मणा प्रोक्तं नारदस्य च दर्शनम् ।
 श्रुत्वा स वरु [स्तु ?] मात्रं हि धर्मात्मा धर्मसंहितम् ॥
 व्यक्तमन्विष्य भूयो वै यद् वृत्तं तत्ततः ।
 गुणावासस्य रामस्य राज्ञो दशरथस्य च ॥
 सभार्यस्य सराष्टस्य शा [सा ?] न्तः पुरबनस्य च ।
 हसितं भाषितं यच्च गतं यच्चाप्यनुष्टितं ॥
 तत् सर्वं धर्मवीर्येण यथावत् संप्रपश्यति ।
 भरतस्य यथा वृत्तं शत्रुघ्नस्य च धीमतः ॥
 वसिष्ठश्च [स्य ?] सुमन्तोश्च वामदेवस्य चैव हि ।
 विश्वामित्रस्य देवर्षेः राज[र्षे]र्जनकस्य च ॥
 रक्षसां वानराणां च यथा वीर्यं विचेष्टितं ।
 सीतासहायेन किञ्चित् कथितं वसता वने ॥
 महासन्धेन रामेण लक्ष्मणेन च धीमता ।
 ततः पश्यति तत्सर्वं बाल्मीकियोःगमास्थितः ॥

१. कै व भ—त्रैकाल्यदर्शी ।

२. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

तत् सर्वं सर्वतोऽन्विष्य रामवृत्तान्तमात्मवान् ।

३. रा—मणावाम० ।

४. ज त ल—धर्मार्थकामसं० ।

५. रा व—०कमयाकीर्णं । त—०कमयाकीर्णं ।

- ३९] चिन्तयामास क इदं लोकेऽस्मिन्प्रथयिष्यति । [४.३७
अथ चिन्तयतस्तस्य महर्षेर्भावितात्मनः ॥३७॥
- ४०] तदा जगृहत्तुः पादौ मुनिवेषधरौ बने । [४.४
वाल्मीकिशिष्यौ तरुणौ रूपौदार्यगुणान्वितौ ॥३८॥
- ४१] कुशीलवाविति ख्यातौ सीतारामाङ्गसंभवौ ।^१ [४.५
स तौ मूर्धन्युपाघ्राय वाल्मीकि भगवान्‌नृषिः ॥३९॥ [N
- ४२] उवाचेदं तदौ वाक्यं प्रणतावग्रतः स्थितौ ।
आर्षं रामायणं काव्यमिदं तावन्मया कृतम् ॥४०॥ [N
- ४३] गृह्णीतां मभियोगेन पुण्यश्रवणकीर्तनम् । [N
पौलस्त्यवधसंयुक्तं धर्मकामार्थसंहितम् ॥४१॥ [४.७३
- ४४] पांठे गेये^२ च मधुरं प्रमाणैस्त्रिभिरुज्ज्वलम् ।
तन्मन्त्रगीतैश्च मधुरैरन्वितं सप्तभिः स्वरैः ॥४२॥^३ [४.८

१. त ल—ततो । ज—तु तौ । प—मुने ।

२. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

राजपुत्री यशस्विनी ।

भातरौ स्वरसम्पन्नौ ददर्शाश्रमवासिनौ ॥

स तु...विनौ दृष्ट्वा वेदेषु परिनिष्ठितौ ।

३. त ल—०गवान् मुनिः ।

४. प्र—प्रोवाचेदं ।

५. ज त ल—ततो ।

६. ज—प्रणतावग्रतौ ।

७. ज—गृहीतं । त ल प्र— गृहीतं ।

८. ज—०धंसंविधं ।

९. प्र—पाठ्यं ।

१०. रः—योगे ।

११. ज त ल प्र प भ—०स्त्रिभिरन्वितं ।

१२. ज त ल प्र प भ—तन्मन्त्रगीतैश्च ।

१३. कौ—मधुरमन्वितं । रा व—मधुरमन्वितं ।

- ४५] जातिभिः सप्तभिर्युक्तं श्रोत्रश्रुतिमनोहरम् । [४.८
 शृंगारवीरवीभत्सरौद्रहास्यभयानकैः ॥४३॥
- ४६] करुणाद्भुतशान्तैश्चै युक्तं काव्यरसैरपि । [४.९
 एवमुक्त्वा तु तौ बालौ भगवानृषिसत्तमैः ॥४४॥
- ४७] सम्यग्ध्यापयामास काव्यं रामकथाऽऽश्रयम् ।
 वाग्बिधेयं ततस्ताभ्यां कृतं तर्ध्वं विशेषतः ॥४५॥ [N
- ४८] पुण्यं रामार्यणं काव्यं तदा तौ मुनिरब्रवीत् ।
 गीयतामिदमाख्यानं भवद्भ्यामृषिसंसदि ॥४६॥ [N
- ४९] राजर्षीणां पुण्यकृतां साधूनां च समागमे ।
 गुरुणैवमनुज्ञातौ ततस्तौ देवरूपिणौ ॥४७॥ [N
- ५०] कुशीलवौ रंजपुत्रौ प्रकृत्या मधुरस्वरौ ।
 रूपानुरूपौ रामस्य त्रिम्बाद्बिम्बमिवोद्भूतौ ॥४८॥ [४.११

१. ल प्र—श्रोतुः श्रुतिम० । प—मनः श्रुतिसुखावहं ।

२. प्र—०त्सरौद्रश्च समयानकः ।

भ—शृङ्गारवीरकरुणाहास्यरौद्रभ० ।

३. प्र—करुणाद्भुतहास्यैश्च । भ—वीभत्सरौद्रहा० ।

४. ज त ल प्र—च ।

५. ज त ल—भगवान् मुनिसत्तमः ।

६. भ—रामायणाश्रयं ।

७. ज त ल—सदा ताभ्यां । ब—कृतस्ताभ्यां ।

प्र—तदा ताभ्यां । प—यदा ताभ्यां ।

८. प्र—तद्याप्यशेषतः ।

९. ज—रामायणे ।

१०. प्र—रामपुत्रौ । प—रामसुतौ ।

११. रा त—मधुरस्वनौ ।

१२. ज ल—अनुरूपौ च । त—अनुरूपस्य । रूपानुरामो ।

१३. ज—०म्बमिवोद्भूतौ । त्रिम्बाद्बिम्बमिवोद्भूतौ ।

ल—०म्बमिवोद्भूतौ । प्र—०म्बमिवोद्भूतौ । प—सूत्रत्रिम्बादि० ।

- ५१] वेदवेदाङ्गेतिहासशास्त्रेषु पंरिनिष्ठितौ ।^३ [N
 जगत्स्तौ ततः काव्यं मधुरं मधुरस्वरौ ॥४९॥
- ५२] यथोपदिष्टमृषिणां सभिधौ ब्रह्मवादिनाम् । [४.१३
 तयोर्ब्रह्माऽभवत् प्रीतः सेन्द्राश्च सुरसत्तमाः ॥५०॥ [N
- ५३] गन्धर्वाः पन्नगाश्चैवं पतङ्गाश्चं भेदेषिभिः । [N
 तौ कदाचित् समेतानामृषीणां देवैर्हृषिणौ ॥५१॥^३
- ५४] काव्यं रामायणं मध्ये सहितावभ्यगायताम् । [४.१४

१. प्र—०दाङ्केतिहासे शा० । प—०दाङ्केतिहासपुराण० ।

२. ल—०निष्ठितौ । प्र—०निष्ठितौ ।

३. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

तौ तु गन्धर्बत्वज्ञो [?] स्थानमार्चनकोविदौ ।

भ्रातरौ स्वरसम्पन्नौ गन्धर्वाविव रूपिणौ ॥

४. त-जगतौ तु ।

५. ज त ल प्र प भ—तदा ।

६. रा ज त ल--मधुरस्वरौ ।

७. त ज--अथोपदि० ।

८. प्र--ब्रह्मवादिना ।

९. प्र भ--०पतंगारचैव । प--०र्वासुरसत्तमैव ।

१०. ज ल--पतंगारच । प्र प भ--पन्नगाश्च ।

११. ज त ल--महर्षयः ।

१२. ज त ल--चैव सभिधौ ।

१३. प्र--अतः परमधिकः पाठः—

काव्यं तज्जगतुः प्रीतौ कुमारौ कलमद्भुतं ।

श्रुत्वा च मुनयः सर्वे परं विस्मयमागताः ॥

हर्षविस्मयसम्पन्नैर्नैत्रैरनिमिषैरिव ।

समीयुस्तत्र तत् काव्यं श्रोतुकामाः सहस्रशः ॥

१४. ज त ल--नाम ।

१५. रा--सहिता चम्बगा० । ज--सहितमम्बगा० ।

कै ष त ल--संहिताचम्बगा० । प्र--सहितानुम्बगायता ।

- शृण्वतां तु तदा काव्यमृषीणां हर्षसंभवः ॥५२॥
- ५५] सहसाऽभूमहाशब्दः साधु साध्विति संसताम् । [४.१५
सुप्रीतमनसश्चैव मुनयो धर्मवत्सलाः ॥५३॥
- ५६] शशंसु भ्रतैरौ तत्र गायन्तौ तत् कुशीलवौ । [४.१६
अहो भावानुगं काव्यमहो गीतमविस्वरम् ॥५४॥ [४.१७पू
- ५७] अहो भगवतां सम्यग् रामस्य चरितं महत् । [N
चिरं वृत्तमिव ह्येतत् प्रत्यक्षमिव दर्शितम् ॥५५॥ [४.१७उ
- ५८] संस्कृतं मधुरं चैव समाक्षरपदक्रमम् ।
प्रयोक्तारविमौ चापि सम्यगस्यं कुशीलवौ ॥५६॥ [N
- ५९] कुमारौ देवगर्भाभौ तरुणौ मधुरस्वरौ ।
अहो द्रव्यमहो स्वाद्यमहो गीतमविस्वरम् ॥५७॥ [N

१. प—तच्छृण्वतां ।
२. प्र—संसता ।
३. व त—भ्रातरं ।
४. ज त ल प्र—तौ ।
५. भ—भावानुसंगेयमहो ।
६. प्र—गीतमहो स्वरम् । प—गीतं सुविस्तरं ।
७. ज त ल—नास्ति ।
८. रा—अतो ।
९. प्र प—भगवतः ।
१०. प्र प भ—चिरवृत्तमपि ।
११. प्र भ—दृश्यते ।
१२. रा व—वास्य ।
१३. प्र—सम्यगत्र ।
१४. रा ल—रस्वनौ ।
१५. व ल—श्राव्य० । रा त प्र भ—श्राव्य० । प—आपमहत् ? ।
१६. प्र—काव्यमहो ।
१७. ज त ल—गीतं सुविस्तरं । प—गीतमविस्तरं ।

- युक्तं च मधुरं चैव परया स्वरसम्पदा । [४.१८३
 ६०] पदद्वयसमायुक्तं तालतानसमन्वितम् ॥५८॥ [N
 संरक्तं चापि रक्तं च परया स्वरसम्पदा । [४.१९३
 ६१] एवं प्रैशस्यमानौ तौ श्लाघ्यमानौ महर्षिभिः ॥५९॥
 भूयो रंक्ततरं सोधु मधुरं चाप्यगायताम् । [४.१९
 ६२] ताभ्यां प्रीतो मुनिः कश्चित् पानीयकलशं ददौ ॥६०॥
 कश्चिद् वनैफलं स्वादु बल्कलं कश्चिदीप्सितम् । [४.२०

१. ज त ल—रक्तं । प्र—व्यक्तं ।

२. प—सुरसंपदा ।

३. कै—पदद्वयं समायुक्तं । रा—पदप्रतसमायुक्तं ।

ज त ल प्र—पदसंधिसमायुक्तं ।

४. ज त ल—ताकभाव० प्र—तालमान० ।

५. रा—सुरसम्पदा । प्र—स्वादुसंपदा ।

६. ज त ल—नास्ति ।

७. ज—प्रशंस्यमानौ ।

८. ज व प—तु ।

९. रा—श्लाघ्यमाणौ । प—गीयमानौ ।

१०. रा व—रक्तांतरं । प्र—ऽप्यनन्तरं ।

११. ज ल—स्वादु । त—स्वाद्य ।

१२. प्र—प्रीतः कश्चिन्मुनिस्ताभ्यां ।

१३. प्र—वन्यफलं । प—वण्यफलं ।

१४. प्र—अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतोऽधिकः पाठः—

अन्यः कृष्णाक्षिमदात् यज्ञसूत्रं तथापरः ।

कश्चित् कमण्डलुं प्रादात् मौञ्जीमन्यो महामुनिः ॥

वृषीमन्यस्तदा प्रादात् कौपीनमपरो मुनिः ।

ताभ्यां ददौ तदा हृष्टः कुठारमपरो मुनिः ॥

काषायमधुरं वस्त्रं चीरमन्यो ददौ मुनिः ।

जटाबन्धवमन्यस्तु काष्ठरज्जुं मुदान्वितः ॥

यज्ञभाण्डमुपिः कश्चित् काष्ठभारं तथापरः ।

- ६३] एवं पूर्वमिदं काव्यं मुनिभिः प्रतिपूजितम् ॥६१॥ [N
जीवैभूतं मनुष्याणां कवीनामुपजीवनम् । [४.२६३
६४] प्रशस्यमानौ तावेतौ कदाचिद् देवैरूपिणौ ॥६२॥
राजधानीषु राज्ञां च समीपेष्वभ्यगायताम् । [४.२८
६५] अंशाम्बेधे रामोऽपि तावुपश्रुत्यं गायनौ ॥६३॥ [N
सत्कृत्यैवानयामासं पुरुषैराप्तकारिभिः । १५

श्रीदुम्बरीकृषीमन्यः स्वस्ति केचित्तदावदन् ॥
आयुष्यमपरे प्राहुर्मुदा तत्र महर्षयः ।
ददुरश्वेषं वरान् सर्वे म्रुगयः सत्यवादिनः ॥
आश्रयमिदमाख्यातं मुनिना संप्रकीर्तितम् ।
परं कवीनामाधारं समाप्तं च यथाक्रमे ॥

१. ए—वाक्यं ।

२. प—ऋषिभिः ।

३. ज त ल प्र प भ—बीजभूतं ।

४. ज—कवीनामार्षमद्भुतं । त—कवीणामार्षमद्भुतं ।

ल—कवीनां मतमद्भुतम् ।

५. प—प्रशंस्यमानौ ।

६. रा व तं भ—तावेव । ज ल प्र भ—तावेवं ।

७. कै—तद्विगीयताम् इति पुनरपरहस्तेन विख्यातः ।

वस्तुतस्तु तत्रापि देवरूपिणावित्येव मौक्तिकः पाठः कीटमुक्तोऽपि
दृष्टिपथमवतरत्येव ।

८. रा—राजधानेषु ।

९. ज ल—० स्वप्यगायतां । त—० ध्वपि गायतां ।

१०. प—अश्वमेधे ।

११. प्र—राज्ञोऽपि ।

१२. प्र—तावुभावुपगायकौ ।

१३. ज त ल—सत्कृतावानयामास ! प्र—सत्कृत्यानाययामास ।

१४ प—अतः परमधिकः पाठः—

पूजयामास पूतात्मा सन्कारैस्तावच्छंभुतौ ।

- ६६] ताविदं जगतुस्तत्र काव्यं रामप्रचोदितौ ॥६४॥ [N
 कर्मान्तरेषु विप्राणां रामलक्ष्मणसभिधौ ।
- ६७] शत्रुघ्नभरतादीनामन्येषां च महीक्षिताम् ॥६५॥ [N
 वसिष्ठात्रिपुरोगानां सभिधौ ब्रह्मवादिनाम् । [N
- ६८] रामस्तत्रासैनं शुभ्रे शुद्धास्तरणसंहृते ॥६६॥ [४.३०पू
 उपविश्य तु शुश्राव तदाऽऽत्मचरितं महत् ।
- ६९] आर्षं रामायणं सार्धं भ्रातृभि र्भरतादिभिः ॥६७॥
- पृ७०] पौरजानपदैश्चैव वृतः शतसहस्रशः ।^१ [४.३०उ
 दृष्ट्वाऽर्थं रूपसम्पन्नौ तावुंभौ वीणितौ ततः ॥६८॥
- ७१] उवाच लक्ष्मणं रामः सर्वैश्चैव सभासदः ।^२ [४.३१
 श्रूयतामिदमाख्यानमेतैर्यो देववर्चसोः ।

१. प—तावुभौ ।

२. प्र—वसिष्ठश्चि० । प—वसिष्ठात्रि० ।

३. त—०तत्राश्रमे । प्र—०तत्राश्रमे ।

४. ज त—स्पर्धास्तरणसंयुते ।

ल—स्मृत्यास्तरणसंयुतं । प्र—स्पर्धस्तर० ।

प—शुद्धास्तरणसं० ।

५. प—काव्यं ।

६. प—भरतात्मभिः ।

७. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

तान्प्रगानीयसदृशो[१?] कुमारो देवरूपिणौ ।

८. त प्र—दृष्ट्वा तु ।

९. प्र—विनीतौ । भ—भ्रातरौ ।

१०. ज त ल—गायनौ तदा । प्र—तावुभौ ततः ।

प—चीरवाससौ । वीणिनौ तदा ।

११. प—सर्वं चैव ।

१२. ज त ल—नास्ति ।

१३. ज त ल प्र प भ—०ख्यानमनोर्द्धं० ।

७२] विचित्रार्थपदं सम्यग्गायतो मधुरस्वरम् ॥६९॥' [४.३२

इमौ हि बालौ नृपलक्षणांविता

कुशीलवावेव तपोवनाश्रयौ ।

७३] ममेतिवृत्तं किल गेर्यमद्भुतं

महर्षिवाल्मीकिकृतंप्रगायतः ॥७०॥ [४.३६

ततस्तु तौ राघवसंप्रचोदितौ-

वगायतां काव्यमिदं यथाक्रमम् ।

स चापि रामः संहितैः समाहितैर्

७४] बभूव तत्रार्पितचेतनस्तदा ॥७१॥ [४.३६

हृत्पापे^३ रामायणे^४ आदिकाण्डे काव्यसंक्षेपो^५

नाम चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥

१. ज—विचित्रार्थमिदं । त—विचित्रार्थं पदं ।

२. रा--०गायतोर्म० । त--०गायतौर्म० ।

३. ल—०मधुरस्वरम् । प्र प—मधुरस्वरं ।

४. प्र—अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतोऽधिकः पाठः—

तन्त्रीलयवदत्यर्थविश्रुतार्थमगायतां ।

ह्लादयत् सर्वगात्राणि मनांसि हृदयानि च ॥

श्रोत्राश्रयसुखं ज्ञेयं तदुभौ जनसंसदि ।

५. रा ज त—नृपलक्षणांविता ।

६. ज त—कुशो लवरक्षेव । ल प्र भ—कुशीलवो चैव ।

७. प्र—महातपस्विनौ ।

८. रा—गीतमद्भु० । प्र—गीतमद्भु० ।

९. ज प्र—प्रगास्यतः । त ल—प्रगास्यताम् । भ—प्रगायतौ ।

१०. ज त ल—०प्रचोदितौ प्रगाय० । रा—०दितौ वगाय० ।

११. ज त ल—सहितः । प भ—सह तैः ।

१२. ज त ल—सभागतै० । प्र—सभागतै० । प—सभासदै० ।

१३. कै—नास्ति ।

१४. त—श्रीरामायणे बालकाण्डे । ज ल—०णे बालकाण्डे ।

१५. प्र प—काव्योपसंक्षेपो । भ—कथासंक्षेपो ।

[वं०=५] [पञ्चमः सर्गः] [दा०=५]

सागरान्ता मही येषामासीद्वीर्याजिता किल ।'

- १] आपन्नोः पुण्यकीर्तीनां राज्ञाममिततेजसाम् ॥१॥ [१]
 सगरंः पूर्वजो येषां सागरो येन खानितः ।
- २] षष्टिः पुत्रसहस्राणि यं यान्तं पृष्ठतोऽन्वयुः ॥२॥ [२]
 इक्ष्वाकूणामिदं तेषां वंशे^८ कीर्तिविवर्धनम् ।
- ३] निबद्धं पुण्यकीर्तीनां रामायणमिति श्रुतम् ॥३॥ [३]
 तदिदं श्रूयतामार्षे पुण्यं पापभयापहम् ।
- ४] धर्मकौमार्यसंयुक्तं श्रुतिस्मृत्युपबृंहितम् ॥४॥ [४]

१. ज त ल प्र प ट--अतः पूर्वमधिकः पाठः—

ततस्तौ स्वरसंपन्नौ कुमारौ तत्र संसदि ।

अगायतां नवं काव्यं रामायणमिति स्मृतम् ॥

भ—पुस्तकस्य पश्चिमपार्श्वेऽपरहस्तेन विन्यासः ।

२. ज त ल ट—आप्तानां । कै रा ष—आत्मनः ।

३. प्र—०ज्ञामितितते० ।

४. प—अतः परमधिकः पाठः—

प्रजापतिसुपादाय नरेन्द्राणां यशस्विनां ।

५. रा त प्र—सागरः ।

६. त प्र प भ—षष्टिपुत्रस० ।

७. ज ट—पृष्ठतो वयुः ।

८. त--वंशे ।

९. ज त ल ट—स्मृतं ।

१०. ल—उद्दिष्टं ।

११. भ—श्रवतामार्षं ।

१२. त ल प्र ट—धर्मार्थकामसंयुक्तं ।

- कोसलो नाम मुदितः स्फीतो जनपदो महान् ।
 १] निविष्टः सरयूतीरे पशुधान्यसमृद्धिमानं ॥१॥ [५
 अयोध्या नाम तत्रासीन्नगरी लोकविश्रुता ।
 २] मनुना मानवेन्द्रेण यत्रेनै परिनिर्मिता ॥२॥ [६
 आयता दशं च द्वे च योजनानि महापुरी ।
 ३] श्रीमती त्रीणि विस्तीर्णा नानासंस्थानशोभिता ॥३॥ [७
 सुविभक्तान्तरद्वारां सुविभक्तमहापर्यां ।
 ४] शोभिता राजमार्गेण जलसंसिक्तरेणुना ॥^१४॥ [८
 नानावणिग्जनोपेता नानारत्नविभूषिता ।
 ५] महाशालाऽन्विता दुर्गा उद्यानप्रवरैर्युता ॥५॥ [९

१. प्र प भ—कोशब्दो ।
 २. ज त ल प्र ट--०धनर्धिमान् ।
 ३. ज त ल प्र ट—पुरैव । प—पुरा ।
 ४. प—समभिनिर्मिता ।
 ५. प—पकं च [पंच च ?] ।
 ६. रा—त्वं च ।
 ७. ट—जोजनानि ।
 ८. ज त ल ट—वातिविस्तीर्णा ।
 ९. ज त ल ट—रत्नसंस्थानशो० । प्र—नवसंस्था० ।
 १०. त—०न्तरधारा । प्र—०क्कान्तरपथा ।
 ११. प्र—सुविभक्तापरायणा ।
 १२. प—राजमार्गेण महता विस्तीर्णेनोपशोभिते [ता ?] ।
 १३. रा—नानावर्षादि० ।
 १४. ज त ल प्र ट—महाशालावृता ।
 १५. ज ल—उद्यानास्तरणाभि० । त—उद्यानास्तोरथा० ।
 ट—उद्यानास्तरणावृता । प--उद्यानप्रवरैर्युता ।

- दुर्गगम्भीरपरिखां नानाऽऽयुधसमन्वितां ।
 ६] कपाटतोरणयुतां उपेता धन्विभिः सदा ॥६॥ [१०
 राजा दशरथो नाम महात्मा राष्ट्रवर्धनः ।
 ७] तां पुरीं पालयामास स्वपुरीं मघवानिव ॥७॥ [९
 दृढद्वारप्रतोलीकां सुविभक्तान्तरापणाम् ।
 ८] नानायन्त्रायुधवतीं नानाशिल्पिगणैर्युताम् ॥८॥
 १०] शतघ्नीपरिखोपेतांमुच्छ्रितध्वजतोरणाम् । [११३

१. ज त ल—अतिगम्भीरप० ट—असिगंभीरपरिषा ।

प—दुर्गगंभीरपरिषा ।

२. त—नानायुद्धस०

३. कै ज ल प्र ट—कपाटतोरण० । ज—कथातोरणयथा ।

४. ह्युपेता । ल—तमेता । ट—चोपेता ।

५. प—कपाटतोरणवती हर्म्यप्रासादसंकुला ।

६. ज त ल ट—धर्मात्मा ।

७. ल—स्वः पुरीं ।

८. त ल ट—सुविभक्ततरापणां । ज—सुविभक्ततरायणां ।

प्र प—सुविभक्तांतरायणां ।

९. ज त ल ट—शिल्पिगणान्विताम् । प्र—शिल्पगुणान्विताम् ।

भ—शिल्पिगणायुताम् ।

१०. ज त ल—भतः परमधिकः पाठः—

हस्त्यश्वरथसंपूर्णां नानायानसमाकुलाम् ।

नानापार्थिवभृत्यैश्च वणिग्भिश्चोपशोभिताम् ॥

प्र—सूतमागधसंबाधां श्रीमतीमतुलप्रभाम् ।

११. प्र प भ—शतघ्नीपरिखोपतामु० ।

१२. प—भतः परमधिकः पाठः—

सूतमागधसंयुक्तप्रह्वोपशोभितादितां ।

प्र—वधूनाटकसंबैश्च संयुक्तां सर्वतः पुरीम् ।

हस्त्यश्वरथसंपूर्णां नानायानसमाकुलां ।

नानापार्थिवभृत्यैश्च वणिग्भिश्चोपशोभितां ॥

- नानारत्नचयाकीर्णां धनधान्यसमन्विताम् ॥११॥^३
 १०] देवताऽऽयतनैश्चैव विमानैरिव शोभिताम् ।
 सभोधानप्रपाभिर्श्च रुचिराभिरलङ्कृताम् ॥१०॥ [N
 ११] प्रविभक्तमहाहर्म्यां नरनारीगणान्विताम् ।
 बृहच्छूरायपुरुषैराकीर्णामंरोपमैः ॥११॥ [N

भ—पुस्तकस्योत्तरपाश्वं पुनरपरहस्तेनेरथं पाठविन्यासः—
 हरस्यश्वरथसंपूर्णां नानायानसमाकुलां ।
 नानापार्थिकभृतैश्च वणिग्भिः शोभितां ।
 निधानशतसंवाधां सर्वैश्च विभवैर्युतां ।

१. रा—०न्यसमन्विता ।

२. प—अतः परमधिकः पाठः—

हरस्यश्वरथसंपूर्णां नानायानसमाकुलां ।
 नानापार्थिकभृतैश्च वणिग्भिश्चोपशोभितां ।
 निधानशतसंवाधां सर्वैश्च विभवैर्युतां ।

३. ज त ल—नास्ति ।

४. प्र—विमाने [नै ?] रभिःशो० ।

ज त ल ट—विमानैरुपशो० ।

५. ज त ल—अतः परमधिकः पाठः—

निधानशतसंवाधां सर्वैश्च विभवैर्युतां ।
 अत्र श्लोके पूर्वार्धापरार्धपादविपर्यासः ।

६. रा ज त ल ट—सभोधानप्रपाभिश्च ।

प्र—महोद्यानप्र० । प—सभोद्यानप्रियाभिश्च ।

७. ज त ल प्र ट—प्रविभक्तमहावेशमां । भ—सुविभक्तम० ।

८. ट—नरनारीसमाकुलां ।

९. ज त भ—बिहृच्छूरायपु० । प्र प—बिहृन्निरार्थपु० ।

१०. ज—संकीर्णां० ।

११. ट—नारित ।

प—अतः परमधिकः पाठः—

योधैराभिमरुत्तुल्ले [द्वै ?] राहवेष्बनियन्तुभिः ।
 गुप्तां पुरुषसिंहैश्च सिंहैरिव गिरैर्गुहां ॥

- १२] मंरोहमिव रत्नानां प्रतिष्ठानमिव श्रियः ।
महाप्रासादंशिवरैः शैलैर्गैरिव शोभिताम् ॥१२॥ [N
- १३] विमानचयसम्वाधामिन्द्रस्येवामरावतीम् ।
अष्टापदपदालेरुयै रम्यामालिखितामिव ॥१३॥ [N
- १४] नानारत्नचंयाच्छन्नां हृष्टपुष्टजनायुताम् ।
अविच्छिन्नान्तरगृहां समभूमिनिवेशिताम् ॥१४॥ [M
- १५] मृदङ्गवेणुगीणानां रम्यैः शब्दैर्विनादिताम् ।
नित्योत्सवसमाजाढ्यां नित्यहृष्टजनार्युताम् ॥१५॥ [N
- १६] ब्रह्मयोपस्वनवतीं धनुः स्वनविनादिताम् ।
वराक्षपानसैलिलां शालितण्डुलभोजनाम् ॥१६॥ [N
- १७] धूपमाल्यहविर्गन्धैर्हृद्यैश्चैर्वाधिवासिताम् ।

१. ज त ल प्र प ट—भारोहमिव । भ—आदोहमिव ।

२. ज त ल प्र—महाप्रासाद० ।

३. ज त ल ट—शैलैर्गैरुपशो० । प—शृंगरैश्चोपशो० ।

४. प—विमानमिव सिद्धानां तपसाधिगतं भुधि ।

५. ज त ल प्र प भ—नानारत्नचयैरुद्यु० । ब—०नमयाच्छन्नां ।

६. ज त ल प्र—जनैर्युतां ।

७. ज त ल—अविच्छिन्नान्तरगृहां ।

८. ट—नास्ति । कै—पुस्तकस्य पूर्वपार्श्वे । पश्चाद्दपरहस्तेन विन्यासः ।

९. ज त प्र—शब्दैर्विनादितां ।

१०. त ल—नित्यपुष्टजनैर्युतां । प्र—नित्यहृष्टजनैर्यु० ।

११. ज—नास्ति ।

१२. ज त ल ट—धनुः शब्दविनादितां । रा—धनुः स्वनविनादिनाम् ।

१३. ज त ल ट—वराक्षपानकलिङ्गां ।

प्र—०पानकलिङ्गा । प—नानाक्षपानकलिङ्गा ।

१४. ज त ल प्र प ट भ—हृद्यैश्चाप्यधिवासितां ।

- लोकपालोपमैः शूरैः सर्वज्ञास्त्रार्थपारगैः ॥१७॥ [N]
- १८] गुप्तां योधसतैश्चापि नागैर्भोगवतीमिव ।
स्वयं चैवेन्द्रकल्पेन पुंरीं देवपुरोपमाम् ॥१८॥ [N]
- १९] गुप्तामिक्ष्वाकुनाथेन राज्ञा दशरथेन च ।
वराभिर्वद्वि गुणवद्विरन्विताम्
द्विजोत्तमैर्वदपेडङ्गपारगैः ।
संहस्रशैः सत्यतपोर्दम्भान्वितै-
२०] महर्षिकल्पैर्यतिभिर्यताः तंभिः ॥१९॥ [२३]

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे अयोध्यावर्षनं
नाम पञ्चमः सर्गः ॥५॥

१. ज त ल ट—सर्वज्ञास्त्रविद्यारदैः ।
प—सर्वज्ञास्त्रपारगैः ।
२. ज त ल प—भोगवतीं यथा ।
३. कै—चैवेन्द्रकल्पेण ।
४. ज ल प्र ट—पुरी ।
५. ज त ल प्र ट—देवपुरोपमा ।
६. ज ल प्र ट—सुगुप्तेक्ष्वाकु० । त—स्वगुप्तेक्ष्वा० ।
७. ज त ल प्र ट—सा ।
८. ज त ल प्र प ट—वराभिर्वद्वि ।
९. ज त ल प्र ट—गुणवद्विरन्विता ।
१०. ज ल ट—वेदतदङ्गाम् ।
ल—वेदतरंग० (वेदाङ्ग० इत्यपरहस्तेन) ।
११. ज त ल ट—सहस्रशैः । प्र प म—सहस्रशैः ।
१२. ज व त ल प्र प ट म—सत्यतपोदम्भितः ।
१३. ज त ल ट—महात्मभिः ।

[वं=६]

[षष्ठः सर्गः]

[दा=६]

- पुण्यां तस्यामयोध्यायां वेदवेदाङ्गपारगः ।
१] दीर्घदर्शी महातेजाः पौरजानपदप्रियः ॥१॥ [१]
इक्ष्वाकूणामतिरथो यज्वा धर्मभृतां वरः ।
२] महर्षिकल्पो राजर्षिस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ॥२॥ [२]
बलवान् विजितामित्रो नीतिमान् विजितेन्द्रियः ।
३] धनधान्यैश्चं विविधैः शक्रवैश्रवणोर्षमः ॥३॥ [३]
आदिराजो मनुर्विं प्रजानां परिरक्षिता ।
४] राजा दशरथो नाम बभूव त्रिदशोर्षमः ॥४॥ [४]
तेन सत्याभिसन्धेन त्रिवर्गमनुपश्यता ।
५] पालिताऽभूत् पुरी श्रेष्ठां शक्रेणोवांमरावती ॥५॥ [५]
दृष्टपुष्टजने तस्मिन् पुरे नैवाबहुश्रुतः ।

१. प्र—तस्यां । ट—पुण्यां ।

२. प्र—पूर्यामयोध्यायां ।

३. प्र—सत्यवाग्बि ।

४. रा—नियतेन्द्रियः ।

५. ज त ल—धनधान्यादिविभवेः ।

६. त—०शक्रवैश्रव० । ट—०रिन्द्रवैश्रव० ।

७. प्र—मुनिरिव ।

८. ब—त्रिदशोर्षमः ।

९. प—पालिता सा ।

१०. ज त प्र ट—साथ । ल—नाथ ।

११. ब—शकृत्येवमरा० । त—शक्रेणोवा० ।

- ६] कश्चिदासीन् नरो नाऽपि कश्चिदन्यायवृत्तिमान् ॥६॥ [६
 न चाल्पविभवैः कश्चिदासीत्तत्र जर्नः पुरे ।
 ७] न चाप्यासीदसन्तुष्टः कुटुम्बी तत्र कश्चन ॥७॥ [७
 न कदर्थः कश्चिदासीन् नानृती न ज्ञतोऽपि वा ।
 ८] न मानी न च संरंभी न नृशंसो न कुत्सितैः ॥८॥ [८
 नामहात्मा नै पिशुनो न परस्वोर्पजीवकः ।
 ९] न चावर्षसहस्रायुर्नदीनो नाबहुभ्रजः ॥९॥ [N
 नराः स्वदारनिरता नार्यश्चासन् पतिव्रताः ।
 १०] सुव्रता वृत्तिमन्तर्भवै नरो आसंस्तथा स्त्रियः ॥१०॥ [९
 नाकुण्डली नामुकुटी नास्रग्वी नाविलेपनी ।

१. ज—वापि ।

२. त—नास्ति ।

३. रा प्र प भ—चाल्पविभवैः ।

४. ज ल ट—पुरे नरः । त—पुरे नवः ।

५. रा—नानृते । ल—नाव्रती ।

६. ट—नृशंसी ।

७. ज त प्र ट—करधनः । ल—कस्तनः ।

८. प्र—नाप्युशानो ।

९. व—परस्वोपजीविनः । ल—परं वोपजीवकः ।

प ट—परस्वोपजीविकाः ।

१०. प्र—०नामर्षी । कै प भ—०नामयी ।

११. कै प भ—नाबहुभ्रतः ।

१२. रा—नास्ति ।

१३. प्र भ—वृत्तिमंतश्च ।

१४. प्र प—ज्ज्वात्चासं० ।

१५. ज ल ल ट—नामावो ।

- १.१] तत्रे दुष्प्रकृतिनासीदरिद्रो वा पुरोत्तमे ॥११॥ [१०
नामृष्टभूषणधैरो न चाप्यासीदनिष्कधृक् ।
- १.२] नाहस्ताभरणोपेतो नानृती न च नास्तिकः ॥१२॥ [११
नानाहिताग्निर्नायज्वा विप्रो नाप्यसहस्रदः ।
- १.३] कश्चिर्नासीदयोध्यायां सद्वृत्तरहितो जनैः ॥१३॥ [१२
स्वकर्मनिरताश्चासन् सर्वे तत्र द्विजातयः ।
- १.४] यज्ञाध्ययननिष्ठांश्च विरताश्च प्रतिग्रहात् ॥१४॥ [१३
न नास्तिको नास्तिकवाङ् न कश्चित् क्रोधनो नरः ।
- १.५] न सूचको न चाशक्तो नाशुचिस्तत्र चाप्यभृत् ॥१५॥ [१४
नामृष्टभुङ् न चादाता नास्रगन्धो न चानृजुः ।

१. ज त ट—रक्तबन्धावृतो नासी० ।

ल—रक्तबन्धावृतो नाभू० ।

प्र—नावात्प्रावृतो नासी० ।

२. प—न करिषत्तत्र पुरुषः करिषद् दरिद्रपुरोत्तमे ।

३. ट—०भूषणधरो ।

४. ब रा—०निष्कधृत् । ज त ल ट—नैवाप्यासीच्च निष्टरः ।

५. ज त ल प्रट—नानृजुर्न ।

६. रा प भ—करिषदासीदयोध्यायां ।

७. कै ब—अश्रीमान् न महाशनः ।

८. ज त ल ट—नास्ति ।

९. रा—सुकर्मनिरतरचासन् ।

१०. प भ—०यननित्याश्च ।

११. प्र—नानृतवाक् । प भ—नानृतवान् । भ—०तवाङ् ।

१२. प भ—न सूचको ।

१३. ब—नास्ति । कै—पुस्तके ऽपरहस्तेन पुनर्बिन्द्यासः ।

१४. ब—चाश्रष्टभुङ् ? ।

१५. प्र प—नास्रगन्धो० ।

१६. प—नवानृजुः ।

१७. कै—अतः परमधिकः पाठः—

ब च बन्धसहस्रायुर्न दीनो नाबहुमजः । ज त ल ट—नास्ति ।

- १६] न दुःखी पुरुषः कश्चिन्न चासीदनलङ्कृतः ॥१६॥ [N
 चारुचातुर्यमाधुर्यशीलाचारगुणान्वितः ।
- १७] नार्यश्वासन्नयोध्यायां मृष्टाभरणाभूषितां ॥१७॥ [N
 नानात्मवान् न च क्रूरो न विरूपो न चालसैः ।
- १८] कश्चिदासीदयोध्यायां नाश्रीमान् नामहात्मवान् ॥१८॥ [N
 न दीनो नापि चोद्विग्नो नातुरो न भयार्कुलः । [१५७
- १९] द्रष्टुं शक्यो ह्ययोध्यायां नापि राजन्यभक्तिमान् ॥१९॥ [१६७
 वर्णश्रेष्ठान् पृजयन्तः पितृन् देवातिथींस्तथा । [N
- २०] आसन् दीर्घायुषस्तत्र नराः सत्यपरायणाः ॥२०॥ [१८
 ब्रह्मं पर्यचरन्तं क्षत्रं वैश्याः क्षत्रमनुव्रताः ।
- [N] शूद्रांश्चैवापि वर्णास्त्रीन् शुश्रूषन्तोऽनमूयवः ॥२१॥ [१९
 आसीत् क्षत्रं ब्रह्ममुखं विदुःशूद्रं राजभक्तिमत ।
- २१] न योनिसङ्करश्चापि तत्र नाचारसंकरैः ॥२२॥ [N

१. ज त ल प्र ट भ—रूपचातुर्यं० ।

२. रा प्र भ—मृष्टाभरणावाससः । प—मृष्टाभरणावाससः ।

३. ज त प ट—वाङ्मिशः । ल—वाशिलः ।

४. ज त ल ट—न महाशनः ।

५. ज—न क्रूरो । त ल—नाचरो ।

६. ज प्र प भ—भयानुरः ।

७. ल—राक्षो ।

८. ज त ल प्र ट—वर्णज्येष्ठान् ।

९. रा—पूरयन्तः ।

१०. प्र प ट—पितृदेवातिथींस्तथा । भ—देवातिथीनापि ।

११. रा—ब्रह्मचर्यं चरत् । प—ब्रह्मचर्यं चर० ।

१२. व—क्षत्रं वैश्यस्तथैव च । इत्यपरहस्तेन ।

१३. ज त ल प्र ट—नास्ति ।

१४. ल—आत्मनसंकरः ।

१५. प—श्लोके पूर्वापरार्थव्यत्ययः ।

एवमिश्वाकुनाथेन पालिता साऽभवत् पुरी ।

- २२] यथा पुरस्तान्मनुना मानवेन्द्रेण भूरियम् ॥ २३॥' [२०
योधानामभिर्वर्णानां संयुगेष्वनिर्वृतिनाम् ।
- २३] गुप्ता पुरी सहस्रैः सा सिंहैरिव गिरेर्गुहा ॥२४॥ [२१
पूर४] कामोर्जदेशजैश्चापि ह्यैर्हरिहयोपमैः ॥२५॥' [२२पृ
विन्ध्यपर्वतजैश्चापि गर्जैर्हैमवतैस्तथा ।
- २५] सख्यवीरगुणोपेतैः शूरैरव्यालंभेष्टितैः ॥' २६॥ [२३
पूर६] पद्माञ्जनकुलोद्भूतैर्भद्रमन्द्रमृगौन्वयैः ।' "

१. प—रकोके पूर्वापरार्थव्यत्ययः ।

२. ज त ल प्र प भ—०मामिकल्पानां । ट—०कल्पानां ।

३. प्र—०ष्वनुवर्तिनां । त ०षु निवर्तिनां ।

४. प्र प ट—काञ्चो जदे० । भ—कञ्चो जदे० ।

ज—०जदेशजैरिव । प त ल प्र ट—०जैश्चैव ।

५. प्र—हयैर्नानार्पुंस्तथा । प—हयैर्नानार्पुंस्तथा ।

(अत्र बाणजैरिति संभाव्यते)

६. प्र प—अतः परमधिकः बह्वसम्मतः पाठः—

नदीजैर्बाह्विजैश्च कीर्णा हरिहयोपमैः ।

७. प्र—०तजैश्चैव ।

८. प्र—बागैर्हैमैस्तथा । प भ—नागैर्हैम० ।

९. प्र—सत्यवीर्यगु० ।

१०. प—शूरैरव्यालसन्निभैः ।

११. ज त ल ट—नास्ति ।

१२. रा प—कुञ्चोपेतैः ।

१३. कै—'भद्रमन्द्रमृगान्वयै' रित्यपरहस्तेन पुनर्विन्धासः ।

ब—'०जंमंमन्द्रमृगान्वयै' रित्यपरहस्तेन पुनर्विन्धासः ।

१४. ज त ल प ट—नास्ति ।

प्र—अतः परमधिकः बह्वन्वालीवः पाठः—

पेरावसकुलीनैश्च चामभैरपि च द्विरीः [वैः?] ।

भद्रमैश्चैर्भद्रमैश्चैर्गमस्यैश्च संप्रुता ॥

उ२७] सा पुरी बहुभिः कीर्णा तथाऽऽसीद्बन्धहस्तिभिः ॥२७॥ [२४
सां योजनद्वयं भूमेः सत्यनामौ प्रकाशते ।

२८] सा पुरी यत्र राजाऽऽसीद्वाजा दशरथस्तथा ॥२८॥ [२६
तां सत्यथा वै दृढतोरणार्गलां

महांदिभिर्वैश्वसतैरलङ्कताम् ।

पुरीं सभोधानवतीमनुत्समां

२९] स कोशलेन्द्रो नृपतिर्व्यपालयेत् ॥२९॥ [२८

इत्यार्षे रामावयो^१ २ दशरथसौराज्यवर्जनं
नाम [षष्ठः] सर्गः ॥ ६ ॥

१. ब—रवासी० । प भ—तदासी० प्र—तदासीद्बन्धहस्तिभिः

२. ज त प्र ट—अयोजनाद्वा भूयो वा ।

ल—आयोजना वा भूयो वा ।

प—आयोजनत्वाद् भूमेः सा ।

भ—सा योजने द्वे तु भूमेः ।

३. ज ब त ल ट—सातिधामा । प्र—सत्यधामा ।

४. ज ब त ल ट—व्यकारात् । ट—व्यकारायत् । प—प्रकारवते ।

५. प्र भ—राजासीत्पुरा ।

६. कै—० 'धो महान्' इत्यपरहस्तेन पुनर्विभ्यासः ।

रा प्र—दशरथोनघः । भ—० धो नृपः ।

७. प—इत्थां दशरथो राजा बस्तोष्पतिरिवावसत् ।

ज त ल ट—नास्ति ।

८. रा—सत्यवादी ।—सत्यवाज्ञी । प भ—सत्यनाम्नी ।

९. ज त ल ट—दृढतोरणाकुलां ।

त—दृढतोरणां कुलां । प—दृढतोरणयोजनार्गलां ।

१०. ट—महर्षिभिः० । प—गृहैर्विधिभैरुपशोभिताम्बरा ।

११. ल—पुरीं सभोम्बावत्० ।

प—प्रियसामोचानवत्० ।

१२. प्र भ—कोशलेन्द्रो नृ० ज त ल ट—० अपाठ० ।

प—सत्तास वै शक्रसमो नराधिपः ।

[वं = ७]

[सप्तमः सर्गः]

[दा = ७]

मन्त्रिणावृत्विजौ चैव तस्यास्तामृषिसत्तमौ ।^२

१.] वसिष्ठो वामदेवश्च वेदवेदाङ्गपरारगौ ॥१॥^४ [४

अष्टावन्ये बभूवुश्च तस्यामात्या महीपतेः ।

२.] शुचयश्चानुरक्ताश्च नित्यं प्रियहिते रताः ॥२॥^५ [२

वृष्टिर्जयन्तो विजयः सिद्धार्थोऽर्थसाधकः ।

१. प्र—अतः पूर्वं दाक्षिणात्यसम्मतोऽधिकः पाठः—

तस्यामात्या गुणरासमिचवाको सुमहात्मनः।

मन्त्रज्ञाभेक्तिज्ञाश्च नित्यं प्रियहिते रताः।

अष्टौ बभूवुर्भीरस्य तस्यामात्या यशस्विनः ।

शुचयश्चानुरक्ताश्च राजकार्येषु नित्यशः ।

वृष्टिर्जयन्तो विजयः सिद्धार्थोऽर्थसाधकः ।

अशोको मन्त्रपालश्च सुमन्त्रश्चष्टामो महान् ।

२. प्र—अत्र [त्वि ?] जौ द्वावभिमतौ तस्यास्तामृषिसत्तमौ ।

(अयं हि पाठः दाक्षिणात्यसम्मतः)

३. प्र प--वशिष्टो ।

४. प्र—मन्त्रिणश्च तथापरे । दाक्षिणात्यसम्मतः पाठः ।

५. प्र—अतः परमधिकः दाक्षिणात्यसम्मतः पाठः--

भवज्ञोऽप्यथ जावालिः काश्यपोऽप्यथ गौतमः ।

मार्कण्डेयस्तु दीर्घायुस्तथा कात्यायनो द्विज [ः] ॥

एतैर्ब्रह्मर्षिभिर्नित्यमृत्युजस्तस्य पौर्वकाः ।

६. प भ—शुचयत्वनुरक्ताश्च ।

७. प—सत्यप्रिय० ।

८. प्र--नारित ।

९. प—वृष्टिर्जं । ज त ट—वृष्टिर्जं० ।

१०. प—धोप्यर्थ० ।

- ३] अशोको धर्मपालश्च सुमन्त्रश्चाष्टमोऽभवत् ॥३॥ [३
 हीमन्तो विनयोपेता नीतिज्ञा विजितेन्द्रियाः । [६पू
 ४] मतिमन्तः सावहितो राजनिर्देशकारिणः ॥४॥^१
 तेजः क्षमा-वयः-प्राप्ताः स्मितपूर्वाभिभाषिणः । [७
 ५] अलुब्धा धृतिमन्तश्च सत्यधर्मपरायणाः ॥५॥ [N
 नैषामविदितं किञ्चित्स्वेषु चैव परेषु च ।
 ६] चिकीर्षितं भवेद्राज्ञो मित्रोदासीनविद्विषाम् ॥६॥ [८
 धर्माचारविवेकज्ञाः सर्वत्र समदर्शिनः । [N
 ७] कोशसङ्ग्रहणे युक्तास्तथा बलपरिग्रहे ॥७॥ [११पू
 पुत्रेऽपि च प्राप्तदोषे धर्मतो दण्डपातिर्नः । [१०उ
 ८] अद्रोग्धारश्च धर्मेण शत्रोरप्यकृतागसः ॥८॥ [१.१उ
 प्रागतज्ञानविज्ञानां पितृपैतामहोचिताः ।
 ९] रक्षितारश्च वर्णानां नित्यं विषयवासिनाम् ॥९॥ [१२

१. प—सुमन्त्रो मन्त्रकोविदः । ट—सुमित्रश्चाष्टमो ।

२. त ल—०मन्तस्त्ववहिता ।

ज प्र ट--०मन्तः स्ववहिता० ।

भ—०मन्तः सुविहिता० ।

३. प—अयं श्लोकः १३ श्लोकात्परं विशेष्यः ।

४. ट--तेजोवयः कृपाप्राप्ताः ।

५. त--०भिभाषणः । प्र--०पूर्वाभिभाषिणः ।

६. ट--चैवापरेषु ।

७, ज त ल प्र प ट भ—कश्चिद्राज्ञो ।

८. त—दंडतो धर्मपातिनः ।

९. अद्रोग्धारः स्वधर्मेण ।

१०. ज त ल—प्रागतज्ञानागतज्ञानाः ।

प्र प भ--आगतज्ञा० । ट--प्रागतज्ञानागत० ।

११. प--०तामहोहिताः । ट--०तामहोदिताः ।

कोशसङ्ग्रहे युक्ता ब्रह्मस्वस्याविर्हितंकाः ।

१०] अतीक्ष्णचण्डी नेतारः परार्थबलपौरुषाः ॥१०॥ [१३

परस्परेणाविरुद्धाः प्रीतिमन्तः प्रियंवदाः ।

११] परापवादविरैता गुणाढ्या नच गर्विताः ॥११॥ [N

आर्यवेषाः सुर्मनसो नच सन्दिग्धनिश्चयाः ।

१२] नरेन्द्रवचनासक्ताश्चेतसा तत्परार्यंगाः ॥१२॥ [N

सुंगुणेषु परिख्यातो नामरूपगुणान्वयैः ।

१. प्र—कोशसंरचये ।

२. प्र—०स्यारहितकाः । प--स्यापि हिं० । भ--०स्यावहिं० ।

३. ज ट—अतीक्ष्णदंडा वेत्तारः ।

त ल प्र—अतीक्ष्णदंडवेत्तारः । व—अतीक्ष्णदंडनेतारः ।

४. ज ल ट--०बलपौरुषम् । प--०त्मा बलपौरुषे ।

भ--परात्मबलपौरुष ।

५. त—परापवादविरुद्धाः ।

६. ज त ल ट—पुण्याढ्या ।

७. ज त ल ट—आर्यवेषाः ।

८. ज त ट--सुवचसो । ल—सत्यवाचो ।

९. ज त ल प्र भ--नरेन्द्रवचनासक्तचेतसः ।

ट . नरेन्द्रवचनासक्तमानसः ।

१०. ज त ल ट—सत्पराक्रमाः ।

११. प—नास्ति ।

१२. रा ज ल प—स्वगुणेषु परि० । त—स्वगुणेष्वपरि० ।

प्र—स्वगुणेष्वपि विख्याता ।

ट—स्वगुणेषूपविज्ञाता ।

१३. ज त ल ट—नामरूपगुणान्विताः ।

प्र—नास्ति ।

- १३] परराज्येऽपि विलयाता नयबुद्धिगुणांशुभिः ॥१३॥ [N
 आसंस्तदाऽनुसंरक्तौः सर्वे वर्णाः स्वकर्मभिः ।
- १४] नासीत् पुरे वा राष्ट्रे वा तस्करो नाऽशुचिर्ब्रतः ॥१४॥ [१४उ
 न दुष्टः कश्चिदप्यासीत् परदारामिभर्षकः ।
- १५] कुत्समासीदनुद्विग्नं राष्ट्रं तैः परिपालितम् ॥१५॥ [१५
 प्रसस्तमेवमासीत् तद्राष्ट्रं पुरवनानि च । [N
- १६] अमात्यैरीदृशैस्तैस्तु राजा दशरथोऽन्वितः ॥१६॥ [१६उ
 धर्मतः पालयामास पृथिवीमनुरञ्जयन् ।
 अवेक्षमांशाभारेण महीं सूर्य इवांशुभिः ॥१७॥ [२०
- १७] नाध्यगच्छेत् क्वचित् कश्चिदैश्वाकः शत्रुमात्मनः ॥१८॥ [२२पू

१. ज त ल ट--परराज्येषु ।

प्र--नास्ति ।

२. ज त--नयबुद्धिगुणाः शुभाः । ल--नयबुद्धिगुणाः शुः ।

ट--नयबुद्धिगुणाः शुभाः । भ--नामबुद्धिगु० ।

३. त ल--आसंस्तदनुसं० । प्र--आसंस्तन्न गृहीतास्तैः ।

४. ज त--सुकर्मसु । ल प ट--स्वकर्मसु ।

५. रा--नाशुचिर्नराः । प्र प--नाशुचिर्नरः । भ ट--वाशुचिर्नरः ।

ट--वाशुचि० ।

६. भ--सर्वमासीदनु० ।

७. त--तं ।

८. प्र--प्रसस्तं सर्वमेवासीद्राष्ट्रे परबहानि च ।

प--प्रसस्तं सर्वमेवासीद्राष्ट्रेषु नगरेषु च ।

९. ज त ल ट--नास्ति ।

१०. कै रा ज भ--अवेक्षयमाण० ।

११. रा--नाप्रगच्छत् । प्र--नाधिगच्छत् ।

१२. रा प्र--किञ्चिदिश्वाकुः । व--कश्चिदिश्वाकः ।

प--तुल्यं विशिष्टं । भ--कश्चिदिश्वाकुः ।

ट--कश्चिदिश्वाकुः ।

१०

वाल्मीकीय-रामायणम् ।

तैर्मन्त्रिभि र्भर्तृहितै र्निविष्टैर्

विद्वद्भिरासैः कुशलैः समर्थैः ।

स पार्थिवो दीप्तिमवाप युक्तम्

१८]

तेजोमयैर्गोभिरिवाम्बरेऽर्कः^१ ॥१९॥

[२४

इत्याचं रामायणे आदिकाण्डे^१ अमात्यवर्णनं
नाम सप्तमः सर्गः ॥७॥

१. ज त ल प ट—० भर्तृहिते ।

२. प्र—समस्तै [ः]

३. कै—युक्तैस् ।

४. ज त ल ट—तेजोमयैर्क इवांशुसंघः ।

५. ज त ल प्र.—बालकाण्डे ।

[वं०=८, ९] [अष्टमः सर्गः] [दा०=८, ९, १०]

तस्य धर्मप्रधानस्य धर्मज्ञस्य महात्मनः ।

- १] सुतार्थे तप्यमानस्य नाभूद्वंशकरः सुतः ॥१॥ [१]
 तस्य चिन्तयतो बुद्धिरूपज्ञेयं महाप्रैतेः ।
- २] सुतार्थं वाजिमैथेन किमर्थं न यजाम्यहम् ॥२॥ [२]
 सुनिश्चितां मतिं कृत्वा यष्टव्ये वसुधाधिपः ।
- ३] मन्त्रिभिः सह संमंश्र्य तैः स्वामिहितकारिभिः ॥३॥ [३]
 तत्राब्रवीदिदं राजा सुमन्त्रं मन्त्रिसत्तमम् ।
- ४] शीघ्रमानय सर्वास्त्वं वसिष्ठप्रमुखान् गुरुर्न ॥४॥ [४]
 एवमुक्तो नृपतिना सुमन्त्रो वाक्यमब्रवीत् ।
- ५] नरेन्द्र श्रूयतां तावत्-पुराणे यन्मया श्रुतम् ॥५॥ [६.१]
 सनत्कुमारो भगवान् पुरा कथितवान् कथाम् ।
- ६] भविष्यं विदुषां मध्ये तव पुत्रसमुद्भवम् ॥६॥ [६.२]

१. रा ज—नासीद्वंशकरः ।

२. ट—तस्य धर्मप्रधानस्य नाभूद् वंशकरः सुतः ।

३. प—रूपज्ञेयं महात्मनः ।

४. प—स्वामिनो हितकारिभिः ।

५. कै—भद्रंस्त्वां ।

६. ल प ट—द्विजान् ।

७. कै व—सुमन्त्री ।

८. त ल ट—वधावत् प्रोक्तवान् पुरा ।

९. व—भविष्ये ।

- अस्तीह कश्यपमुतो विभाण्डकं इति श्रुतः ।
 ७] ऋष्यभृङ्ग इति ख्यातस्तस्य पुत्रो भविष्यति ॥७॥ [९.३
 स वने नित्यसंष्टंढो मुनिपुत्रो वनेचरः ।
 ८] नान्यं प्रज्ञास्यते कश्चिन्मानवं पितृवर्जितम् ॥८॥ [९.४
 तस्य नूनं ब्रह्मचर्यं भविष्यति महात्मनः ।
 ९] लोकेषु प्रथितं चोग्रं तपस्तस्य भविष्यति ॥९॥ [९.५
 तपोरतस्य तस्यैवं कालः समभिर्वत्स्यति ।
 १०] अग्निं शुश्रूषमाणस्य पितरं च यशस्विनः ॥१०॥ [९.६
 एतस्मिन्नेव काले तु लोमपादं प्रतापवान् ।
 ११] अङ्गेषु प्रथितो राजा भविष्यति महाबलः ॥११॥ [९.७
 तस्यै व्यतिक्रममवा भविष्यत्यतिदारुणा ।
 १२] अनाष्टिर्जनपदे क्षयायै बहुवार्षिकी ॥१२॥ [९.८

१. प—विभाण्डकमिति ।

२. त ल ट—जातु संष्टंढो ।

३. रा ज ष भ—जाम्बवत् ।

४. ट—किञ्चिन्मानवं ।

५. ल—तस्याच्छिन्नं । ट—तस्याच्छिन्नं ।

६. भ—चापि ।

७. ल ट—तस्यैव ।

८. ज ल—समतिवत्स्यति । त्—सम्प्रतिवत्स्यति ।

ट—समतिवत्स्यति । भ—समाभिर्वर्तते ।

९. ज भ—यशस्विनं । त ट ल—तपस्विनः ।

प—तपस्विनं ।

१०. ल—लोमपादः (?) ।

११. प—तस्याप्यतिक्रममवा ।

१२. कै ष—क्षया ष ।

अनादृष्ट्या तथा राजा तदा संपरिकल्पितः ।

१३] वक्ष्यति ज्ञानिनो विमाननादृष्टिप्रतिक्रियाम् ॥१३॥ [९.९

भवन्तः श्रुतिदृष्टार्था लोकदृष्टान्तवेदिनः ।

१४] ममाज्ञां दातुमर्हन्ति यथावत्प्रशमेदियम् ॥१४॥ [९.१०

ते तमाज्ञापयिष्यन्ति श्रुतवेदान्तवेदिनः ।

१५] विभाण्डकस्युतं राजन् सर्वोपायैस्त्वमानय ॥१५॥ [९.११

आनाय्य च महाराजं ऋष्यशृङ्गसृषेः सुतम् ।

१६] प्रयच्छास्मै सुतां शान्तां विधिना मुसमाहितः ॥१६॥ [६.१२

तेषामेतद्वचैः श्रुत्वा स राजा चिन्तयिष्यति ।

१७] न्येनोपायेन वै शक्यं इहानेतुमिति प्रभुः ॥१७॥ [६.१३

स निश्चयं यदां राजा स्वयं नाधिगमिष्यति ।

१८] तदाऽमात्यान् समाहूय प्रतिवक्ष्यति निश्चयम् ॥१८॥ [९.१४

पुरोहितं जनांश्चान्यान्मन्त्रनिश्चयकोविदान् ।^{१२}

१. रा—तदा स परिकल्पितः । ज प—तदा स परिक० ।

७ ट—स तदा परिक० । म—तथा स परि० ।

२. ज ७ ट—प्रक्षयति । त—प्रकृति० । प—प्रवृत्ति० ।

३. श्रुतिदृष्टान्ते । म—श्रुतिसम्पन्ना ।

४. ७—लोकदृष्टान्तवेदिनः ।

५. प—प्र[?]ज्ञाणा मन्त्रवादिनः ।

६. कै ज ब—महाराजन् । त ७ ट—महातेजा ।

प—महाराजा ।

७. प—तेषां तद्वचनं ।

८. प ट म—नेनोपायेन । कै—शोधनरूपेषु वकारस्थाने ककारः कृपः ।

९. ट म—सक्यमिहानेतुमिति ।

१०. व प म—तदा ।

११. व—पुरोहितां ।

१२. ट—पुरोहितानां चान्यानां मन्त्रनिश्चयकोविदान् (इ)

- १९] ते चापि पृष्ठा नैवास्य प्रतिपत्स्यन्ति निश्चयम् ॥१९॥' [N
पुरोहितममात्यांश्च प्रेषयामास यत्नतः ।^१
- २०] आनयध्वं महाभागमृष्यशृङ्गं सुसत्कृतम् ॥२०॥' [N
ते तु राज्ञो वचः श्रुत्वा व्यथिता विक्लवाननाः ।
- २१] न गच्छेम ऋषेर्भीता अनुनेर्ष्यन्ति ते नृपम् ॥२१॥ [९.१५
बक्ष्यन्ति चिन्तयित्वा ते तस्योपायान् बहूस्तर्तः ।
- २२] वयं तमानयिष्यामो न च दोषो भविष्यति ॥२२॥' [९.१६
वेक्ष्यामि मुनिवेषाभिरानेष्यामं ऋषेः सुतम् ।
- २३] भोजयित्वाऽभ्युपायेन स्वां पुरीं पितुराश्रमात् ॥२३॥ [N
भविष्यति ततो वृष्टिस्तस्य राज्ञो महात्मनः ।
- २५] तस्याभ्यागमनादेव ऋषिपुत्रस्य धीमतः ॥२४॥' [N

१. प ट—अतः परमधिकः पाठः—

यदा तदा स्वयं राजा मन्त्रिणास्तत्र बक्ष्यति ।

२. प—प्रेषयिष्यति ।

३. ट--नास्ति ।

४. व—० गसृचिशृङ्गं ।

५. ट—आनयध्वं वनात्तस्मादृष्य शृङ्गमृषेः सुतम् ।

६. ट—च ।

७. इति बक्ष्यन्ति ।

८. ट—बहूस्तथा ।

९. भ--पश्चिमपार्श्वेऽतः परमधिकः पाठः—

इति तेषां वचः श्रुत्वा भूवः स पृथिवीपतिः ।

सृतीयेऽहनि निश्चित्य मन्त्रिभिर्मन्त्रनिश्चयम् ॥

१०. प—वेक्ष्यामिमुनिवेषाभिरानयिष्यन्ति ।

११. प ट भ—कोभयित्वाभ्युपायेन ।

१२. प—वृष्टी राष्ट्रे तस्य ।

१३. ट—वर्षिष्यति ततो देवस्तस्य राष्ट्रे महिपतेः ।

१४. रा ज ल प भ—मुनिपुत्रस्य ।

- स राजा विधिवत् कन्यां [शान्तां] तस्मै प्रदास्यति ।
 २६] स्वकां दृष्टितरं भार्या रूपौदार्यगुणान्विताम् ॥२५॥ [N
 एवं सै तस्यै जामाता भविष्यति महायज्ञाः ।
 २७] लोमपादस्य राजर्षेः ऋष्यशृङ्गः प्रतापवान् ॥२६॥ [N
 राज्ञो दशरथस्यापि स पुत्रानभिकांक्षितान् ।
 २८] विधास्यति महायज्ञे हविर्दुत्वा हुताशने ॥२७॥ [N
 सनत्कुमाराद्वचनमिति वै^१ संश्रुतं मया ।
 २९] ऋषिर्मध्ये कथयतस्तथा तदिति मे मतम् ॥२८॥^२ [N
 अथ दृष्टो दशरथः मुमुञ्चं प्रत्यभाषत । [६.१९पृ
 ३१] तस्य पुण्यात्मनः सौधो ब्रह्मचर्यव्रतस्य हि^३ ॥२९॥ [N

१. ट—विधिवच्छांतां ।
 २. कै—स्वकीं । अपरहस्तेन विन्यासः ।
 ३. ट—तस्य स० ।
 ४. ट—महातपाः ।
 ५. भ—० नभिकांक्षति ।
 ६. विधास्यते ।
 ७. ट—महातेजा० । भ—महायज्ञं ।
 ८. हविर्दुत्वाध्वराभिषु ।
 ९. ज—सनत्कुमारव० । प—सनत्कुमारवचनमिति ।
 १०. व—चैवं श्रुतं मया । त—चैव मया श्रुतं ।
 प—तत्र संश्रुतं मया । ट—चैवं मया श्रुतं ।
 ११. ल—ऋषिमध्ये कथयतस्तत् ।
 १२. भ—श्रुतः परमधिकः ब्रह्मसम्मतः पाठः—
 मन्त्रिभिः सहितश्चैव तथा स कृतवांस्तदा ।
 अंगराजो महाप्राज्ञो लोमपादो महायज्ञाः ॥
 १३. भ—सर्वा ।
 १४. ज ल प ट—ह । भ—च ।

- आनीतिऋष्यशृङ्गस्य विस्तरेण ममोच्यताम् ।^१ [६.१९७
 १२] मृगैः सार्धं प्रवृद्धस्य कौमारब्रह्मचारिणः ॥३०॥ [N
 सुमन्त्रो नोदितो राज्ञा प्रोवाचेदं वचस्तदा ।^२
 ६.१] आनीति ऋष्यशृङ्गस्य येनोपायेन मन्त्रिभिः ॥३१॥[१०.१
 लोमपादं तमूचुस्ते सहामात्यपुरोहिताः ।
 ६.२] उपायोऽत्र निरापायोऽस्माभिः परिचिन्तितः ॥३२॥[१०.२
 ऋष्यशृङ्गो वनचरस्तर्पस्यध्ययने रतः ।
 ६.३] अनभिन्नः स नारीणां विषयाणां सुखस्य च ॥३३॥[१०.३
 इन्द्रियार्थैरभिरतैर्नरचित्तप्रमाथिभिः ।
 ६.४] पुरमावांहयिष्यामः क्षिप्रं च प्रविधीयताम् ॥३४॥ [१०.४
 गणिकास्तत्र गच्छन्तु रूपवत्यः स्वलङ्कृताः । [१०.५पृ
 ६.५] उपायज्ञाः कलाज्ञाश्च वैशिकोपरिनिष्ठिताः ॥३५॥[N
 रहस्युपेत्य ता एवमानयन्तु शुभव्रतम् ।^३
 ६.६] लोभयित्वा यथा योगं येनोपायेन शक्यते ॥३६॥[N

१. रा—ममोचिताम् ।

२. प—नास्ति ।

३. ज ल भ—वचरततः ।

४. प—अनीत ऋष्यशृङ्गोऽभूद् । भ—आनीतिऋष्यशृ० ।

५. प—सहामात्यं पुरोहिताः ।

भ—सहामात्यपुरोहितं ।

६. भ—तपस्येकरसे ।

७. ज—गुरुः ।

८. रा प—सुखस्य ।

९. प—०र्थरभिमतो ।

१०. रा—०मावाहयिष्यामि । प—पुरं तमानयि० ।

११. प—वैशिके परि० । भ—वैशिके परि० ।

१२. प—रहस्युपेत्योपायेन आनयन्तु पतिव्रतं ।

श्रुत्वा तथेदं राजा सं प्रत्युवाच पुरोहितम् ।

- ६.७] मन्त्रिणश्च स धर्मात्मा तथा चक्रुश्च ते तदा ॥३७॥ [१०.३
 पृ२.१०] वारमुख्याश्च ता गत्वा वनं प्रतिभयं महत् । [१०.३
 N] ऋषिपुत्रस्य धीरस्य नित्यमश्रमवासिनः ॥३८॥ [१०.७उ
 पित्रा स नित्यं निर्दिष्टो नातिचक्राम आश्रमात् । [१०.८
 N] आश्रमस्याविदूरस्था यत्नं कुर्वन्ति दर्शने ॥३९॥ [१०.७पृ
 उ९.११] विभाण्डकभयोपेता लतागुल्मसमावृताः ।
 चारयित्वा तु तमृषिमाश्रमादभिनिर्गतम् ॥४०॥ [N
 ९.१२] तस्य संदर्शने नष्टां ऋषिपुत्रान्तिकं तंतः । [N
 उ९.२०] न तेन जन्मप्रभृतिं दृष्टपूर्वो वनेचरः ॥४१॥

१. ज प भ—तं राजा । ल—राजा च ।

२. प—अतः परमधिको वक्रसम्मतः पाठः—

फलवन्तश्च ये वृक्षाः समूहविटपास्तथा ।

रोषयित्वा बृहद्बौधु सुरभीणि स पार्थिवः ॥

पानानि च सुगन्धीनि फलान्यास्वादयन्ति च ।

सुसमृद्धास्तथा नौभिः प्रयाता यत्र वै मुनिः ॥

३. कै थ ल—वारमुख्यश्च । ज-वधूमुख्यश्च ।

४. ज—नित्यमश्रमिणस्तथा ।

५. ज प भ—संदिष्टो ।

६. ज प—नौभिर्निर्वाति चाश्रमात् ।

७. त ल प भ—विभाण्डकभयोद्धिम्ना ।

८. ज प—वारयित्वा ।

९. प—तस्थुर्ऋषिपुत्रस्य तात् ।

१०. भ—गताः ।

११. भ—पुस्तके उतः परं वक्रशास्त्रीयस्य रामायणस्य नवमसर्गस्थ

१३ श्लोकात् १० श्लोकस्योत्तराद्धपर्यन्तः पाठः केनाप्युद्धृत्यो.

परपार्थे विन्यस्तः । स च तत्रैव द्रष्टव्यः ।

१२. प—दृष्टं पूर्वं ।

पृ९.२१] स्त्री वां पुमान् वा यच्चान्यत्सर्वं नगरराष्ट्रकम् । [१०.९
ऋते पितुर्ऋषिश्रेष्ठार्त्वं स जगाम यदृच्छया ॥४२॥

N] वैभाण्डकिस्तत्र ताश्च प्राप चैव पुराङ्गनाः ।

ततः कदाचित् तं देशमाजगाम यदृच्छया ॥४३॥

दृष्ट्वैव च सुचार्वङ्गीस्तास्तदा तनुमध्यमाः । [१०.१०

N] तान्निचत्रवेषाभरणा गायन्त्यो मधुरस्वराः॥४४॥[१०.११पृ
उ९.२१] तं देशमुपसंगम्य जातकौतूहलो मुनिः ।

पृ९.२२] विभाण्डकमुतो जिष्णुंस्तस्थौ विस्मितमानसः ॥४५॥[N
ऋषिपुत्रमुपागम्य सर्वा वचनमब्रुवन् । [१०.११उ

कस्त्वं किं वर्तसे चेहं ज्ञातुमिच्छामहे वयम् ॥४६॥

९.२४] एकश्च विजने घोरे वने चरसि शंस नः ॥१०.१२

१. ज—नास्ति ।

२. रा—पितृऋषिश्रे० ।

३. ज भ—वराङ्गनाः ।

४. रा व प—नास्ति । कै—उत्तरपार्श्वं उपरहस्तेन ।

५. ज प—सुचार्वङ्गीस्तास्तदा ।

६. प—तदेशमुपसंगं ।

७. प—धीमांस्तस्थौ ।

८. प—अतः परमधिको ब्रह्मसम्मतः पाठः—

ताश्च तं विस्मितं दृष्ट्वा जगुष्कलपदाक्षरम् ।

गीतं मधुरभाषिण्यो जहसुश्चायतेष्वयाः ।

अब्रुवन्मैत्रमभ्यासमागम्य भदविह्वलाः ।

९. प—कस्य सुतश्चासि ।

१०. प—तं । भ—तत् ।

११. प—अतः परमधिकः ब्रह्मसम्मतः पाठः—

श्रापुं त्वां वयामिच्छाम तत्त्वमाचक्ष्व नः प्रभो ।

- ७६.२५] अदृष्टपूर्वास्तास्तेन काम्यरूपधराः स्त्रियः ॥^१४७॥
 हार्दाक्षस्य मतिर्जाता व्याख्यातुं पितरं ततः । [१०.१३
 ६.२६] विभाण्डको मम पिता पुत्रस्तस्याहमौरसः ॥४८॥
 ऋष्यशृङ्ग इति ख्यौतं नाम कर्म च मे^२ भुवि । [१०.१४
 ९.२७] इहाश्रमपदे ऽस्माकं समीपे शुभदर्शनाः ॥^३४९॥
 करिष्येऽतिथिपूजां वः सर्वेषां विधिपूर्वकम् । [१०.१५
 ९.२९] ऋषिपुत्रवचः श्रुत्वा सर्वासामभवन्मतिः ॥^४५०॥ [१०.१६
 तत्राश्रमपदं द्रष्टुं जग्मुः सर्वाश्च तत्र ह ।^५ [१०.१६
 ९.३०] गतानां तत्र वै पूजां चक्रे वैभाण्डिकस्ततः ॥५१॥
 इदमर्घ्यमिदं पाद्यमिदं मूलं फलं च^६ नैः । [१०.१७
 ९.३१] प्रतिष्ठ्य तु तां पूजां सर्वा एव समुत्सुकाः ॥ ५२॥

१. प—अदृष्टपूर्वास्ता दृष्ट्वा चारुरूपधराः ।
 २. प—अतः परमधिको बह्वसम्मतः पाठः—
 ऋषिपुत्रस्तदात्मानमाख्यातुमुपचक्रमे ।
 ३. कै रा ज ब ल भ—ख्यातो ।
 ४. रा—मे प्रथितं ।
 ५. भ—समीपं ।
 ६. ज—इहाश्रमपदेः साकं समीपैः शुभदर्शनैः ।
 ७. ज ल—सर्वासां । प—सर्वाश्च ।
 ८. प—ताश्च तत्र ह ।
 ९. प—नास्ति ।
 १०. ज ल—तमाश्रमपदं ।
 ११. कै—वैभाण्डिकस्ततः । ज—वैभाण्डिकस्तदा ।
 ल प भ—वैभाण्डिकस्तदा ।
 १२. व—मूलफलं ।
 १३. रा—चरुः ।
 १४. प—अतः परमधिको बह्वसम्मतः पाठः—
 ऋषिशापमयोद्विभ्रा गमनाय मा^७ वधुः ।

उ६.३२] गीतमाधुर्यभाषिण्यो जहमुदचायतेज्ञाः ।

फलान्याश्रमजातानि यदि रोचन्ति वै द्विजैः ॥५३॥

६.३३] अस्माकमपि मुख्यानि फलानीमानि सन्ति वै ।

N] प्रतिगृहाण भद्रं ते भक्षयैतानि मा चिरम् ॥ ५४ ॥ [१०.१९

अथास्मै प्रदद्मुःस्वादून् मोदकान् फलसभिभान् । [१०.२० उ

६.३४] अन्यांश्च विविधान् भक्ष्यान् मधूनि मधुराणि च ॥ ५५ ॥ [N

तानास्वैवाद्य स तेजस्वी फलानीति त्वमन्यत ।

N] अनाचार्राणि दीर्घाणि वने वननिवासिनाम् ॥ ५६ ॥ [१०.२१

N] ततस्तु तं समालिङ्ग्य सर्वा हर्षसमुत्सुकाः ।" [१०.२० पू

उ६.३५] परिषेस्वजिरे चैनं हसन्त्यो मदविह्वलाः ॥५७॥ [N

पृ६.३६] परिपस्पृशिरे चैनं पीनैरुरसिजैः सुखैः । ५८ ॥ [N

१. ज—गीतं माधु० ।

२. प—अतः परमधिकः पाठः—

अथैनमूचुर्भीतारथ स्मयमाना इवं वचः ।

३. ज—द्विजाः ।

४. प—नास्ति ।

५. प—पूजां च ।

६. प—अतः परमधिकः वङ्गसम्मतः पाठः—

तीर्थोदकमिदं तावद् पीयतामिति भूसुर ।

७. ज ल प भ—ताम्यास्वाद्य ।

८. कै प भ—अनास्वादितपूर्वाणि । ज--०णि दुर्गाणि ।

९. भ—यनं ।

१०. प--सहर्षं च समुत्सुकाः ।

११. ल—अतः परं २३ श्लोकस्य प्रथमः पादः पुनरावर्तितः ।

१२. ज—परिष्वसिरे ।

१३. प—मुहुः ।

१४. प--अतः परमधिकः वङ्गसम्मतः पाठः—

मधूनि च सुगन्धीनि पीत्वा प्रमुदितो ऽभवत् ।

सुकुमारैरथ तैरंगैस्त्वानिः स्पृष्टो ऽवमुद्यत ॥

स्पृष्टा[मा]स तासां च स्वर्गस्य ककितस्य च ।

आपृच्छथ चे तदा विभ्रं व्रतचर्या निवेद्य च ॥५८[१०.२२पृ

६.४०] स्वमाश्रमपदं तस्य व्यपदिश्याविदूरतः ।

[N] गच्छन्ति स्मापदेशेन भीतास्तस्य पितुः स्त्रियः५९[१०.२२उ

पृ९.४१] तासु प्रतिगैतास्वेव ऋष्यभृङ्गः समुत्सुकः ।

[N] अस्वस्थद्वयस्तत्र दुःखं संपरिर्वर्तते ॥६०॥ [१०.२३

[N] संस्मरन्मथ तं देशं स जगाम स्त्रियस्तथा ।

उ६.४१] तद्गतेनैव मनसा न निद्रामभिगच्छति ॥६१॥ [N

अथ सायंतने काले न्यवर्तत विभाण्डकः ।^f

१. व—तां ।

२. भ—व्यपदिश्य विदूरतः ।

३. ज—तास्वप्रतिगता० । प—०गतास्वेवमृष्य० ।

४. व प--स्म परिवर्तते ।

५. प--देशमाजगामाथ वीर्यवान् ।

६. ज—नो ।

७. ज ल भ--निद्रामधिग० । प--निद्रामध्यगच्छत ।

८. प--६२ श्लोकात् ६६ श्लोकान्तस्य पाठस्य स्थाने ऽयं पाठो विज्ञेयः ।

अथाजगाम भगवान् कारयपः स्वनिवेशनः ।

ध्यायमानश्च तं दृष्ट्वा ऋष्यभृङ्गं समुत्सुकं ॥

पप्रच्छ कारयपः पुत्रं कस्मान्मा नाभिनन्दसि ।

चिन्तासागरमध्यस्थमथ स्वां तात ज्ञाचये ॥

नहीदृशं तापसानां रूपं भवति कर्हिचित् ।

शीघ्रमाचक्ष्व मे पुत्र किमिदं विकृतं कृतम् ॥

एवमुक्तः कारयपेन प्रोवाच पितरं तदा ।

भगवन्निह मे दृष्टाः पुरुषाः शुभलोचनाः ॥

सुकुमारैस्त्रासिजैः पीनैरप्यद्भुतोपमैः ।

परिपस्पृशिरे मां च गाढमालिङ्ग्य सर्वशः ॥

गायन्ति सुकुमाराणि मनोज्ञानि सुहृद्गुहः ।

क्रीडन्ति चान्नुताकारैर्नयनभ्रविचेष्टितैः ॥

अत्रवीद् भगवान् भ्रत्वा ऋष्यभृङ्गवचस्तदा ।

N] तदाश्रमं विलोक्यैव प्राहं चास्वस्थमानसम् ॥६२॥ [N

N] पुत्रं चै क्रोधताम्रासः कोऽप्यागत इहाश्रमम् ।

एवं पृष्टस्तदा तेन ऋष्यशृङ्गः सगद्गदम् ॥६३॥ [N

ब्रूते स्म पितरं पूज्यं भोः पितः श्रूयतां वचः ।

६.४५] तवाश्रमपदं प्राप्ताः शुचयो ब्रह्मचारिणः ॥६४॥ [N

शिखाविशिष्टा मुनयः प्रदीप्तानलतेजसः ।

N] तेभ्योऽर्ददं पितः पाद्यमर्घ्यं चैवं महामुने ॥६५॥ [N

९.४६] ते मां सस्वजिरे स्नेहात् प्रीत्या वै ब्रह्मचारिणः ।

अथापरेऽहनि तदा आजगमुर्वे पुनस्तर्तः ॥६६॥ [N

मनोज्ञा रूपवत्यश्च दृष्टास्ताश्चारुमध्यमाः । [N

रक्षांस्तेषु रूपेण तपसो नाशनाय वै ॥

दिसंभस्ते न कर्तव्यस्तेषु पुत्र कथंचन ।

एवमुक्त्वा ऋष्यशृङ्गं समाश्रास्य च करयपः ॥

उषित्वा रजनीमेकामरण्यं स जगाम ह ।

अथापरेऽहस्तं देशं आजगाम ततस्स्वरम् ॥

मनोशरूपास्ता यत्र दृष्टा वै चारुमध्यमाः ।

१. ज—तदाश्रमे ।

२. रां ज ल भ—पुत्रं ।

३. रा भ—चुक्रोध ता० ।

४. रा—इवाश्रमम् ।

५. रा ल--स ।

६. भ—शृङ्गं ।

७. कै रा ज ल भ--वृदाः ।

८. भ—प्रदीप्तानललोचनाः ।

९. रा—तेभ्यो ददां । ज—तेभ्यो ददां । तेभ्यो ददां ।

१०. भ—चैवं ।

११. भ—अतः परमधिकः पाठो धंगशाखायाः नवमसर्गस्य ४८—५०

श्लोकेषु दृश्यः ।

१२. ज--पुत्रस्तदा ।

- ९.५१] ताश्च दृष्ट्वा समायान्तं कश्यपस्यात्मजात्मजम् ॥६७॥
 प्रत्युद्गम्याश्रुवन् सर्वाः प्रहसन्त्ये इदं वचः ।^१ [१०.२५
 ९.५२] एष्याश्रमपदं रम्यं पश्यास्माकर्यपि प्रभो ॥६८॥
 तत्राप्येष विधिः श्रीमान् विशेषेण भविष्यति ॥[१०.२६
 ९.५३] श्रुत्वा तु वचनं तासां सर्वासां हृदयङ्गमम् ॥^२ ६९॥
 गमनाय मतिं चक्रे तं च निन्युस्तदा स्त्रियः । [१०.२७
 ९.५४] दूर्त आनीयमाने वै तस्मिन् विभ्रे महात्मनि ॥७०॥^३
 ९.५५ पृ] प्रहृष्टैः सहसा देवो भगवान् पाकशासनः । [१०.२८
 ९.५६ पृ] वषणामृतकल्पेन विषयं स्वं नराधिपः ॥७१॥^४

१. ज—प्रहसंत ।

२. प—प्रत्युद्गताश्रुवन् सर्वा आजग्मुर्वै पुनस्तदा ।

मनोज्ञरूपवत्यश्च प्रहसन्त्य इदं वचः ॥

३. भ—परपास्मा० ।

४. भ—श्रीमानस्मिन्विभ्रे महात्मनि । मध्यस्थं पाठं त्यक्त्वा ७० श्लोकस्य
 चतुर्थेन पादेन सम्बन्धः ।

५. भ—नास्ति ।

६. रा ज ल प—तत् । व— हत (?) ।

७. प—शरात्मनि ।

८. ज व भ—प्रवृष्टः । प—प्रविष्टः ।

९. ज—किमयं । प—विषये ।

१०. प—सस्य भूपतेः ।

११. प—अतः परमधिकः पाठः—

विभायककश्च संध्यायां निवृत्तश्च वनांतराल् ।

वर्ष्यं मूलं फलं चाप्य भारतीः सोऽविशसदा ॥

शुभ्यभावसचं दृष्ट्वा पुत्रदर्शनलालसः ।

परिश्रान्तस्तथैवासीदकृत्वा पादघावनम् ॥

सुक्रोश्च च ततस्तत्र सर्वतः स बिलोकयन् ।

न चापश्यत् सुतं तत्र काश्यपो भगवानृषिः ।

- ६.६५] मेने प्रत्युद्गतश्चैव क्षिरसाऽभिप्रणम्य तम् । [१०.२९
 ९.६६] अर्घ्यं च प्रददौ तस्मै पुजां कृत्वा चैव शास्त्रतः ॥७२॥
 ९.६७] वव्रे प्रसादं विभेन्द्राभै विभं मन्युराविशत् । [१०.३०
 अन्तःपुरं प्रवेश्यैनं कन्यां दत्त्वा यथाविधि ॥७३॥
 ९.६८] ज्ञान्तां ज्ञान्तेन मनसा राजा हर्षमवाप सः । [१०.३१
 एवं स न्यवसत् तत्र सर्वकामैः सुपूजितः ॥७४॥
 ९.६९] ऋष्यभृङ्गो महातेजाः शान्तया सह वीर्यवान् । [१०.३२

मिजाश्रमाच्च निःक्रान्तस्तदान्वेषुं सुतं ततः ॥
 निःक्रम्य च वनात्तस्माद्विषयं च जगाम सः ।
 श्रीमांस्तु परिपश्यद् गोकुलानि च सर्वशः ॥
 कस्यैच विषयः सौम्यो ग्रामाश्च बहुगोकुलाः ।
 ऋषेर्बचनमाज्ञाय सर्वे ते गोनुजीविनः ॥
 बद्धाश्लिपुरा भूत्वा विनयेनाचचक्षिरे ।
 अंगेषु प्रथितो राजा क्षोमपाद इतिश्रुतः ॥
 तेनाभिदृष्ट्वा ब्रह्मर्षे ग्रामा क्षेत्रे सगोकुलाः ।
 पूजार्थमुपसंगम्य विभाण्डकसुतस्य वै ॥
 एवमुक्तस्तु स ऋषिर्दृष्ट्वा ध्यानेन चक्षुषा ।
 भविष्यमेतद् ज्ञात्वा च प्रीतात्मा स न्यवर्तत ॥
 ऋषिपुत्रोपि धर्मात्मा विषयं प्राप्य वै तदा ।
 मेघनादेन महता कृत्वा सतिमिरं जमः ॥
 महाजलौघवर्षेण राजधानीमुपाययौ ।
 वर्षेण चागतं विभं विषयं स्वं नराधिपः ॥

१. प—अर्घं ।

२. प—यथाविधि । जल भ—तु शास्त्रतः ।

३. रा—विभेन्द्रो न । प भ—विभेन्द्राम्ना ।

४. भ—प्रवेश्येनं ।

५. ज ल—यथाविधिम् ।

६. ज—स न्यवसस्तत्र ।

९.६६] ऋष्यशृङ्गो महातेजाः शान्तया सह वीर्यवान् ॥ ७५ ॥ [१.०.३२

संपूज्यमानः परया मुदान्वितो

महर्षिपुत्रो नरदेवसञ्चनि ।

उवास तस्मिन् सह शान्तया सुखी

N] पुरे महेन्द्रस्य यथा बृहस्पतिः ॥ ७६ ॥ [N

इत्यार्षे रामायणे भाषिकाण्डे ऋष्यशृङ्गामिगमनं

नामाष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

१ प—भार्यया ।

२ प—सर्वमेतदरोषेषु अस्मिन् ऋषिसञ्चनः ।

अगाम तपसे चैव सुप्रीतेनांतरात्मना ।

[व=१०, ११, १२] [नवमः सर्गः] [दा=११, १२, १३]

भूय एवं च राजेन्द्र शृणु मे वचनं हितम् ।

- १] यथा स धर्मप्रवरैः कथयामास धर्मवित् ॥१॥ [१]
 इश्वाकूणां कुले जातो भविष्यति सुधार्मिकैः ।
- २] नाम्ना दशरथो वीरः श्रीमान् सत्यप्रतिश्रवैः ॥२॥ [२]
 सख्यं तस्याङ्गराजेन भविष्यति महात्मनः ।
- ३] कन्या चास्य महाभागा शान्ता नाम भविष्यति ॥३॥ [३]
 अपुत्रस्त्वङ्गराजो वै लोमपाद इति श्रुतः ।
- ४] स राजानं दशरथं प्रार्थयिष्यति भूमिपः ॥४॥ [४]
 अनपत्योऽस्मि धर्मज्ञ कन्येयं मम दीयताम् ।
- ५] शान्तां शान्तेन मनसा पुत्रार्थी वरवर्णिनीम् ॥५॥ [५]
 ततो राजा दशरथो मनसा ऽभिविचिन्त्यै ताम् ।
- ६] दास्यते तां तदा कन्यां शान्तामङ्गाधिपाय सः ॥६॥ [६]
 प्रतिगृह्य तु तां कन्यां स राजा विगतज्वरः ।

१. ल प भ—एव ।

२. प भ—देवप्रवरः ।

३. ज व—स धार्मिकः ।

४. रा—सत्यपरिश्रवाः । व-०भवः । भ-सत्यपराक्रमः ।

५. प—सुधार्मिकः । अस्य स्थाने महात्मन इति पुनर्विचिन्त्यस्तः पाठः ।

६. भ—पुत्रार्थे ।

७. भ—वरवर्णिनी ।

८. प—प्रकृत्वा । प—कन्यात्मकः ।

रा ज व-०न्त्य तम् । भ-०न्त्य तत् ।

९. रा—दास्यामेतां ।

- ७] नगरं यास्यति क्षिप्रं प्रहृष्टेनान्तरात्मना ॥७॥ [७
 पृ८] कन्यां तामृष्यशृङ्गाय प्रदास्यति स धीर्यवान् ।
 N] सत्यप्रतिश्रवो राजा स च शुद्धो भविष्यति ॥८॥ [N
 तं च राजा दशरथो यष्टुकामः कृताञ्जलिः ।
 ९] ऋष्यशृङ्गं द्विजश्रेष्ठं वरयिष्यति धर्मवित् ॥९॥ [८
 यज्ञार्थं प्रसवार्थं च स्वर्गार्थं च नरेश्वरः ।^१
 १०] लप्स्यते चै सै तं कामं द्विजमुख्याद्विश्रांपतिः ॥१०॥ [९
 सुताश्चास्य भविष्यन्ति चत्वारो ऽमिततेजसः ।
 ११] वंशप्रतिष्ठानकराः सर्वलोकेषु विश्रुताः ॥११॥ [१०
 एवं स देवप्रवरः पूर्वं कथितवान् कथाम् ।
 १२] सनत्कुमारो भगवान् पुरा देवैर्युगे प्रभुः ॥१२॥ [११
 पृ१३] सत्त्वं मन्त्रवर्षो मूलं त्वमानयं सुसत्कृतम् ।^१

१. भ--०तिश्रवो ।

२. ल--प्रहृष्टेनान्तरात्मना ।

३. ल--पुस्तके ऽयं पाठ उत्तरपार्श्वे ऽपरहस्तेन विन्यस्तः ।

मूले त्वयं पाठः--कन्यां तामृष्यशृङ्गाय प्रदास्यत्य शेश्वरः

४. ल--सत्ततं । भ--स च तं ।

५. प--देवपुरो ।

६. प--मनुजन्मादूल ।

७. रा प भ--तमानय । ल--समानय ।

८. ज--स्वसत्कृतं ।

९. प--भतः परमधिकः पाठः--

विभांडकसुतं गत्वा वरयित्वात्मनो गुरुम् ।

इति श्रुत्वा दशरथः सुमंत्रस्य सुमंत्रिणः ॥

वशिष्टमुपगम्यैव इदं वचनमब्रवीत् ।

सुमंत्रो पञ्चदशैव तमनुशातुमर्हसि ॥

वशिष्टोपि च तच्छ्रुत्वा तथेति प्रत्यपद्यत ।

- N] स्वयमेव महाराज सभृत्यबलवाहनः ॥१३॥ [१२
 सूतस्य वचनं श्रुत्वा राजा संपूर्णमानसः । [१३
 १४] अनुमान्य वसिष्ठं च सूतवाक्यं निवेद्य च ॥१४॥
 पृ१६] वसिष्ठेनाभ्यर्तुंहातो राजा दक्षरयस्तदा ।
 उ१७] सोऽन्तःपुरार्त्तं सहामात्यः प्रययौ यत्र स द्विजः ॥१५॥ [१४
 पृ१८] वनानि सरितश्चैव व्यतिक्रम्य शनैः शनैः ।
 N] व्यतिचक्राम तं देशं यत्रासौ मुनिपुङ्गवः ॥१६॥ [१५
 उ१८] लोमपादपुरं प्राप्य प्रविवेश सुपूजितः । [N
 तत्राससाद् राजा तु लोमपादनिवेशनम् ॥१७॥
 १९] ऋषेः पुत्रं ददर्शासौ दीप्यमानमिवानलम् । [१६
 ततो राजा लोमपादः पूजां तस्य चकार ह ॥१८॥
 २०] सखित्वात् तस्यै राज्ञश्च प्रहृष्टेनान्तरात्मना । [१७
 स एवं सत्कृतस्तेन वसंस्तत्र नरर्षभः ॥१९॥

१. प—श्रुत्वा सबलवाहनः ।

२. प—स तस्य ।

३. रा—तु ।

४. प—म्यवेदयत् ।

५. भ—भास्ति ।

६. प—वसिष्ठेना० ।

७. प—अतः परमधिकः पाठः—

सुमंजसवचनात्तर्णं प्रयातुमुपचक्रमे ।

प्राप्यभङ्गं वरयितुं लोमपादस्य वै पुरं ॥

८. प—सान्तःपुरः । ज—सीम्तः पुरः ।

९. प—०निवेशने ।

१०. प भ—अविपुत्रं ।

११. छ—च कारणेत् । प—चकार सः ।

१२. ज व भ—तत्र ।

- २१] सप्ताष्टं दिवसानं राजा ततो वचनमब्रवीत् । [१६
 शान्ता तव मुता वीर सहं भर्त्रा विशांपते ॥२०॥
- २२] मदीयं नगरं यातु कार्यं हि महदुद्यतम् । [२०
 तथेति राजा संश्रुत्य गमनं तस्य धीमतेः ॥२१॥ [२१पू
- २३] लोमपादोऽगमद् वक्तुं ऋषिपुत्राय धीमते ।
 सख्यं सांबन्धिकं चैव तत्सर्वं प्रत्यवेदयत् ॥२२॥ [N
- २४] अयं राजां दशरथः सखा मे दयितः मुहूर्त्त ।
 अपत्यार्थं समानेन दत्तेयं वरवर्णिनी ॥२३॥ [N
- २५] याचमानस्य मे ब्रह्मन् शान्ता प्रियतराऽऽत्मनः ।
 सोऽयं ते श्वसुरो विभ्रं यथैवाहं तथा नृपः ॥२४॥ [N
- २६] शरणार्थमनुप्राप्तः पुत्रार्थं द्विजसत्तमं ।

१. रा ज ल भ—सप्तासदि० । प—सप्ताष्टौ दि० ।

२. व—सख ।

३. ल—सहदुरयतम् (?)

४. कै—विधायितां । इत्यपरहस्तेन विन्यासः ।

५. कै—साध्वं । साध्यामित्यस्य स्थाने केनापि सख्यमिति
 संशोध्य कृतम् ।

६. प—सांबन्धिकं ।

७. प—भर्त्राराजा ।

८. ल—वरवर्णितम् । प—वरवर्णिना ।

९. कै—याच्यमानस्य ।

१०. ज—प्रवतमात्मनः । प भ—० प्रियतरा मम ।

११. प—ब्रह्मण ।

१२. प—यथा बाहं ।

१३. प—शरणं त्वामनुप्राप्तः ।

१४. भ—पुत्रार्थं ।

१५. प—मुनिसत्तम ।

पुत्रकाममिमं तात सफलं कर्तुमर्हसि ॥२५॥	[N
२७] तारयैनमितो गत्वा शान्तया सह भार्यया ।	[N
पू२८] ऋषिपुत्रोऽथ तच्छ्रुत्वा तथेत्याह नृपं तदा ॥२६॥	[२२पू
N] गच्छेति विप्रवचनाद् राजोवाच ततो नृपम् । ^५	[N
उ२८] ऋषिणा चाभ्यनुज्ञातः प्रययौ सह भार्यया ॥२७॥	[२२उ
तावन्योन्यं च कुशलं संपृष्ट्वाश्लिष्य चोरसां ।	[२३पू
२६] गमने मतिमादर्त्तं राजा दशरथस्तदा ॥२८॥	
सोऽनुज्ञातो दशरथस्तेन राज्ञा महीपतिः ।	
३०] प्रययौ स्वां पुरीं वीरः शान्तामादाय सत्वरम् ॥२९॥	
३१] ततो राजा दशरथः प्रेषयामास वै तदा ।	[२४
३२] क्रियतां नगरं सर्वं शीघ्रमेव स्वलङ्कृतम् ॥३०॥६०	[२५पू
पू३५] ततः प्रहृष्टाः पौरास्तु श्रुत्वा राजानमागतर्म ।	
उ३३] तथा चक्रुश्च तत्सर्वं राज्ञा यत्प्रेषितं तदा ॥३१॥	[२६
तैतः स्वलेङ्कृतं राजा नगरं प्रविवेश ह ।	

-
१. ज—सकलं ।
 २. प—गत्वेति ।
 ३. प—तथा ।
 ४. म—मस्ति ।
 ५. प—नृप[पि?]नैवाभ्यनुज्ञातः
 ६. प—पृष्ट्वा संश्लिष्य ।
 ७. व—वेतसा ।
 ८. प—०घस ।
 ९. प—राजा स मतिं तदा ।
 १०. प म—प्रहृष्टारामा ।
 ११. रा—वियतां ।
 १२. रा—सर्वं ।
 १३. प—पौरास्ते ।
 १४. प—राजानुयासनं ।
 १५. रा प म—सतस्सकलं कृतः ।

- ३४] अङ्गदुन्दुभिनिर्घोषैः पुरस्कृत्य द्विजर्षभम् ॥३२॥ [३७
 ततः प्रमुदिताः सर्वे दृष्ट्वा वै नागरा द्विजम् ।
 N] प्रवेक्ष्यमानं सत्कृत्य नरेन्द्रेणेन्द्रकर्मणा ॥३३॥ [३८
 अन्तःपुरं प्रवेक्ष्यैनं पूजां कृत्वा तु शास्त्रतः ।
 ३६] कृतकृत्यं तदाऽऽत्मानं मेने तस्यागमात् प्रभुः ॥३४॥ [२९
 अन्तःपुराणि सर्वाणि दृष्ट्वा शान्तां तथागताम् ।
 ३७] सह भर्त्रा विशालाक्षीं प्रत्यानन्दनै मुदा ततः ॥३५॥ [३०
 संपूज्यमानं स्तुतिभिर्यथां राजा विशेषतः ।
 N] उवास तत्र समुखं किञ्चित्कालं द्विजर्षभः ॥३६॥ [३१
 उपास्यमानः शुश्रुमे शान्तया दिव्यरूपया ।
 N] अरुन्धत्या यथा युक्तो वसिष्ठो ब्रह्मणः सुतः ॥३७॥ [N
 अथ काले बहुतिथे कस्मिंश्चित् सुमनोहरे ।
 ११.१] वसन्ते समनुप्राप्ते राज्ञो यष्टुं मनोऽगमत् ॥३८॥ [१२.१
 ततः प्रसाद्य शिरसा तं विभं देववर्णिनम् ।
 ११.२] यज्ञार्थं वरयामास सन्तानार्थं च बुद्धिमान् ॥३९॥ [१२.१

१. व—शंखद्वन्द्विभि० ।

२. प—०जेन्द्रकर्मकृत् ।

३. प भ—प्रत्यनन्दन् ।

४. ज भ—मुदा युताः । प—मुदाम्बिताः ।

५. प—०निस्तदा ।

६. ल प—राज्ञा ।

७. प—सुसुखं ।

८. प—वसिष्ठो ।

९. प—अतः परम्—इत्यार्षे रामायणे आदिकाण्डे ऋष्यशृङ्गाधोप्यागमनं नाम सर्गः ॥

१०. प—मनो दधेः ।

११. प—देववर्षसद्यः । भ—देवकृषिभ्यं ।

१२. रा—वधार्थं ।

तथेति च स राजानमुवाच माससत्क्रियः ।

- १.१.३] संभाराः संभ्रियन्तां ते सहायाश्च द्विजातयः ॥४०॥
 ततो राजाऽब्रवीत् सूतं ब्राह्मणान् सपुरोहितान् ।
 १.१.५] क्षिप्रमानय धर्मज्ञ यज्ञार्थं मम सुव्रतान् ॥४१॥^५ [१२.४
 वेदविद्याव्रतस्नातान् यज्ञकर्मसुं निष्ठितान् ।
 १.१.६] मूत्रभाष्यविदश्चैव वेदवेदाङ्गपारगान् ॥४२॥ [N
 गृहमेधिनो दरिद्रांश्च वृद्धानपि कलत्रिणः ।
 १.१.७] श्रोत्रियांश्च विदेशस्थान् सत्कृत्य त्वमुपानय ॥४३॥[N
 श्रुत्वा तु राज्ञो वचनं सुमन्त्रस्त्वरितं तदा ।
 १.१.८] आनयामास तान् सर्वान् ब्राह्मणान् वेदपारगान् ॥४४॥
 सुयज्ञं वामदेवं च जाषांलिं कश्यपं तथा दृष्ट्वा
 १.१.९] पुरोहितं 'वसिष्ठं च तथैवाग्नये द्विजातर्यः ॥४५॥ [१२.५
 तान् पुजयित्वा धर्मात्मा राजा दक्षरथस्तदा ।
 १.१.१०] इदं धर्मार्थसहितं श्लैष्मणं वचनमब्रवीत् ॥४६॥ [१२.७

१. प—संभाराः संक्रियन्तां स्वै सहायाश्च द्विजोत्तमाः

२. कौ प—सुपुरोहितान् ।

३. भ—सव्रत ।

४. प—नास्ति ।

५. छ—व्यापकर्मसु ।

६. छ—आमुपानय ।

७. ज प भ—स्त्वरितस्तदा ।

८. रा भ—तत्सर्वांन् ।

९. रा—स्वयज्ञं ।

१०. ज ष—आषांलिं । प—आषांलिं ।

११. प—वसिष्ठं ।

१२. प—तथैवाग्नये द्विजोत्तमान् ।

१३. प—तद्वचनं ।

- मम लालप्यमानस्य पुत्रार्थं नास्ति मे मृतः ।
 ११] तदर्थं ह्यमेधेन यक्ष्यामीति मतिर्मम ॥४७॥ [८
 तदर्थं यष्टुकामोऽद्यं ह्यपूर्वेण कर्मणा ।
 १२] ऋषिपुत्रप्रभावेण कामं प्राप्स्याम्यहं द्विजाः ॥४८॥ [९
 उ१३] ततः साध्विति तद्वाक्यं ब्राह्मणाः प्रत्यपूजयन् ।
 वसिष्ठप्रमुखाः सर्वे पार्थिवस्य मुखाच्छ्रुतम् ॥४९॥ [१०
 १४] ऋष्यशृङ्गपुरोगास्ते प्रत्यूचुर्नृपतिं ततः ।
 संभाराः संभ्रियन्तां ते तुरगश्च विमुच्यताम् ॥५०॥ [११
 १५] सर्वथा प्राप्स्यसे पुत्रांश्चतुरोऽमिततेर्जसः ।
 यस्य ते धार्मिकी बुद्धिरियं पुत्रार्थमागता ॥५१॥ [१२
 १६] ततः प्रीतोऽभवद् राजा श्रुत्वा तद्विजभाषितम् ।
 अमात्यांश्चाब्रवीत् तत्र हर्षवेगाकुलाक्षरम् ॥५२॥ [१३
 १७] गुरुणां वचनाच्छीघ्रं संभाराः संभ्रियन्तु मे ।
 पृ१९] अमात्याधिष्ठितंश्चाश्वः सोपाध्यायो विमुच्यताम् ॥५३॥ [१४

१. प—सुतार्थं ।

२. भ—सतः ।

३. प—तदहं । भ—तदर्थं ।

४. प—यजानीति ।

५. प—यष्टुकामोऽहं ह्यमेधेन ।

६. प—अतः परमधिकः पाठः—

अनुगृह्यन्तु मामत्र भवंतः क्षरणागतम् ।

७. रा ल—सुरणाः श्रुतं ।

८. प भ—०ऽमितविक्रमान् ।

९. ष—नास्ति ।

१०. कै—०ऽत्पाद्विहित० । प—सुमन्त्राधि० ।

- शान्तयश्चापि कल्प्यन्तां तन्त्रकल्पैर्यथाविधि । [१५३]
 २०] शक्यमाप्तुं महायज्ञं तत्सर्वं संविधीयताम् ॥२४॥
 N] नापचारो भवेद्राष्ट्रे यथास्मिन् क्रतुपुङ्गवे । [१६
 २२] छिद्रं हि मृगयन्ते तु विद्रांसो ब्रह्मराक्षसाः ॥२५॥
 विघ्नं तु तस्यै यज्ञस्य कर्ता सद्यो विनश्यति । [१७
 २२] तद्यथा विधिपूर्वं मे क्रतुरेष समाप्यते ॥२६॥
 तथा विधानं क्रियतां समर्थैः सत्रकर्मणि । [१८
 २३] तथेति तद्रचः श्रुत्वा मन्त्रिणाः प्रत्यपूजयन् ॥२७॥
 पार्थिवेन्द्रस्य तत् सर्वं तथोज्ञां प्रत्यपालयन् । [१९
 २४] ततो द्विजास्ते धर्मज्ञा वर्धयित्वा च तं नृपम् ॥२८॥
 अनुज्ञातोस्तदा राज्ञा प्रतिजगमुर्यथागतम् । [२०
 गतेषु द्विजमुख्येषु मन्त्रिणोऽपि नराधिपः ॥२९॥

१. कै—०रचाविक० ।

२. रा ज ब ल प भ—तत्र कल्पैर्य० ।

३. प—शक्योवाप्तुमयं यज्ञो नाशक्तेन महीक्षिता ।

४. ज प भ—भतः परमधिकः पाठः—

सरच्चाः सरितः पारे यज्ञभूमिर्विधीयतां ।

कै—पुस्तकस्योत्तरपार्श्वेऽपरहस्तेन पुनर्विन्यासः ।

५. प—भवेत्करिषद् ।

६. प—०ऽत्र यज्ञज्ञा ।

७. कै—पुस्तकस्योत्तरपार्श्वेऽतः परमपरहस्तेन लिखितोऽधिकः पाठः—

शक्यो ह्याप्तुमयं यज्ञो नाशक्तेन महीक्षिता ।

न त्वेषाम्भ्रह्मणेन न चाल्पव्रविणेन च ॥

८. भ—विघ्नं तु त० । प—विघ्नितस्य तु त० ।

९. रा ज ब ल—वार्ता ।

१०. प—यथाज्ञां ।

११. प—ते ।

१२. रा ब ल—अनुज्ञामुस्तदा । प—०ज्ञातास्ततो ।

- २५] विस्मृज्य सर्वान् स्वं वेद्म प्रविवेक्ष महाद्युतिः [२१
 N] प्रजार्थं समभिप्रेतं निर्वृत्तं चाभ्यमन्यत ॥६०॥ [N
 पुनः प्राप्ते वसन्ते तु पूर्णः संवत्सरोऽभवत् । [१३.१५
 १२.१] अभिवाद्य वसिष्ठं तु न्यायतः प्रत्यपूर्जयत् ॥६१॥
 अब्रवीत् प्रभ्रितं वाक्यं प्रसवार्थं द्विजोत्तमम् ।
 २] यज्ञः संस्क्रियतां शीघ्रं यथाशास्त्रं सुनिश्चितम् ॥६२॥ [२
 यथा न विघ्नः क्रियते यज्ञघ्नेनेह केनचित् । [३
 ३] भवान् स्निग्धः सुहृन्मह्यं गुरुश्च परमो महान् ॥६३॥
 वोढव्यो भवता चेहं यंज्ञार्थे भारं उद्यतैः । [४
 ४] तथेति च^३ सं^३ राजानमर्ब्रवीद् द्विजसत्तमः ॥६४॥
 करिष्ये सर्वमेवैतद् भवतो यदभीप्सितम् । [५
 ५] ततोऽब्रवीद् द्विजान् वृद्धानं यज्ञकर्मसु निष्ठितान् ॥६५॥

१. ज प भ—विसर्ज्य ।
 २. रा ज ल—निवृत्तं । प—निर्बतं ।
 ३. प—चाप्यमन्यत ।
 ४. ज—प्रत्यपूर्जयत् ।
 ५. ज भ—प्रसृतं । प—मभुरं ।
 ६. प—स यज्ञः ।
 ७. रा—संक्रियतां । प—क्रियतां । भ—संस्थायतां ।
 ८. प—यज्ञेस्मिन् केनचित् कश्चित् ।
 ९. भ—भवान् ।
 १०. प—वैव । भ—भारो ।
 ११. रा व—यज्ञार्थो । प—भारो । भ—वज्ञार्थम् ।
 १२. प—यज्ञस्य आनय । भ—अवमय नः ।
 १३. प—स च ।
 १४. प—राजानमुवाच ।
 १५. प—सर्वान् ।

- स्थाप्यन्तां चेहं स्थाप्यन्तां वृद्धान् परमधार्मिकान् । [६]
 ६] कर्मान्तिकान् लेपकरान् खनकान् वर्धकानपि ॥६६॥
 गणकान् शिल्पिनश्चैव तथैव नटनर्तकान् ।
 ७] ततोऽब्रवीच्छास्त्रविदः पुरुषान् सुबहुव्रतान् ॥६७॥ [७]
 यज्ञकर्मसमारंभोऽहं भवन्तो राजशासनात् ।
 ८] ईष्टिं च बहुसाहस्रीं शीघ्रं चाह्वयत द्विजान् ॥६८॥ [८]
 उपकार्याः क्रियन्तां च राज्ञो बहुगुणान्विताः ।
 ९] ब्राह्मणोऽसथाश्चैव क्रियन्तां शतशः शुभोः ॥६९॥ [९]
 भक्ष्यान्नपानैर्बहुभिः समुपेताः सुनिष्ठिताः ।
 १०] तथा पौरजनस्यापि कर्तव्या बहुविस्तराः ॥ ७० ॥ [१०]
 आवासां बहुभक्ष्यान्नाः सर्वकामैः सुपूजिताः ।

१. कै भ—स्थाप्या । ज—स्थापत्ये । प—स्थाप्यतां ।

२. प—वै । भ— ये चेह ।

३. प—स्थपतयो ।

४. ज प भ—सर्वत्र श्लोके प्रथमान्तः पाठः । कै—पुरतकस्य प्रथमे पाद एव ।

५. प—शिल्पिनश्चान्ये ।

६. रा व ल—पुरुषान् सु० । ज भ—०षान् सुबहुव्रतान् ।

प—पुरुषांश्च बहुव्रतान् ।

७. ज ल—०समारंभान् । प भ—०समीहितां ।

८. प—यष्टिं ।

९. प—राज्ञां ।

१०. रा—०वसथश्चैव ।

११. ज—शुभान् ।

१२. प—प्रतिष्ठिताः । भ—सुखसंस्कृताः । अपरइस्तेभोत्तरपार्श्वे ।

१३. ल—वास्ति ।

१४. प—आभासा बहुभक्ष्याम् ।

१५. ल—वास्ति ।

- ११] तथा जानपदस्येह कर्तव्यं बहुभोजनम् ॥७१॥ [१२
 कर्तव्यमन्नं विधिवत् सत्कृत्य न तु पीढया । [१३
 १२] सर्ववर्णा यथा पूजां प्राप्नुवन्ति सुसत्कृताः ॥७२॥
 नावमानः प्रयोक्तव्यः कामक्रोधवशैः क्वचित् । [१४
 १३] यज्ञकर्मसु ये व्यग्राः पुरुषाः क्षिल्पिनस्तथा ॥७३॥
 पूजा कार्या विशेषेण तेषामपि यथाक्रमम् । [१५
 १४] यथा सर्वे सुविहितं न किञ्चित् परिहीयते ॥७४॥
 तथा भवन्तः कुर्वन्तु प्रीतिस्निग्धेन चेतसा । [१६
 १५] ततः सर्वे समागम्य वसिष्ठमिदमब्रुवन् ॥७५॥ [१७पू
 यथाकृत्यं करिष्यामो न किञ्चित्परिहास्यते । [१८
 १६] ततः सुमन्त्रमाहूय वसिष्ठो वाक्यमब्रवीत् ॥७६॥
 निमन्त्रयस्व नृपतीन् पृथिव्यां ये च धार्मिकाः । [१९
 १७] ब्राह्मणान् क्षत्रियान् वैश्यान् शूद्रांश्चापि सहस्रैः ॥७७॥
 समानयस्व सत्कृत्य सर्वदेशेषु मानवान् । [२०
 १८] मिथिलाधिपतिं शूरं जनकं दृढविक्रमम् ॥७८॥
 निष्ठितं सर्वशास्त्रेषु सर्ववेदेषु' निष्ठितम् । [२१

१. ज प भ—जनपदस्येह ।

२. प भ—दातव्यमन्नं ।

३. प—पीढय ।

४. रा ज व ल प—सर्वे वर्णा ।

५. कै रा ज भ—कामक्रोधवशैः । प—कामक्रोधकृतः ।

६. व—सुखं ।

७. प—यबोधं तत् ।

८. भ—शूद्रांश्चापि सहस्रैः ।

९. व—सर्ववेदेषु ।

१०. प—शूरं (?) ।

११. प भ—तथा वेदेषु ।

- १९] समानयं महाभागं स्वयमेव सुसत्कृतम् ॥७९॥
 पूर्वं सांबन्धिकं ज्ञात्वा ततो वाक्यं ब्रवीमि ते । [२२
 २०] तथा काशिपतिं शूरं सततं प्रियवादिनम् ॥८०॥ [२३पृ
 वयस्थं राजसिंहस्य तमानय यशस्विनम् । [२५उ
 २१] तथा केकयराजानं वृद्धं परमधार्मिकम् ॥८१॥
 श्वशुरं राजसिंहस्य तमानयं यशस्विनम् । [२४
 २२] अङ्गेश्वरं तथा स्निग्धं लोमपादं सुसत्कृतम् ॥८२॥ [२५पृ
 सुव्रतं देवसङ्काशं स्वयमेवं त्वमानय । [N
 २३] प्राच्यांश्च सिन्धुसौवीरान् सुरार्ष्टीं ये च मानवाः ॥८३॥
 दाक्षिणात्यान् नरेन्द्रांश्च सर्वानानय मां चिरम् । [२८
 २४] अतिस्निग्धाश्च येऽन्येऽपि ' राजानः पृथिवीश्वराः ॥८४॥
 तानप्यानय वै क्षिप्रं सानुगान् सहबान्धवान् । १० [२९
 २५] वसिष्ठवाक्यं तच्छ्रुत्वा सुमन्त्रस्त्वरितंस्तदा ॥८५॥
 व्यादिशत् पुरुषास्तत्र राज्ञामानयने बहून् । [३०

१. प भ—तमानय ।

२. छ—नास्ति ।

३. रा—काशिपतिं ।

४. छ—तथा मानय ।

५. ज प—सपुत्रं त्वमिहानय । भ—सुमन्त्रं त्वमिहानय ।

६. छ—स्वसत्कृतं ।

७. प—स्वयमेव ।

८. प - सुरार्ष्टीबन्धुमागधान् ।

९. प—सुव्रत ।

१०. प—वे चाम्ये ।

११. छ—पृथिवीपते ।

१२. ज प भ—सह बान्धवैः ।

१३. प—सुमन्त्रुकामाय चोत्सुकः ।

- २६] स्वयमेव च धर्मात्मा प्रययौ राजशासनात् ॥८६॥
 सुमन्त्रः प्रयतो भूत्वा समानेतुं महीक्षितः । [३१
- २७] ततः कर्मान्तिकाः सर्वे वसिष्ठाय महात्मने ॥८७॥
 सर्वे निवेदयन्ति स्म यन्निर्यानुपकल्पितान् । [३२
- २८] ततः प्रीतो द्विजश्रेष्ठस्तान् सर्वान् पुनरब्रवीत् ॥८८॥ [३३
 भवद्भिर्न यथा यज्ञे परिहास्येतं किञ्चन ।
- २९] नावज्ञया प्रदातव्यं किञ्चिद् वा केनचित् क्वचित् ॥८९॥
 अवज्ञया हि यदत्तं तदातुर्दोषमावहेत् । [३४
- ३०] ततः कैश्चिदहोरात्रैरुपायार्ता महीक्षितः ॥९०॥
 रत्नान्यादाय सुबहुं राज्ञो दशरथस्य चं । [३५
- ३१] ततो वसिष्ठः सुप्रीतो राजानमिदमब्रवीत् ॥९१॥
 उपायोता नरव्याघ्रं राजानस्तव शासनात् । [३६
- ३२] मयाऽभिसंस्कृताः सर्वे यथावत् पूजिताश्च ते ॥९२॥

१. प—नास्ति ।

२. प—सर्वान् ।

३. ज—निवेदयन्ते ।

४. रा ज—यज्ञेयात् । व ल—याज्ञेया० ।

५. रा—परहास्येति । ज ल भ—परिहास्यति ।

६. रा—किञ्चित्का ।

७. ज—तदत्तं दोष० । प— दातुस्तदो० ।

८. कै—०रात्रैरुपायातां । व—०त्रैरुपायाता ।

९. रा ज ल भ—सुबहुन् । प—बहवो ।

१०. ज प भ—ह ।

११. प—उपायाता । भ—उपायातास्तु ।

१२. भ—ते सर्वे । उच्छरपार्श्वेऽपरहस्तेन ।

१३. प—मयापि संस्कृता । मयामिपूजिता ।

१४. भ—संस्कृताश्च ।

१५. रा—वे ।

- यथावत् संभृतं सर्वं पुरुषैः स्वैः समाहितैः । [३७
 ३३] संप्राप्ते च भवेद्दृष्टो यज्ञे संभारसंभृते ॥६३॥ [N
 सर्वकामैरुपहृतैरुपपन्नं समन्ततः । [३८उ
 ३४] क्रियतां वचनान्महामृष्यश्रुङ्गस्य चैव हि ॥६४॥
 शुभे दिवसर्नक्षत्रे निर्यातुं जगतीपतिः । [४०
 ततो वसिष्ठप्रमुखाः सर्व एव द्विजातयः ।
 ३५] अश्वमेधं पुरस्कृत्य यथाकर्मारभस्तदा ॥६५॥ [४२

इत्याहं रामायणे वाल्मीकीये बालकाण्डे
 यज्ञारंभो नाम नवमः सर्गः ।

१. प—सुसमाहितैः ।
२. कै—भवेदृष्टो ।
३. प—सुमन्महावहृष्टो यज्ञसंभारसंभृतः ।
४. ज—सर्वकामैरुप० । प—सर्वकामैरुपहृतैरुपपन्नः ।
५. प—वचनं न्याय्यश्रुज्य० ।
६. रा—दिवसि नक्षत्रे । ज—यज्ञत्रदिवसै । प—दिने च यज्ञत्रे ।
७. प—निर्यातुं पृथि [की ?] पतिः ।
८. प—अप्यश्रुं पुरस्कृत्य यज्ञकर्मारभस्तदा ।
 यज्ञवाटगताः सर्वे यथाज्ञात्वां यथाविधि॥

[वं=१३] [दशमः सर्गः] [दा=१४]

अथ संवत्सरे पूर्णे प्राप्ते तस्मिंस्तुरङ्गमे ।

- १] सरय्वा उत्तरे कूले रौद्रो यज्ञोऽभ्यवर्तत ॥१॥ [१]
 ऋष्यशृङ्गं पुरस्कृत्य कर्म चक्रुर्द्विजर्षभाः ।
 २] अश्वमेधे महायज्ञे राज्ञस्तस्य महात्मनः ॥२॥ [२]
 पू३] कर्म कुर्वन्ति विधिवद् यज्ञाङ्गविधिपारगाः ।
 N] यथाविधि यथान्यायं परिक्रामन्ति शास्त्रतः ॥३॥ [३]
 उ३] प्रवर्ग्यं शास्त्रतः कृत्वा तथैवोपसदं द्विजाः ।
 N] चक्रुश्च विधिवत् सर्वं तथैवोद्वास्य कर्म ते ॥४॥ [४]
 N] अभिष्टृत्यं ततो हृष्टाः सर्वे चक्रुर्यथाविधि ।
 उ४] सर्वेनानि यथान्यायं सोमसोमपसत्तमैः ॥५॥^{१४} [५]

१. प—अथ प्रदक्षिणं कृत्वा भूमिं प्राप्ते तुरङ्गमे ।

अथ संवत्सरे पूर्णे प्राप्ते तस्मिंस्तुरङ्गमे ॥

२. ल—तीरे ।

३. भ—यज्ञो राज्ञोऽभ्य० ।

४. प—०द्विजोत्तमाः ।

५. कै—कर्म कुर्वत । रा—कर्माकुर्वन्त । व—कर्माकुर्वन्तु ।

६. व—यज्ञार्था विधिपारगाः ।

७. व—पर्यक्रामन्त ।

८. प—प्रवर्ग्यान् ।

९. भ—शास्त्रतश्चक्रुः ।

१०. प—अभिष्टृत्यं ।

११. व—सस्नावावि ।

१२. ल—यथान्यायं ।

१३. ज प भ—सोमे सोमपस० ।

१४. प—अतः परमधिकः वाढः—

नानाहृतमभूत् तत्र संस्मितं वापि किञ्चन ।

५] दृश्यते ब्रह्मवत् सर्वं क्रमयुक्तं च चक्रिरे ॥६॥^१

[१०

प्रायश्चित्तविधानानि चक्रुस्त्रानवशेषतः ।
 सप्तनामि च सर्वाणि यथाकाण्डं प्रचक्रिरे ॥
 नासीदसत्कृतं तेषां स्सकितं वापि किञ्चन ।
 परेषा ह्यवधानेन ते क्रतुं वै प्रचक्रिरे ॥
 न तेष्वहस्सु कृपणः क्षुधितो वापि दरयते ।
 तिर्यङ्मपि कुतोऽभ्येषु भूतेषु परिकर्षितः ॥
 कोटिशो ब्राह्मण्यास्तत्र तथा शतसहस्रशः ।
 तस्मिन् बभूवुपावृत्ता नामादेशनिवेशिनः ॥
 ब्राह्मण्यानां सहस्राणि तत्र तानि महामखे ।
 पृथग्युज्जिरेऽज्ञानि स्वादूनि विविधानि च ॥
 स्वमपात्रीष्वनेकासु राजतीषु तथैव च ।
 द्विजातयोऽस्यपानामि तत्राभुञ्जन्त चासकृत् ॥

१. रा ज ल—नानाहृताम० । प—नवायुक्तं ?
२. कै रा—समितं । ल—सहितां । प—समितं ।
३. कै प भ—वापि ।
४. प्रचक्रिरे ।
५. कै—पुस्तकस्वोत्तरपार्श्वे ऽतः परमपरहस्तेन विन्ध्यस्तोऽधिको बभूव—
सम्मतः पाठः—

न तेष्वहःसु कृपणः क्षुत्क्षामो वाप्यदृश्यत ।
 तिर्यङ्मपि कुतोऽभ्येषु भूतेषु परितर्षितः ॥
 कोटिशो ब्राह्मण्यास्तत्र तथा शतसहस्रशः ।
 तस्मिन् यत्रे तु ये वृत्ता नामादेशनिवासिनः ॥
 नाविद्वान् ब्राह्मण्यास्तत्र नादातानुचरोपि वा ।
 नानाहिताग्निर्नायज्वा नाव्रती पतितो न च ॥
 ब्राह्मण्यानां सहस्राणि क्षतानि च महामखे ।
 पृथग्युज्जिरेऽज्ञानि स्वादूनि विविधानि च ॥
 स्वमपात्रीष्वनेकासु राजतीषु च सर्वशः ।
 द्विजातयोऽस्यपानामि तत्राभुञ्जन्त सत्कृताः ॥

- पृ६] न तेष्वहःसु ब्राह्मण्यं क्षुभितं दृश्यते क्वचित् ।
 पृ८] नाविद्वान् ब्राह्मणः कश्चिद् दृश्यंते तत्र वै तदा ॥७॥ [११
 अनाथा भुञ्जते नित्यं नाथवन्तश्च भुञ्जते ।
 ११] तापसा भुञ्जते चापि भुञ्जते श्रमणा अपि ॥८॥ [१२
 अनाथानां तथा स्त्रीणां बालवृद्धस्य चैव हि ।
 १२] बुभुक्षितानां दीनानां सुवृप्तिरूपलभ्यते ॥९॥ [१३
 पृ१३] दीयतां दीयतामन्नं वासांसि विविधानि च ।
 N] यथोचितसमाख्यानेः कर्म चक्रुरतन्द्रिताः ॥१०॥ [१४
 अन्नपानं च सुबहु दृश्यते पर्वतोपमम् ।
 १४] दिवसे दिवसे तत्र भक्षन्तु विधिवत्तदा ॥११॥ [१५
 अन्नं हि रसवत् स्वादु प्रशंसन्ति द्विजर्षभाः ।
 १५] अहो स्म तृप्ता भद्रं व ईति स्म श्रूयते भृशम् ॥१२॥^५ [१७
 अलङ्कृताश्च राजानो ब्राह्मणान् पर्यसेवयन् ।^०
 १६] सुमीतमनसः सर्वे सुमृष्टमणिकुण्डलाः ॥१३॥ [१८

१. प—क्षुभितं ।

२. प—नागतोन्युगतस्तथा ।

३. प—चैव ।

४. प—चारणा ।

५. भ—दिवसे तत्र भक्षन्तु विधिवद् विधिवत्तदा ।

दिव से दिवसे कृसे^१ न्यंजनानां चयस्तथा ॥

ल—नास्ति ।

६. प—अहो स्वादु प्रभूतं च विविचनन्नमीदृशम् ।

७. प—शसंसुरिति वै द्विजाः ।

८. ल—नास्ति । प—पुस्तके ५त आरभ्य २८ श्लोकान्तः पाठः ४०

श्लोकात्परं टिप्पण्यां द्रष्टव्यः ।

९. भ—पर्यवेशयन् ।

१०. प—राजानोऽभ्यागतास्तत्र स्वयमेव स्वलङ्कृताः ।

कर्मान्तरे तु संप्राप्ते हेतुवादान् बहूस्तदा ।

- १७] प्राहुः सुवाग्मिनो वीराः परस्परजिगीषवः ॥१४॥ [१६
दिवसे दिवसे चक्रुः संस्तरे कुर्मले द्विजाः ।
- २०] सर्वे कर्म यथावत्तद् यथा शास्त्रेण नोदितम् ॥१५॥ [२०
पू२१] नाषट्कविदत्रासीन्नाव्रतो नाबहुश्रुतः ।
N] सदस्यास्तत्र वै राज्ञो नावादकुशला द्विजाः ॥१६॥ [२१
प्राप्ते यूपोच्छ्रये तस्मिन् षट् बैर्वाः स्वादिरास्तथा ।
- २२] तथा पर्णमयाश्चैवं षट्स्थे बिल्वसंमताः ॥१७॥ [२२
श्लेष्मातकमयाश्चान्ये पूतिदारुमयास्तथा ।
- २३] द्वावास्तां तत्र विहितौ बाहुभ्यामुपरिग्रहौ ॥१८॥'' [२३
विन्यस्ता विधिवत् सर्वे शिल्पिभिः सुकृता दृढाः ।

१. ज—च ।

२. भ—धीराः ।

३. कै—अतः परमुत्तरपार्श्वेऽपरहस्तविन्यस्तोऽधिकः पाठः—

ऋष्यशृङ्गादयो मंत्रैः शिक्षाचरसमन्वितैः ।

आह्वयांश्चक्रिरे तत्र शक्रादिविबुधोत्तमान् ॥

सर्पिर्भिर्मधुरैः खिग्धैर्मन्त्राह्वानैर्यथाहृतः ।

होतारो जुहियामासुर्हविर्भागैर्दिवोकसः ।

४. कै ज—कुशला ।

५. ज—यथावत् ।

६. ज—बैला । ल—बैला ।

७. ल—स्वर्णमया० ।

८. भ—तथान्ये ।

९. कै—श्लेष्मातकमयाप्नोति । रा—श्लेष्मातकमथान्येपि ।

ज—श्लेष्मातकमयाश्चान्ये । भ—श्लेष्मातकयश्चान्यः ।

१०. ज—प्रतिदारु० । भ—०रुमयस्तथा ।

११. कै—अतः परमुत्तरपार्श्वेऽपरहस्तविन्यस्तोऽधिकः पाठः—

यामोष्ठावपरिणाहो यूपान्यः सर्वकांषवः ।

यज्ञे समभवत्तत्र क्षोभाथमुपकल्पितः ॥

१२. रा—द्विजाः ।

- २५] अष्टाश्रयाः सर्व एव श्लक्ष्णरूपसमन्विताः ॥१९॥ [२६
 आच्छादितास्ते वासोभिः कुशलैः शिल्पिकर्मणि । [२७पू
 २६] सै चैत्यो राजसिंहस्य सञ्चितः कुशलैर्द्विजैः ॥२०॥
 उ२८] गरुडो रुक्मपक्षो वै त्रिगुणोऽष्टौदशात्मकः । [२९
 नियुक्तास्तत्र पशवस्तास्ता उद्दिश्य देवताः ॥२१॥ [३०पू
 २९] जलेचराः स्थलचराः अन्तरिक्षचरास्तथा । [३१पू
 पतङ्गाः पक्षिणश्चैव तथा वनचराश्च ये ॥२२॥ [३०उ
 ३०] ऋषभाः सर्व एवैते नियुक्ताः शास्त्रतस्तथा । [३१उ
 उ३१] पशूनां त्रिंशत् त्वांसीद् यूपेषु नियतं तदा ॥२३॥
 N] स यज्ञो बृहते तत्र राज्ञो दशरथस्य हं । [३२
 उ३२] कौसल्यां तं ह्यं तत्र परिचार्य समन्ततः ॥२४॥
 विषाणैर्विसेंसारैर्न त्रिभिः परमया मुदा । [३३

१. ज—अष्टापदाः । कै—अष्टास्वाश्र० । इति केनचित्संशोधितः पाठः ।
 २. कै—एवैते । इति शोधितः पाठः ।
 ३. ज—शिल्पिकर्मणि ।
 ४. ज—सुवैद्यो ।
 ५. रा ल—सञ्चितैः ।
 ६. रा—पक्ष्मपक्षो ।
 ७. ज ल भ—०णो द्वादशात्मकः ।
 ८. ल—सूलचरा ।
 ९. ब ल—त्रिंशत् ।
 १०. ल—०सीद्रूपेषु ।
 ११. ज भ—बृहते । कै—पुस्तके च बृहते इति पाठस्थाने संशोध्य बृहते
 इति पाठः कृतः ।
 १२. कै ज भ—च ।
 १३. ज भ—कौशल्या ।
 १४. कै रा—विषसानैव । ज—विषसान्नेन । भ—विषयासैनं ।

- N] पतत्रिणा तदा सार्धं तदामूले समाविशत् ॥२५॥
 पृ३४] अवसद्रजनीमेकां कौसल्या धर्मकांक्षया । [३४
 N] होताऽध्वर्युस्तथोद्गाता संग्रहं समयो यथा ॥२६॥
 N] महिष्यः परिचर्या च तामवापुस्तथाऽपराः । [३५
 उ३५] सत्रिणस्तस्ये तु वपामुद्धृत्य नियतेन्द्रियम् ॥२७॥
 पृ३६] ऋत्विजश्च सुमंपन्नौः श्रपर्याञ्चक्रिरे वपाम् । [३६
 उ३७] ह्यस्य यानि चाङ्गानि तानि सर्वाणि ते द्विजाः ॥२८॥
 पृ३८] अग्नौ प्रार्स्यन्ति विधिर्वतं समस्तं वै ह्यं तदा । [३८
 N] पुक्षशाखासु यज्ञानामन्येषां क्रियते स्तुवंः ॥२९॥
 अश्वमेधस्य चैकस्य वैतसः स्तुवं इष्यते । [३९
 N] श्यहोऽश्वमेधः संख्यातः कल्पसूत्रेषु वै द्विजैः ॥३०॥
 चतुर्थो यस्त्वर्हस्तस्य प्रथमं परिकल्पितम् । [४०

१. कै--'गुदमूले' इत्यपरहस्तेन शोधितः पाठः ।

ल—तदामूलो । भ—तत्र मूले ।

२. रा ल—मम यो यथा । भ—समयोचितं ।

३. ज—०पुस्तथापरां ।

४. ज ल—मंत्रिणस्त० ।

५. ल—बुद्धित्यजते । रा ज ब—'बुद्धृत्य

६. ज—०न्द्रियां । भ—नियतेन्द्रियाः ।

७. ज—सुसस्पर्शाः ।

८. कै—नुपयांच० । रा—अपयांच० । ज—अमयांच० ।

९. ज—कृपां ।

१०. प—जुहिविरे सम्यक् ।

११. प—अतः परमधिकः पाठः—

भागवत्य देवताः सर्वां जगृहुर्भागमीभिसंतं

१२. प—हविः । भ—अवः ।

१३. प—अंश । भ—अंग ।

१४. ज—यस्तुहस्तस्य ।

- N] उक्ष्णो द्वितीयं संख्यातमात्रिरात्रं तथोत्तरम् ॥३१॥ [४०
 विचारास्तत्र बहवो विहिताः शास्त्रदर्शनात् । [४१
 N] ज्योतिर्नामायुषी चैव अतिरात्रौ विनिर्मितौ ॥३२॥
 N] अभिजिद्विश्वजिच्चैव असौर्यामो महाव्रतः ।^१ [४२
 उ३९] प्राचीमध्वर्यवे राजा दिशं स्फीतां ददौ तदा ॥^२३३॥
 दक्षिणां ब्रह्मणे होत्रे प्रतीचीमददादिशम् ।^३ [४३
 ४०] उद्रात्रे च तथोदीचीं दक्षिणैषा विनिर्मिता ॥३४॥
 पृ४१] अश्वमेधे महायज्ञे पुराकल्पे स्वयंभुवा ।^४ [४४
 N] क्रतुं संस्थाप्यं तु तदा न्यायतः पुरुषर्षभः ॥३५॥
 ऋत्विग्भ्यः प्रददौ राजा धरां तां क्रतुवर्धनः । [४५

१. ज—तक्ष्यो । ब ल—उको । प—उको । भ—उक्ष्यो ।

२. कै रा ज ब ल—द्वितीयः । रा—द्वितीयाः ।

३. ल—०तं सहरात्रं त० । प भ—०मतिरात्रमथोत्तरं ।

४. ब ल प—ज्योतिर्नामायुषी । भ—ज्योतिर्नामायुषी ।

५. कै—प्राप्तो वामो । रा ज ब ल—प्राप्तोर्यामो ।
 प भ—आप्तोर्यामो ।

६. रा ज—महाव्रताः ।

७. प—अतः परमधिकः पाठः—

ततो राजा यथाम्यायं दक्षिणां व्यदधत्तदा ।

८. प—प्राचीं होत्रे ददौ स्फीतां दिशं बहुबलार्जिताम् ।

९. रा ज ब ल—ब्राह्मणे (इत्यपपाठः) ।

१०. प—अध्वर्यवे प्रतीचीं च दक्षिणं [१] ब्राह्मणे तथा ।

११. भ—ततोदीचीं ।

१२. प—अतः परमधिकः पाठः—

सप्तमा पृथिवी दत्ता चातुर्होत्रस्य दक्षिणा ।

१३. प—सप्तम्य ।

१४. कै रा ज ब—वर्षमाः ।

N] ऋत्विजोऽथाब्रुवन् सर्वे राजानं गतकल्पषम् ॥३६॥

भवानेव महीं स्फीतामेकः शासितुमर्हति । [४७

N] विपाप्मा भव राजेन्द्र अस्माकं पुष्टिमावह ॥३७॥ [N

न भूम्या कार्यमस्माकं न शक्ताः पालने वयम् ।

N] रताः स्वाध्यायकरणे वयं नित्यं हि भूमिषु ॥३८॥

निष्कृतिं त्वं नरश्रेष्ठ ह्यस्मभ्यं दातुमर्हसि । [४८

N] गवां शतसहस्राणि दश तेभ्यो ददौ नृपः ॥३९॥ [५०७

दशकौटीः सुवर्णस्य रजतस्य चतुर्गुणम् । [५१

१. प—ऋत्विजस्तेऽब्रु० ।

२. रा—शासितुमर्हसि ।

३. प भ—तुष्टिमावह ।

४. भ—कार्यमस्माकं न शक्ताः ।

५. ज ल भ—अस्मभ्यं ।

६. प—अस्याश्वनिःकृतिः राजअस्मभ्यं दातुमर्हसि ।

तेषां श्रुत्वा वचस्तथ्यं राजा वै राष्ट्रवर्धनः ।

७. कै रा ज ल—कोटि ।

८. ज—सहस्रस्य ।

९. प—पुस्तके त्रयोदशश्लोकात्परः पाठो ऽत्रेत्थं द्रष्टव्यः—

भृत्यवत् प्रयातो यज्ञे ब्राह्मणान् परिषेचयन् ।

सुप्रतिमनसः सर्वे प्रमृष्टमणिकुण्डकाः ॥

सद्यया वाम्नि[नो]वीराः परस्परजिगीषिवः ।

अप्यशृङ्गादयो मन्त्रैः शिक्षाचरसमन्वितैः ॥

आह्वयांचक्रिरे तत्र शक्रादीन् विबुधोपमान् ।

ध्ययिभिर्मधुरैः स्निग्धैर्मन्त्राह्वानैर्यथाहृतः ॥

होतारो जुहवामासुर्हविर्भागं दिवोकसां ।

दिवसे दिवसे चक्रुः संस्कारकुशला द्विजाः ॥

सर्वं कर्म यथावत्तद्यथा शास्त्रेण चोदितम् ।

नास्रद्वंगविद्वान्नासीत्सदस्यो नाबहुभृतः ॥

४३] ऋत्विजस्ते ततः सर्वे आददुः संहिताः वसु ॥४०॥

४४] ऋष्यशृङ्गाय महते वसिष्ठाय च धीमते ।

[५२

१. कै रा ब—भाददुर्महिताः ।

न सूत्रं कल्याकुशला नवाकुशस्तथा ।

उच्छ्रिताश्चाभवन् यूपाः बद् वैरवाः खादिराश्च षट् ॥

तावन्त एव पात्राशास्तथैबोदुम्बराः पृथक् ।

श्लेष्मांतकमयश्चैको देवदास्मयस्तथा ॥

द्वाबास्तां तत्र निहितौ बाहुभ्यामपरिग्रहौ ।

महोच्छ्रायपरीणाहो यूपोन्यः कांचनस्तथा ॥

यज्ञे समभवत्तत्र शोभार्थमुपकल्पितः ।

विन्यस्ता विधिवत् सर्वे शिल्पिभिः सुकृता दृढाः ॥

। अष्टाश्रयाः सर्वे एव श्लक्ष्णरूपसमन्विताः ।

आच्छादितास्ते बासोभिः कुशैः शिल्पिकर्मणि ॥

विततश्चाभवच्चैत्यो ब्राह्मणैर्यज्ञकर्मणि ।

महायूपोच्छ्रायस्तेऽस्तु सर्वतः समलंकृतैः ॥

रराज सुभृशं यज्ञः कल्पवृक्षैरिवोच्छृतैः ।

विधिषाश्चाभवन् घोषा ब्राह्मणैर्यज्ञकर्मभिः ॥

अग्निवक्रः कृतश्चापि गरुडः कांचनेटकः ।

नियुक्तस्तत्र पशवस्तास्ता उद्दिश्य देवताः ॥

जलेचराः स्थलचरा अंतरिक्षचराश्च ये ।

ऋषभाः सर्वे एवैते नियुक्ताः शास्त्रतस्तथा ॥

मानासत्वार्यभाश्चैव हयमेधे महाकृतौ ।

मानासरीसृपाश्चैव नानौषध्यश्च कल्पिताः ॥

पशूनां त्रिशतं चासीद्यपेषु नियतं तदा ।

अश्वरत्नं चाबभूथे प्रोक्षितं विश्वदैविकं ॥

स यज्ञो ववृधे तत्र राज्ञो दशरथस्तथा ।

कौशल्या तं ह्यं तत्र परिगम्य प्रदक्षिणम् ।

सप्यगम्यर्धयांचक्रे गन्धमाल्यविभूषणैः ॥

अभ्यर्च्युसंहिता चैनं समालभ्य शुचिस्मिता ।

रजनीं द्युपोष्कां कौशल्या पुत्रकाम्यया ॥

- N] ततस्ते न्यायतः कृत्वा प्रतिभागं द्विजोत्तमाः ॥४१॥ [५३५
 दीनान्धकृपणानां च वृद्धानां च कलत्रिणाम् ।
 N] स्त्रीणां हतप्रवीराणां वृद्धानां बालपुत्रिणाम् ॥४२॥ [N
 व्याधिकर्षितगात्राणां गुर्वर्थं चाभियाचताम् ।
 N] यियक्षणां दरिद्राणां परराष्ट्रनिवासिनाम् ॥४३॥ [N
 सुप्रीतमनसः सर्वे प्रत्यूचुर्मुदितास्तदा । [५३७
 N] ततस्तु सर्वलोकेभ्यो हिरण्यस्य समुद्यताम् ॥४४॥

१. प भ—प्रतिभागं ।

२. प—बिकलानां ।

३. रा—बाणपुत्रिणां । ल—बालपुत्रिणां ।

४. रा ज—चाभियाचितां । प—चाभिजाचिताम् ।

५. ज—ययक्षणां ।

६. प—समृद्धा मुदितास्तदा । भ—प्रदुमुदितास्तदा ।

७. द्व भ—समुद्यतां । प—समुद्यता ।

तामश्रमुपतिष्ठन्त्याः कांशल्पयास्तास्ततो द्विजाः ।

ऋषयश्चक्रादयः प्रीताः प्रायुञ्जन्त तदाक्षिपः ॥

अश्वस्य बिभिक्षत्तत्र परिवार्य समन्ततः ।

विपार्षद्विभिक्षासैनं त्रिभिः परमया मुदा ॥

पतत्रिणा तदा स्वार्धं तदामृजे समाविशान् ।

अश्वसद्रजर्जमेकां कौशल्या धर्मकाञ्चया ।

होताभ्यर्च्युस्तथोद्गाता मंत्रवत्समयोऽयान् ॥

महिष्यः परिचर्यां च तामवापुस्ताथा पराम् ।

सत्रिणस्तस्य वचसा वपामुद्धृत्य निबलेन्द्रियाः ॥

ऋषिभूमं प्रार्थितामर्मा जुहावाहवन् सुरान् ।

भूमं तस्य वृषो बभ्रां त्रिभ्रन्तिसम वरक्षिपः ॥

वधाकाशं वधाभ्यावमवावर्तत स क्रतुः ।

हवस्य वाग्नि चांगाग्नि क्षामि सर्वाग्नि वै द्विजाः ॥

कोटीशतं मुवर्षास्य कुलस्योद्भावनं शुभम् ।

[५४

N] ततः प्रीतमना राजा प्राप्य यज्ञमनुत्तमम् ॥४५॥^१

स्वर्ग्यं पाप्मापहं चैव दुष्पापं सर्वपार्थिवैः ।

[५८

ततोऽब्रवीद्विष्णुः राजा दशरथस्तदा ॥४६॥

४६] पुत्रानिच्छाम्यहं विप्र कुलस्योद्भावनां शुभान् ।

[५९

पृ४७] तथेति च स राजानमुवाच द्विजसत्तमः ॥४७॥

भविष्यन्ति सुता राजंश्चत्वारस्ते कुलोद्गहाः ।

[६०

N] लोकपालोपमा वीराः परदर्पविनाशनाः ॥४८॥

[N

ऋष्यशृङ्गस्तु मेधावी राजानं पुनरब्रवीत् ।

[१५.१

१५.१] इष्टिं करोमि पुत्रीयां भवतः पुत्रकारणम् ॥^१४९॥

[२५

पृ२] ततः प्रचक्रे तामिष्टिमृषिपुत्रैः समृद्धये ।

१. प—कोटीः शत० ।

२. प—कुशाक्षेभ्यो ददा नृपः ।

३. प—भतः परमधिकः पाठः—

दक्षिणां च प्रगृह्याथ सुप्रीतमनसो द्विजाः ।

ततश्च पानकाः सर्वं ऋषयश्च तपोधनाः ॥

ऊचुर्दशरथं तत्र कामं ध्यायेति वं तदा ।

तानब्रवीद्द्रष्टुमना राजा दशरथो द्विजान् ॥

इच्छामि चतुरः पुत्रानुदारान् त्यातविक्रमान् ।

तथेति चैव राजानं तमूचुर्ब्रह्मवादिनः ।

यथाभिलखितान् पुत्रानचिरात्त्वमवाप्स्यसि ॥

इत्यार्षे रामावने आदिकाण्डे त्रयोदशः सर्गः ।

ऊचुर्दशरथं तत्र कामं प्राप्नुहि पार्थिव ॥

४. भ—० वस्ततः ।

५. ज—परदक्षि० ।

६. कै भ—पुत्रकारणे ।

७. प—इष्टिं तेषां करिष्यामि पुत्रीयां पुत्रकारणे ।

८. ज—तामिष्टिं इष्टिपुत्रः । भ—० इष्टिपुत्रः पुत्रसमुत्पत्ते ।

- N] दीप्तेऽनावजुहोद्धव्यं विधिरष्टेन कर्मणा ॥५०॥ [३
 ततो देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्च ऋषिभिः सह ।
 ३] भागप्रतिग्रहार्थं वै^१ पूर्वमेव समागताः ॥५१॥ [४
 पु६] अश्वमेधे महायज्ञे राज्ञस्तेस्य महात्मनः ।
 पु४] ब्रह्मा सुरेश्वरः स्थाणुस्तया नारायणः प्रभुः ॥५२॥ [N
 आजगाम महायज्ञे राज्ञो दशरथस्य तत्^१ ।
 N] देवास्तानागतान् सर्वानब्रवीद्विजसत्तमः ॥५३॥ [N
 प्रसादः क्रियतां राज्ञः प्रसवार्थं हि देवताः ।
 N] राजाऽयं धार्मिकः शूरः कृतविद्यः परन्तपः ॥५४॥ [N
 प्राप्तवानश्वमेधं च शुद्धात्मा गतकल्मषः ।
 N] पुंभ्यार्थं तप्यते चैव दीर्घकालं महाद्युतिः ॥५५॥ [N

१. ल—विधिरष्टेन ।

२. प—सुगन्धर्वाः ।

३. ल—०प्रतिग्रहार्थं ।

४. प—ते ।

५. ल—राज्ञो दशरथस्य तत् ।

६. प—घ । भ—ते ।

७. ल—नास्ति । प—अतः परमधिकः पाठः—

तथैव लोकपाल [१]श्च देवतानां च माताः ।

यज्ञास्तथैव सर्व्वं च वेदाश्च साहितास्तथा ॥

इन्द्रश्च भगवान् साक्षात्सर्व्ववृत्तः प्रभुः ।

८. रा—कृतविद्यः । प—कृतविद्यः ।

९. प—अतः परमधिकः पाठः—

इष्टिं च पुत्रकामोऽन्यां पुनः कर्तुं समुद्यतः ।

तदस्य पुत्रकामस्य प्रसादं कर्तुमर्हथः ॥

आभिवाचे स चः सर्वानश्वमेधेऽहं कृताञ्जलिः ।

१०. प—पुत्रार्थं ।

- N] प्रयच्छत सुतानस्मै चतुरंः कुलवर्धनान् ।
 तं तथेत्यद्भुवन देवा द्विजमुख्यं कृताञ्जलिम् ॥५६॥ [N
- १०] भवान् मान्यश्च पूज्यश्च राजा चायं विशेषतः ।
 पृ११] लप्स्यसे च परं कामं पुत्रार्थं द्विजसप्तम ॥५७॥ [N
- N] इष्टिर्हि विधिवत् प्राप्ता राज्ञा दक्षरयेन वै । [N
 ११] तथा तमुक्त्वा देवास्तु सर्व एव महाद्युतिम् ॥५८॥^३
 पृ१२] अद्भुवंलोककर्तारं ब्रह्माणं वचनं शुभम् ।^४ [५
 उ१३] भगवंस्त्वत्प्रसादेन रावणो नाम राक्षसः ॥५९॥
 सर्वान् नो बाधते वीर्याद् बाधितुं तं न शक्नुमः । [६
 १४] त्वया तस्मै वरो दत्तः प्रीतेन भगवन्पुरा ॥६०॥
 उ१५] मानयन्तश्च त्वद्वाक्यं तस्यै सर्वे क्षमामहे । [७
 पृ१६] उद्रेजयति लोकांस्त्रीनुच्छिन्नान् द्वेष्टि दुर्मतिः ॥६१॥
 N] शक्रं सुरगणेशं च स दीपयितुमिच्छन्ति । [८
 उ१६] ऋषीन् सयक्षगन्धर्वान्सुरान् ब्राह्मणांस्तथा ॥६२॥

१. कै रा ज—अक्षरः ।
 २. प—लप्स्यसे परमं काममेतद्विद्यया वराधिपः ।
 ३. प—इत्युक्त्वाभ्यन्तर्हिता देवास्तत्र शक्रपुरोगमाः ।
 तं इष्टुं विधिवत्कृतं क्रियमानं महर्षिणा ॥
 ४. ल भ—महत् ।
 ५. प—उपेत्य लोककर्तारं ब्रह्माणं वचनं महत् ।
 ऊचुः प्रान्जलवः सर्वे प्रजापतिमिदं तदा ॥
 ६. कै प—अतः परमधिकः पाठः—
 देवदानवब्रह्माणामबन्धोस्तीति कामतः ।
 कै—पुस्तकस्वाधः पार्श्वेऽजन्तरमपरहस्तेन विन्वातः ।
 ७. कै रा ज भ—सद्वाक्यं । प—ते वाक्यं ।
 ८. प भ—सर्वं ।
 ९. रा—उद्विजयति ।
 १०. कै प भ—सर्वं वितुमिच्छति ।

- ३१७] अतिक्रामति दुर्धरो वरदानेन मोहितः । [९
 ३१८] जलोर्मिमाली तं दृष्ट्वा सागरोऽपि च कंपते ॥६३॥ [१०३
 उत्पन्नं नो भयं तस्माद्रक्षसो भीमदर्शनार्त् ।
 N] वधार्थं तस्य भगवन्नुपायं वक्तुमर्हसि ॥६४॥ [११
 N] एवमुक्तः सुरैः सर्वैर्ब्रह्मा ध्यात्वा ततोऽब्रवीत् ।
 हन्तायं विहितस्तस्य वधोपायो दुरात्मनः ॥६५॥ [१२
 २१] नागगन्धर्वयक्षाणां देवताऽमुग्ररक्षसाम् ।
 अवध्योऽस्मीति तेनोक्तं तथेत्युक्तं च तन्मया ॥६६॥ [१३
 २२] अवज्ञाय तु रक्षस्तान व्याहरन् मानुषाद् वधम् ।
 तेनासौ मानुषैर्व्यो मृत्युश्चान्यो न विद्यते ॥६७॥ [१४
 २३] तच्छ्रुत्वा तु प्रियं वाक्यं ब्रह्मणा समुदीरित्मूढं
 गन्धर्वपिसमायुक्ताः प्रहृष्टा ऋषिदेवताः ॥६८॥ [१५

१. प—अतः परमधिकः पाठः—

देवर्षियज्ञगन्धर्वान् सुवाणरान् मानुषांस्तु सः ।

अभ्यायतः पीडयति वरदानेन दर्शितः ॥

न तत्र सूर्यस्तपति न भयाद्वाति मास्तः ।

नाग्निर्बलति च तत्र यत्र तिष्ठति रावणः ॥

२. प—समुद्रेऽपि ।

३. प—अतः परमधिकः पाठः—

मष्टौ बभ्रवयस्त्रयश्रवा लङ्कां तद्वीर्यपीडितः ।

तस्माद्वा पाहि भगवन् रावण्यहोकरावयाद् ।

४. प—भूमिकर्मणः ।

५. प—कर्तुमर्हसि ।

६. ज—दुरात्मना ।

७. कै—रक्षास्ताम् ।

८. प—अवज्ञाय तु तद्रक्षो मोदाहरत मानुषाद् ।

९. प—मृत्युनाम्बोत्थ ।

१०. भ—वाक्यसम्बन्ध ।

- २४] एतस्मिन्नन्तरे विष्णुं विधिनां सर्व एव ते । [१७५
 N] देवता ब्रह्मणा सार्धं तस्युस्तत्र समाहिताः ॥७९॥
 अब्रुवंस्ते तदा सर्वे सुराः संपूर्णमानसाः । [१८
 N] त्वां नियोक्ष्यामहे विष्णो लोकानां क्रियतां हितम् ॥७०॥ [१९
 एवमुक्तोऽब्रवीद् विष्णुस्तथेति सुरमण्डलम् ।
 N] तस्य ते तद्वचः श्रुत्वा व्यक्तमूचुरिदं सुराः ॥७१॥ [N
 एष राजा दशरथो ह्यभेधेन दीक्षितः ।
 N] धर्मशीलो गुणश्लाघ्यः सत्यवादी दृढव्रतः ॥७२॥ [N
 अस्य भार्यासु तिसृषु ह्रीश्रीकल्पोसु धीमतेः ।
 ३०] त्तिष्णो पुत्रत्वमागच्छ कृत्वाऽऽत्मानं चतुर्विधम् ॥७३॥ [२१

१. प—विष्णुस्तत्रायं भगवान् स्वयं ।

२. प—अतः परमधिकः पाठः—

ब्रह्मणा मनसा ध्यातस्तद्ब्रह्मावामितर्षितः ।

अप्रवीत्त ततो ब्रह्मा विष्णुं सुरगण्यः सह ॥

अर्तानामस्मि लोकानामार्तिभ्यो मधुसूदनः ।

याचामहेऽतस्त्वामात्तां शरणं नो भवाच्युत ॥

अत किं करवानस्मि विष्णुस्तानब्रवीत्ततः ।

३. रा—स्वं नि० । भ—त्वञ्चि । प—त्वा नि ।

४. ल—क्रियते ।

५. प—तद्वचनं ।

६. प—पुत्रार्थे दीक्षितः क्षमी ।

७. प—अतः परमधिकः पाठः—

अश्वमेधेन यज्ञेन देवतानामनुग्रहात् ।

८. प—ह्रीश्रीकीर्तिसु धर्मतः ।

९. प—चतुर्दो स्वं विमज्य स्वं प्रादुर्भूषितुमर्हसि ।

स विदुंकस्तदा देवैः साक्षाच्चारावयः प्रभुः ॥

तानुवाच ततो देवाभिर्देवचवमर्षवत् ।

किं मया तत्र कर्तव्यं प्रादुर्भूतेन वः सुराः ॥

कार्यं कुतो वापि भवं पुष्पाकानिदमीदृशम् ।

त्वं तत्र मानुषो भूत्वा प्रवृद्धं लोककण्टकम् ।

X] अबध्यं देवैर्तैर्विष्णो समरे जहि रावणम् ॥७४॥ [२२

स हि देवर्षिगन्धर्वान् सिद्धानसुरमहोरगान् ।

X] राक्षसो रावणो नाम वीर्योत्सेकेन बाधते ॥७५॥ [२३

इति तस्य वचः श्रुत्वा विष्णोरुचुरिदं सुराः ॥
 राक्षसाङ्गो भयं विष्णो राक्षसाङ्गोकरावणात् ।
 मानवीं तनुमास्थाय समुद्रतुं त्वमर्हसि ॥
 त्वत्तो हि नान्यस्तं पापं शक्तो हंतुं दिवौकसाम् ।
 स दीर्घं तप्तवान् काशं तपोऽप्युग्रमरिदम ॥
 नेनायं परितुष्टोऽस्य बभूव प्रपितामहः ।
 तदास्मै प्रवदो नृष्टो वरदो भगवान् पुरा ॥
 अभयं सर्वभूतेभ्यो वर्जयिष्या तु मानुषान् ।
 ततो वृक्षवरस्यैवं तस्य नान्यत्र मानुषान् ॥
 वधान्प्रयमतश्चैनं गत्वा मानुषतां जहि ।
 स हि देवर्षिगन्धर्वास्तपः सिद्धांश्च मानुषान् ॥
 वरदानमदोन्मत्तो बाधते राक्षसाधमः ।
 यज्ञहा मन्त्रहा चैव मन्त्रिदं पुरुषादकः ।
 अत्रभ्यो वरदानेन रावणो लोककण्टकः ॥
 तेनाक्रान्ता नृपतयः सरथाः [सह] कुञ्जराः ।
 हता विप्रद्रुताश्चान्याः प्राद्रवंत विशो दश ॥
 भक्षिता ऋषयरक्षैव तर्धवाप्सरसां गणः ।
 एतः सप्त सदा लोकान् क्रीडन्निव स बाधते ॥
 तेन तप्तं तपस्तीव्रं दीर्घकाशमरिदम ।
 येन तुष्टोभवद् ब्रह्मा लोककृत्लोकपूजितः ॥
 स तुष्टः प्रवदो तस्मै राक्षसाय वचन्वृता ।
 अबधज्ञाताः सुरास्तेन वरदानेन मानवाः ॥
 तस्मात्तस्य वधो दृष्टो मानुषेभ्यः परंतप ।

तमुल्बर्णं रावणमुग्रमाहवे

प्रदृद्धदर्पं त्रिदशेश्वरद्विषम् ।

तं शर्वणं देवगणस्य कण्ठकं

[N]

पराक्रमादुद्धरतां भवानिति ॥७६॥

[N]

इत्यापि रामावधे^१ बाह्मीकण्ठे रावणबधोपायो
नाम दशमः सर्गः ।

१. प—रावणमुग्रतेजसं ।

२. प—विदृद्धदर्पं ।

३. रा—त्रिदशेश्वरद्विषाम् ।

४. प—विरावयं ।

५. ज—बुधग० । ल—बुद्धगण० ।

प—सर्वतपस्वि० । भ—विबुधगणस्य ।

६. प—मजुष्य[ता]मेव निहंतुमर्हसि ।

७. भ—रामावधे बाह्मीकविरचिते ।

८. भ—आदिक्काण्डे ।

९. प—चतुर्दशः ।

[वं=१४, १५, १६] [एकादशः सर्गः] [दा=१६, १८]

स नियुक्तः मूरुः सर्वैर्विष्णुर्नागायणस्तथा ।

३१] उपगम्य सुरान् सर्वान् शृङ्गं वचनमब्रवीत् ॥१॥ [१]

क उपायो वधे तस्य राक्षसाधिपतेः सुराः ।

३२] यदहं तं समास्थाय निहन्यामृषिकण्टकम् ॥२॥ [२]

पृ३३] एषमुक्ताः सुराः सर्वे प्रत्यचुर्विष्णुमप्ययम् ।

पृ३४] मानुषं रूपमास्थाय तद् रक्षो जहि संयुगे ॥३॥ [३]

तेन तप्तं तपस्तीव्रं चिरकालमरिन्दमं ।

३५] येन तुष्टोऽभवद् ब्रह्मा लोककृद्धोकपूजितः ॥४॥ [४]

सन्तुष्टैः प्रददौ तस्मै राक्षसाय वरं प्रभुः ।

३६] नानाविधेभ्यो भृतेभ्योऽभयमन्यत्र मानुषात् ॥५॥ [५]

N] स पूर्वं हि वरं प्राप्तो राक्षसाधिपतिः प्रभो ।

पृ४२] तस्मात् तस्य वधो दृष्टो मानुषेभ्यः परं तदा ॥६॥ [७]

इत्येतद् वचनं श्रुत्वा सुराणां विष्णुरख्ययः ।

१५.१] पितरं रोचयामाम तदा दशरथं नृपम् ॥७॥ [८]

अजस्य पुत्रो नृपतिस्तस्मिन् काले यदृच्छया ।

२] याज्यैने द्विजमुख्येन पुत्रार्थमरिमृदनः ॥८॥ [९]

१. ल—पुस्तके प्रथमश्लोकस्य द्वितीयेन विपर्ययः ।

२. ज ल भ—ईशंकाहम० । कै—०मरिन्दमं ।

३. रा—तुष्टोऽब्रवीत् ।

४. ज—सन्तु ।

५. रा—मानुषेभ्यः । ज—मानुषेभ्यः ।

६. कै—स्वराणां ।

७. म—यजते ।

८. म—द्विजमुख्येन ।

९. ज ल—०मरिसूदन ।

- तस्यैव यजमानस्य पावकादद्भुतप्रभम् ।
 ३] प्रादुर्भूतं महद्भूतं महावीर्यं महाबलम् ॥९॥ [११
 कृष्णाजिनधरं कृष्णं रक्ताक्षं दुन्दुभिस्वनम् ।
 ४] ह्यैरिं क्षिण्णेषणं रम्यं अमश्रुप्रवरमूर्धजम् ॥१०॥ [१२
 शुभलक्षणसंपूर्णं दिव्याभरणभूषितम् ।
 ५] मेरुभृङ्गसमुत्सेधं हस्तशार्दूलविक्रमम् ॥११॥ [१३
 दिवाकरनिभाकारं दीप्तर्वह्निसप्रभम् ।^१ [१४पु
 N] तप्तजाम्बूनदमयीं राजितां नियतच्छ्रद्धाम् ॥१२॥
 ६] दिव्यपायससंपूर्णां पार्थीं पत्नीमिव प्रियाम् ।
 प्रगृह्य विमलां दोर्भ्यां मयो मायामिवामुरीम् ॥१३॥ [१७
 अब्रवीत् प्रश्रितं वाक्यमिदं द्विजवरं तदा ।
 ७] प्राजापत्यं नरं विद्धि मामिहाभ्यागतं स्वयम् ॥१४॥ [१८
 उ९] तनोऽब्रवीद् द्विजश्रेष्ठः प्राजापत्यं नरोत्तमः ।
 प्रयच्छ पार्थीं रंज्ञे त्वं स्वयमेव समुद्यताम् ॥१५॥ [N
 १०] ऋषिपुत्रवचः श्रुत्वा प्राजापत्यो नरोत्तमः ।
 N] ददौ नृपतये पार्थीं स्वयमेव समाहितः ॥१६॥ [N

१. भ—महावीर्यं ।
 २. भ—महातेजो ।
 ३. ल—सुर्मुभिस्वनम् ।
 ४.—रा ल भ—हरिश्चिण्णेषणं ।
 ५. भ—•कृष्णसंपन्नं ।
 ६. कै—सुलला० ।
 ७. ल—वास्ति ।
 ८. रा ज व भ—प्रसूतं ।
 ९. ज भ—द्विजश्रेष्ठं ।
 १०. भ—राज्ञे पार्थी ।

- उ१२] ततस्तं स नरं ज्ञात्वां प्रत्युवाच कृताञ्जलिः ।
 भगवन् स्वागतं तेऽस्तु किमहं करवाणि ते ॥१७॥ [१९
- १३] ततो नृपवरं वाक्यं प्राजापत्यो नरोऽब्रवीत् ।
 N] राजभर्षयती देवान् सद्यः प्राप्तं फलं त्वया ॥'१८॥ [२०
- उ१४] इदं तु नरशार्दूल पायसं देवनिर्मितम् ।
 प्रजाकरं गृहाण त्वं धर्म्यमारोग्यवर्धनम् ॥१९॥ [२१
- १५] भार्याणामनुरूपाणामशनार्थं प्रयच्छ वै ।
 तामु त्वं प्राप्स्यसे प्रीतिं यदर्थं यजसे नृप ॥२०॥ [२२
- १६] बाढमित्येवं नृपतिः सन्तुष्टः प्रतिपूज्य च । [२३पृ
- पृ१७] अब्रवीत् तं महद्भृतं श्रेष्ठमात्महितं वचः ॥२१॥ [N
- उ१७] ततः स भगवांस्तस्मै पार्श्वी पात्रवराय वै ।
- पृ१८] नृपाय दत्त्वा तत्रैव क्षिप्रमन्तरधीयत ॥२२॥ [N
- अदृश्यं तत्क्षणाद् भृतं दीपवत् प्रजगाम ह ।
- N] गते तस्मिन् महाभूते विस्मयं नृपसत्तमः ॥२३॥ [N
- जगाम स महातेजा राजा दशरथस्तदा ।
- N] खद्योतवद्वापि ततः संभूतो भूत उत्तमः ॥२४॥' [N

१. भ—राजा ।

२. कै—पुस्तकस्य पूर्वपार्श्वे उपरहस्तेन विन्यासः ।

३. रा ज ब—०र्षयतो ।

४. ज—पूजाकरं ।

५. ज—तं । भ—हि ।

६. रा—प्रीतिर्ष० । ब—०ऽपत्यं ।

७. रा—०मित्येवं । भ—०मित्यं च ।

८. भ—नृपतिं महद्भाः ।

९. ज—अदृश्यत उवाच ।

१०. रा—मास्ति ।

- N] ने विज्ञातां गतिस्तस्यं येनं मार्गेण संप्लुतः । [N
 उ१८] ततो दक्षरथः प्राप्य पायसं देवनिर्मितम् ॥२५॥^१
 बभूव परमधीतः प्राप्य वित्तमिवाधनः । [२५
 १९] सोऽन्तःपुरं प्रविश्यैव कौसल्यामिदमब्रवीत् ॥२६॥^२
 पू२०] गृहाणार्धमितो देवि पुत्रीयं हितमात्मनः । [२८
 उ२१] अर्धादर्धं ददौ चापि कैकेय्याः स नराधिपः ॥२७॥^३
 चतुर्भागं द्विधा कृत्वा सुमित्रायै ददौ तथा । [२९
 प्रददौ च विशिष्टं च पायसं देवनिर्मितम् ॥२८॥^४
 २२] अनुचिन्त्य सुमित्रायै पुनरेव नराधिपः । [३०
 N] ततः प्राश्य तु तत् सर्वं पृथक् पायसमुत्तमम् ॥२९॥ [N
 श्रुत्वा पुत्रीयमित्येव प्रहृष्टमनसो ऽभवन् ।
 N] अन्तर्बल्यश्च ताः सर्वाः सर्वाश्च सुसमाहिताः ॥३०॥ [N
 राजा संलक्ष्य धीरो हि प्रहसन्मुदितो ऽभवत् ।
 N] ततः प्रादात् सुविपुलं धनं बहुविधं तदा ॥३१॥ [N
 ऋष्यशृङ्गाय मेधावी राजा देवसमद्युतिः ।
 N] प्रतिगृह्य च तत् सर्वं धनं द्विजवरस्तदा ॥३२॥ [N
 N] श्वश्रुभ्यः प्रददौ गत्वा सर्वाभ्यः प्रीतिपूर्वकम् ।
 राज्ञस्ततोऽभ्यनुज्ञातुं सर्वानेव प्रचक्रमे ॥३३॥ [N

१. ल - अविज्ञाता ।

२. रा - गतस्तस्य येन ।

३. ब - अतः परमधिकः पाठः—

अनुचिन्त्य सुमित्रायै पुनरेव नराधिपः ।

४. कै - पुस्तकस्य परिचयभागे ऽपरहस्तेन विभ्वासः ।

५. रा - प्रियमात्मनः ।

६. रा - अनाधिपः ।

७. ल - सर्वांश्चैव समाहिताः । ब - अभूय सुस ।

८. ब - स्वविपुलं ।

१६.३] प्रीतियुक्तेन मनसा राजा दक्षरथस्तदा ।

स्वं स्वं राष्ट्रं यथाकामं गच्छन्तु वसुधाधिपाः ॥३४॥ [N

४] प्रीतोऽहमत्र भद्रं वः स्वस्ति प्राप्नुत मा चिरम् ।

सर्वे भवन्तः पश्यन्तु कार्यं विषयरक्षणम् ॥३५॥ [N

५] भ्रष्टो हि विषयाद् राजा मृतकल्पः प्रदृश्यते ।

तस्मात् स्वविषये रक्षा कर्तव्या भूमिमिच्छतां ॥३६॥ [N

६] यज्ञं नर्वाप्यते स्वर्गो रक्षणात् प्राप्यते यथा ।

यथा हि पुरुषः कुर्याच्छरीरे यत्रमुत्तमम् ॥३७॥ [N

७] बुद्ध्या च चेतमानस्तुं तथा राज्ये नराधिपः ।

अनागतविधानं च कर्तव्यं विषये नृपैः ॥३८॥ [N

८] आगमश्चापि कर्तव्यस्तथा दोषो न जायते ।

एवं संदिश्य राज्ञः स नुत्वां ते च नराधिपाः ॥३९॥ [N

९] अन्योन्धं संविदं कृत्वा प्रयाताः सर्वतो दिक्षुम् ।

समाप्तदीक्षानिर्यमः पत्नीगणसमन्वितः ॥४०॥ [N

१०] संमहृष्टमना भूत्वा राजा दक्षरथस्तथा ।

गतेषु पार्थिवेन्द्रेषु सभृत्यबलबाहनः ।

११] प्रविशेक्ष पुरीं श्रीमान् पुरस्कृत्य द्विजोत्तमान ॥४१॥ [१८.५

इत्याद्यं रामायणे वाल्मीकीये बालकाण्डे

पायसोत्पत्तिर्नाम एकादशः सर्गः ।

१. भ—चिरां ।

२. कै—प्रभुरवते ।

३. रा—भूमिमिच्छतां । ४. भ—०र्वाप्यते ।

५. रा—रक्षमुत्तमं । ६. रा—बुद्ध्या ।

७. रा ज—चेतमानस्तु । ८. रा—कर्तव्यस्तथा ।

९. रा ज ल भ—भूत्वा । १०. ज—अनन्यसंविदं ।

११. कै—समाप्तदीक्षः विषमः । १२. भ—०गणसमन्वितः ।

[वं = १७] [द्वादशः सर्गः] [दा = १८]

- ततः कालस्य महते ऋष्यभृङ्गः स्रुपृजितः । [N]
- १] शान्तया प्रययौ सार्धं ब्राह्मणैश्च कृताञ्जलिः ॥१॥
अन्वीयमानो राज्ञौ वै सानुयात्रेण धीमता । [६]
- २] वसिष्ठेन च वीरेण तथा पौरजनेन च ॥२॥ [N]
यानेन महता शान्ता कम्बलावततेन हि ।
- ३] गोभिः श्वेतैस्तुं युक्तेन प्रेष्यवर्गान्वितेन च ॥३॥ [N]
संगृह्य रत्नं सुबहु मणिरत्नमर्जादिकम् ।
- ४] विविधैश्चाप्यलङ्कारैर्भूषिता श्रीरिवापरा ॥४॥ [N]
मुदा चं परमयोपेता प्रययौ वरवार्णिनी ।
- ५] भर्तारमनुसंरक्ता पौलोमीव पुरन्दरम् ॥५॥ [N]
उषित्वा सुखसंबांसं सर्वकामैः स्रुपृजिता ।
- ६] लालिता ज्ञातिभिश्चापि तथा स्त्रीभिश्च सर्वशः ॥६॥ [N]

१. रा भ—महतो ।

२. रा भ—कृताङ्गमभिः ।

३. रा—राजा ।

४. रा—सानुमात्रेण धीमतः ।

५. रा भ—वीरेण ।

६. व—कम्बलावततेन ।

७. ल—शतस्तु यु० । व—श्वेतैस्तु युक्तेन । भ—श्वेतो सगुक्तेन ।

८. ल—०समजादिकम् । व—०सजादिकं । भ—ःसमजादिकं ।

९. ज—भूषितैः ।

१०. रा ल—परमयोपेता ।

११. ज ल भ—सुखवासं ।

- श्राविता वनवासं च भर्वा सा तु सुशोभना ।
 ७] तमेव मन्यते सार्धुं तथाऽपि सुखितो सती ॥७॥ [N
 सान्तःपुरे नृपश्चापि सोऽन्वगच्छन्महाव्रतम् ।
 ८] ऋषिपुत्रं महाभागं शान्तां चैवात्मजां सुताम् ॥८॥ [N
 ऋषिपुत्रस्य वचनात् ततो वासः प्रकल्पितः ।
 ९] सुखवासाः सुगच्छन्ति सर्वकामैः सुपूजिताः ॥९॥ [N
 ततोऽभिवाद्य राजानमृषिपुत्रः प्रतापवान् ।
 १०] विज्ञापयामास तदा निर्वर्ततु भवानिति ॥१०॥ [N
 ऋषिपुत्रवचः श्रुत्वा राजा सान्तःपुरस्तदा ।
 ११] उच्चैः प्रमुदितस्तत्र वचनं चेदमब्रवीत् ॥११॥ [N
 कौसल्यां च सुमित्रां च कैकेयीं च मनस्विनीम् ५
 १२] सर्वाः सुदृष्टां कुरुत शान्तां दुर्लभदर्शनाम् ॥१२॥ [N

१. अ—भर्वा ।

२. ल—सुशोभने ।

३. अ—सा तु ।

४. अ—सुखिता । रा—सुखितः ।

५. ज—सोन्तःपुरे ।

६. अ—वैवादिजां ।

७. अ—अतः परमधिकः पाठः—

कुर्वन्ति प्रसमामरुवां वसतिं ये निराकुलाः ।

८. ज ल—सुपूजितः ।

९. अ—सुखं वासाम् प्रगच्छन्ति सर्वकामैस्तु पूजितः ।

१०. रा—निर्वर्तय ।

११. ज ल—सुदृष्टाः ।

१२. कै—सुदृष्टी । रा—दुर्लभदर्शनाम् ।

तत आलिङ्ग्य सर्वास्ताः शान्तां वाष्पाविलेक्षणां ।

१३] ऊचुः स्वस्त्ययनं तस्य सभार्यस्यं द्विजस्य वै ॥१३॥ [N

वायुश्चाग्निश्च सूर्यश्च पृथिवी चन्द्रर्मा दिशः ।

१४] वने रक्षन्तु सततं त्वां भर्तृव्रतचारिणीम् ॥१४॥ [N

श्वशुरः पूजनीयस्ते स हि मान्यो विशेषतः ।

१५] पूजाभिरनुकूलाभिरग्निशुश्रूषणादिभिः ॥१५॥ [N

भर्ता च पूजनीयस्ते सर्वाऽवस्थास्वनिन्दिते ।

१६] प्रियवादेन रहसि स्त्रीणां भर्ता हि देवतम् ॥१६॥ [N

प्रेषयिष्यति राजा तु कुशलार्थं तवाबले ।

१७] ब्राह्मणान् नित्यशंः पुंनि मोत्सुर्का भूः कदाचन ॥१७॥ [N

एवं शान्तां समाश्वस्यं मृद्धिं चाघ्राय चासकृत् ।

१८] न्यवर्तन्त ततः सर्वाः स्त्रियो राज्ञां प्रचोदिताः ॥१८॥ [N

प्रदक्षिणं द्विजश्रेष्ठं कृत्वा राजा स वीर्यवान् ।

१९] व्यादिक्षत् सैनिकान् कांश्चिदृश्यमृङ्गाय धीमते ॥१९॥ [N

अभिवाद्य सं राजानमुवाच द्विजसत्तमः ।

२०] स्वस्ति तेऽस्तु महाराज धर्मेशाराधय प्रजाः ॥२०॥ [N

१. रा—वाष्पाविलेक्षणां । ज व—वाष्पाविलेक्षणाः ।

७—तां चाधिलेक्षणाः ।

२. भ—सभार्यस्याह आशिषः ।

३. ज ल भ—सोमश्च ।

४. ज ल भ—सविता ।

५. ज ल भ—नित्यसंप्रीतो ।

६. रा व—सोत्सुका ।

७. कै—काला ।

८. ल—समाश्वस्य ।

९. रा—राजप्रचोदिताः ।

१०. म—मृ ।

व्यवहारेषु ते धर्मः कर्तव्यो हृदि नित्यज्ञः ।

[N] धर्मं श्रयेथाः सर्वेषु कालेषु पुरुषर्षभ ॥२१॥' [N]

पूर१.] एवमुक्त्वा तु राजानं ययावृषिस्रुतस्तदा ।

[N] मनस्तन्मिन्न समाधार्यं ज्ञेहभावसमन्वितम् ॥२२॥' [N]

उ२१.] अदृश्योऽभृद् यदा विप्रस्तदा राजा न्यवर्तत ।

प्रविष्टश्च पुरीं राजा सभृत्यबलवाहनः ॥२३॥ [N]

२२] न्यवसत् तत्र मुदितः पुत्रजन्मप्रतीक्षकः ।

ऋष्यमृङ्गः सुतेजस्वी प्रययौ क्रमज्ञस्तदा ॥२४॥ [N]

२३] लोमपादस्य नगरीं चम्पां चम्पकमालिनीम् ।

श्रुत्वा च लोमपादोऽपि तमाद्यान्तमृषिं तदा ॥२५॥ [N]

२४] सन्नाह्यणः सहामात्यः प्रत्युद्गम्य तमब्रवीत् ।

स्वागतं ते द्विजश्रेष्ठ दिष्ट्याऽसि कुशली प्रभो ॥२६॥ [N]

२५] इहागतो महाभागः सभार्यः सपरिच्छदः ।

पिता ते कुशली ब्रह्मण प्राहिणोभित्यक्षश्च मे ॥२७॥ [N]

२६] कुशलार्थं तव विभो सभार्यस्य विशेषतः ।

१. रा—धर्मोः कर्तव्ये ।

२. भ—नास्ति ।

३. कै रा ज व—समाधार्य ।

४. भ—श्लोके पूर्वापरार्द्धमस्ययः । अतः परमधिकश्च वाडः—
ते यान्तमनुब्रवाज स्थितो निश्चयश्चक्षुषा ।

५. रा—सथा ।

६. कै—सुभृत्यबल ।

७. भ—वन्न ।

८. रा—स्वतेजस्वी ।

९. रा—क्रमज्ञस्तथा ।

१०. ज—चम्पां ।

११. ज व—चम्पकमा । कै—पुस्तके च चम्पामिति वाडं संज्ञोच्च
चम्पामिति कृतम् ।

- स्वलङ्कृतं च नगरं कारयामास बुद्धिमान् ॥२८॥ [N]
- २७] पूजार्थमृष्यशृङ्गस्य राजा हृष्टेन चेतसा ।
ऋष्यशृङ्गः महष्टस्तु सह राज्ञा पुरोत्तमम् ॥२९॥ [N]
- २८] पुरोहितं पुरस्कृत्य पूजितः प्रविवेश ह ।
एवं स न्यवसत् तत्र द्विजपुत्रः प्रतापवान् ॥३०॥ [N]
- २९] राज्ञा सान्तःपुरेणैव पूज्यमानो यथाक्रमम् ॥३१॥ [N]

इत्थार्थं रामावने बालकाण्डे ऋष्यशृङ्गप्रवासं^१
नाम द्वादशः सर्गः^२ ॥ १२ ॥

१. कै—कुमारं ऋषिम् । अ व—द्वार्षदृषिम् ।

२. रा ङ—ऋष्यशृङ्गो नाम सर्गः ।

[वं=१८]

[त्रयोदशः सर्गः]

[दा=N]

- ऋष्यमृङ्गे तु संप्राप्ते राजा ब्राह्मणमब्रवीत् ।
१] ऋषेर्गच्छ समीपं त्वं निवेद्य यतव्रतम् ॥१॥
आगतं परमोदारमृष्यमृङ्गं दुरासदम् ।
२] ऋषये सुव्रताय त्वं कश्यपात्मजसंभवम् ॥२॥
अभिवाद्यैव शिरसा यत्कृते द्विजसत्तम ।
३] प्रसाद्यश्च सुतार्थं मे सर्वावेस्थं यतार्त्तना ॥३॥
श्रुत्वैवं राज्ञो बर्चनं सं तदा द्विजसत्तमः ।
४] जगाम तत्र यत्रासौ बर्तते कश्यपात्मजः ॥४॥
प्रसाद्य च द्विजश्रेष्ठं शिरसाऽभिप्रणम्य च ।
५] अब्रवीत् प्रेश्रितं वाक्यं राज्ञा यदभिचोदितः ॥५॥
पुत्रस्ते समनुप्राप्तो यज्ञं कृत्वा महात्मनः ।
६] राज्ञो दक्षरथस्यैव शशुरेस्य महामनाः ॥६॥

१. रा—तु ।

२. ज—०रमृषिमृंगं ।

३. रा ज ल भ—करवपस्यात्मसंभवे ।

४. ज भ—मकृते । ल—सकृते ।

५. कै ज ल भ—सर्वावस्थो । रा—सर्वावस्तं ।

६. ज ल—महात्मनः । भ—महाभूमिः ।

७. ल—कृत्वा वै ।

८. कै—राज्ञो स तदा । ल—बर्चनं राज्ञस् ।

९. कै—बर्चनं । ज ल भ—तदा स द्वि० ।

१०. भ—सुप्रबन्ध ।

११. ज भ—प्रसृतं ।

१२. ज ल भ—वदभिचोदितं ।

१३. ज ल—दक्षरथ ।

- पूर्वमेव तु तत् सर्वं श्रुत्वा सांबन्धिकं कृतम् ।
 ७] यज्ञकर्म च वीरस्य राज्ञो दशरथस्य तत् ॥७॥
 श्लाघनीयस्तु सम्बन्धी राजा देवसमो हि सः ।
 ८] ततो मर्षितवान् वीरस्तस्य राज्ञो महात्मनः ॥८॥
 श्रुत्वा तु वचनं तस्य द्विजस्य सुमहायशाः ।
 ९] गमने मतिमाधत्तं पुत्रस्यानयने तथा ॥९॥
 स हि शिष्यवृत्तस्तत्र प्रयातो द्विजसत्तमः ।
 १०] लोमपादस्य नगरीं चम्पां पुत्रदिदृक्षया ॥१०॥
 संपृज्यमानो धर्मात्मा ग्रामैर्घोषैश्च सर्वतैः ।
 ११] उपायनमुपादायं नरास्तं समुपागमनं ॥११॥
 किङ्कराः समुपातिष्ठन् रात्रिन्दिबमतन्द्रिताः ।
 १२] ऊचुः प्रणम्य शिरसा किं मुने करवामहे ॥१२॥
 तानब्रवीत् स विभेन्द्रः सर्वानेव समागतान् ।
 १३] किमर्थं क्रियते पूजा श्रोतुमिच्छामि तत्रतः ॥१३॥
 तत ऊचुर्महात्मानं संबन्धी ते नराधिपः ।

१. भ—च ।

२. भ—बिधि ।

३. ज ल भ—यज्ञकर्म च वै राज्ञः कृतं दशरथस्य तत् ।

४. ज ल—हि महा० । भ—तु महा० ।

५. ल—मतिमाधत्त ।

६. ज ल भ—तथा ।

७. ज—ह ।

८. रा ब—शिष्यवृत्तस्तस्य । ज ल भ—शिष्यैर्बुद्धस्तत्र ।

९. ज ल भ—सर्वतः ।

१०. रा ज भ—भक्ष्यभोज्यमुपादाय । ल—बहु भोज्यसु० ।

११. ल—समुपागतम् ।

१२. ज भ—रात्रौ दिग्बमतन्द्रिताः ।

१३. ज ल भ—मुने किं ।

- १४] तस्याज्ञा क्रियते ब्रह्मन् व्येतु ते मानसो ज्वरः ॥१४॥
श्रुत्वा तु वचनं तेषां मनःप्रह्लादकं शुभम् ।
- १५] प्रसादमकरोद् राज्ञः सहामात्यपुरस्य हं ॥१५॥
विभाण्डकवचः श्रुत्वा किङ्करा हृष्टमानसाः ।
- १६] पेरितो जग्मुराख्यातुं राज्ञः प्रियनिवेदकाः ॥१६॥
तच्छ्रुत्वा वचनं तेषां मनःप्रीतिविवर्धनम् ।
- १७] मन्त्रिभिः सह धर्मात्मां प्रत्युद्गम्य नराधिपः । १७॥
दृष्ट्वा च मुनिशार्दूलं प्रणम्य च पुनः पुनः ।
- १८] अब्रवीत् स इदं वाक्यं हर्षसंफुल्ललोचनः ॥१८॥
अद्य मे सफलं जन्म दर्शनान् तव सुव्रत ।
- १९] तथेति च स राजानमुवाच द्विजसत्तमः ॥१९॥
मा ते भयं भृद् राजेन्द्र प्रसन्नोऽस्मि तवावय ।
- २०] ततः प्रहृष्टो नृपतिः पुरस्कृत्य द्विजर्षभम् ॥२०॥
प्राविशन् नगरीं श्रीमान्चिंतां सर्वमङ्गलैः ।
- २१] स्वलङ्कृतं गृहं चैव प्रावेशयदरिन्दमः ॥२१॥

१. ज ल भ—तस्याधे ।

२. ज ल भ—तेषां वचनं ।

३. ज ल भ—मनः प्रह्लादनं ।

४. रा—व ।

५. ज ल भ—स्वरिता ।

६. ज ल भ—प्रियहिते रताः ।

७. ज—मन्त्रिमुख्यः प्रसन्नात्मा । ल भ—मन्त्रिमुख्यैः प्रसन्नात्मा ।

८. ज ल—तु ।

९. ज भ—अब्रवीत् ।

१०. ज ल भ—प्रसन्नो ।

११. ज ल—नगरं

१२. कै रा व ल—धीमान्चिंतं । ज—धीमान्चिंतं ।

पुरोहितेन सहितः प्रगृह्यार्थमुपाद्रवत ।

२२] अभिवाद्य तथां चैनं न्यायतः प्रतिपूज्य च ॥२२॥

तस्थुः प्राञ्जलयः सर्वे समासाद्य द्विजोत्तमम् ।

२३] ततः शान्तां पुरस्कृत्य ताः स्त्रियः समलङ्कृताम् ॥२३॥

न्यवेदयन्त विप्राय स्तुषेर्यं तव मानद ।

२४] प्रतिगृह्य सं तां शान्तां समालिङ्ग्य च धर्मवित् ॥२४॥

२५] अङ्गे निवेश्य च तदा विस्मयं परमं गतः ।

प्रायश्चित्तं च कृतवानं पुत्रस्य द्विजसत्तमः ॥२५॥

२७] महर्षिभिः पूज्यमानैः सपुत्रश्च वनं ययौ ॥२६॥

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे ऋष्यशृङ्गोपाख्यानं

नाम त्रयोदशः सर्गः ॥१३॥

१. रा—प्रगृह्यार्थमु० । ज ल भ—प्रगृह्यार्थं समाहितः ।

२. ज ल भ—सुनि चैव ।

३. रा—स्तुषेयं ।

४. अ ल—परिगृह्य ।

५. ज—सुतां । भ—सु तां ।

६. भ—भक्तं ।

७. रा—भगवान् ।

८. अ ल—महर्षिः पूज्यमानश्च । भ—महर्षिः पूज्यमानस्तु ।

९. कै—कावलीकीचे ।

[वं=१९] [चतुर्दशः सर्गः] [दा=१८]

- राज्ञोपि धर्मेण तदो रञ्जयन् संनयैः प्रजाः ।
 N] इक्ष्वाकुवंशजः श्रीमान् दीप्तयाप्यायितः श्रिया ॥१॥ [N
 यज्ञसा रञ्जयंल्लोकान् कृतात्मा सर्वधर्मवित् ।
 N] धर्ममेव च सत्यं च संपश्यञ्जीविते फलम् ॥२॥ [N
 तिस्रो महिष्यो राजर्षे बभूवुस्तस्य धीमतः ।
 N] गुणवत्योऽनुरूपाश्च चारुप्रोष्ठपद्मोपमाः ॥३॥ [N
 संहृषी तत्र कौसल्यां कैकेयी चाभवच्छुभा ।
 ९.] सुमित्रा वामदेवस्य बभूव करिणी मुता ॥ ४॥ [N
 ततोऽस्य जज्ञिरे पुत्राश्चत्वारोऽमितविक्रमाः ।
 १०.] रामलक्ष्मणशत्रुघ्ना भरतश्च महाबलः ॥५॥ [N

१. ज ल भ—स च चारोत्तमं धर्मं ।

२. ज ल—सुमयः ।

३. रा—० प्यायितः ।

४. ज ल भ—राज्ञो वै बभूव ।

५. भ—० ऽनुरूपा वै ।

६. कै—सग्यरी (?)

७. भ—कोशल्या ।

८. रा व—करणी ।

९. रा ज व ल—शुभा ।

१०. भ—सुमित्रा वा नृदेवस्य बभूवानंशकारिणी ।

भतः परमस्य टीकापि मूले दृश्यते । तथा—

सुमित्रा वामदेवस्य बभूव करणी शुभा । इति पाठे वामः सुन्दरः ।

स चासौ देवव्रति व्युत्पत्त्या दक्षरवस्य राज्ञ इत्यर्थः ।

करं नयतीति करणी राज्ञः करस्पर्शविचया बभूव ।

अथवा वामदेवस्य करणी संज्ञका एषी तथा शुभा तथा

राज्ञः सुमित्रा बभूव ।

तेषां ज्येष्ठं महाबाहुं वीर्यप्रतिबोजसम् ।

११] कौसल्याऽजनयद् रामं विष्णुतुल्यपराक्रमम् ॥६॥

कौसल्या शुशुभे तेन पुत्रेणाभितनेजसा ।

१२] अदितिर्देवराजेन यथा बलनिघातिना ॥७॥ [१२

स हि' देवैः सगन्धर्वैर्याचितोऽथं महात्मभिः ।

N] विष्णो पुत्रत्वंमेहीति कृत्वाऽऽत्मानं चतुर्विधम् ॥८॥ [N

रावणस्य हि' रौद्रस्य वधार्थार्य दुरात्मनः ।

N] विष्णुः स हि महाभागः सुराणां शत्रुमर्दनः ॥९॥ [N

स हि शीलोर्षपक्षश्च वीर्यवानं गुणवानपि ।

N] बभूव मांनवे लोके गुणैर्दशरथाधिकः ॥१०॥ [N

अथ लक्ष्मणशत्रुघ्नौ जनितौ तौ सुमित्रया ।

[१४पृ.

N] उत्तमौ दृढभक्तीनां रामस्यानवमौ गुणैः ॥११॥ [N

तावप्यास्तां चतुर्भागौ विष्णोः संपिण्डिताबुभौ ।

N] चतुर्भागस्य यस्यार्धमेकैकः पायसोऽभवत् ॥१२॥ [N

१. रा ज—ह ।

२. ज—वाचितः स । ल भ—वाचितम् ।

३. रा—महर्षिभिः । भ—महामतिः ।

४. ज ल भ—पुत्रत्वं गच्छ विष्णो दे ।

५. ज ल भ—रावणस्येह ।

६. ज ल भ—वधार्थं तु ।

७. ज—विष्णुर्हि स महाभागः । भ—विष्णुर्हि सुमहा० ।

८. ल भ—वीर्योपपन्नम् ।

९. ल भ—शीलवान् ।

१०. ल—मानवौ ।

११. ज—वास्ति ।

१२. ज—विष्णुसंपिण्डिताबुभौ ।

१३. ज—पायसोऽभवत् । भ—पायसोऽभवत् ।

१४. ल—एक एव चतुर्भागावपरस्माद्भावत ।

पृ१७] भरतो नाम कैकेय्या जज्ञे सत्यपराक्रमः ।

साक्षात् विष्णोश्चतुर्भागः सर्वैः समुदिता गुणैः ॥१३॥ [१३
ते दीप्तयज्ञसः सर्वे महेष्वासा नरर्षभाः ।

१८] आपूरयन्तो वै कामान् पितुर्धर्मविशारदाः ॥१४॥ [N
स चतुर्भिर्महाभागैः पुत्रैर्दशरथो वृतः ।

१९] बभूव परमप्रीतो वेदैरिव पितामहः ॥१५॥ [N
तेषां केतुरिव श्रेष्ठो रामो रतिकरः पितुः ।

२०] बभूव भूयो भूतानां स्वयंभूरिव धर्मतः ॥१६॥ [२६
ते यदा ज्ञानसंपन्नाः सर्वज्ञा दीर्घदर्शिनः ।

N] सर्वशास्त्रास्त्रविद्वांसो ह्रीमन्तः सत्यवादिनः ॥१७॥ [N
आसन वेदविदः शूराः सर्वे मर्वास्त्रकोविदोः ।

३०] धीमन्तः कृतविद्याश्च सर्वैः समुदिता गुणैः ॥१८॥ [N
अथ राजा यथाकालं राजवर्यमुताः शुभाः ।

N] सर्वेषामवर्षद् भार्यास्तुल्यलक्षणवर्चसः ॥१९॥ [N
जनकः श्वशुरो राजा रामस्य भरतस्य च ।

N] कुशध्वजमुताभ्यां च सुमित्रानन्दनौ पती ॥२०॥ [N
तेषामतियज्ञां लोके रामः सत्यपराक्रमः ।

१. ज भ—महर्षभाः ।

२. ज छ भ—अपूरयन्त ते ।

३. ज छ भ—वेदैरिव ।

४. ज छ भ—सर्वशास्त्रार्थविदुषो ।

५. ज छ—शास्त्रार्थकोविदाः । भ—शास्त्रार्थको० ।

६. ज छ—धीमन्तः । भ—ह्रीमन्तः ।

७. ज—राज्ञां ।

८. ज—सर्वेषामवर्षद् । छ—सर्वेषामवर्ष । भ—सर्वेषामकरोद् ।

९. रा—तेषामतिथशो ।

- N] स्वयंभूरिव भूतानां बभूव गुणवत्तरः ॥२१॥ [N
 तस्य भूयो विशेवेण मैथिली जनकात्मजा ।
- N] देवंताभिः समा रूपे सीता श्रीरिवै रूषिणी ॥२२॥ [N
 मिया तु सीता रामस्यै दाराः मियकृता इति ।
- N] गुणै रूपगुणैश्चापि पुनः मियतराऽभवत् ॥२३॥ [N
 भर्ता तु तस्या द्विगुणं हृदये परिवर्तते ।
- N] अनाख्यातमपि व्यक्तमाचष्ट हृदयप्रियम् ॥२४॥ [N
 बाल्यात् प्रभृति हि स्निग्धो लक्ष्मणो लक्ष्मिवर्धनः [३०पृ
- २१] सर्वाभिरामं रूपेण भ्राता भ्रातरमग्रजम् ॥२५॥ [N
 स चै मियतरस्तस्य प्राणेभ्योऽप्यरिमर्दनः ।
- २२] लक्ष्मणो लक्ष्मणोपेतो रामस्य रिपुघातिनः ॥२६॥ [११
 मृष्टमैत्रमुपानीतमश्नाति न हि तं विना ।
- २३] प्रीतिर्न तस्य जायेत प्रीतिकालेषु तं विना ॥२७॥ [३२
 यदा ह्यमुपारूढो मृगयां याति राघवः ।

१. व—देवताभ्यः ।

२. ज—जी रव । इत्यपपाठः ।

३. ल—लोकस्य ।

४. ज ल—दारा ।

५. भ—हृष ।

६. कै—व्यक्तं आदष्ट । भ—व्यक्तमाचष्ट ।

७. कै व भ—हृदयं प्रियं ।

८. ज ल भ—च ।

९. रा व—लक्ष्मिवर्धनः । भ—लक्ष्मिवर्धनः ।

१०. रा—सर्वाभिरूपेण रामं ।

११. म—वै ।

१२. भ—ऽप्यरिसूदनः ।

१३. ज—लक्ष्मणोपेतो ।

१४. रा व—मिहमत्र० ।

२४] तदैनं पृथगतोऽन्वेति सधनुः पेरिपालयन् ॥२८॥ [३३

भरतस्यापि शत्रुघ्नो राघवस्येव लक्ष्मणाः ।

२५] प्राणैर्बहुमतो नित्यं तस्यापि स तथाऽभवत् ॥२९॥ [३४

स तु केकर्यराजेन स्नेहानुप्रेषितैर्हयैः ।

N] ज्यहोपनीतो धर्मात्मा नीतः स्वर्नगरं प्रति ॥३०॥ [N

कृतदाराः कृतास्ताश्च सधनोः समुद्रदृग्णाः ।

N] शुश्रूषमाणाः पितरं वर्तन्ते ते नरोत्तमाः ॥३१॥ [N

रामश्च सीतया सार्धं विजहार बहून्तृणं ।

N] मनश्च तद्व्रतं तस्य तस्याः स हृदये स्थितः ॥३२॥ [N

तया स राजर्षिवराभिकामयो

समेयिवानुत्तमराजकन्यया १

अतीव रामः शुश्रूषेऽभिरामया

N] विभुः त्रियं शक्रं इवामराधिपः ॥३३॥ [N

इत्यादि रामायणे १ वाक्यकाण्डे पुत्रजन्म नाम

चतुर्दशः सर्गः ॥ १४ ॥

१. ज ल भ—पयि पालयन् ।

२. ज ल—राघवस्य च ।

३. ज—कैकीय० । ल—कैकय० । भ—कैकेय० ।

४. ज ल भ—जोहाष प्रे० ।

५. रा—ज्यहोपनीतो ।

६. रा—स्वं नगरं । ल—सुनगरं ।

७. ल—शुश्रूषाः ।

८. ल—स्म ।

९. कै—बहून्तृणं ।

१०. रा—सम्भवं (सं ?)

११. भ—राजर्षिवरोभिकामया ।

१२. ल—समीयिवानु० ।

१३. रा—विषा शत्रु ।

१४. कै—वाल्मीकीये ।

[वं=२०] [पञ्चदशः सर्गः] [दा=१७]

पुत्रत्वं तु गते विष्णो रान्नस्तस्य महान्मनः ।

- १.] उवाच देवताः सर्वाः स्वयंभूर्भगवानिदम् ॥१॥ [१]
 सत्यसन्धस्य वीरस्य सर्वेषां नो हितैषिणः ।
- २.] विष्णोः सहायान् सृजत बलिनः कामरूपिणः ॥२॥ [२]
 मायाविनश्च वीरांश्च वायुवेगसमाजवे ।
- ३.] अतिबुद्धिसमायुक्तानं विष्णोस्तुल्यपराक्रमान् ॥३॥ [३]
 असंहार्यानुपायज्ञानं दिव्यसंहननान्वितान् ।
- ४.] सर्वास्त्रगुणसंपन्नानमृतप्राज्ञकोपमान् ॥४॥ [४]
 अप्सरःसु च मुग्न्यासु गन्धर्वीणां तनूषु च ।
- ५.] ऋषिपन्नगकन्यासु विद्याधरसुतासु च ॥५॥ [५]
 किन्नरीणां च देहेषु वानरीणां तथैव च ।
- ६.] सृजध्वं हरिरूपेण हरितुल्यपराक्रमां ॥६॥ [६]
 ते तथोक्ता भगवता तत् प्रतिश्रुत्वा शासनम् ।

१. रा—उचे च ।

२. भ—च । अपरहस्तेन ।

३. ज ल भ—मतिषु० ।

४. व—०वांबुपावहायां ।

५. ज ल—सर्वासु गुण० ।

६. ज ल भ—गन्धर्वाद्यां ।

७. ज भ—किन्नराद्यां ।

८. ज भ—वाकराद्यां ।

९. कै—हरिरूपेण ।

१०. ज—०व्यपारिक्रमात् ।

- ७] असृजेन् देवगन्धर्वान् पुत्रान् वानररूपिणः ॥७॥ [८
 ऋषयश्च महात्मानः सिद्धाश्च किर्षरैः सह ।
 ८] चारणांश्चासृजेन् घोरान् वानरान् वनचारिणः ॥८॥ [९
 ५९] ते सृष्टौ बहुसाहस्रा दशग्रीवबधोद्धृताः ।
 अमयेयवलाः शूरा वानराः कामरूपिणः ॥९॥ [१७
 १०] ते गुञ्जानलसङ्काशा वीर्यवन्तो महाबलाः ।
 ऋक्षवानरगोपुच्छाः क्षिप्रमेवं विजंज्ञिरे ॥१०॥ [१८
 ११] यस्य देवस्य यद्रूपं वेपस्तेजश्च तद्विधम् ।
 जज्ञे स सदृशस्तेन तस्य तस्य सुतस्तदा ॥११॥ [१९
 १२] गोलाङ्गुलीषु चोत्पन्नाः केचित् त्वमितविक्रमाः ।
 ऋक्षीषु च तेषां घोरान् वानरीकिष्करीषु च ॥१२॥ [२०

१. ज ल भ—जनयन् ।

२. ज ल भ—देवगन्धर्वाः ।

३. रा भ—पुत्रावान् नररू० । भ—पुत्रा वानररू० ।

४. ज ल भ—सह किर्षरैः ।

५. कै—चारणांशाभजन् । रा—चारणांश्च सृजन् ।

भ—चारणांशासृजन् ।

६. भ—घोरा ।

७. ज ल भ—वनवासिनः ।

८. ल—सृष्ट्वा ।

९. रा ज ल—दशसाहस्रा ।

१०. ज—बधोद्धृताः । कै—बधोद्धृताः । भ—बधोद्धृताः ।

११. ज ल भ—क्षिप्रमेवाभिमज्जिरे ।

१२. कै रा ज ल—वेपस्ते० । व—बन्धस्ते ।

१३. भ—गोलाङ्गुलेषु ।

१४. रा—वया ।

१५. ल—वीरा ।

- १३] शिलाप्रहरणाः सर्वे सर्वे पादपयोधिनः ।
नखदंष्ट्रायुधाः सर्वे सर्वे वै कामरूपिणः ॥१३॥ [२५
- १४] उत्पाटयेयुश्च गिरीन् भिक्षुः कोपान् तथा द्रुमान् ।
क्षोभयेयुश्च वेगेन समुद्रं मग्नितां पतिम् ॥१४॥ [२६
- १५] दारयेयुः क्षितिं पार्दरून्प्लवेयुर्नभस्तलम् ।
धुनुयुः श्वमनाविद्वान् सजलानपि तोयदान् ॥१५॥ [२७
- १६] गृह्णीयुरपि नागेन्द्रान् मत्तान् मृजनितश्रमान् ।
नदन्तोऽपि तथा व्योम्नि पातयेयुर्विहङ्गमान् ॥१६॥ [२८
- १७] ईदृशानां प्रसूतानां हरीणां कामरूपिणाम् ।
- पृ१८] शतं शतसहस्राणां यथपानां महात्मनाम् ॥१७॥ [२९
- ईदृशं कीर्तितं जन्म फुल्लकिंशुकरोचिसाभं । [N
- N] ते प्रधानेषु यथेषु हरीणां हरियूथपाः ॥१८॥
- बभूवुर्यूथपश्रेष्ठास्ते चाप्यजनयन् सुतान् । [३०
- १९] अन्येऽर्कशंक्रयोः पुत्रावुपतस्थुः सहस्रशः ॥१९॥

१. कै रा व भ—भिक्षुः ।

२. ज—चारपेयुः ।

३. कै—धुन्वयुः । ज—ध्वजयुः । व—धन्वयुः ।

४. व—वसनाद्विद्वान् ।

५. कै—नागेन्द्रं दंतान् प्रजवितान् जवान् ।

रा—नागेन्द्रांस्तान् प्रजवितान् जवान् ।

व—नागेन्द्रदन्तान् प्रजवितान् हवान् ।

६. भ ल—हरीणां ।

७. रा—फुल्लतकिंशुकरो ।

८. रा—प्रधानेषु ।

९. व ल—यूथपश्रेष्ठास्ते ।

१०. रा—अन्वोर्कशं । भ—अन्वो केशकं ।

११. रा भ—अनुपतस्थः । ज ल—पुत्रावुपतस्थुः ।

अन्ये नानाविधान् शैलान् काननानि च भेजिरे' । [३१]

२०] सूर्यपुत्रं च सुग्रीवं शक्रपुत्रं च वालिनम् ॥२०॥

पूर१] भ्रातराद्युपतस्युश्च ते च सर्वे हरीश्वराः । [३२]

तथा दशग्रीववधे स्वयंभुवा

निशम्य सर्वं विहितं शतक्रतुः ।

मनुष्यलोके प्रभुरअसा ययौ

N] दिदृष्टुरिक्ष्वाकुकुलं सुरेश्वरं ॥२१॥

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे वानरोत्पत्ति-

र्नाम पञ्चदशः सर्गः ॥१२॥

१. भ—विभेजिरे ।
२. अ ल भ—तेषु सर्वे ।
३. अ ल—विहितं ।
४. भ—०रिक्ष्वाकुमुतं ।
५. व—सुरेश्वराः ।

[वं=१६, २१] [षोडशः सर्गः] [दा=१८]

निवृत्ते तु ऋतौ तस्मिन् द्यमेधे महात्मनः ।

- १] प्रतिगृह्य सुरा भागं प्रतिजग्मुर्यथागतम् ॥१॥ [१
 पृ११] प्रविवेश पुरीं राजा सभृत्यबलवाहनः । [५३
 N] तस्य पुत्रा महात्मानश्चत्वारो जङ्गिरे पृथक् ॥२॥ [N
 रूपवन्तो ऽनुरूपांश्च लोकपालोपमा गुणैः । [N
 N] कौसल्याऽजनयद् रामं गर्जपिवरलक्षणम् ॥३॥
 साक्षाद् विष्णोस्तदर्थं च पुत्रं त्रिकुलनन्दनम् । [११
 N] अथ लक्ष्मणशत्रुघ्नौ जनितौ तौ मुमित्रया ॥४॥ [१४पृ
 कैकेयी जनयामास भरतं धर्मवत्सलम् । [१३पृ
 N] अथ राजा दशरथस्नेपां दारक्रियां प्रति ॥५॥
 चिन्तयामास धर्मात्मा सोपाध्यायः सत्रान्धवः । [३९
 N] तस्य चिन्तयतः कार्यमृषिमध्ये महात्मनः ॥६॥ [४०पृ

१. ज—सुभृत्यवः ।

२. रा—अतः परं पूर्वपांश्चऽपरहस्ताङ्कितोऽधिकः पाठः—

ततो यजे समासे तु ऋतूनां षट् समत्ययुः ।

ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावर्माके तिथौ ॥

नक्षत्रे दितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पंचसु ।

ग्रहेषु कर्कशग्रे च वाक्यकार्विदुना सह ॥

प्रोद्यमाने जगन्नाथः सर्वलोकनमस्कृतः ।

३. कै—रूपवन्त्योनु० । ज ल—गुणवन्तः सुरूपा० । भ—गुणवन्त्योनु० ।

४. ज ल—लोकपालोपमेगुणैः ।

५. ल—राजपिबिबि ब्रह्मचरं ।

६. ज ल—०स्तदर्थं हि । भ—०स्तदर्थं हि ।

७. कै अ ल भ—पुत्रमिष्याकुनन्व० ।

एतस्मिन्नेव काले तु विश्वामित्र इति श्रुतः ।

२१.१] महर्षिरभ्ययाद् द्रष्टुमयोध्यायां नराधिपम् ॥७॥ [N

तस्य यज्ञोऽथ रक्षोभिस्तदा विलुलुपे किल ।

२] मायावीर्यबलोन्मत्तैर्धर्मकामस्य धीमतः ॥८॥ [N

रक्षार्थं तस्य यज्ञस्य द्रष्टुमिच्छन् मै पार्थिवम् ।

३] न हि शक्रोन्यविघ्नेन तं समाप्तुं मुनिः क्रतुम् ॥९॥ [N

ततस्तेषां विनाशायाभ्युद्यतस्तपसां निधिः । [N

N] विश्वामित्रो महानेजा अयोध्यामगमत् पुरीम् ॥१०॥ [४०उ

स राज्ञो दर्शनाकांक्षी द्वाराध्यक्षानुवाच ह ।

४] शीघ्रमाख्यात मां प्राप्तं कौशिकं गाधिन्द्रनमं ॥११॥ [४१

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राजवेश्म प्रदुद्रुवुः ।

५] संभ्रान्तमौनसाः सर्वे तेन वाक्येन नोदिताः ॥१२॥ [४२

ते गत्वा राजभवनं विश्वामित्रमृषिं ततः ।

६] प्राप्तमावेदयामासुं नृपतेर्धर्मदर्शिनः ॥१३॥ [४३

१. रा - विलुलुपे । ल - विलुलुपे ।

२. रा - मयावीर्यब० ।

३. ज ल - द्रष्टुमिच्छामि । भ - द्रष्टुमिच्छति ।

४. रा ल भ - स ।

५. ज ल भ - महाक्रतुम् ।

६. रा - ०य उद्यतः तपसां । ज भ - ०य उद्यतस्तपसो ।

ल - ०य उद्यतस्तपसो ।

७. भ - ०ध्यामभ्यगात् ।

८. ल - सः ।

९. रा - मा ।

१०. ज ल भ - गाधिबः सुतम् ।

११. कै ज व ल - संभ्रान्तमनसः ।

१२. रा - प्राप्तं निवेदयामासुर्नृ० । प्राप्तमावेदयामासुर्नृ० ।

तेषां दशरथः श्रुत्वा सोपाध्यायः सबान्धवः ।

- ७] प्रत्युज्जगाम तर्मृषिं ब्रह्माणमिव वासवः ॥१४॥ [४४
 स दृष्ट्वा ज्वलितं लक्ष्म्या भीतस्तर्मृषिमागतम् ।
 N] प्रहृष्टवदनो राजा स्वयमर्घ्यं न्यवेदयत् ॥१५॥ [४५
 ७८] तं राजा प्राञ्जलिर्भूत्वा चकाराभिप्रदक्षिणम् ।
 ७९] राज्ञां संपूजितस्तेन प्रत्युद्गम्य स्वयं तदा ॥१६॥ [N
 N] राज्ञश्च प्रतिष्ठणार्घ्यं शास्त्रदृष्टेन कर्मणा ।
 ७९] कुशलानामयं प्रीतः पप्रच्छ वसुधाधिपम् ॥१७॥ [४६
 वसिष्ठेन समागम्य प्रहसन मुनिपुङ्गवः । [४७
 १०] यथार्थं चार्चयंश्चैनं पप्रच्छानामयं ततः ॥१८॥ [N
 ततो यथार्थमप्येनं पूजयित्वा समेत्य च । [N
 ११] सर्वे प्रहृष्टमनसो राज्ञस्तस्य निवेशनम् ॥१९॥
 विविशुः सहिता राज्ञा निषेदुश्च यथार्हतः । [५०
 १२] उपविष्टाय ते तस्मै विश्वामित्राय धीमते ॥२०॥ [N
 वसिष्ठसहितो राजा स्वयमेव महायशाः ।
 १३] पाद्यमर्घ्यं तथा गां च विधिवत् प्रत्यवेदयत् ॥२१॥ [N
 अर्चयित्वा ततो राजा विश्वामित्रमभाषत ।
 १४] प्राञ्जलिः प्रयतो वाक्यमिदं प्रीतमनास्तदा ॥२२॥ [N

१. ज ल भ—नृपतिर ।

२. रा—०वचनो ।

३. ज ल भ—नास्ति ।

४. ज ल भ—प्रणम्य प्राञ्जलिर्भूत्वा चक्रे चाभिप्रदक्षिणम् ।

५. ज ल भ—स राजा पूजितस्तेन ।

६. रा—०खानामयी ।

७. ज ल—सहागम्य ।

८. रा ज भ—यथार्थं चार्चयंश्चैनं । ल—यथार्थमर्चयंश्चैनं ।

९. ज—०र्चमाप्येनं ।

यथामृतस्य संप्राप्तिर्यथा वर्षमवर्षके ।

१५] यथा सदृशनारीभ्यः पुत्रजन्माप्रजस्य हि^१ ॥२३॥ [५२

N] यथेप्मितस्य संप्राप्तिरिष्टस्यागमनं यथा ।

पृ१६] प्रणष्टस्य यथा लाभो भवेद्दर्पो महोदयः ॥२४॥ [५३

उ१६] हर्षानन्दकरं मेऽद्य तवाभ्यागमनं तथौ ।

N] स्वप्ने यथाऽर्थलाभः स्यान्मृतस्य पुनरागमः ॥२५॥ [N

ब्रह्मलोकनिवासश्च कस्य न प्रीतिमावहेत् ।

N] 'मुने तवागमस्तद्वत् सत्यमेव ब्रवीमि ते ॥२६॥ [N

N] यथाऽभिलषितं कामं किं ते कुर्मोऽभिकांक्षितम् । [N

कश्च ते परमः कामः किमृषे करवाण्यहम् !^१ २७॥

१७] पात्रभृतोऽसि मे विप्र चिरस्याभ्यागतोऽतिथिः । [५४

त्वं हि राजर्षिकुलजस्तपोभिर्नियमैस्तथा ॥२८॥

१८] ब्रह्मर्षित्वमनुप्राप्तस्तस्मात् पृज्यतमोऽसि मे । [५६

साक्षादिव ब्रह्मगो मे तवाभ्यागमनं मर्तम् ॥२९॥

१. भ—वर्षा अवर्षके ।

२. ल—सदृशना० ।

३. ज भ—ह । ल—च ।

४. ज ल भ—भवेद्धर्मो ।

५. कै रा—सहोदयः ।

६. ज—हर्षानन्दोत्तरं । हर्षानन्दोत्तरं ।

७. ज ल भ—तथाभ्यागमनात्तव ।

८. रा ब—ब्रह्मलोके निवा० ।

९. रा—प्रीतिमावहेत् ।

१०. रा ल—मुनेम् ।

११. ल भ—सत्यमेतद् ।

१२. ज ल भ—कार्यं ।

१३. भ—नास्ति ।

१४. भ—तथाभ्यागमनाच्छतः ? ।

१९] पृतोऽस्म्यनुगृहीतश्च तवाभ्यागमनान्मुने ।

[N

पृ२०] अद्य मे सफलं जन्म जीवितं च मुजीवितम् ॥३०॥

[५५

गङ्गाजलाभिषेकेण यथा प्रीतिर्भवेन्मम ।

N] तथा तवागमे विप्र परमप्रीतिमानहंम् ॥३१॥

[N

N] तदद्भुतमिदं ब्रह्मन् पवित्रं परमं मम ।

[N

शुभक्षेत्रगतैश्चाहं तवाभ्यागमनेन वै ॥३२॥

[N

त्वामिहाभ्यागतं दृष्ट्वा प्रतिपूज्य प्रणम्य च ।

यत् कार्यं तेनै चार्थेन प्राप्तोऽसि मुनिपुङ्गव ॥३३॥

२१] कृतमित्येव तद् विद्धि मान्योऽसि हि भृशं मम ।

[५०

स्वकार्येण विमर्षं त्वं कर्तुमर्हसि कौशिक ॥३४॥

२२] भगवन् नास्त्यदेयं मे तव प्रीतिर्हि विद्यते ।

[६०

इति हृदयमनोगतं तदा वै नरपतिनाऽभिहितं वचो निशम्य ।

२३] प्रथितगुणयशास्ततो महर्षिर्मुदितमना निजगाद तं नरेन्द्रम् ॥६१

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे विश्वामित्रगमनो

नाम षोडशः सर्गः ॥ १६ ॥

१. रा ल—०ऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि ।

२. कै ब—०तिवानहं । रा—०तिवाहनम् ।

३. ज—शुभक्षेत्रे गतः ।

४. ज ल भ—तव संदर्शनेन । कै—पुस्तकेऽस्य स्थाने आख्या ३०

श्लोकस्य द्वितीयः पादो लिखितः । तत्रापि परं ३०-३१

श्लोकां पुनर्विधाकृतान् ।

५. रा—त्वमिहाभ्यागतं ।

६. कै—यः ।

७. भ—वेन ।

८. रा—शुकार्येण । भ—स्वकार्यस्य ।

९. रा—विमर्षत्वं । ज—विसर्गत्वं । ल भ—विसर्गं त्वं ।

१०. भ—प्रीतिर्हि ।

११. ज—विरयते ।

१२. ज ल—०यमनोनुगं ।

[वं=२२] [सप्तदशः सर्गः] [दा=१९]

तच्छ्रुत्वा नरसिंहस्य वाक्यमद्भुतविस्तरम् ।

- १] हृष्टरोमा महातेजा विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ॥१॥ [१]
 सहस्रं राजशादूल तवैवाद्भुतनाम तत् ।
 २] महावंशप्रमृतस्य वसिष्ठवशवर्तिनः ॥२॥ [२]
 पू३] यत् तु मे हृद्गतं वाक्यं तस्य कार्यविनिश्चयम् ।
 N] कुरुष्व नरशार्दूल धर्मं समनुपालय ॥३॥ [३]
 पू४] अहं नियममातिष्ठे सिद्ध्यर्थं पुरुषर्षभ ।
 N] तस्य विघ्नकरौ द्वौ मे राक्षसौ कामरूपिणौ ॥४॥ [४]
 N] मारीचश्च मुवाहुश्च तस्मिंस्तौ राक्षसाधमौ ।
 उ५] तावभ्यैकिरतां वेदिं मांसेन रुधिरेण च ॥५॥ [५]
 अवधूते तथाभूते तस्मिन् नियमविस्तरे ।
 ६] कृतश्रमो निरुत्साहस्तस्मादेशोदपाक्रमम् ॥६॥ [६]

१. भ—राजसिंहस्य ।

२. ज ल भ—तवैतन्नवि नाम्यतः ।

३. ज भ—कार्यं वाक्यं तस्य विनिश्चयं ।

ल—कार्यं—वाक्यमद्भुतविस्तरम् ।

४. ल—हृष्टरोमा महातेजा ।

५. ज ल भ—हि यज्ञमातिष्ठन् ।

६. ल—पुरुषाधमौ ।

७. ल—तावत्वाकिरतां ।

८. ल—तस्मिन्निबन्धविस्तरे ।

भ—तस्मिन्निबन्धविद्यते । मध्यस्थं पाठं त्यक्त्वा उभयोक्तस्य

चतुर्थपादस्थेन विद्यत इति पदेन सम्बन्धः कृतः ।

९. ज—कृतश्रमविरु० ।

१०. ल—०तस्मादेशोदपाक्राम० ।

पू७] न च क्रोधं समुत्सृष्टं बुद्धिर्भवति पार्थिव ।

N] तथाभूतं हि तत्कर्म न कोपस्तस्य विद्यते ॥७॥

[७

उ७] ईदृशी यज्ञदीक्षा सा मम तस्मिन् महाक्रनौ ।

त्वत्प्रसादादविघ्नेन भ्रापयेयं क्रियाफलम् ॥८॥

[N

८] आतुमर्हसि मामत्रं शरणार्थिनमागतम् ।

[N

स्वपुत्रं राजशार्दूल रामं सत्यपराक्रमम् ॥९॥

९] काकपक्षधरं शूरं ज्येष्ठं त्वं दातुमर्हसि ।

[८

पू१०] शक्तो शेषं मया गुप्तो दिव्येन स्वेन तेजसा ॥१०॥

रक्षसां येऽपि कर्तारस्तेषामपि विनिर्ग्रहे ।

[९

N] श्रेयश्चास्मै प्रवक्ष्यामि बहुरूपममत्सरः ॥११॥

उ११] त्रयाणामपि लोकानां येन कामो भविष्यति ।

[१०

न च ते राममासाद्य स्थातुं शक्ताः कथञ्चन ॥१२॥

१२] तेषां रामांबान्यो वै योद्धुमुत्सहते पुमान् ।

[११

वीर्योत्सिक्ता हि ते पापाः कालकूटोपमौ रणे ॥१३॥

[१२

१. भ—प्रापयेऽहं ।

२. रा—कर्तुमर्हसि । ज—पातुमर्हसि ।

३. कै—मां सत्र० । रा—सा सत्र ।
ज ल भ—मां राजन् ।

४. ज ल भ—शरणागतमागतम् ।

५. ज ल भ—वीरं ।

६. रा—हृष्टमय ।

७. ज ल—रक्षसामपि ।

८. ल—विनिर्ग्रहं ।

९. ज—रामे । ल भ—रामो ।

१०. रा—शक्तः ।

११. रा ब—जान्यः काकुत्स्थाद् ।

१२. रा ब—द्विषाम् ।

१३. ज ल भ—कालकूटसमा ।

- १३] रामस्य राजशार्दूल न सहिष्यन्ति सायकान् ।
न च पुत्रकृतं स्नेहं कर्तुमर्हसि पार्थिव ॥१४॥ [१२
- १४] अहं ते प्रतिजानामि हतांस्तान् विद्धि राक्षसान् । [१३
अहं वेद्मि^१ महात्मानं रामं राजीवलोचनम् ॥१५॥
- १५] वसिष्ठश्च महातेजा ये चान्ये तपसि स्थिताः । [१४
यदि ते धर्मलोभश्च मनश्च यशसि स्थितम् ॥१६॥ [१५
- १६] अभिप्रेतमसंयुक्तमात्मजं योक्तुमर्हसि ।
दशरात्रेण यज्ञस्य विघ्ना रामेण राक्षसाः ॥१७॥ [१७
- १७] हन्तव्या राजशार्दूल मम यज्ञस्य वैरिणः । [N
यद्यभ्यनुष्ठां काकुत्स्थ ददन्ति तव मन्त्रिणः ॥१८॥
- १८] वसिष्ठप्रमुखाः सर्वे ततो रामं विसर्जय ।^२ [१६
नात्येति कालः कालज्ञ यथाऽयं मम राघव ॥१९॥
- १९] तथा कुरुष्व भद्रं ते मा च शोके भ्रमः कृयाः । [१८
इत्येवमुक्त्वा धर्मात्मा धर्मार्थसहितं वचः ॥^३

१. भ--पुत्रगतं ।

२. ज ल भ--हन्ताऽयं राक्षसान् रथे ।

३. ज ल भ--वेद ।

४. ल--धर्मलोभाच्च ।

५. ज ल भ--अभिप्रेतं महाबाहुमात्मजं योक्तुमर्हसि ।

६. ज ल भ--वदन्ति ।

७. रा ज--नाभ्येति ।

८.--ज ल--यथा मे बहु । भ--तथा मे वद ।

९. ज--मजाः कृशाः ? ।

१०. ज--नास्ति ।

बालकाण्डम् १७ । २१ ॥

१६९

N] विरराम महातेजा विश्वामित्रो महामुनिः ॥२०॥

[१९

इत्येवमुक्त्वा विरते मुनीन्द्रे

जगादे भूयो रघुवंशकेतुः ।

N] वक्षःस्थले दन्तमयृखजालै -

हीरावलीरम्यमिवं प्रकुर्वन् ॥२१॥

[N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे विश्वामित्रवाक्यं
नाम सप्तदशः सर्गः ॥ १७ ॥

१. ल—जगाम ।

२. रा ज ल—वक्षःस्थले ।

३. ल—हीरावली रम्य० ।

[वं=२०] [अष्टादशः सर्गः] [दा=२३]

तच्छ्रुत्वा राजशार्दूलो विश्वामित्रस्य भाषितम् ।

१] मुहूर्तमासीभिश्चेष्टः सदीनमिदमब्रवीत् ॥१॥ [१

ऊनषोडशवर्षोऽयं रामो राजीवलोचनः ।

२] न युद्धे योग्यतामस्यं पश्यामि सह राक्षसैः ॥२॥ [२

इयमक्षौहिणी पूर्णा यस्याः पतिरहं प्रभो ।

३] तथा परिवृतो युद्धं दास्यामि पिशिताशिनाम् ॥३॥ [३

इमे हि शूरा विक्रान्ता भृत्या मेऽस्त्रविशारदाः । [४पृ

४] अहमेषां धनुष्पाणिर्गोप्ता समरमूर्धनि ॥४॥

पृ५] यावत्प्राणा बहिष्यन्ति युध्यतो मे निश्राञ्चरैः । [५

७६] बालो ह्ययमनीकेषु न जानाति बलाबलम् ॥५॥

न चांशूः परैर्मैर्युक्तो न च बुद्धिविशारदः । [७

७] न चापि रक्षसां योग्यः कूटयुद्धौ हि राक्षसाः ॥६॥ [८

१. भ—०.पवर्षस्तु ।

२. रा—योग्यता ह्यस्य । ल—धोम्यता चास्य ।

३. ल—युद्धे ।

४. रा—मे सुविशारदाः । ज ल भ—शस्त्रविशारदाः ।

५. ज ल—अहं चैव । भ—अहं च ।

६. ज ल—यावत्प्राणं ।

७. ज ल भ—बहिष्यन्ति ।

८. ज—ह्ययमनीकेषु ।

९. ल—जानाति ।

१०. ज—शस्त्रैः । भ—चाण्डे ।

११. भ—परमे युद्धे ।

१२. ल—बुद्धिविशारदः ।

१३. ज—कूटयुद्धं हि रक्षसम् ।

- विप्रयुक्तो हि रामेण मुहूर्तमपि नोत्सहे ।
 ८] जीवितुं नरशार्दूलं न रामं नेतुमर्हसि ॥७॥ [९
 नववर्षसहस्राणि मम जातम्य कौशिक ।
 ९] दुःखेनोत्पादिताश्चमे^१ न रामं नेतुमर्हसि ॥८॥ [११
 चतुर्णामात्मजानां वै^२ प्रीतिरत्र हि^३ मे परा ।
 ७१३] ज्येष्ठं धर्मप्रधानं च न रामं नेतुमर्हसि ॥९॥ [१२
 यदि वा राघवं ब्रह्मन् नेतुमिच्छसि मुव्रत ।
 १४] चतुरङ्गबलोपेतं मया सार्धममुं नय ॥१०॥ [१०
 किंवीर्या राक्षसास्ते हि कस्य पुत्राः कथञ्चने ।
 १५] कथंप्रमाणाः के चैने राक्षसा मुनिपुङ्गव ॥११॥ [१३
 कथं च प्रतिकर्तव्यं तेषां रामेण रक्षसाम् ।
 १६] मांमकैर्वा बलैर्ब्रह्मन् मया वा कूटयोधिनाम् ॥१२॥ [१४
 १७] सर्वे मे शंस भगवन् यथा तेषां महारणे ।

१. ल—मुनिशार्दूल ।
 २. ल—० वर्षसहस्रासु ।
 ३. भ—दुःखेनोत्पादितं ह्यतं ।
 ४. ज ल भ—हि ।
 ५. ज ल भ—परा मम ।
 ६. ज ल भ—हि ।
 ७. भ—यहि ।
 ८. भ—राघवं नेतुं ।
 ९. कै रा ब—नेतुमर्हसि । भ—ब्रह्मन्निच्छसि ।
 १०. व—० बलं नेतुं ।
 ११. ज ल भ—कथं च ते ।
 १२. ज भ—सायकैर्वा ।
 १३. ल—मायया ।
 १४. ल—ते राक्षसा मुने ।

- N] स्थातव्यं दुष्टभावानां वीर्योत्सिक्ता हि राक्षसाः ॥१३॥ [१५
 श्रूयते हि महावीरो रावणो नाम राक्षसः ।
- १६] साक्षाद्विश्रवणंभ्राता पुत्रो विश्रवसो मुनेः ॥१४॥ [१६
 न खल्वसौ यज्ञविघ्नं तवाचरति दुर्मतिः ।
- N] न शक्तास्तस्य सङ्गमे वयं स्थातुं दुरात्मनः ॥१५॥ [N
 तस्मात् प्रसादं धर्मज्ञ कुरुष्व मम पुत्रके ।
- २०] यदि वा चाल्पभाग्योऽहं भवान् हि मम दैवतम् ॥१६॥ [२२
 देवदानवगन्धर्वा यक्षाः पतगपन्नगाः ।
- २१] न शक्ता रावणं सोढुं किं पुनर्मानुषा युधि ॥१७॥ [२३
 महावीर्यवतां वीर्यमाददाति सुवारितम् ।
- २२] तेन सार्धं न शक्ताः स्मः संयुगे तस्य वारिदलः ॥१८॥ [२४
 अथवा लवणं ब्रह्मन् यज्ञं मधुनः सुतम् ।
- २३] कथयस्वामरप्रक्षय नैव प्रेक्ष्यामि पुत्रकम् ॥१९॥ [२५
- पृ२४] मुन्दोपमुन्दयोश्चैव पुत्रौ वैवस्वतोपमौ ।
- N] यज्ञविघ्नकरौ ब्रूहि न ते दास्यामि पुत्रकम् ॥२०॥ [२६

१. ज ल भ—महावीर्यो । ब—मया वीरो ।

२. ज—साक्षाद्विश्रवणभ्राता ।

३. ल—मुने ।

४. ल—तवाचरति । ब—उ वा चरति ।

५. ज ल भ—मम वै मन्दभाग्यस्य ।

६. कै ब—वीर्यमादधाति ।

७. कै रा—०स्वामरप्रक्षयं । ज—०स्वामरप्रेक्ष्य ।

ल—० स्वासुरप्रक्षय ।

८. ल—परयामि । भ—मोक्षयामि ।

९. कै—वैवस्वतोपमम् । रा—वैवसुतोपमौ ।

- उ२४] मारीचश्च सुबाहुश्च विघ्नं वै कुरुतस्तव । [२७पृ
 पृ२५] तथाऽपि न च मोक्षयामि पुत्रं रामं प्रसीद मे ॥२१॥[N
 एतदन्यतमौ यौ तु योद्धाऽस्मि समुतो मुने ।
 २६] अन्यथा न तु यास्यामि भगवन् जयमात्मनः ॥२२॥

ह्याषो रामायणे^६ बालकाण्डे^७ द्वात्रिंशत्तमोऽध्यायः
 नाम अष्टादशः सर्गः ॥ १८ ॥

१. ल—मारीचः शस्त्रराहुश्च ।
२. ज ल भ—कुरुतः सह ।
३. ज—तथा च ।
४. रा—पुत्रं राज्य प्र० । भ-न ते दास्यामि पुत्रकं ।
५. भ—एते ह्यन्यतमौ ।
६. ज ल भ—वा तौ । ल-समुतो ।
७. कै—रामायणे वाल्मीकीये ।
८. कै—बालकाण्डतमोऽध्याये ।

[वं=२४] [एकोनविंशः सर्गः] [दा=२१]

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य स्नेहपर्याकुलाक्षरम् ।

- १] समन्युः कौशिको वाक्यं प्रत्युवाच महीपतिम् ॥१॥ [१]
करिष्यामि प्रतिज्ञाय प्रतिज्ञां हातुमिच्छेसि ।
- २] राघवाणामयुक्तोऽयं कुलस्यास्य विपर्ययः ॥२॥ [२]
यदि त्वं नै क्षमो राजन् गमिष्यामि यथागतम् ।
- ३] हीनप्रतिज्ञः काकुत्स्थ सुखी भव सर्वान्धवः ॥३॥ [३]
तस्य रोपपरीतस्य विश्वाभिन्नस्य धीमतः ।
- ४] चचाल वसुधा कृत्स्ना सुरांश्च भयमार्विङ्गत् ॥४॥ [४]
क्रोधाभिभूतं विज्ञाय जगन्मैत्रो महानृषिः ।
- ५] धृतिमान् सुव्रतो धीमान् वसिष्ठो नृपमब्रवीत् ॥५॥ [५]
इक्ष्वाकूणां कुले जातः साक्षाद्धर्म इवापरः ।
- ६] धृतिमान् सत्यवान् वीरो न धर्मं हातुमर्हसि ॥६॥ [६]
पू७] त्रिषु लोकेषु विख्यातो धर्मात्मेति यशोधनः । [पू७]
N] नातिविक्रवयौ बुद्ध्या पृष्ठतः कर्तुमर्हसि ॥७॥ [N]
सृष्टा धर्मव्यवस्थाऽर्थं तस्यारक्षणाय च ।

१. रा—ज्ञातुमर्हसि । ब—हातुमर्हसि । भ—हंतुमर्हसि ।

२. ल—० नाममुक्तोयं ।

३. अ भ—रक्षसे ।

४. रा—सुबांधव ।

५. ज ल—सुराब्ध भयमाविशन् ।

६. कै—महानृषिः ।

७. भ—न तद्विक्रवया ।

८. ज—बन्तुमर्हसि ।

९. ज—धर्मावधव० । भ—धर्मव्यवस्थायां ।

१०. रा—तपसो रक्ष० । भ—तपसां रक्ष० ।

- N] क्षत्रियाः क्षत्रियश्रेष्ठ तथा भवितुमर्हसि ॥८॥ [N
 नान्यो धर्मः क्षत्रियाणां रक्षणात् तानं इष्यते ।
- N] स्वधर्मं प्रतिपद्यस्वै न धर्मं हातुमर्हसि ॥९॥ [७३
 पू८] करिष्यामीति संश्रुत्य तद्वै राजन्नकुर्वतः ।
- N] इष्टापूतं हरेद्धर्मं तस्माद्रामं विसर्जय ॥१०॥ [८
 कृतास्त्रमकृतास्त्रं वा नैनं ध्वंक्ष्यन्ति राक्षसाः ।
- १०] गुप्तं कुशिकपुत्रेण ज्वलनेनामृतं यथा ॥११॥ [९
 एष विग्रहवान् धर्म एष वीर्यवतां वरः ।
- ११] एष बुद्ध्याऽधिको लोके तपसश्च परायणम् ॥१२॥ [१०
 एषोऽस्त्रं विविधं वेत्ति त्रैलोक्ये सचराचरे ।
- १२] नैतदन्यः पुमान् वेत्ति न च वेत्स्यति कश्चन ॥१३॥ [११
 १२] न देवा नर्षयः केचिन नासुरा न च राक्षसाः ।
- N] गन्धर्वयक्षप्रवरा न किन्नरमहोरगाः ॥१४॥ [१२
 अस्त्रं ह्यस्मै कृशाश्वेन परैः परमदुर्जयम् ।
- १३] कौशिकाय पुरा दत्तं यदा राज्यं समन्वैशात् ॥१५॥ [१३

१. व—तत । कै—तप ।

२. भ—बध्यते ।

३. कै—प्रति पत्यस्व ।

४. ज—हातुमिच्छसि ।

५. भ—तप्ते ।

६. ल—कृतास्त्रमस्तास्त्रं ।

७. ब—व्रषयति । भ—शम्भ्वाति ।

८. ज—तपस्तप ।

९. ल—सचराचरेः ।

१०. ल भ—ह्यस्मिन् ।

११. रा—पर ।

१२. कै रा ज—समन्वयात् । ल—स सर्वशात् ।

- ने हि पुत्राः कृशाश्वस्य प्रजापतिमृतोपमाः ।
 १४] नैकरूपा महात्मानो दीप्तिमन्तो जयावहाः ॥१६॥ [१४
 जया च सुप्रभा चैव दाक्षायिन्यौ सुमध्यमे ।
 १५] तयोस्तु यान्यपत्यानि शतं परमदुर्जयम् ॥१७॥ [१५
 पञ्चाशतं मुतानं जज्ञे जयौ लब्धवरा पुरा ।
 १६] वधाय परमैन्यानामक्षयान् कामरूपिणः ॥१८॥ [१६
 सुप्रभा जनयामास पुत्रान् पञ्चाशतं वरार्त् ।
 पृ१८] सर्वास्तांल्लब्धवान् वीरं दुर्धर्षान् सुबलीयसः ॥१९॥ [१९
 N] एवंवीर्यो महातेजा विश्वामित्रो महातपाः ।
 पृ२०] न रामगमने वृद्धिं वैक्लव्याद्रोद्धुमर्हसि ॥२०॥ [२०

दृत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे वसिष्ठवाक्यं
 नाम एकोनविंशः सर्गः ॥ १९ ॥

१. ल—जितन्द्रियः ।
२. कै रा ज—दाक्षायिन्यौ । ब—दाक्षायिन्यौ ।
३. ज—जया
४. ज ल—सुतान् ।
५. कै रा ज ब—०न्यानामक्षयाः ।
६. ज ल—वरान् ।
७. ज—वरिः ।
८. ज—विक्रवाद्रोद्धु० । ल—विक्रवाद्रोद्धुमर्हसि ।
९. कै—रामायणे वाल्मीकीये ।

[वं=२५]

[विंशः सर्गः]

[दा=२२]

तथा वसिष्ठे ब्रुवति राजा दशरथः सुतम् ।

१] महृष्टवदनं राममाजहार सलक्ष्मणम् ॥१॥ [१]

कृतस्वस्त्ययनो मात्रा पित्रा दशरथेन च ।

२] पुरोधसा तथा वाग्भिर्मङ्गलैरभिवन्दितौ ॥२॥ [२]

ततो मूर्ध्नि समाघ्राय राजा दशरथः सुतौ ।

३] ददौ कुशिकपुत्राय विश्वामित्राय धीमते ॥३॥ [३]

N] तं दृष्ट्वा देवगन्धर्वाः पुष्पवृष्टिं सुरा ददुः ।

उ४] विश्वामित्रगतं दृष्ट्वा रामं राजीवलोचनम् ॥४॥ [N]

सपुष्पवृष्टिः पटहध्वनिरासीदिहान्तरे ।

५] शङ्खदुन्दुभिघोषश्च प्रयाते रघुनन्दने ॥५॥ [६]

विश्वामित्रो ययावग्रे तं रामः पृष्ठतोऽन्वयात् ।

६] काकपक्षधरो धन्वी तं च सौमित्रिरन्वयात् ॥६॥ [७]

विश्वामित्रगतं रामं दृष्ट्वा देवाः सवासवाः ।

७] प्रहर्षमतुलं प्रापुर्दशग्रीववधैषिणः ॥७॥ [N]

१. ल—महृष्टवदनो ।

२. ल भ—मंगलैरभिनन्दितौ ।

३. रा—ते ।

४. ल—पुरा ।

५. भ—विश्वामित्रगतं ।

६. ल—ध्वनिरासीदिहान्तरे । भ—ध्वनिरासीदिहान्तरे ।

७. ज—प्रबाम्यस महास्वनः । ल भ—प्रबाम्यस महास्वनः ।

८. ज ल भ—विश्वामित्रो प्रबाम्यग्रे ततो रामो महापथाः ।

९. ज ल भ—ततः ।

१०. ज ल भ—सौमित्रिरन्वयात् ।

११. ज ल भ—कक्षापिनौ बभूव्यासी शोभमानौ महापथे ।

- विश्वामित्रं महात्मानं तावुधौ रामलक्ष्मणौ ।
 ८] तदानुययतुर्वीरौ यथेन्द्रं देवमश्विनौ ॥८॥' [N
 बद्धगोधाङ्गुलित्राणौ स्वङ्गतूणधनुर्धरौ । [९उ
 ९] तदाऽनुजर्मेतुः स्थाणुं कुमाराविव पावकी ॥९॥ [१०उ
 अध्यक्षयोजनं गत्वा सरय्या दक्षिणे तटे ।
 १०] रामेति मधुरां बागीं विश्वामित्रोऽभ्यभाषता ॥१०॥ [११
 वत्स राम जलं तावद् विधिवत् स्पृष्टुमर्हसि । [१२पृ
 ११] उर्पदेश्यामि ते श्रेयो' मा भून् कालस्य पर्ययः ॥११॥ [N
 गृहाण द्वे इमे विद्ये बलामतिबलां तथा । [१२उ
 १२] न ते श्रमो जरा नाऽपि भविता नाङ्गैर्ह म् ॥१२॥' [१२
 न च मुमं प्रमत्तं वा धर्षयिष्यन्ति नैर्ऋताः । [१३
 १३] न च ते सदृशो राम वीर्येणान्यो भविष्यति ।
 सदेवनरनागेषु लोकेष्विह पुमांसिषु ॥' १३॥' [१४
 १४] न सौभाग्ये न दाक्षिण्ये न' बुद्धिर्भ्रुतपौरुषे ॥१४॥

१. ज ल भ—विश्वामित्रं समन्वेतां त्रिशोर्षादिव पन्नगौ ॥

२. रा—०धाङ्गुलित्राणौ । ल—बद्धगोपाङ्गुलि० ।

३. ज ल भ—अङ्गुवन्तौ महाधती ।

४. ज ल -- स्थाणुं देवमिवाश्विनौ । भ—स्थाणुं देवमिवाश्विनं ।

५. कौ रा—पावकम् । ब—पावकीं ।

६. ज ल भ—गृहाण वत्स सखिणं ।

७. ज ल भ—मंत्रमामं गृहाण्येनं बलामतिबलां तथा ।

न श्रमो न जरा तुभ्यं च रूपस्योपसंभवः ॥

८. ज ल भ—स्थां ।

९. कौ रा ब—भैरुताः । ल—तैरुताः । इत्यपपाठः ।

१०. ब—नास्ति ।

११. ज ल भ—न बाहोः सदृशो वीर्यं पृथिव्यां तव कञ्चन ।

भविष्यति महाबाहो त्रिषु लोकेषु कञ्चन ॥

१२. रा—न बुद्धिश्चि० । ज ल भ— न च बुद्धिधिमिजये ।

- नोत्तरे प्रतिकर्तव्ये त्वचुल्योऽन्यो भविष्यति ।^१ [१५]
- १५] एतद्विद्याद्वयं प्राप्यं यज्ञश्चाव्ययमाप्स्यसि ॥१५॥
बलामतिबलां चैव ज्ञानविज्ञानमातरौ । [१६]
- १६] क्षुत्पिपासे च ते राम नात्यर्थं पीडयिष्यतः ॥१६॥^२ [N]
तथैव दुर्गकान्तारप्रदेशेष्वट्ट्रीषु च ।
- १७] सारतां त्रिषु लोकेषु गमिष्यसि च राघव ॥१७॥^३ [N]
पितामहसुते चेमे विद्ये ह्यायुर्बलप्रदे ।^४
- १८] पात्रं त्वमसि काकुत्स्थ विद्ययोर्ग्रहणेऽनयोः ॥१८॥^५ [१९]
संभावात् त्वं गुणैर्युक्तो कामैरप्यतुलैर्मतः ।^६
- १९] भूयस्तव गुणोत्कर्षमेते विद्ये करिष्यतः ॥^७ १९॥^८ [२०]

१. ज ल भ—प्रतिपत्तव्ये ।

२. ज—समस्तेन वितानने । ल भ—समस्तैर्भविता न ते ।

३. ब—नास्ति ।

४. ज ल भ—राम गृहीत्वा नास्ति ते समः ।

५. ज ल भ—सर्वज्ञानस्य मातरौ ।

६. ज ल—क्षुत्पिपासे न ते राम मासावूर्ध्वं भविष्यतः ।

भ— „ „ „ „ मासावूर्ध्वं „

७. ज ल भ—बलामतिबलां चैव पठतो रघुनन्दन ।

गृहाण सर्वलोकस्य मातरौ बहुमानद ।

विद्याद्वयमधीयानः सर्वमेवातुलं भुवि ॥

८. रा—बायुर्बलप्रदे ।

९. ज ल भ—पितामहसुते ह्येते विद्धि तेजोमये क्षुमे ।

१०. ज ल—सहसो तव काकुत्स्थ प्रशान्तं त्वं हि धार्मिकः ।

भ— „ „ „ „ त्विह धार्मिकः ॥

११. ज ल—कामं त्वत्तु गुणाः सर्वे तथैवैते न संशयः ।

भ— „ „ „ „ तद्वैवैते न „

१२. ज ल—तपोभिः संसृते ह्येते बहुरोषे भविष्यतः ।

भ— „ „ „ बहुरोषे „

१३. ज—अतः इत्यधिकः पाठः—बहुसन्नसहायिभ्यो विद्या द्वे ते भविष्यतः ।

ततो रामो जलं स्पृष्ट्वा प्राञ्जलिः प्रणतः स्थितः ।^१

२०] प्रतिजग्राह ते विद्ये विश्वामित्रात् तपोधनात् ॥२०॥ [२१

शृहीतविद्योऽनुज्ञातस्ततो रामो महायशाः ।^२

२१] तत्रोवास निशामेकां सरय्वां सहलक्ष्मणाः ॥२१॥ [२३उ

इत्यार्षे रामायणे बाह्यकाण्डे^३ विद्याप्रदानं^४
नाम विंशः सर्गः ॥ २० ॥

१. ज ल भ—ततो रामोर्जलिं कृत्वा प्रहृष्टवदनः श्रुतिः ।

२. ज ल भ—महर्षेर्भावितात्मनः ।

३. ज—गुरुकार्याणि प्रयुज्य तत्तस्तु कुशिकात्मजे ।

ल—गुरुकार्याणि कार्याणि प्रयुज्य ,,

भ—गुरुकार्याणि सर्वाणि ,, ,,

४. ज—उजुस्तां रजनीं तत्र सरय्वां सुसुखं ततः ।

ल— ,, ,, ,, ,, सम्मुखास्ततः ।

भ— ,, ,, ,, ,, सुषतस्ततः ।

५. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

कथयंतः कथाभिन्नाः श्रीयमाणाः परस्परं ।

६. कै व—आदिकाण्डे ।

७. रा—विद्यादानं । ज—विद्याप्रदानिको । ल भ—विद्याप्रदानिको ।

[वं=२६] [एकविंशः सर्गः] [दा=२३]

- प्रभातायां तु शर्वर्या विश्वामित्रो महामुनिः ।
 १] प्रत्यभाषत काकुत्स्थं शयानं पर्णसंस्तरे ॥१॥ [१]
 कौसल्यामातरुत्तिष्ठ पूर्वा सन्ध्यामुपास्वै ह ।
 २] पौर्वाहिकं विधिं कर्तुं तात कालोऽयमागतः ॥२॥ [२]
 तस्यर्षेः परमोदारं वचः श्रुत्वा तुं राघवौ ।
 ३] स्नात्वा कृतोर्दकौ वीरौ जेपतुर्जप्यमौहिकम् ॥३॥ [३]
 कृताह्निकक्रियौ तत्र विश्वामित्रं तपोनिधिम् ।
 ४] अभिवादयितुं चापि सहितावुपतस्थतुः ॥४॥ [४]
 तंतः प्रययतुंश्चापि दिव्यां त्रिपथगां नदीम् ।
 ५] गङ्गां देवनदीं द्रष्टुं सरय्वीं अविदूरतः ॥५॥ [५]

१. ज ल भ—महानृषिः ।
 २. ज ल भ—अभ्यभाषत काकुत्स्थौ शयानौ ।
 ३. रा—सन्ध्यामुपास्महे ।
 ४. ज ल भ—कौसल्यासुप्रजा राम पूर्वसन्ध्या प्रवर्तते ।
 ५. ज ल भ—मनोनुगम् ।
 ६. व—कृतोर्दकौ । ज ल भ—कृताह्निकौ ।
 ७. ज ल—जपतुः परमं जपं । भ—जेपतुः परमं जपं ।
 ८. ज ल भ—कृताह्निकौ महावीरौ विश्वामित्रशुचिं ततः ।
 ९. ज ल—अभिवाच ततो वीरौ गमनाय प्रचक्रमे ।
 भ—अभिवाच ततो वीरौ सह तेनोपजग्मतुः ।
 १०. रा—तत्र प्र० । ज ल भ—तौ प्रयातौ महात्मानौ ।
 ११. व—सरय्वामविदूरतः ।
 १२. ज ल—दृष्ट्वाते सरय्वीं वै संगमे पुण्यसंमिते ।
 भ—दृष्ट्वा परमसरय्वीं वै संगमे पुण्यसंमिते ।

- तस्यारादाश्रमपदमृषीणां पुण्यकर्मणाम् ।
 ६] रम्यं ददृशतुः पुण्यं तप्यतामुत्तमं तपः ॥६॥ [६
 दृष्ट्वा तदाश्रमपदं जातकौतूहलं मुनिम् ।
 ७] पप्रच्छतुस्तदा तत्र तावुभौ रामलक्ष्मणौ ॥७॥ [७
 कस्यायमाश्रमो ब्रह्मणं कश्चापि कुशलो मुनिः ।
 ८] भगवन् श्रोतुमिच्छामि परं कौतूहलं हि नौ ॥८॥ [८
 तयोस्तद्वचनं श्रुत्वा प्रहसन् मुनिरब्रवीत् ।
 ९] उभाभ्यां श्रूयतां रामं यस्यायं पुण्यं आश्रमः ॥९॥ [९
 कन्दर्पो मूर्तिमानासीत् काम इत्यभिविश्रुतः । [१०
 १०] स्थाणुं स इह तप्यन्तं पुरा किल महत्तपः ॥१०॥

१. ज—तमाश्रममिदं पुण्यं मुनीनां भावितात्मनाम् ।
 ल भ— तमाश्रमपदं " " "
 २. ज—बहुवर्षसहस्राणि तत्र तत्रेपिरे तपः ।
 ल— " यत्र ते तेषिरे "
 भ— " तत्र " " "
 ३. र।—जातकौतूहलौ ।
 ४—ज ल भ—तं दृष्ट्वा परमप्रीती राघवौ पुण्यमाश्रमं ।
 ऊचतुर्मेधुरं वाक्यं विश्वामित्रं महामुनिम् ॥
 ५. ज ल भ—पुण्यः कोण्वस्ति कुलपः पुमाम् ।
 ६. ज ल भ—विश्वामित्रो महामुनिः ।
 ७. ज ल भ—भगवन् । भ—उवाच ।
 ८. ज ल भ—वत्सौ ।
 ९. ज—पूर्वमाश्रमः । ल—पूर्वमाश्रमः । भ—पूर्वमाश्रमः ।
 १०. ज ल भ—मूर्तिमाश्रम कन्दर्पः काम इत्युच्यते दुषैः ।
 ११. ज—स चकार तपोविद्वं स्थाणुं वेदुमभिविदितम् ।
 ल— " " " योदुमभिविदितम् ।
 भ— " " " " वेदुमभिविदितम् ।

- प्रवेष्टुमभ्ययात् तूर्णं कृतोद्वाहमुमापतिम् ।
 ११] स बुध्वा तत्र रुद्रेण शप्तः किल महात्मना ॥ ११ ॥ [११
 अथ शप्तस्य रुद्रेण तस्य वै रघुनन्दन ।
 १२] रुद्रशापाग्निनिर्दग्धं तच्छरीरं व्यशीर्यत ॥ १२ ॥ [१२
 तस्याङ्गान्यपर्तन् राम सद्यः सर्वाण्यशेषतः ।
 १३] अशरीरः कृतः काम एव कोर्षान् महात्मना ॥ १३ ॥ [१३
 अनङ्ग इति विख्यातस्तदाप्रभृति राघव ।
 १४] अनङ्ग इति देशोऽयं ख्यातः कामाङ्गनाशनात् ॥ १४ ॥ [१४
 तस्यायमाश्रमः पुण्यः कामस्यै रघुनन्दने ।
 १५] तस्यायतनमत्रेदं तस्येमे परमैर्षयः ॥ १५ ॥ [१५
 तपोदमरताः सर्वे पुराणा ब्रह्मवादिनः ।

१. कै - कृतोत्साहमु० ।

२. ज ल—कृतोद्वाहं तु देवेशं गच्छन्तं समरुद्रप्रणाम् ।

भ— ,, ,, देवेशमतिष्ठत् ,,

३. ज—वेदुकामश्च दुर्मेधाः सोपाख्यातो महात्मना ।

ल— ,, ,, सोपाध्यातो ,,

भ—वेदुकामश्च ,, ,, ,,

४. ज ल—अपण्यातस्य रुद्रेण चक्षुषो रघुनन्दन ।

भ— ,, स्यारुद्रेण चक्षुषो ,,

५. ज ल—व्यशीर्यतास्य सहसा ततो गात्राणि भीमतः ।

भ— ,, ,, ,, मात्राणि ,,

६. रा भ—० न्यपतद् ।

७. ज ल ल भ—हिमशैलसमीपतः ।

८. ज ल भ—क्रोधातेन ।

९. कै रा—महात्मनः ।

१०. ज ल—स सांगविषयः श्रीमान् यत्रांगानि मुमोच ह ।

भ—सांगविषयं ,, यत्रांगं प्रमुमोच ह ।

११. ज ल भ—तस्येमे मुनयः पुरा ।

- १६] निवसन्त्यत्र नियतास्तपोनिर्धूतकल्मषाः ॥१६॥ [N
इहाद्य रजनीमेकां वसामः शुभदर्शन ।
- १७] पुण्ययोः सरितोर्मध्ये भविष्यामः परेद्यवि ॥१७॥ [१६
अभिगच्छाम च स्नात्वा शुचयः पुण्यमाश्रमम् ।
- १८] इह कामाश्रमे राम सुखं वत्स्यामहे निशि ॥१८॥ [१७
तेषां संबदतामेवं तपोदीर्घेण चक्षुषा ।
- १९] विज्ञाय परमप्रीता मुनयो हर्षमागमन् ॥१९॥ [१८
तेऽर्घ्यपात्रं च विधिवत् प्रयुज्यं कुशिकात्मजे ।
- २०] रामलक्ष्मणयोरेवमकुर्वन्नतिथिक्रियाम् ॥२०॥ [१९
सत्कारं परमं प्राप्य कथञ्चिन्नभिरर्घ्यं च । [२०पू
- २१] अवसंस्ते महात्मानः कामाश्रमपदे सुखम् ॥ २१ ॥ [२१उ

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे कामाश्रमनिवासो
नाम एकविंशः सर्गः ॥ २१ ॥

१. रा--०स्तपोनिव्रतक० ।
२. ज ल—क्षिष्टा धर्मपराधीना नैषां पापं हि विद्यते ।
भ— ,, कर्मपराधीना नैषा ,, ,, ,,
३. ज—रजनीं नाम । ल भ—रजनीं राम ।
४. ज ल भ—तरिष्यामः । ५. ज ल—प्रपद्य वै । भ—परेऽह्नि ।
६. ज ल भ—नास्ति । ७. रा व—कामाश्रमो ।
८. ज ल भ—वत्स्यामः सुसुखं निशाम् ।
९. ज ल भ—वृष्टुमागताः ।
१०. ज—अर्घ्यं पाद्यं तथातिथ्यं निवेद्य । ल भ—पाद्यमद्यतिथ्यं निवेद्य-
११. ज—कुशिकात्मजे ।
१२. ज ल भ—०णयोः पश्चादकु० । १३. व—०भिरभिगम्य ।
१४. ज ल भ—न्यवसंस्ते सुखं तत्र कामाश्रमपदे तदा ।
१५. कै—आदिकाण्डे । व—नास्ति ।
भ—महर्षिवाल्मीकिविरचिते बालकाण्डे ।
१६. रा—०श्रमनिवासं । १७. रा—वर्षिणः ।

[वं=२७] [द्वाविंशः सर्गः] [दा=२४]

ततः प्रभाते विमले कृत्वाऽऽह्निकमरिन्दमौ ।

१] विश्वामित्रं पुरस्कृत्य नद्यास्तीरं^२ प्रजग्मतुः ॥१॥ [१]

ते^३ च सर्वे^४ महात्मानो मुनयः सूर्यवर्चसः ।

२] उपस्थाप्यै शुभां नावं विश्वामित्रमथाब्रुवन् ॥२॥ [२]

आरोहतु भवान् नावं राजपुत्रपुरस्कृतः ।

३] अरिष्टं गच्छ पन्थानं मां ते कालात्ययो ह्यभूर्त्तं ॥३॥ [३]

विश्वामित्रस्तथेत्युक्त्वा तानृषीन् प्रतिपूज्य च ।

४] ततार सरितं पुण्यं सरयूं विमलोदकाम् ॥४॥ [४]

ततो^५ रामैः सरिन्मध्ये पप्रच्छ मुनिपुङ्गवम् ।

५] वारिणो भिद्यत इव किमयं बलवान् स्वनः ॥^६॥ [६]

'इति रामवचैः श्रुत्वा कौतूहलसमन्वितैः ।

१. ज भ—कृताह्निक ० ।

२. ज ल भ—०स्तीरमुपागतौ ।

३. ज ल भ—सर्वे एव ।

४. ज ल—ऋषयः । भ—ज्ञेयः ।

५. ज ल भ—उपतस्थुः ।

६. ज ल भ—०त्रपुरःसरः ।

७. ज ल भ—माभूत् काकस्य पथयः ।

८. कै—प्रतिपूजयत् । ज ल भ—प्रत्यपूजयत् ।

९. रा—पुष्यं ।

१०. ज ल भ—सागरंगमाम् ।

११. ज ल भ—राघवस्तु ।

१२. ज ल भ—वारीणां भिद्यमानानां किमेव विमलो ध्वनिः ।

१३. ज ल भ—राघवस्य तु तच्छ्रुत्वा ।

१४. ज ल—जातकौतूहलं वचः ।

- ६] कथयाम्नास भगवांस्तस्यै शब्दस्य विस्तरम् ॥६॥ [७
 कैलासशिखरे राम मनसा निर्मितं सरः ।
 ७] ब्रह्मणा प्रागिदं तस्मात् तदभून्मानसं सरः ॥७॥ [८
 सरसो मानसात् तस्मादयोध्यामनु शोभना ।
 ८] नदी प्रसृता सरयूः पुण्या ब्रह्मसरश्च्युता ॥८॥ [९
 जाह्नवीमतिवर्तिन्यस्तस्याः शब्दोऽयमीदृशः ।
 ९] वारिसंघर्षजो राम प्रणामं प्रयतेः कुरु ॥९॥ [१०
 चक्रतुस्तौ नमस्ताभ्यां नदीभ्यामथ राघवौ ।
 १०] तीरं परं समासाद्यं जगमर्तुर्लघुविक्रमौ ॥१०॥ [११

१. ज ल भ—धर्मात्मा तस्य ।

२. ज ल भ—निश्चयं ।

३. ज ल भ—कैलासपर्वते ।

४. रा—यस्मात् ।

५. ज ल भ—ब्रह्मणा रघुशार्दूल मानसं नाम तेन तत् ।

६. ज ल भ—नास्ति ।

७. ज ल भ—तस्मात् ।

८. भ—साबोध्यामभ्यभाषयत् । ज-० सरश्च्युता ।

९. भ—घतः परमधिकः पाठः—

सरःप्रसृता सरयूः पुण्या ब्रह्मसरःसुता ।

१०. ज—शब्दोऽयं विमलस्तस्या जाह्नव्यामधिबर्तते ।

ल— ,, बिपुलस्तस्यां जाह्नव्यामधिबर्तते ।

भ— ,, विमलस्तस्या

११. रा—वारिसंघर्षजो ।

१२. ल—प्रयुतः ।

१३. व—ततस्ताभ्यां ।

१४. ज ल भ—उभ्याम् तादुभौ कृषः प्रथाममतिधार्मिकौ ।

१५. ज ल भ—दक्षिणमासाद्य ।

अथानुपदमेवान्यद्वनं घोरमरिन्दमौ ।^२

- ११] दृष्ट्वा पप्रच्छतुर्भूयो मुनिं तं^३ नृवरात्मजौ ॥११॥ [१२
 कस्येदं मेघसङ्क्राशं वनं घोरं प्रचक्षते । [N
 १२] दुर्गं पक्षिगणाकीर्णं क्षिल्लिकागणनादितम् ॥^४१२॥ [१३पृ
 नानामृगगणैर्जुष्टं शकुनैश्च निनादितम् ।^५
 १३] सिंहव्याघ्रवराहर्क्षबर्हिकुञ्जरसेवितम् ॥^६१३॥ [१४
 धवाश्वकर्णकुटजपाटलातिन्दुतिन्दुकैः ।
 १४] द्रुमैः कण्टकिभिश्चैव कीर्णं किमिदमुच्यताम् ॥१४॥^७ [१५
 तावुवाच तयोर्वाक्यं श्रुत्वेदं भगवान् मुनिः ।^८
 १५] श्रूयतामित्युपामन्य भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥^९१५॥ [१६
 अयं जनपदः श्रीमान् पूर्वमासीन्महर्द्धिमान् ।^{१०}
 १६] मालवाश्च करुषाश्च देवनिर्माणनिर्मिताः ॥^{११}१६॥ [१७

१. कै—० मरिदमौ ।

२. ज ल भ—तद्वनं घोरसंन्यादं दृष्ट्वा नृवरात्मजौ ।

३. कै—नृवरात्मजौ ।

४. ज ल—अहो वनमिदं घोरं क्षिल्लिकागण नादितम् ।

भ—, , , क्षिल्लिकागणनादितं ।

५. ब—नास्ति ।

ज ल भ—भैरवैश्च समाकीर्णं शकुनैर्दारुणस्वनैः ।

६. ज ल भ—नास्ति ।

७. ज ल—तयोस्ताद्वचनं श्रुत्वा विश्वामित्रो महानृषिः ।

भ—, , , विश्वामित्रोभ्यभाषत ।

८. ज ल भ—अयतां वत्स काकुत्स्थ यस्येदं भैरवं वनम् ।

९. ज भ—शिवो जनपदो श्रीमान् पूर्वमास्तां नरोत्तम ।

ल—, , , , नरोत्तमौ ।

१०. ज ल भ—मालवाश्च करुषाश्च देवनिर्माणनिर्मिताः ।

सखायं नमुचिं हत्वा मलेन समभिष्टुतः ।

१७] क्रोधाच्चैव सहस्राक्षो मित्रद्रुग् भगवान् किल ॥^{१७} ॥ [१८

तमिह स्थापयामासुर्देवाः सर्षिगणाः पुरा ।^१

१८] कलशैः पूर्णसलिलैः पुण्यैर्मलविशोधनैः ॥^{१८} ॥ [१९

सोऽस्मिन् देशे मलं त्यक्त्वा देवैः कालुष्यमेव च ।^१

१९] मित्राभिद्रोहसंयुक्तं परं हर्षमवाप्तवान् ॥^{१९} ॥ [२०

निर्मलो निष्करूपश्च शुचिरिन्द्रो यदा हर्भृत् ।

२०] ततो देवस्य सुमीतो^१ देवौ वरमरिन्दर्भैः ॥२०॥ [२१

इमौ जानपदौ स्फीतौ^१ ख्यातिं लोके गमिष्यतः ।

१. ज ल भ—पुरा वृत्रवधे राम ।

२. ज ल भ—बुधया च सहस्राक्षो-ब्रह्महत्यां वदाविशत्

३. ज—तमिन्द्रस्य वयः सर्वे सर्वदेवगणैः सह ।

ल भ--तमिन्द्रसृष्टवः ,, ,, ,, ।

४. ज ल भ—स्नपयान्चक्रुर्मलैः सलिलैर्मलशुद्धये ।

५. रा—देवाः ।

६. ज—तस्यां भूमौ मलं देवाः हत्वा करूपमेव च ।

ल— ,, भूम्यां ,, ,, ,, ,,

भ— ,, ,, ,, ,, ,, कालुष्यमेव च

७. ज ल भ—शरीरजं महेंद्रस्य ततो हर्षं प्रपेदिरे ।

८. ज ल--निष्करूपश्च ।

९. ज ल भ—वदाभवत् ।

१०. ज ल भ--वदौ ।

११. ज ल भ—सुमीतस्ततो ।

१२. व--वरमरिन्दर्भौ ।

१३. ज ल भ--जानपदौ ।

१४. ज ल भ--ख्यातिं कृत्ये ।

- २१] मालवश्च करुषश्च अङ्गजेने ममाङ्गितौ ॥२१॥ [२२
 एवमस्त्विति तं देवाः पाकशासनमब्रुवन् ।
 २२] देशस्य नामनिर्वृत्तिः श्रूयतां वासवेरिता ॥२२॥ [२३
 एवमेतौ जनपदौ पूर्वमेव च शब्दितौ ।
 २३] मालवश्च करुषश्च मुदितौ वृद्धिसंयुतौ ॥२३॥ [२४
 अथ कालस्य महतो यक्षिणी कामरूपिणी ।
 २४] बलं नागसहस्रस्य धारयन्ती महाबला ॥२४॥
 ताटका नाम सुन्दस्य भार्या दैत्यपतेरभूत् । [२५
 २५] मारीचो राक्षसः पुत्रो यस्याः शक्रपराक्रमः ॥२५॥ [२६
 सेमं जनपदं राम समुच्छाद्य सुदारुणा ।

१. ज ल भ—ममाङ्गसहचारिणौ ।

२. ज ल भ—साधु साध्विति तं देवाः शाशंसुः पाकशासनम् ।

३. ज ल—देशपूजां तु तां कृत्वा कृतां चक्रेण धीमता ।

भ— ,, च ,, इन्द्रा ,, शक्रेण ,, ।

४. ज—एवं जनपदो श्रीमंस्तुल्यकाल्यमरिन्दम ।

ल— ,, जनपदौ श्रीमंस्तुल्यकाल्य ,, ।

भ— ,, ,, श्रीमन्तुल्यकाल्य ,, ।

५. रा—मुदितौ वृद्धिसंयुतौ ।

६. ज—मालवश्च करुषश्च समुदौ धनधाम्बतः ।

ल— ,, करुषश्च समुदौ ,, ।

भ ,, ,, संपदौ ,, ।

७. ज ल भ—कस्य चित्रस्य कालस्य यष्टी दुष्टप्रचारिणी ।

८. ज ल भ—धारयन्तीनिष्ठं युधि ।

९. ज ल—ताटका नाम भद्रं ते भार्या सुन्दस्य धीमताः ।

भ—ताटका ,, ,, ,, ,, ।

१०. ज ल भ—उत्सादयति सा नित्यमेतौ जनपदौ विभो ।

- २६] अद्यापि साऽधिवसति ताटका नाम यक्षिणी ' ॥२६॥ [N
 एषा पन्थानमावृत्यं निवसत्यर्धयोजने ।
 २७] अत एव चं गन्तव्यं ताटकाभर्वनं प्रति' ॥२७॥ [२९
 स्वबाहुबलमाश्रित्यं जहि तां दुष्टयक्षिणीम् ।
 २८] मन्त्रियोगादिमं देशं कुरु निष्कण्टकं पुनः ॥२८॥^F [३०
 न हि कश्चिदिभं देशं शक्नोत्यागन्तुमीदृशम् ।
 २९] यक्षिण्या घोररूपिण्या तत्सादितमनार्ययो ॥२९॥ [३१
 इति' ते सत्यमाख्यातं यथेदं' दारुणं वनम् ।
 ३०] यक्षिण्योत्सोदितं पूर्वमद्याप्युत्साधयते सदा ॥३०॥ [३२

इत्यार्षे रामायणे' १ द्वाप्युत्साधे' १

ताटकावनप्रवेशो नाम द्वाविंशः' १६ सर्गः ॥२२॥

१. ज भ—मखवांश्च करूपांश्च यक्षी पिशितभक्षिणी ।
 ल— ,, ,, ,, वै पिशिनाशिनी ।
 २. ज ल भ—पन्थानमावार्यं ।
 ३. ज ल भ—न ।
 ४. ज—ताडकायोजनं । ल—ताडकायोजनं । भ—ताडकाभवनं ।
 ५. ज ल भ—यतः ।
 ६. रा ल—सुबाहुबलमा० ।
 ७. ब—मन्त्रियोगाक्षिप्तं ।
 ८. ज ल भ—नास्ति । ल—अपरहस्तेन पुनर्विन्यासः ।
 ९. रा ल—उत्सादितमनार्यया ।
 १०. ज ल भ—एतते सर्वमाख्यातं ।
 ११. ल—यथेदं ।
 १२. ज—यद्यप्युत्सादितं । ल—यक्षिण्युत्सा० । भ—यक्ष्याद्युत्सादितं ।
 १३. ज—सर्वमद्याप्यु० । ब—० मद्याप्युत्सादिते ।
 ल—सर्वमद्याप्युत्साधयते ।
 १४. ज ल भ—तया ।
 १५. भ—महर्षिवाल्मीकिविरचिते ।
 १६. रा—सप्तविंशः ।

[वं=२८] [त्रयोविंशः सर्गः] [दा=२५]

इति तस्याप्रमेयस्य मुनेर्बचनमद्भुतम् ।

१] श्रुत्वा रामस्तौ भूयः परिपप्रच्छ संशयम् ॥१॥ [१]

अल्पवीर्या यदा यक्षाः श्रूयन्ते मुनिपुङ्गव ।

२] कथं नागसहस्रस्य धारयन्त्यबला बलम् ॥२॥ [२]

विश्वामित्रस्ततो रामं श्रुत्वेति पुनरब्रवीत् ।°

३] शृणु राम यथा चैषां धारयन्त्यबला बलम् ॥३॥ [४]

पूर्वमासीन्महायक्षः मुकेतुरिति विश्रुतः ।

४] अनपत्यः प्रजाकामैः स तेपे^३ सुमश्चैपः ॥४॥ [५]

तस्मै साक्षात् स्वयं ब्रह्मा तपसा परितोषितः ।^१

१. ज व ल भ—अथ ।

२. ल—मुनेर्बचनमब्रवीत् । भ— ०चनमुत्तमं ।

३. ज ल भ—पुरुषशार्दूलः ।

४. ज व ल भ—प्रत्युवाच शुभां गिरम् ।

५. भ—सदा ।

६. रा ज ल भ—धारयत्यबला ।

७. ज ल भ—एतच्छ्रुत्वा बचस्तस्य विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ।

८. व—क्षेत्रे ।

९. रा—धारयत्यबला ।

१०. ज ल भ—वरदानान्महाबाहो यथेषा कामरूपिणी ।

११. ज ल भ—मुकेतुर्नाम धार्मिकः ।

१२. ज ल भ—शुभाचारः ।

१३. कै—तत्तेपे । रा—तेत्तेपे । ज ल भ— स च तेपे ।

१४. रा—समहत्तपः । ज ल भ—महत्तपः ।

१५. ज ल भ—पितामहस्तु सुप्रीतस्वस्य बचपतेस्तदा ।

- ५] कन्यारत्नं ददौ राम ताटकां नाम नामतः ॥५॥ [६
 बलं नागसहस्रस्य ददौ चास्याः पितामहः ।^२
 ६] कांक्षतोऽप्यस्य पुत्रं हि यज्ञाय न ददौ प्रभुः ॥^५६॥ [७
 वर्धमानां तु तां दृष्ट्वा रूपयौवनशालिनीम् ।
 ७] कुम्भपुत्राय मुन्दाय ददौ भार्याभिनिन्दिताम् ॥७॥ [८
 कस्यचिन्वथ कालस्य यक्षीपुत्रो व्यजायत ।
 ८] मारीचं नाम विख्यातं शापाद्राक्षसतां गतम् ॥८॥^{१०} [९
 मुन्दे तु निहते तस्मिन्नगस्त्यं मुनिसत्तमम् ।^{११}
 ९] ताटकां पुत्रसहितौ प्रधर्षयितुमुद्यतौ ॥९॥ [१०

१. ज—ताडका । य—त टकां । शृ—ताडकां ।
 २. ज ल भ—ददौ नागसहस्रस्य बलं तस्याः पितामहः ।
 ३. कांक्षतोऽप्यस्मै ।
 ४. ज ल—नम्येव पुत्रं यज्ञाय ददौ पुत्रं महाबलाः ॥
 भ— ” ” ” ” प्रभुः ” ”
 ५. ज ल भ— हि तां राम ।
 ६. ज ल भ—भार्या यशस्विनीं
 ७. रा ज ब ल भ— यक्षी पुत्रं ।
 ८. ज ल भ—दुर्दपं ।
 ९. ज भ—साक्षाद्राक्षसतां ।
 १०. कै—अतः परमाधिकोऽपरहस्तविन्वस्तः पाठः—
 सोपेत्य निवतं मोहादगस्त्यस्यसृष्टिसत्तमं ।
 ताडका सह पुत्रेण प्रधर्षयितुमिच्छति ॥
 राक्षससत्तमं भवत्येवं मारीचं व्याजहार सः ।
 अगस्त्यः परमक्रुद्धस्ताडकां चापि शप्तवान् ॥
 ११. ज—सोऽभ्येत्य निवतं मोहादगस्त्यस्यसृष्टिसत्तमं ।
 ल—सोपेति ” मोहादगस्त्यं सृष्टिसत्तमम् ।
 भ—साम्येत्य ” मोहादगस्त्यस्यसृष्टिसत्तमं ।
 १२. ज भ—साडका ।
 १३. ज ल भ—सह पुत्रेण ।
 १४. कै—प्रधर्षयितुः । रा—प्रदयं । ज ल भ— विदुमिच्छति ।

- राक्षसस्त्वं भवेत्येवं^१ मारीचं व्याजहार सः । [१२३]
 १०] अगस्त्यः परमक्रुद्धस्ताडकां चेदमर्षवीत् ॥१०॥ [१३]
 पुरुषादा घोररूपा यक्षी त्वं विकृतानना ।^१
 ११] इदं रूपं परित्यज्य विकृता त्वं भविष्यसि ॥^१ ११॥ [१४]
 सैषा शापसमाविष्टा ताटका दुष्टयक्षिणी ।^१
 १२] देशमुत्सादयत्येनमगस्त्याध्युषितं पुरा ॥^१ १२॥ [१५]
 एवं तां रामं दुर्वृत्तां यक्षीं परमदारुणाम् ।
 १३] गोब्राह्मणहितार्थाय जहि घोरपराक्रमांम् ॥^१ १३॥ [१६]
 न हि वीर्यमदोन्मत्तामेतां परमदारुणाम् ।^१
 १४] निहन्ति^३ त्रिषु लोकेषु त्वामृते रघुनन्दन ॥१४॥ [१७]

१. कै—राक्षसस्त्वेव मुक्तात् ।

२. रा—भवत्वेवं । भ--भवेत्युच्चं ।

३. ज भ—०स्ताडकां ।

४. ज ब ल भ--चापि शसवान् ।

५. ज ल--पुरुषादां महायक्षीं विकृतां विकृताननाम् ।

भ--पुरुषादा महायक्षीं विकृता विकृतानना ।

६. ज ल--शुभं रूपं परित्यज्य दारुणं रूपमाश्रिता ।

भ--शुभरूपं ,, ,, ,, ।

७. ज भ--सा वै पापकृतामर्षात्ताडका नाम राक्षसी ।

ल-- ,, ,, ,, ताटका ,, ,, ।

८. ज ल--देशमुत्सादयत्येतद्गस्त्याचरितं तदा ।

भ-- ,, ,, त्येतमगस्त्या ,, ,, ।

९. ज ल भ--राषव ।

१०. ज ल भ--दुष्टप० ।

११. रा--नास्ति ।

१२. ज ब ल भ--न हेनां शापसंदुष्टां कश्चिदुत्सहते पुमान् ।

रा--नास्ति ।

१३. ज ब ल भ--निहंतुं ।

न च ते स्त्रीवधकृतां घृणा कार्या कथञ्चनं ।

१५] प्रजानां च हितं नित्यं कर्तव्यं राजसूनुभिः ॥१५॥ [१८

राजवंशाभिजातानामेषं धर्मः सनातनः ।

१७] अधर्मं जहि काकुत्स्थ कुरु धर्मं प्रजाहितम् ॥ १६॥ [२०

नृशंसमनृशंसं वा प्रजारक्षणकारणात् ।

१६] पावनं वा सदोषं वा कर्तव्यं नात्र संशयः ॥१७॥ [१९

श्रूयते हि पुरा राम विरोचनसुता किंल । [२१३

१८] राक्षसी दीर्घजिह्वेति विख्याता कामरूपिणी ॥१८॥ [N

विकृतं सुमहद्वक्त्रं कृत्वा कालानलोपमम् ।

१९] ग्रसन्ती पृथिवीं कृत्स्नां शक्रेण विनिपातिता ॥१९॥ [N

विष्णुना च पुरा राम शक्रतुल्यपराक्रमा ।

२०] अपीन्द्रलोकमिच्छन्ती काव्यमार्ता निपातिता ॥२०॥ [२२

एवमन्यैरपि पुरा राजधर्मविचोरिभिः ।

२१] अधर्मनिरता नार्यो हताः पुरुषसत्तम ।

N] तस्मादस्या वधाद्राम प्राणिनः सन्तु निर्भयाः ॥२१॥ [२३

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे ताटकोत्पत्तिर्नामत्रयोविंशः सर्गः ॥ २३ ॥

१. रा—स्त्रीवधं कृत्वा । ज--स्त्रीवधत्वे वै । ल भ—स्त्रीवधेत्येवं ।

२. ज ल भ--नरोत्तम ।

३. ज ल भ--चानुर्वर्ण्यहितं तासु कर्तव्यं राजसूनुना ।

४. ज ल भ--राज्यभारनियुक्तानामेषः ।

५. ज ब ल भ--तस्मात्वं जहि काकुत्स्थ धर्मो ह्यस्या न विद्यते ।

६. ज ल--प्रजाकारणकारणात् ।

७. ज भ--नास्ति । ल--उत्तरपार्श्वेऽपरहस्तेन पुनर्विन्ध्यासः ।

८. ज--भवेत् । ब ल भ--सुताभवत् ।

९. ज ल भ--सुमहत्कृत्वा वक्त्रं ।

१०. ज ल भ--जिघासुः पृथिवीं सर्वा ।

११. रा--अप्येन्द्रलो० । ज--अपीन्द्रं लो० ।

ब--अनिन्द्रमिन्द्ररहितं । ल भ--अनिन्द्रं लोकमि० ।

१२. ज ब ल भ--निपूदिता । १३. ज ब भ--राजभिर्द्धर्मचारिभिः ।

१४. रा--नास्ति । १५. कै--आदिकाण्डे ।

१६. ब--तारकोत्प० । १७. रा--०नामाष्टाविंशः ।

१८. ज ल भ--पुस्तकेषु सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

[वं= २९] [चतुर्विंशः सर्गः] [दा=२६]

मुनेर्वचनमक्लीबं श्रुत्वा नृपवरात्मजः ।

- १] राघवः प्राञ्जलिर्भूत्वा प्रत्युवाच धृतव्रतम् ॥१॥ [१]
 अहं पित्रा समादिष्टो मात्रा चैव महामुने ।
- २] विश्वामित्रस्य वचनं त्वया कार्यमिति प्रभो ॥२॥ [३]
 सोऽहं पितृनियोगेन तव चैव महामुने ।
- ३] करिष्ये दुष्टयक्षिण्यास्ताटकाया वधं प्रभो ॥३॥ [४]
 गोब्राह्मणहितार्थाय देशस्य च सुखावहम् ।
- ४] तदेतच्चैव प्रीतेन कर्तव्यं वचनं मुने ॥४॥ [५]

१. ज भ—वरनृपात्मजः

२. ज ल भ—०जिर्वाक्यं ।

३. ज ल भ—दृढव्रतं । ब—महामुने ।

४. ज ल भ—पुस्तकेषु सर्गसमाप्त्यभावाद् द्वाविंशः श्लोको ज्ञातव्यः
 द्वात्रिंशत्सर्गस्यैव ।

५. ज ल भ—पितुर्वचननिर्देशो ममायमृषिसत्तम ।

वचनं कौशिकस्येति कर्तव्यमविशंकया ॥

अनुशिष्टोऽस्म्ययोध्यायां गुरुमध्ये महात्मना ।

पित्रा दशरथेनैवमनुदध्ये च तद्वचः ॥

ल—,, ,, वमनुष्यो ,, ,

ब—भतः परमधिकः पाठः—

अनुशिष्टोऽस्म्ययोध्यायां गुरुमध्ये महात्मना ।

पित्रा दशरथेनैवमनुदध्ये च तद्वचः ॥

६. ज भ— सोहं पितुर्वचः कुर्वन् शासनं ते महामुने ।

ल— ,, ,, कुर्याम् ,, ,, ,,

७. ज भ—निस्सदेहं करिष्यामि ताडकावधमुत्तमम् ।

ल— ,, ,, ताडकावध ,,

८. ब—नास्ति ।

९. ज ल भ—गोब्राह्मणहितं चैव यशस्यं च सुखावहं ।

१०. ज—उवाचैवाप्रमेयस्य वचनं कृतमस्तु मे ॥

ल भ—तव चैवा ,, ,, ,, ,,

- एवमुक्त्वा धनुः सज्यं कृत्वोद्यम्य च राघवः ।^२
 ५] ज्याशब्दमकरोत् तीव्रं दिशः शब्देन पूरयन् ॥५॥ [६
 तेन शब्देन विप्रस्ता मृगा वननिवासिनः ।
 ६] ताटका चापि संभ्रान्ता ज्यास्वनप्रतिबोधिता ॥६॥ [७
 नन्दमाना भृशं क्रुद्धा विकृता विकृतानना ।^५
 ७] श्रुत्वैवाभ्याद्रवत् तीव्रं^० यतः शब्दोऽभिनिःसृतः ॥७॥ [९
 तां दृष्ट्वा राघवः क्रुद्धां विकृतां विकृताननाम् ।
 ८] अतिप्रमाणामायान्तीं रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ॥^७८॥ [१०
 पश्य लक्ष्मण राक्षस्या दारुणं विकृतं मुखम् ।^३ [११ पृ
 ९] अतिप्रमाणं क्रुद्धाया रूपं चातिभयावहम् ॥^४९॥ [N

१. रा--राघवाः ।

२. ज ल भ—एवमुक्त्वा धनुर्मध्ये कृत्वा मुष्टिर्मरिदमः ।

३. ज ब ल भ—ज्याघोषम० ।

४. ज ल भ—देशं ।

५. ज भ—ताटकावनवा० । ल—ताटकावनवा० ।

६. ज भ—ताटका च सुसंरब्धा तेन शब्देन कोपिता ।

ल—ताटका ,, ,, ,, ,, ।

७. कै रा—विकृताधिकृता० ।

८. ज ल भ—तं शब्दं भीमनिहादं यक्षी कोपाभिसूक्षिता ।

९. ब—श्रुत्वैवाभ्यागमत् । ल—श्रुत्वैवाद्यभवत् ।

१०. ज ल भ—वेगाद् ।

११. रा--शब्दो विनिःसृतः । ज ल भ--शब्दो हि निःसृतः ।

१२. ज ल भ—प्रमाणेनातिवृद्धां च लक्ष्मणं वाक्यमब्रवीत् ।

१३. ज ल भ—यक्ष्या लक्ष्मणं परयैतद्रूपं परमदारुणम् ।

१४. ज ल भ—भिद्यते दर्शनेनस्या हृदयं कातरस्य च ।

ल-- ,, ,, ,, ,, हि ।

- एतां पश्य महाबाहो मद्बाणेन हृदि क्षताम् ।
 १०] निहतां पतितां भूमौ रुधिरेण परिप्लुताम् ॥१०॥ [N
 इयं हि राक्षसी घोरा महादुष्कृतकारिणी ।
 ११] मच्छरेण विनिर्दग्धा धृतपापा भविष्यति ॥११॥^३ [N
 एवं तस्य ब्रुवाणस्य ताटकां क्रोधमूर्च्छिता ।
 १२] उद्यम्य बाहू गर्जन्ती वेगेनाभ्याश्रमाययौ ॥१२॥ [१५
 तामापर्तन्तीं वेगेन विक्रान्तामशनीमिव ।
 १३] ताटकां विकृताकारां जिह्यांसन्तीं सुदारुणाम् ॥१३ [N
 महाभ्रचयसङ्काशां समुच्छ्रितभुजद्रयाम् ।
 १४] विव्याधोरसि बाणेन चन्द्रार्धाकारवर्चसा ॥१४॥^५ [N
 सा तेन वज्ररूपेण बाणेन भृशविक्षता ।
 १५] ववाम रुधिरं भूरि पपात च ममार च ॥१५॥^६ [२८
 तां हतां पतितां भूमौ दृष्ट्वा सुरपतिस्तदा ।
 १६] साधु साध्विति काकुत्स्थं सुराश्च समनादयन् ॥१६॥ [२९

१. ज—एनां पश्य दुराधर्षा निर्भिन्नहृदयां पितौ ।
 ल—एतां ,, ,, त्रिभिन्नहृदयां ,, ।
 २. ज ल—शयानां शयने धन्ये धृतपापां मया हताम् ।
 भ— ,, ,, धृतपापां ,, ,, ।
 ३. ज ल भ—नास्ति ।
 ४. ज भ—ताटका ।
 ५. ज ल भ—काकुत्स्थं समभिद्रुता ।
 ६. ज ल भ—आपसन्तीं तदा रामो ।
 ७. रा—विक्रान्तामशनीम् । ज ल भ—विक्रामाशनीमिव ।
 ८. ज ल भ—शरेणोरसि विव्याध पपात च ममार च ।
 ९. ज ल भ—भीमसंकाशां ।
 १०. ज ल भ—०समपूजयन् । भ—सुराः समभिपूजयन् ।

- उवाच च भृशं प्रीतः सहस्राक्षोऽम्बरे स्थितः ।
 १७] सह सर्वापरगणैर्विश्वामित्रमिदं वचः ॥^२१७॥ [३०
 मुने कौशिक भद्रं ते सेन्द्राः सुरगणास्त्वया ।
 १८] तोषिताः कर्मणानेन रामस्यामिततेजसः ॥^३१८॥ [३१
 अस्मभ्रियोगाद् भद्रं ते स्नेहं दर्शय राघवे ।^३
 १९] तपोयोगबलेनैनमाप्यौययितुमर्हसि ॥^४१९॥
 प्रजापतिमृताञ्चैव कृशाश्वाद्राजसत्तमात् । [३२
 २०] यान्यवाप्तानि तेऽस्त्राणि तान्यस्मै प्रतिपादय ॥२०॥^५ [N
 पात्रभृतो हि ते गिष्यो रामो दशरथात्मजः ।^६
 २१] कर्तव्यं च महत् कार्यमस्माकं ॥^७२१॥ [३३
 एवमुक्त्वा सुरगणा विश्वामित्रं पुनर्ययुः

१. ज ल--उवाच वासवः प्रीतः सहस्राक्षः पुरन्दरः ।

भ--नास्ति ।

२. ज ल भ--सुराश्च सर्वे संप्रीता विश्वामित्रमिदं वचः ।

३. ज ल भ--तोषिताः कर्मणानेन स्नेहं दर्शय राघवे ।

४. रा ब--०बलेनैवमाप्या० ।

५. ज ल भ--नास्ति ।

६. ब--शस्त्राणि ।

७. ज भ--प्रजापतेः कृशाश्वस्य पुत्रान् दिव्यपराक्रमान् ।

ल-- " " सुखं दिव्य " ।

ज ल--तेजोबलबुतान् ब्रह्मन् राघवाय प्रदापय ।

भ-- " " " ददस्व च ।

८. ज--पात्रभृतो ह्ययं तेषां तवानुगमने गतः ।

ब-- " " " " रतः ।

ल-- " " " भुवानुगमने वृतः ।

भ-- " " " तवानु० " " ।

९. ज भ--च महत्कर्म सुराणां । ब--सुमहत्कार्यं० ।

ल--सुमहत्कर्म सुराणां ।

- २२] यथागतेनैव पथा ततः सन्ध्याऽभ्यवर्तत ॥२२॥ [३४
 विश्वामित्रोऽपि भगवांस्ताडकावधतोषितः ।^१
 २३] रामं मूर्धन्युपाधाय वचनं चेदमब्रवीत् ॥२३॥ [३५
 इहाद्य रजनीं वीरं वसामं शुभदर्शन ।^२
 २४] श्वैः प्रभाते गमिष्यामस्तदाश्रमपदं मेम ॥२४॥ [३६

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे^१ ताडकावधो^१

नाम^{१३} चतुर्विंशः^{१३} सर्गः ॥२४॥

१. ज ब ल—एवमुक्त्वा सुराः सर्वे जग्मुर्हृष्टा यथागतं ।
 भ— ययुः सर्वे ” ” ।
 रा—यथागतेनैव पथा ततः साक्षात् ।
 ज ल भ—विश्वामित्रं समाधाय ततः सन्ध्याभ्यवर्तत ।
 ब— ” समादाय ” ” ।
२. कै— ० स्तारका० ।
३. ज भ—ततो मुनिवरः प्रीतस्ताडकावधतोषितः ।
 ल— ” ” प्रीतस्ताडका ” ।
४. ज ल—मूर्ध्नि राममुपाधाय मधुरं वाक्यमब्रवीत् ।
 भ—मूर्ध्नि राममुपधाय ” ” ।
५. ज—नाम । ल भ—राम ।
६. ज ल—वसामि ।
७. कै—अतः परमपरहस्तेन विन्यस्तोऽधिकः पाठः—
 अयं सिद्धाश्रमो राम यत्प्रसादान्नविष्यति ।
 भ—अयं सिद्धाश्रमो नाम यत्प्रसादान्नविष्यति ।
८. ज ल भ—प्रभाते च ।
- ९.—ज ब ल भ— ०स्तथाश्रमपदं ।
१०. ज ल—निजं । भ—निजां ।
११. कै—भादिकाण्डे । ब—नास्ति ।
१२. ज भ—ताडकावधो ।
१३. कै—नामोचतुर्विंशः । रा ब ल भ—नाम ।
 ज—नाम त्रयोविंशः ।

[वं=३०]

[पञ्चविंशः सर्गः]

[दा=२७]

प्रभातायां तु शर्वर्या विश्वामित्रो महामुनिः ।

१] प्रहसन् राममाभाष्य मधुरं वाक्यमब्रवीत् ॥^११॥ [१]

तुष्टोऽस्मि राम भद्रं ते कर्मणा ह्यद्भुतेन वै ।

२] प्रीतिदायं च दास्यामि सर्वाण्यस्त्राप्यशेषतः ॥२॥^३ [२]

यान्यहं वेद्मि काकुत्स्थ पात्रभृतोऽसि मे र्यतः ।

३] ब्रह्मास्त्रं प्रथमं राम दिव्यमेतद् ददामि ते ॥३॥ [N]

त्रयाणामपि लोकानां पीडितानां यथापरहं ।

४] तथैव दण्डमस्त्रं ते^१ प्रजासंहारकारकम् ॥^२४॥ [N]

१. भ--तु ।

२. ज ल भ--प्रहसन्वाक्यतस्त्वशुवाच मधुराक्षरम् ।

३. ज ल भ--परितुष्टोऽस्मि भद्रं ते राजपुत्र महाबल ।

प्रीत्या परमया युक्तः सर्वास्त्राणि ददामि ते ॥

४. ज ल भ--वेद ।

५. ज--पात्रीभृतोसि ।

६. ज ब ल भ--मतः ।

७. ज ल भ--परमं ।

८. ज ल भ--दिव्यमस्त्रं ।

९. ज ल भ--सर्वेषामेव ।

१०. र।--भयावहम् ।

११. र।--दण्डमस्त्रं मे । ब--दण्डमस्त्रं ते ।

१२. ज ल--दण्डमस्त्रं महच्छ्रेष्ठं ददामि रघुजैवण ।

भ-- ,, महच्छ्रेष्ठं ,, ,, ।

- देदानि राम शत्रूणां येनार्घ्यो भविष्यति । [N
 ५] धर्मास्त्रं च महाबाहो कालकल्पं तथैव च ॥५॥ [५पृ
 कालास्त्रमपि वाऽसह्यं ददानि दयितं विभोः । [N
 ६] विष्णुचक्रं च ते दिव्यमिन्द्रवज्रं च दुर्जयम् ॥६॥ [५उ
 वज्रमस्त्रं च दुर्धर्षं शैवं शूलवरं तथा ।
 ७] अस्त्रं ब्रह्मशिरश्चोग्रमैषीकं च ददानि ते ॥७॥ [६
 शङ्करास्त्रं च दीप्तास्यं गृह्णाणेदं मयोदितम् । [N
 ८] गदाद्वयं वाप्रतिमं गृहाणारिभयावहम् ॥८॥

१. कै—ददामि । ज ल भ—सर्वदा ।
 २. ज ल भ—येनाजेयो ।
 ३. कै—अथात्रर्षित् । अपरहस्तेन पुनर्किंस्वितः । रा—ददामि ते ।
 ४. ज ल भ—धर्मचक्रं ततो राम कालचक्रं तथैव च ।
 ५. ज भ—विष्णुचक्रं तथाऽप्युग्रमिन्द्रचक्रं तथैव च ।
 ल— ” ” मिश्रशक्रं ” ” ।
 ६. ज—वज्रमस्त्रं नरश्रेष्ठ शैवं पशुपतं ततः
 ल— ” ” ” पाशुपतं ततः ।
 भ— ” नरश्रेष्ठ ” ” ।
 ७. कै—दैवं ।
 ८. ज ल—गदे द्वे चापि काकुत्स्थ कौमोदकिशिबोदके ।
 भ— ” ” ” कौमोदकिशिबोदके ।
 ९. रा—ब्रह्मवराभोग्र० ।
 १०. ज ल—अस्त्रं ब्रह्मशिरश्चैषीकमपि राघव ।
 भ— ” ” शैव ऐषीकमपि ” ।
 ११. कै—गृहाणेत् ।
 १२. ज ल—ददामि ते महाबाहो अस्त्रं शूलवरं तथा ।
 भ— ” ” महोद्दालं शूलं द्रवरं तथा ।
 १३. ज—शङ्करास्त्रं च दीप्तास्यं गृहाणेदं मनोजतां ।
 ल— ” ” ” ” मनोजतम् ।
 भ—शङ्करास्त्रं ” ” ” मनोजतं ।

- कौमोदकीं वाऽप्रतिमां तथेमां लोहितामुखीम् । ७
 ९] धर्मपाशं तथैवास्त्रं कालपाशं च दुर्जयम् ॥^३९॥
 वारुणं चापि ते पाशं ददानि परमार्चितम् । ८
 १०] शुष्कार्द्रं चाशनी राम गृहाणेमे मयोदिते ॥^११०॥
 पैनाकमपि चैवास्त्रमस्त्रं नारायणं तथा । ९
 ११] आग्नेयमपि वाऽसंखं वायव्यं च ददानि ते ॥^१११॥
 प्रमर्दनं प्रमथनं तथैवारिविदारणम् ।^१ १०
 १२] अस्त्रं ह्यंशिरो नाम क्रौञ्चमस्त्रं वाऽपराजितम् ॥^३१२॥
 शक्ती च द्वे गृहाणेमे अमोघां विजयां तथा ।^१ ११

१. कै—लोहितामसीम् ।

२. ज भ—अपि ते नरशार्दूल प्रयच्छामि नृपात्मज ।

ल—,, ,, ,, , नृपात्मजे ।

३. ज ल भ—धर्मपाशमिमं कालपाशं तथैव च ।

४. ज ल भ—वारुणं पाशरत्नं च ददाम्येतदनुत्तमम् ।

५. कै—लुप्तः पाठः । रा—वाशनी ।

६. ज—अस्त्रे द्वे प्रयच्छामि शुष्कार्द्रं रघुनन्दन ।

ल—अशानी ,, ,, शुष्कार्द्रे ,, ।

भ— ,, ,, ,, शुष्कार्द्रो , ।

७. ज—वैवास्त्रमपि नागास्त्रं । ल भ—देवास्त्रमपि नागा० ।

८. रा—आग्नेयमपि वा मद्यं । व—आग्नेयमस्त्रं दयितं ।

९. कै—ददामि । पुनरपरकरशोधितः ।

१०. ज ल भ—आग्नेयमस्त्रं दयितं वैवतास्त्रं तथैव च ।

११. ज ल—वायव्यास्त्रं च दयितं ददामि तव राजव ।

भ—वायव्यमस्त्रं दयितं विसृजामि रघूत्तम ।

१२. कै रा—ह्यशिरात्तैव कृत्वास्त्रं ।

१३. ज ल भ—अस्त्रं ह्यशिरो नाम क्रौञ्चमस्त्रं तथैव च ।

१४. ज ल भ—शक्ती द्वे पुरुषव्यात्र विसृजामि रघूत्तम !

१३] तथैव कालं मुशलं कङ्कालमथ किङ्किणी ॥ १३ ॥

धारय त्वं नरव्याघ्रं ददाम्येतानि तेऽनघ ।

[१२

N] अस्त्रं वैद्याधरं नाम नन्दकं नाम चापरम् ॥ १४ ॥

[१३५

प्रस्वापनं प्रमथनं स्तंभनं च ददानि ते ।

[१४३

१४] धर्षणं शोषणं चैव तथो वारिनिकृन्तनम् ॥ १५ ॥

मदनोन्मादने चैव कन्दर्पदयितावुभौ ।

[१५

१. कै—सुमलं ।

२. ज ल—कंकालं मुसुलं घोरं कपालमथ किङ्किणी ।

भ—कंकालमुशलं ,, ,, किङ्किणीं ।

३. ज ल भ—स्वं हि वीरज्ज ।

४. ज ल भ—विद्याधरं ।

५. ज ल भ—नन्दिकं ।

६. कै रा—नास्ति ।

अतः परमधिकः पाठः—

ज ल भ—असिरजं महाबाहो ददामि मञ्जुबाधिप ।

गान्धर्वमस्त्रं दयितं मोहनं नाम नामतः ॥

भ— ,, ,, मोहनं नामतः पुनः ॥

इति त्रितीयाध्यायस्य पाठान्तरम् ।

७. कै—मोहनं च ।

८. ज ल भ—वितरामि तवानघ ।

९. कै—वर्ष्यं शो० । ज ल—दर्प्यं शो० । ल—दर्पं शोषणे ।

१०. ज भ—संतापनमिति भृतं । ब ल—संतापनमिति स्मृतं ।

११. रा—प्रस्वापनं मोहनं च स्तंभनं च ददामि ते ।

१२. ज—दमनं चैव दुर्धरं कन्दर्पदयितामिव ।

ल—दमने ,, ,, कन्दर्पदयितामि तु ।

भ—दमनं ,, ,, ,, वै ।

- १५] गन्धर्वास्त्रं तथैवेदं मोहनं च ददानि ते ॥ १६ ॥ [१४५
तेजोऽभ्याहरणं शौर्यमरिपक्षप्रतापनम् ।
- १६] रुधिरामिषपैशाचकौवेरं च ददानि ते ॥ १७ ॥ [N
राक्षसं चापि शत्रूणां श्रीधृतिप्राणनाशनम् ।
- १७] मूर्च्छनं स्वापनं चास्त्रं कम्पनं चारिकंपनम् ॥ १८ ॥ [N
उ१८] सत्यं चैवानृतं चास्त्रं महामायास्त्रमेव च ।^५
अमोघतैजसं चैव परतेजोऽपकर्षणम् ॥ १९ ॥ [N
१९] सोमास्त्रं शिशिरं राम त्वाष्ट्रं चारिव्यथार्करंम् ।^{११}
मानवं चास्त्रमजितं दैत्यदानवमेव च ॥ २० ॥ [N

१. ज—पैशाचमर्थं दयितं मानवं नाम नामतः ।
ल भ—पैशाचमस्त्रं ,, ,, ,, ,, ।
२. कै—तेजोभ्याहरणं । रा—तेभ्योभ्याहरणं ।
३. कै—शौचमरिपक्ष० । ब—शौचमरिपक्षप्रयातनं ।
४. ब—पैशाचमस्त्रं दयितं कौवेरं ।
५. ज ल भ—नास्ति ।
६. कै—चारिकृत्यनम् । पुनरपरकरसोधितः ।
७. ज ल भ—गृहास्त्रं नरशार्दूलं सर्वाण्येतानि राक्षसं ।
वामनं नरशार्दूलं सौमनं च महाबलं ॥
८. ज ल—संचर्तं चैव दुर्धर्षं मौसलं च नृपात्मज ।
भ— ,, ,, ,, मौशलं ,, ,, ।
९. ज भ—सत्यमस्त्रं महाबाहो मायाधरमथापि च ।
ल— ,, ,, ,, वा ।
- १० रा—चारिदुधाकरम् ।
११. ज भ—मोघतेजोबलं राम परतेजोपकर्षणं ।
१२. ज ल भ—सोमास्त्रं शिशिरं नाम तथा त्वाष्ट्रं सुदास्यं ।

- २०] एवमादीनि चान्यानि ददानि दयितोऽसि मे ।
गृहाणैतानि मत्तस्त्वमस्त्राणि नृवरात्मज ॥२१॥ [N
- २१] अथोसौ प्राङ्मुखो भूत्वा शुचिर्मुनिवरस्तदा ।
ददौ रामाय सुप्रीतश्चास्त्रं ग्राममनुत्तमम् ॥२२॥ [N
- २२] जपतोऽथ मुनेस्तस्य मन्त्रग्राममशेषतः ।
उपतस्थुर्महास्त्राणि मूर्तिमन्ति नृपात्मजम् ॥२३॥ [N
- २३] ऊचुश्च राममभ्येत्य तान्यस्त्राणि समन्ततः ।
प्राञ्जलीनि महाबाहो शाध्यस्मानिति राघवम् ॥२४॥ [N
- २४] तान्यत्रेक्ष्य ततो रामैः समालभ्यं च पाणिना ।
'मां भजध्वं स्मृतानीति सर्वाण्येवाभ्यभाषत ॥' २५॥ [N

१. ज ल भ--दारुणं च भवस्यापि रौद्रमस्त्र तथापि च ।
एतानि कामतेजांसि कामरूपबलानि च ॥
गृहाण चारूपाणि प्रीतात्माहं ददामि ते ।

२. ज ल भ—अथास्य ।

३. ज ल भ—सुप्रीतो दिव्यास्त्रग्राममनुत्तमं ।

४. ज ल भ--जपतस्तस्य तु मुनेर्विश्वामित्रस्य धीमतः ।

५. ज—अभ्युपेयुर्महाभागमस्त्राणि मुनिपुंगव ।

ल भ—, , मुनिपुंगव ।

६. ब—राममभ्येति ।

७. ल ज—ऊचुश्च रामं सर्वाणि प्राञ्जलीनि नृपात्मजं ।

भ—जग्मुश्च , , , , ।

८. ज ल—इमानि च महोदार किंकराणि च सुव्रत ।

भ—, स्म , , , , ।

९. ज ल भ—प्रतिगृहीध्व काकुरस्थ ।

१०. कै—समालभ्य ।

११. कै—मा ।

१२. ज ल भ—सर्वाणि मे मानसानि भवन्तिस्त्वभ्यभाषत ।

तान्यवार्प्य तंतो रामो विश्वामित्रं महामुनिम् ।
२५] प्रणिपत्य यथान्यायं गमनाय मनो दधे ॥ २६ ॥

[२७

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे^३ अस्त्रप्रदानं^४
नाम पञ्चविंशः^५ सर्गः^५ ॥२५॥

१. ज ल भ—ततः प्रतिमना ।
२. ज ल भ—अभिवाद्य महातेजा गमनावोपचक्रमे ।
३. कै—भाद्रिकाण्डे ।
४. ज ल भ—अस्त्रप्रदहणे ।
५. कै—त्रिंशोऽध्यायः । ज—चतुर्विंशः सर्गः ।
रा ष ल भ—सर्गः

[वं=३१]

[षड्विंशः सर्गः]

[दा=२८]

प्रतिगृह्य ततोऽस्त्राणि दिव्यानि प्रीतमानसः ।

१] गच्छन्नेवं ततो रामो विश्वामित्रमुवाच ह ॥१॥ [१

गृहीतास्त्रोऽस्मि भगवन्नजेयस्त्रिदशैरपि ।

२] अस्त्राणां तु ममैतेषां संहारं वक्तुमर्हसि ॥२॥ [२

इत्युक्तवति रामेयं विश्वामित्रो महामुनिः ।

३] आचख्यौ परमास्त्राणां सरहस्यं निवर्तनम् ॥३॥ [३

उक्त्वा संहारमस्त्राणां रामायामिततेजसे ।

४] दंदौ मन्त्रं जृम्भकानां वशीकरणमुत्तमम् ॥४॥ [N

सत्यवाक् सत्यकीर्तिश्च हृष्टोऽदंभस्तथैव च ।

५] प्रणिपातरसो नाम अवाङ्मुखपराङ्मुखौ ॥५॥ [४

१. ज ल भ—गच्छन्निव ।

२. ज ल भ—तदा ।

३. ज ल—अस्त्राणामथ चैतेषां ।

भ—अस्त्राणामथ चैतेषां ।

४. ज—रामेय । ल भ—रामे तु ।

५. कौ—परमस्त्राणां ।

६. ज ल भ—उक्त्वा तु परमास्त्राणां संहारं च निवर्तनं ।

७. रा—संहारमस्त्राणां ।

८. ज ल भ—नास्ति ।

९. ज ल भ—ददावच्छं । व—ददौ अस्त्रं ।

१०. रा व ल भ—जंभकानां । ज—जंभकानां ।

११. ज ल भ—दृष्टारंमस्तथैव ।

१२. रा—प्रणिपातरसां । ल—प्रणिपाता रसो ।

वृषाक्षो वृषचर्मा च रेणुकः पुरुषादकः । ^२	[N
६] दशाक्षो दशशीर्षश्च दशशंकुः शतोदरः ॥ ६॥	[५७
पद्मनाभो महानाभः सुनाभो दुन्दुभिस्वनः ।	[६५
७] ज्योतिनाभः क्रथः कुंभो मकरः क्रकरोऽङ्गदः ॥७॥ ^१	[N
युगन्धरस्तथानिद्रो ^६ भर्ता प्रमथर्नः स्थिरः । ^{१०}	[७५
८] धरो धान्यः कुण्डधरो रतिभूरतिरेव च ॥ ^{११} ८॥	[N

१. व—वृषास्यो ।

२. ज—विपाकौ विश्वकर्मा च गौरो नाम प्रभो नभः ।

ल भ—विपाको ,, ,, ,, ,, ,, ,, ।

३. ज—दशाक्षो दशवक्रश्च दशशीर्षो दशोदरः ।

ल— ,, दशवक्रश्च दशशीर्षो दशोदरः ।

भ— ,, ,, दशशीर्षो दशोदरः ।

४. ज ल भ—द्वनामः सुनामकः ।

५. रा—शक्ररोगदः । व—क्रकरोगदः ।

६. ज ल—ज्योतिषः कथनश्चैव नैकासुचिबिखावुभौ ।

भ— ,, ,, नैकासुचिबिखावुभौ ॥

७. ज ल—अगन्धरस्वरिन्द्रश्च ।

भ—युगन्धरस्वरिन्द्रश्च ।

८. रा—भेत्तः । ज ल भ—भेत्ता ।

९. ज ल भ—तथा ।

१० अतः परमधिकः पाठः—

ज ल भ—शुचिर्बाहु महाबाहुः सर्वबाहुस्तथैव च ।

ज ल—चक्रसौमनसश्चैव विभूममकरावुभौ ॥ इति द्वितीयाधम् ।

भ—वक्रः सौमनसश्चैव विभूममकरावुभौ ॥

११. ज—करोति करती चैव धनं धान्यं च राघवः ।

ल—भारतिः ,, नैकासु च बिखावुभौ ।

भ—करतिः करती चैव धनधान्यो तथैव च ।

कामरूपः कामगमः कामहा कामनन्दनः ।

- ९] जंभकः स्वर्णनाभश्च स्यन्दनो वारुणिस्तथा ॥९॥' [९
 कृशाश्वतनया ह्येते^२ जंभकौः कामरूपिणः । [१०पृ
 १०] भामुरा रिपुसैन्यानां तेजोज्योतिहरास्तथा ॥^११०॥ [N
 नायका विग्रहकराः प्रयोक्तुर्विजयावहाः ।
 ११] एतानपि गृहाण त्वं संप्रयोगनिवर्तनान् ॥११॥' [N
 इत्युक्तो बाढमित्युक्त्वा विश्वामित्रात् तपोधनात् । [१२
 १२] जग्राह तानपि तथा जंभकान् रिपुजंभकान् ॥१२॥
 दिव्यमूर्तिधरास्ते हि दिव्याभरणभूषिताः ।
 १३] ऊचुः प्राञ्जलयो रामं तदा मधुरभाषिणः ॥१३॥' [१३व
 पू१४] इमे स्म वशगा राम शाधि नस्त्वमिति स्थितान् ।^१ [१४

१. ज ल भ—कामरूपी कामरुचिर्मोह आवणरस्तथा ।

जंभकः सर्वनाभश्च* संतरावरणो† तथा ।

२. ज ल भ—राम ।

३. ज भ—भास्वराः । ल—भास्कराः ।

४. ज ल भ—नास्ति ।

५. ज ल भ—प्रतिगृह्णीष्व भद्रं ते पात्रभूतोसि मे वतः ।

बाढमित्येव काकुत्स्थः सुप्रीतेनाम्तरात्मना ।

६. ज ल भ—दिव्यभास्करदेहास्तु दिव्यमूर्तिसुजावहाः ।

राम प्राञ्जलयो भूत्वा प्रात्रवन्मधुराचरं ।

७. ज ल भ—नास्ति ।

* ल—सर्वनाभश्च ।

† भ—संतरावरणौ ।

- N] जंभकान् प्रणतान् रम्यान् किंकरान् समुपस्थितान् ॥ १४ ॥ [N
 उ१४] गम्यतां स्वागतं वोऽस्तु कृत्यकाल उपेक्ष्यताम् ।
 स्मृता मामुपतिष्ठन्वमिति रामोऽप्युवाच तान् ॥ १५ ॥ [१५
 १५] इत्युक्त्वा राममामन्व्य कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् ।
 एवमस्त्विति चैवोक्त्वा प्रतिजग्मुर्यथागतम् ॥ १६ ॥ [१६
 १६] तान् विस्मज्य ततो रामो विश्वामित्रं महामुनिम् ।
 गच्छन्नेवं पुनर्वाक्यं मधुराक्षरमब्रवीत् ॥ १७ ॥ [१७
 १७] किमेतन्मेघैसंकाशं पर्वतस्याविदूरतः ।
 वनमाभाति स्रुमहत् कस्यैतदमरंद्गुतेः ॥ १८ ॥ [१८
 १८] आभाति रमणीयं हि वनमेतन्मनोहरम् ।
 विनादितं बल्गुवाग्भिर्नानामृगगणैर्युतम् ॥ १९ ॥ [२०

१. ज—इमे स्म नरशार्दूल ब्रूहि किं करवाणि ते ।

ल—इमेः स नरशार्दूल ,, ,, करवाम ते ।

भ—इमे स्म ,, ,, ,, ,, ।

२. ज ल भ—गम्यतामिति तान् सर्वान्यथेष्टं प्राह राघवः ।

मनसा मे यथाकालं सहायार्थं* भविष्यथः ।

३. ज ल भ—अथ ते ।

४. ज ल भ—काकुत्स्थमुक्त्वा जग्मुर्यथागतम् ।

५. ज ल भ—गतासु तासु विषासु ।

६. ज ल भ—गच्छन्नेवाथ काकुत्स्थः शब्दं वचनमब्रवीत् ।

७. ज ल भ—किं त्वेतन्मेघेः ।

८. ज ल भ—पर्वतस्य विदूरतः ।

९. रा—कस्यैदमख्यते ।

१०. ज ल भ—दृष्ट्वा च इवाभाति मुने कौतूहलं हि मे ।

११. ज ल भ—दर्शनीयं मनोज्ञं च मम चातिमनोहरं ।

नानाप्रभावैः शकुनेर्बल्गुवाग्भिरकलंकृतं ॥

- १९] निःसृताः स्मं मुनिश्रेष्ठ कान्तारात्रोमहर्षणात् । [२१
 अनेनैवावैगच्छामो देशोऽयं सुमुखोदर्यः ॥२०॥ [२२पृ
 मुव्यक्तं वाऽपि भवतः सिद्धाश्रमपदं वयम् ।
 २०] संप्राप्ता यत्र तौ पापौ यज्ञविघ्नकरौ तव ॥२१॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे जंभकप्रदानं^७ नाम
 षड्विंशः सर्गः ॥ २६ ॥

१. कै रा ल ज—निःसृताः ।
 २. ज ल भ—स्मो ।
 ३. ज भ—अनेनैवाय गच्छामो । ल—०वाद्यु ग० ।
 ४. कै रा—सुमुखोदर्यः । ज—सुमुखावहः । ल—सुमुखावहः ।
 ५. ज ल भ—सर्वं मे शंस भगवन्कस्याश्रमपदं महत् ।
 संप्राप्ताः कुत्र ते पापा यज्ञज्ञा बुष्टराक्षसाः ।
 स्वल्कोपनिहताः पूर्वं निहंतव्या मया हि ते ।
 ६. कै—आदिकाण्डे ।
 ७. ज ल भ—विद्यासंहारग्रहणं ।
 ८. कै—एकत्रिंशः । ज—षड्विंशः । रा व ल भ—नास्ति ।

[वं=३२]

[सप्तविंशः सर्गः]

[दा=२९]

अथ तस्याप्रमेयेस्य तद्वनं परिपृच्छतः ।

१] विश्वामित्रो महातेजा आख्यातुमुपचक्रमे ॥^११॥ [१

अयं पृथाश्रमो रामे वामनस्य महात्मनः ।

२] सिद्धाश्रम इति ख्यातः सिद्धो यत्र महायशाः ॥२॥ [३

विष्णुवामनरूपेण तप्यमानो महत्तपः ।

३] त्रैलोक्यराज्येऽपहृते बलिनेन्द्रस्य गघव ॥३॥ [N

अभिभूय हि देवेन्द्रं पुरा वैरोचनिर्बलिः ।^५

४] त्रैलोक्यराज्यं बुभुजे बलोन्मादसमन्वितः ॥^५४॥ [४

ततो बलौ तदा यज्ञं यजमाने भयार्दिताः ।

५] इन्द्रादयः सुरगणा विष्णुमूर्चुरिहाश्रमे ॥५॥^{१०} [५

१. ज—तस्याश्रमे रम्ये । ल—तस्याश्रमो रामो ।

भ—तस्याश्रमे रम्यं ।

२. ज ल भ—आख्यातुं नरशार्दूलः सर्वमेवोपचक्रमे ।

३. ज ल भ—एष ।

४. भ—नाम ।

५. ज ल भ—छात्र ।

६. ज ल भ—नास्ति ।

७. ज भ—एतास्मिन्नेव काले तु राज्यं वैरोचनो बलिः ।

ल— ,, ,, ,, वैरोचनिर्बलिः ।

८. ज—कारयामास काकुत्स्थः त्रिषु लोकेषु विजयः ।

ल भ— ,, ,, ,, विजयः ।

९. कै—बलौ । पुनः शोभितः ।

१०. ज ल भ—बलेस्तु यजमानस्य देवाः साभिपुरोगमाः ।

समागम्यर्चयन्नेव विष्णुमूर्चुरिहाश्रमे ॥

बलिवैरोचनिर्विष्णो यजतेऽसौ महाबलः ।

[६पृ

६] कामदः सर्वभूतानां महर्द्धिरसुराधिपः ॥ ६ ॥

[N

पू७] तं त्वं वामनरूपेण गत्वा भिक्षितुमर्हसि ।

भिक्षितो विक्रमानेतांस्त्रीन् वीर्यबलदर्पितः ॥७॥^३ [N

८] परिभूय जगन्नाथ तुभ्यं वामनरूपिणे ।

ये ह्येनमभियाचन्ते लिप्समानाः स्वपीप्सितम् ॥ ८ ॥ [N

९] तान् कामैरीप्सितैः सर्वान् योजयत्यसुरेश्वरः ।

स त्वं त्रैलोक्यराज्यं नो हृतं भूयो जगत्पते ॥९॥^४ [N

१०] दातुमर्हसि निर्जित्य विक्रमैर्भूरिभिक्षिभिः ।

अयं सिद्धाश्रमो नामं सिद्धकर्म भविष्यति ॥^{१२}१०॥ [N

११.] तस्मिन् कर्मणि संसिद्धे तव सत्यपराक्रम ।^३

१. ज ल भ—यजते यज्ञमुत्तमं ।

२. ज ल भ—नास्ति ।

३. ज ल भ—अपर्यवसिते तस्मिन्वकार्यमुपपद्यतां ।

४. ज ल भ—नास्ति ।

५. व—ह्येनमभियाचन्तो ।

६. ज ल भ—ये चैनमभिनन्दति याचितारस्ततस्ततः ।

७. ज ल भ—ये गत्वा तत्र याचन्ते तेभ्यः रुवं प्रयच्छति ।

यत्नं सुरहितार्थाय महायोगमुपागतः ॥

ल—उत्तरार्द्धो नास्ति ।

८. ज भ—वामनत्वं गतो विष्णो कुरु कल्याणमुत्तमं ।

ल—नास्ति ।

९. रा—अदाश्रमो ।

१०. व—राम ।

११. ज भ—यत्प्रसादाद् ।

१२. ल—नास्ति ।

१३. ज ल भ—सिद्धे कर्मणि देवेशः प्रातिहृन्नगवानिति ।

- एवमुक्तः सुरैर्विष्णुर्बामनं रूपमास्थितः ॥'११॥ [N
 १२] वैरोचनिमुपागम्य त्रीनयाचत् पदक्रमान् ।
 लब्ध्वा च त्रीन् पदान् विष्णुः कृत्वा रूपमथाद्भुतम् ॥'१२॥ [N
 १३] त्रिभिः क्रमैस्तथा लोकानाजहार त्रिविक्रमः ।
 एकेन हि पदा कृत्स्नां पृथिवीं सोऽध्यतिष्ठत ॥'१३॥ [N
 १४] द्वितीयेनोव्ययं व्योमं द्यां तृतीयेन राघव ।
 तं च बद्धाञ्जलिं कृत्वा पातालतलवासिनम् ॥'१४॥ [N
 १५] त्रैलोक्यराज्यमिन्द्राय ददावुद्धृतकण्टकम् । [३५पू
 तेनैष पूर्वाध्युषित आश्रमः पुण्यकर्मणा ॥'१५॥^५
 १६] अद्याप्यभिर्ख्या तस्यैव वामनस्यं निषेव्यंते । [३६
 यत्र तौ राक्षसौ वीरै' यज्ञविघ्नकरौ मम ॥'१६॥

१. ज ल भ—अथ विष्णुमहायोगं प्रविश्य रघुनन्दन ।

२. रा—वैरोचनमुपागत्य ।

३. ज भ—वामनं रूपमास्थाय वैरोचनमुपागतम् ।

ल—वामने ,, वैरोचनिमुपागतम् ।

४. ज ल भ—त्रीन् क्रमानथ याचित्वा प्रतिगृह्य च वासवः ।

भाक्रम्य लोकांल्लोकात्मा सर्वभूतहिते रतः ॥

५. रा.—द्वितीयेन पदा स्वर्गं ।

६. कौ—पातालतलवासिनाम् । रा—पुनः शोधितः ।

७. ज ल भ - नास्ति ।

८. ज ल—तेनैव पूर्वमाक्रांतमाश्रमं भ्रमनाशनं ।

भ—तेनैव पूर्वमाक्रांत आश्रमः भ्रमनाशनः ।

९. रा—अद्यापिभिन्ना । ज ल भ—मया तु भक्त्या ।

१०. ज ल—वामनस्योपसेव्यते । भ—वामनस्यैव भुज्यते ।

११. रा—वीरौ ।

१२. ज ल - अत्र ते राक्षसा राम मम ते विघ्नकारिणः ।

व—यत्र ,, ,, ,, ,, ,, ,, ।

भ—'...''राक्षसा राम मम ते विघ्नकारिणः ।

- १७] हन्तव्यो येन वीर्येण त्वया नरवरात्मज । [३७
 पु१८] एवमेवाभिगच्छामः सिद्धाश्रमपदं मम ॥१७॥ [३८पू
 तं दृष्ट्वा स्वागतं दूरात् सिद्धाश्रमनिवासिनः ।
 १९] प्रत्युद्गम्य महात्मानं विश्वामित्रमपूजयन् ॥१८॥ [४०
 प्रविष्टाय देदुश्चास्मै पाद्यार्घ्यासनसत्क्रियाम् ।^१
 २०] रामलक्ष्मणयोश्चापि सत्क्रियां प्रददुर्द्विजाः ॥^२ १९॥ [४१
 मुहूर्तमथ विश्रान्तौ ततस्तौ रामलक्ष्मणौ ।^३
 २१] तमूचतुर्मुनिवरं विश्वामित्रं कृताञ्जली ॥^४ २०॥ [४२

१. ज ल भ—ते स्वया पुरुषव्याघ्र हंतव्या दुष्टचारिणः ।

ब—” ” ” ” दुष्टकारिणः ।

२. भ—एतमेवाभिगच्छामः ।

३. ज ल भ—सिद्धाश्रममनुत्तमं ।

४. ल—ते ।

५. ज ब ल भ—ऋषयः सर्वे ।

६. ज ब ल भ—तदाश्रमनिवासिनः ।

७. कै—प्रत्युद्यम्य ।

८. ज ल—यथान्यायं भ—यथान्यायं !

९. ज—विरवामित्राय धीमते ।

१०. रा—बलिष्ठाय ददौ चास्मै ।

११. ल—कृत्वा पूजां यथान्यायं विश्वामित्राय धीमते ।

ज—नास्ति । भ—कृत्वा पूजां। ऋटितः पाठः

१२. ज ल भ—काकुत्स्थयोरपि तदा पूजां चक्रमहर्षयः ।

१३. ज ल भ—मुहूर्तमिब विश्रान्तौ राजपुत्रौ महाबला ।

भ—अतः परमधिकः पाठः—

अथ रामो महाबाहुः प्रीणयन्कुशिकात्मजं ।

१४. ज ल भ—प्राञ्जलिर्मुनिशार्दूलमुवाच मधुरं वचः ।

अथैव दीक्षां प्रविश भद्रं ते मुनिपुङ्गव ।

२२] सिद्धाश्रमोऽयं सिद्धोऽस्तु संसिद्धे तव कर्मणि॥२१॥ [४३

तयोरेतद्वचः श्रुत्वा विश्वामित्रो महात्मनोः ।^३

२३] आदिदेश तथेत्युक्त्वा दीक्षां तदहरेव तु ॥^४२२॥ [४४

रामोऽपि तां तत्र निशामुषित्वा सहलक्ष्मणः ।^५

२४] प्रभातकाले चोत्थाय विश्वामित्रमवन्दत् ॥२३॥^६ [४५

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे^७ सिद्धाश्रमनिवासो

नाम सप्तविंशः^८ सर्गः^९ ॥२७॥

१. रा ल भ—सिद्धस्तु ।

२. ज ल भ—सत्यमेवास्तु मे वचः ।

३. ज ल भ—रामस्य तु वचः श्रुत्वा दीक्षां सहृष्टमानसः ।

४. ज ल—जग्राह स महातेजो विश्वामित्रो महामुनिः ।

भ— ” ” ” ” महानृषिः ।

५. ज ल भ—कुमारावपि तां रात्रिमतिबाह्य समाहितौ ।

६. ज ल भ—विश्वामित्रमवन्दत् ।

७. ज ल भ—भतः परमधिकः पाठः—

इत्थं विनीय धरणीमथ तौ प्रभाते

कौतूहलेन धरणीं सहपांसुष्पां ।

पुष्पाजलां मृगगच्छैरभितः प्रकीर्णां

†पत्रोत्तरां ददशतुः इषांकुकाञ्चौ ॥

८. कै—आदिकाण्डे । ब—नास्ति ।

९. कै—द्वात्रिंशोऽध्यायः । रा—द्वात्रिंशो सर्गः ।

ज—सप्तविंशः सर्गः ॥२६॥ ब ल—सर्गः ।

भ—सर्गः ॥२६॥

● ल—प्रकीर्णपत्रोत्तरां ।

† ल—प्रसदाकुकाञ्चौ ।

[धं=३३] [अष्टाविंशः सर्गः] [दा=३०]

तदा च देशकालज्ञो रामः सत्यपराक्रमः ।

- १] कालयुक्तमिदं वाक्यं विश्वामित्रमुवाच ह ॥१॥^१ [१]
 भगवन् श्रोतुमिच्छामि कस्मिन् काले निशाचरौ ।
 २] मया तौ प्रतिषेद्धव्यौ यज्ञविघ्नकरौ तव ॥२॥^२ [२]
 रामस्यैतद्वचः श्रुत्वा विश्वामित्रादयस्तदा ।^३
 ३] सर्वे ते मुनयः प्रीताः प्रशंसन्तस्तमब्रुवन् ॥३॥ [३]
 अद्य प्रभृति राम त्वं षड्रात्रं रक्षे तत्परैः ।
 ४] दीक्षां गतो ह्येष मुनिर्मानं संकल्पयिष्यति ॥४॥^४ [४]

१. ज ल—अथ तौ देशकालज्ञौ राजपुत्रौ महाबलौ ।

२. ज—देश कालं च विज्ञाय व्याजहत्पुरिदं वचः ।

ल—देशकालं ” ” ” ” ।

३. भ—अथ तौ देशकालेशौक्यतिवर्तेत सक्षयः ।

४. ज—श्रोतुमिच्छामो ।

५. ज ल—यस्मिन् ।

६. रा—निशाचरैः ।

७. ज—रक्षणीयौ विभो ब्रह्मनातिवर्तेत साक्षियः ।

ल—रक्षणीयावितो ब्रह्मनातिवर्तेतमक्षयः ।

८. भ—नास्ति ।

९. ज ल भ—ब्रह्मतोस्तु तयोरेव हृदयोः परिपृच्छताः ।

१०. ज ल भ—प्रशंसन्तुस्तयोर्वचः ।

११. रा—रक्षितः परः ।

१२. ज ल भ—अद्य प्रभृति षड्रात्रं तिष्ठतां *वत्स यत्रितौ ।

दीक्षागतो हि भगवान्मुनिरेष यथाचकः ॥

*भ—तिष्ठतो च सुसंपदौ ।

- तेषामेतद्वचः श्रुत्वा मुनीनां भावितात्मनाम् । [५पृ
 ५] उद्यम्य कार्मुकं तस्थौ रामस्तत्र सलक्ष्मणः ॥५॥' [N
 अनिद्र एवं षड्हरात्रं संरक्षन् स मुनेः क्रतुम् । [५उ
 ६] राक्षसागमनाकांक्षी निश्चलः स्थाणुवत् स्थितः ॥६॥' [N
 कालेनाभ्यागते तस्मिन् षष्ठेऽहनि महात्मनः ।' [७पृ
 ६] स्थापयांचक्रिरे वेदीं मुनयः संशितव्रताः ॥'७॥' [८उ
 ततो मायां प्रकुर्वाणौ राक्षसावभ्यधावताम् । [१.१उ
 १०] मारीचश्च सुर्वाहुश्च तयोरनुचरास्तथा ॥८॥' [१२पृ

१. ज ल भ—तेषां तद्वचनं श्रुत्वा राजपुत्रावतिष्ठतां ।
 २. रा— एष ।
 ३. ज ल भ—अनिद्रौ षडहोरात्रं रक्तमायां तपोधनं ।
 ४. ज ल भ—अथ काले गते तस्मिन् षष्ठेऽहनि युपकल्पिते ।
 ५. ज ल भ—प्रज्ज्वालय ततो वेदी सोपाध्यायससामगाः ।
 ६. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

मंत्रवच्च यथान्यायं यज्ञः समभिवर्तते ।

- ज ल भ—आकाशे च महान् ॥ शब्दः प्रादुरासीन्नयंकरः ।
 ज—आवातगमनं मेघा यथा प्रावृषि आभवन् ।
 ल—आवार्यं गगनं ,, ,, ,, आभवत् ।
 भ—आवार्यगगने मेघा यथा प्रावृषि आभवन् ।
 ७. ज ल भ—तथा । ८. कै—स्वबाहुश्च ।
 ९. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

आगन्ध भीमनिर्हादा रुधिरौघानवासृजन् ।

* भ—आप्यहोरात्रं ।

* भ—आप्यहोरा ।

† ल—तपोनिधिम् ।

‡ भ—उपाध्यायससामगा ।

॥ ल—महाशब्दः ।

स तानापततो दृष्ट्वा रुधिरौघप्रवर्षिणः ।

११] उवाच लक्ष्मणं वाक्यं रामो^२ राजीवलोचनः ॥९॥ [१४

पश्य लक्ष्मण मारीचं महाशनिसमस्त्रेणम् ।

१२] सपदानुगमायान्तं सुबाहुं च निशाचरम् ॥१०॥ [N

एतौ पश्य महाबाहो नीलाञ्जनचयोपमौ ।^१

१३] अस्मिन् क्षणे समाधूतावनिलेनांबुदाविव ॥११॥ [N

पवनास्त्रं ततो रामः प्रगृह्यास्त्रविशारदः । [N

१४] मारीचोरसि चिक्षेप नातिकोपसमन्वितः ॥१२॥^० [१८

स तेन परमास्त्रेण पावनेन समाहतः ।

[N] संपूर्णं योजनशतं क्षिप्तो वेगानिलेरितः ॥१३॥^० [१९

स तेन शरवेगेन नीतः सागरमूर्धनि ।

१५] पपाताचलसङ्काशो भीवेपथुसमन्वितः ॥१४॥^० [N

विचेतसं विघूर्णन्तं पवनास्त्रबलेरितम् ।^१

१. ज ल भ—रामो राजीवलोचनः ।

२. ज ल भ--निर्भयः प्रहसन्निव ।

३. ज ल भ—दुर्वृषं ।

४. ज ल भ—राक्षसापसदं मया ।

५. ज ल भ—नास्ति ।

६. ज ल भ—मानवेन समाधूतमनिच्छेन यथा कृणं ।

७. ज ल भ—स मनोः परमोदग्रमस्त्रं परमदुर्जयं ।

चिक्षेप परमक्रुद्धो मारीचोरसि राघवः ।

८. ज ल भ—मानवेन ।

९. ज ल भ—क्षिप्तः सागरसंच्छेदे ।

१०. कै रा—नास्ति ।

११. कै रा ज ल भ—नास्ति ।

१२. ज ल भ—विचेतनंविघूर्णन्तं शीतेपुबनताडितं* ।

* ल—शीतेपुवरताडितं । भ--शीतेपुबनताडितं ।

- १६] मारीचं 'पतितं दृष्ट्वा रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ॥१५॥ [२०
 पश्य लक्ष्मण मारीचं पवनास्त्रसमाहतम् ।^१
- १७] मोहयित्वानयदूरं न च प्राणैर्व्ययोजयत् ॥१६॥ [N
 इमांस्त्वन्यान् हनिष्यामि सुबाहुप्रभृतीन् रुषा ।^२
- १८] यज्ञघ्नान् राक्षसान् घोरान् रुधिरामिषभोजनान् ॥^३१७॥[२२
 प्रगृह्णास्त्रमथो दिव्यमाग्नेयं रघुनन्दनः ।^४
- १९] विद्ध्वा सुबाहुमुरसि पातयामास भूतले ॥^५१८॥ [२३
 अन्यान्यपि च वायव्यमस्त्रमादाय राघवः ।
- २०] निजघान स रक्षांसि मुनीनां^६ पथेयन् सुखम् ॥१९॥^७ [२४
 एवं हत्वा स रक्षांसि तत्र रामो महायशाः ।
- २१] समेत्य मुनिभिः सर्वैर्विन्धामित्रादिभिस्तदा ॥२०॥^८ [N

१. ज—निहतं । ल भ—निहतं ।

२. ज ल भ—पश्य लक्ष्मण शक्तिषु मानवं धर्मशोभितं ।

३. भ—प्रायं व्ययोजयत् ।

४. ज ल भ—इमांस्तु निहनिष्यामि निर्घृणान्दुष्टचारिणः ।

५. ज ल भ—राक्षसान्पापकर्मज्ञान्यज्ञघ्नान् रुधिराशरान्* ।

६. ज ल भ—स गृहीत्वास्त्रमाग्नेयं चिच्छेप रघुनन्दनः ।

७. रा—विद्धं ।

८. ज ल—गृहीत्वा बध्नासि स्थाने सुबाहुं पातयन्भुवि ।

भ— „ „ स्थानं „ पातयन्भुवि ।

९. कौ ब—अन्यानपि ।

१०. ज ल भ—वायव्येन तु तान् शेषास्त्रिजघान निशाचरान् ।

रामं तमथ संहृष्टा मुनयः प्रत्यपूजयन् ।

११. ज ल भ—स हत्वा राक्षसान्सर्वाभ्यज्ञघ्नान् रघुनन्दनः ।

ऋषिभ्यः प्राप्तवान्पूजां यथेन्द्रो विजयी पुरा ।

* ल—रुधिराशनान् ।

भ—रुधिराहतान् ?

- पूजितोऽभिष्टुतश्चैव जयेन च समन्वितः ।
 २२] विस्मिताश्चाभवन् सर्वे मुनयो रामकर्मणां ॥२१॥^२ [N
 तस्मिन् यज्ञे समाप्तेऽथ विश्वामित्रो महायज्ञाः ।^३
 २३] दृष्ट्वाऽऽश्रमं कृतक्षेमं काकुत्स्थमिदमब्रवीत् ॥२२॥ [२६
 कृतार्थोऽस्मिं महाबाहो कृतं गुरुवचस्त्वया ।
 २४] सिद्धाश्रमपदं भूयस्त्वया सिद्धतरं कृतम् ॥२३॥^६ [२७

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे^६ विश्वामित्रयज्ञो
 नाम अष्टाविंशः^{११} सर्गः ॥२८॥^{१२}

१. रा—रामलक्ष्मणौ ।
 २. ज ल भ—नास्ति ।
 ३. ज ल भ—अथ यज्ञसमाप्तौ तु विश्वामित्रो महायुनिः ।
 ४. ज—निरीतिकां दिशं दृष्ट्वा काकुत्स्थमिदमब्रवीत् ।
 ल—निरीतिकां " " " ।
 भ—निरातंकां " " " ।
 ५. कै व रा—कृतार्थोऽसि ।
 ६. कै—भूयः कृतं ।
 ७. ज ल भ—सिद्धाश्रमनिवासानां कृतं क्षेमं महात्मनां ।
 ८. ज भ—अतः परमधिकः पाठः—
 अथ निहृत्य निशाचरमण्डलं घननिभे शुशुभे रघुनन्दनः ।
 तिमिरजालमतीव सुदुःसहं दिनकरो हि विभूय ययाम्बरे ॥
 ९. कै—आदिकाण्डे ।
 १०. ज ल भ—राक्षसवधो ।
 ११. कै रा—त्रयविंशः । ज—सप्तविंशः । व ल भ—नास्ति ।
 १२. ज भ—॥ २७ ॥

[वं=३४] [एकोनत्रिंशः सर्गः] [दा=३१]

अथ तौ रजनीं तत्र कृतांस्त्रौ रामलक्ष्मणौ ।

१] ऊचतुर्मुदितौ वीरौ मुनिभिः प्रतिपूजितौ ॥१॥ [१

प्रभातायां तु सर्वर्या कृतपौर्वाह्निकक्रियौ ।

२] विश्वामित्रमृषींश्चान्यान् राघवावभ्यवन्दताम् ॥२॥ [२

अभिवाद्य मुनीन् सर्वास्तांश्च तावपरद्युती ।

३] ऊचतुर्मधुरोदारभाषिणौ रघुनन्दनौ ॥३॥ [३

इमौ द्वौ मुनिशार्दूल किङ्करो र्मुपस्थितौ ।

४] आज्ञापय यथेष्टं नौ पुनः किं करवांवे ते ॥४॥ [४

१. ज ल—तां ।

२. ज व भ—कृतार्थौ । ल—कृतार्थौ ।

३. ज भ—रघुनन्दनौ । ल—रघुनन्दन ।

४. ज ल भ—ऊचतुर्मुदितौ वीरौ प्रकृष्टेनान्तरात्मना* ।

५. ज ल—प्रभातायां तु सर्वर्या कृत्वा स्नायमरिन्दमौ ।

भ— " " " " शौचमरिन्दमौ ।

६. ज—अभ्यवाद्यतां गत्वा विश्वामित्रं महासुनिं ।

ल— " तत्र " महासुनिम् ।

भ—अभ्यवाद मित्रं महासुनिं ।

७. रा—सर्वास्तं च । पुनरपरकरयोचितः ।

८. ज ल भ—नास्ति ।

९. ज ल—तां ।

१०. ज ल भ—समुपागतौ ।

११. ज ल भ—ते शासनं ।

१२. कै रा ज—करवामहे । ल भ—वः ।

* ल—प्रकृष्टेनान्तरात्मना ।

भ—प्रकृष्टेनान्तरात्मना ।

एवमुक्ते ततस्ताभ्यामृषयस्ते तपोधनाः ।^१

५] विश्वामित्रं पुरस्कृत्य रामं वचनमब्रवीत् ॥५॥^२ [५

मैथिलस्य रघुश्रेष्ठ जनकस्य महात्मनः ।

६] भविष्यति महायज्ञस्तत्र यास्यामहे वयम् ॥६॥^३ [६

त्वं चापि नरशार्दूल सहास्माभिर्गमिष्यसि ।

७] रत्नं महाद्भुतं तत्र तद्गुणैर्द्रष्टुर्मर्हसि ॥७॥ [७

प्राग् दत्तं नृपतेस्तत्र न्यासभूतं महद् धनुः ।^४

८] देवासुरे तथा युद्धे धृत्ते देवैः सवासवैः ॥८॥ [८

तत्र देवा न गन्धर्वा नासुरा न च पद्मगाः ।

९] समारोपयितुं शक्ताः कुत एवेतरे जनाः ॥९॥ [९

१. ज ल भ—अतः पूर्वमधिकः पाठः—

एवं तौ हृष्टवदनौ मुनिं ज्वलनतेजसम् ।

ऊचतुः परमोदारं वाक्यं मधुरभाषिणो ।

२. ज ल भ—ब्रुवतोस्तु तयोरेवं सर्व एव महर्षयः ।

विश्वामित्रं पुरस्कृत्य राघवं वाक्यमब्रुवन् ।

३. ज ल भ—मैथिलस्य नरश्रेष्ठ जनकस्य भविष्यति ।

यज्ञः परमधर्मिष्ठो यास्यामस्तत्र वै वयम् ।

४. ज ल भ—धनुस्त्वं द्रष्टुर्मर्हसि ।

५. ज ल भ—तदि पूर्वं नरश्रेष्ठ दत्तं सदसि देवतैः ।

” ” रघुश्रेष्ठ ” ” ”

६. व—वृते ।

७. ज ल—अप्रमेयबलं शौरं मिथेः परमभास्करम् * ।

८. ज ल भ—तच्च ।

९. ज ल भ—आधिज्यं कर्तुमानस्य शक्ताः किमुत मानवाः ।

* भ—परमभास्वरम् ।

- धनुषः सारतां तस्य जिज्ञासन्तो नराधिपाः ।^३
 १०] न शेकुरातोलयितुमप्यारोपयितुं कुतः ॥^{१०} ॥^४ [१०
 तद्धनुर्नरशार्दूल शंकरस्य महात्मनः ।
 ११] यज्ञे द्रक्ष्यसि काकुत्स्थ सहास्रमाभिरितो गतः ॥११॥ [११
 तयेत्युक्त्वा ततो रामः प्रयातुमुपचक्रमे ।
 १२] विश्वामित्रपुरोगैस्तै महर्षिभिरुदारधीः ॥१२॥^५ [N
 विश्वामित्रोऽथ भगवानामन्त्र्य वनदेवताः ।
 १३] उवाचेदं ततो वाक्यं यियासुर्मिथिलां प्रति ॥१३॥^६ [१४

१. कै—जज्ञासन्तो । रा—जहर्षिः... ।

२. ज ल भ—धनुषा* बलवीर्यं हि जिज्ञासीत महर्षिपतिः ।

३. ज ल भ—न शेकुरारोपयितुं राजपुत्रा महाबलाः ।

४. अतः परमधिकः पाठः—

ज ल भ—तद्धि यज्ञफलं तेषां मैथिल्याः धनुरुत्तमम् ।

ज ल भ—याचितं नरशार्दूल दुर्लभं सर्वदेवतैः ।

५. ज ल भ—मैथिलस्य ।

६. ज—मिथले । ल—मिथेः । भ—मिथेर ।

७. ज ल भ—यज्ञं चाद्भुतदर्शनं ।

८. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

एषमुक्त्वा मुनिवराः प्रस्थानं समरोचयन् ।

ज ल भ—वास्ति ।

९. ज ल भ—महर्षिसंघा काकुत्स्थमामन्त्र्य नरदेवताः ।

* भ—धनुषो ।

† भ—मैथिले ।

- स्वस्ति वोऽस्तु गमिष्यामि सिद्धाः सिद्धाश्रमादितः^१ ।
- १४] उत्तरं जाह्नवीतीरं हिमवन्तं शिलोच्चयम् ॥^{१४} ॥ [१५
 प्रदक्षिणमुषावृत्या नतः सिद्धाश्रमं मुनिः ।^१
- १५] उत्तरां दिक्षमास्थाय प्रस्थातुंमुपचक्रमे ॥^{१५} ॥ [१६
 युक्तं ब्रह्मरथानां तु शतमात्रं हि तत्क्षणात् ।
- १६] ययुर्मुनीनां भाण्डानि समारोप्यानुयायिनाम् ॥^{१६} ॥^१ [१७
 मृगपक्षिगणाश्चैव सिद्धाश्रमनिवासिनः ।
- १७] प्रयान्तमुपजग्मुस्ते विश्वामित्रं महामुनिम् ॥^{१७} ॥ [१८
 ते गत्वा दूरमध्वानं लम्बमाने दिवाकरे ।
- १८] वासं चक्रुर्मुनिगणाः शोणतीरे समागताः ॥^{१८} ॥ [२०
 गते त्वस्तं दिनकरे स्नातो हुतहुताशनाः ।^२

१. ज व ल भ—गमिष्यामः ।

२. कै—०सिद्धाश्रमाश्रिताः । ज ल—०सिद्धाश्रमाद्वयं ।

भ—सिद्धासिद्धाश्रमाद्वयं ।

३. ज—जान्द्वीकूलं ।

४. ल—नास्ति । भ—उत्तरे जान्द्वीकूले हिमवन्तं नगोत्तमं ।

५. ज ल भ—प्रदक्षिणं ततः कृत्वा सिद्धाश्रममनुत्तमं ।

६. रा ज—उत्तरं ।

७. ज ल—प्रस्थानमुपचक्रमुः । भ—प्रस्थानमुपचक्रमुः ।

८. ज ल भ—ते प्रवाता मुनिवरा बहवो रेणुपांडुराः ।

शकटीशतमात्रेण विश्वामित्रपुरोगमाः ॥

९. ज ल भ—अनुत्तममुर्महाभागं ।

१०. ज ल भ—वासं चक्रुर्मुनिवराः शोणकूले समाहिताः ।

११. रा—स्नात्वा ।

१२. ज ल भ—तेऽस्तं गते दिनकरे ततोऽहितहुताशनाः ।

व—गते त्वस्तं

”

”

।

- १९] विश्वामित्रं पुरस्कृत्य निषेदुरमितौजसं ॥१९॥^२ [२१
 उ२०] निषसादौभितस्तस्य विश्वामित्रस्य धीमतः । [२२उ
 अथ रामोऽर्जलिं कृत्वा विश्वामित्रं मुनिं तदा ॥२०॥
 २१] पप्रच्छ नरशार्दूलः कौतूहलसमन्वितः । [२३
 भगवन् को न्वयं देशः समृद्धजनसेवितः ॥२१॥
 २२] श्रोतुमिच्छामि भद्रं ते वक्तुमर्हस्यशेषतः । [२४
 नोदितो रामवाक्येन तस्यं देशस्यं विस्तरम् ।
 २३] विश्वामित्रो महातेजा व्याहर्तुमुपचक्रमे ॥^२२२॥ [२५

इत्थापं रामायणे बालकाण्डे^१ शोच्यतीरनिवासो
 नाम एकोनश्रिंशः^१ सर्गः ॥ २९ ॥^{१२}

१. ज ल भ—निषेदुर्धरणीतले ।
 २. ज ल भ— भतः परमधिकः पाठ.—
 रामोऽपि सहस्रामित्रिर्धर्षीस्तान्समपूजयत् ।
 ३. ज ल भ—अप्रतो निषसादाथ ।
 ४. ज ल भ— रामो महातेजो ।
 ५. ज ल भ—विश्वामित्रसृष्टिः ।
 ६. ज ल भ—बुभिशार्दूलं ।
 ७. ज ल भ—कथयामास ।
 ८. ज ल—विस्तरात् ।
 ९. ज ल भ—तं देशमखिलां सर्वसृष्टिमप्ये तपोधनः ।
 १०. कै—आदिकाण्डे । ब—नास्ति ।
 ११. कै रा—अतुच्छिस्तः । ब—नास्ति ।
 १२. ज ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

[वं=३५] [त्रिंशः सर्गः] [दा=३२, ३३]

- N] मृणु राम कथां दिव्यां देशस्य च समुद्रभवाम् । [N
 ब्रह्मयोनिर्महानासीत् कुशो नाम महायज्ञाः ॥१॥ [१पृ
 १] स सुतान् जनयामास चतुरः ख्यातविक्रमान् ।
 कुशाम्बं कुशनाभं च अमूर्तवयसं वसुम् ॥२॥ [२
 २] महार्त्मनो दीप्तिमतः क्षत्रधर्ममनुव्रतान् ।
 तानुवाच कुशः पुत्रान् विनीतानैः श्रुतिपारंगान् ॥३॥
 ३] प्रजानां पालनं पुत्राः क्रियतामिति राघव । [३
 पितुस्ते वचनं श्रुत्वा लोकपालोपमाः सुताः ॥४॥
 ४] निवेशं चक्रिरे सर्वे पुराणां कुशसूनवः । [४

१. ल- समुद्रवयम् ।

२. कै रा—नास्ति ।

३. कै रा—महातपाः ।

४. रा—कुशाम्बं ।

५. ज ल भ—स किञ्चाजनवत् पुत्रांश्चतुरः पुरुषधर्मः ॥
 सकुशाम्बं कुशाम्बं च असूनुरपसंवसम् † ।

६. ज ल भ—महोत्साहान् ।

७. ज ल—धर्मिष्ठः क्षत्रपारगः ।

भ—धर्मिष्ठो वेदपारगः ।

८. ज ल भ—क्रियतां पालनं पुत्रा धर्मं प्राप्स्यन् पुष्कलं ।

श्रुत्वास्ते वचः श्रुत्वा चत्वारस्तेऽमितौहसः ।

९. भ—निवेशं । पुत्रः शोचिष्ठः ।

११. कै रा—पुराण्यावासवामासुः पृथक् चत्वारि राघव ।

* भ—पुरुषधर्मम् । † ल - कुशाम्बं । भ—कुशाम्बं । ‡ ल—असूनुरपसं
 वसम् । भ—अमूर्तवयसं वसुम् ।

- तेषां कुशाम्बः कौशाम्बीं पुरीमावासयञ्च ताम् ॥५॥
 ५] कुशनाभस्तु धर्मात्मा पुरं चक्रे महोदयम् । [५
 तथाऽमूर्तवयो वीरश्चक्रे प्राग्ज्योतिषं पुरम् ॥६॥
 ६] धर्मारण्यसमीपस्थं वसुश्चक्रे गिरिब्रजम् । [६
 देशोऽयं वसुनामासीद्वसोरमिततेजसः ॥७॥
 ७] एते शैलवराः पञ्च प्रकाशन्ते महोच्छ्रयाः । [७
 सुमागर्धां नदीं चात्र मागधा विश्रुता यया ॥८॥
 ८] पश्चानां भृशतां मध्ये वनमालेव शोभते । [८
 एषा सा मागधा रामं वसोर्नाभं प्रात्मनः ॥९॥
 ९] पूर्वमध्यासिता तेन सुसेत्रां संस्थामालिनी । [९

१. ज—कुशांस्तु महातेजाः कोशांशमिकरोत्पुरीं ।
 ल—कुशांस्तु ,, कौशांशमिकरोत्पुरीं ।
 भ—कुशांस्तु ,, कोशांशमि ,, ।

२. कै—परं ।

३. रा—ऋज्योतिषं ।

४. ज ल भ—प्राग्ज्योतिषं पुरं चक्रे वसुश्चक्रे गिरिब्रजं ।

५. ज ल भ—तथा सुनुरयो* वीरो धर्मारण्यसमीपतः ।
 एषा वसुमती तस्य वसुवस्य महारमणः ।

६. ज व ल भ—विवूरतः ।

७. रा—समागधा ।

८. ज ल भ—एषा सा मागधी रम्या मागधा† विश्रुता युधि ।

९. कै रा—नाम ।

१०. व—वसोस्तस्य ।

११. ज ल भ—एते ते मागधा राम वसुवस्य महारमणः ।

१२. रा—सुसेत्रस्यास्यमाकिनी ।

*भ—भूवरयो । †ल भ—मगधा ।

- कुञ्जनाभोऽपि राजर्षिः कन्याशतमनुत्तमम् ॥१०॥^१
- १०] जनयोमास दुर्धर्षो घृताचर्यो रघुनन्दन । [१०
रूपयौवनशालिन्यस्ताः कदाचिदलङ्कृताः ॥११॥^२
- ११] उद्यानभूमिमासाद्यं चिक्रीडुर्विद्युतो यथा । [११
गायन्त्यो नृत्यमानाश्च वादयन्त्यश्च राघव ॥१२॥
- १२] आमोदं परमं जग्मुर्वनमाल्यैरलङ्कृताः । [१२
अथ ताश्चारुसर्वाङ्गी रूपेणाप्रतिमा भुवि ॥१३॥ [१३पृ
- १३] दृष्ट्वा सर्वत्रगो वायुरिदं वचनमब्रवीत् । [१४उ
अहं वः कामये सर्वा भार्या भवत मेऽबलाः ॥१४॥
- १४] त्यक्त्वा मानुष्यकं भावममरत्वमवाप्यताम् ।^३ [१५
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा वायोर्वचनमङ्गनोः ॥१५॥
- १५] मुक्तो हास्यं ततः सर्वा वायुं वचनमब्रुवन् ।^४ [१७

१. ज ल भ—पूर्वाधिवासितास्तेन सुचेन्ना सस्यमाङ्गिनः ।
कुञ्जनाभस्तु राजर्षिः कन्यानां शतमुत्तमं ॥

२. ज ल भ—सुपुत्रे देवरूपायां ।

३. कै—घृताचर्यां ।

४. ज ल भ—तास्तु यौवनशालिन्यो रूपेणाप्रतिमा भुवि ।

५. ज ल भ—उद्यानभूमिमागम्य ।

६. ज व ल भ—गायन्त्यो वादयन्त्यश्च नृत्यन्त्यश्च यथासुखं ।

७. ज व ल भ—आस्वादं ।

८. ल भ—ततस्ता रूपसम्पन्ना यौवनेनाम्बलङ्कृताः ।

ज—नास्ति ।

९. ज ल भ—अबलीः कामये सर्वा भार्या मे भवतेति वै ।

१०. ज ल भ—मानुषस्यज्यतां खेदो दीर्घमायुरवाप्यताम् ।

११. ज व ल भ—वाचोरमितकर्मणः ।

१२. वा—कृत्वा । पुत्रपरपार्श्वे क्षोभितः ।

१३. ज ल भ—अबहस्य ततो वाक्यं कन्याशतमुवाच तं ।

अन्तश्चरसि भूतानां सर्वेषां किल मारुतः ॥१६॥

१६] प्रभावज्ञाः स्म ते सर्वाः^२ किमस्मानवमन्यसे । [१८

कुशनाभसुताः साध्वीः क्षमस्त्वं न हि मारुत ॥^११७॥

१७] स्थानाद् अंशैर्यितुं देव रक्षामः स्वकुलं वयम् । [१९

मा भूत् स कालो यद् वायो पितरं सत्यवादिनम् ॥^११८॥

१८] कामतः समतिक्रम्य वरयेम स्वयं वरम् । [२०

पिताऽस्माकं प्रभवति दैवतं नः परं पिता ॥^११९॥

१९] अस्मान् दास्यत्यसौ यस्मै स नो भर्ता भविष्यति ।^१ [२१

तासां तद्भवचनं श्रुत्वा वायुः क्लेशमन्वितः ॥२०॥

२०] बभञ्ज कन्या मध्ये ताः संप्रविश्यात्पतेजसा ।^१ [२२

N] ताः कन्या वायुना भग्ना विविशुर्भवनं प्रति^१ ॥२१॥ [२३पृ

उ२२] दृष्ट्वां भग्नाश्च ता रामं राजर्षिरिदमब्रवीत् । [२४उ

१. ज ल भ—स्वं सुरोत्तम ।

२. ज ब ल भ—प्रभावं ते विजानीमः ।

३. ज ल भ—कुशनाभसुताः सर्वाः समर्थस्त्वं न मारुत ।

४. ज भ—स्थानाच्छवावयितुं । ल—स्थानाः श्वापयितुं ।

५. ज ल भ—माभूत्कुलंको बंशेऽस्मिन्पितरं सत्यवादिनः ।

६. ज ल भ—भाषाहया* ह्यधर्मैश्च स्वयं* कन्या वरं ब्रजेत् ।

जमिता प्रभुरस्माकं दैवतं परमं पिता ।

७. ज ल—यस्मै नो दास्यति पिता स नो भर्ता भविष्यति ।

८. ज ल भ—तु ।

९. ज ल भ—परमकोपनः ।

१०. ल भ—प्रविश्य सर्वागान्नास्ति बभञ्ज अगवाप्सुः ।

ज— वभञ्ज ।

११. ज ल—विविशुर्भगरीं पितुः । ब—०र्भवनं पितुः ।

भ—०र्भगरं पितुः ।

१२. ज ल—तास्तदा दुःखिता दृष्ट्वा । भ—तास्तदा दुःखिता दृष्ट्वा ।

* ल—भाषहाव० । भ—भाषहाव स्वधर्मं हि यदि ।

- किमिदं कथ्यतां पुत्र्यः को धर्ममवमन्यते ॥२२॥'
- २३] कुब्जाः केन कृता यूयं समाविश्य दुरात्मना ।^१ [२६
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कुशनाभस्य धीमर्तः ॥२३॥'
- २४] शिरोभिः शरणं गत्वा कन्याशतमभाषत । [३३, १
वायुरस्मानुपागम्य बलवान् काममोहितः ॥'२४॥
- २५] उत्क्रम्य धर्ममर्यादां प्रधर्षयितुमुद्यतः । [२
सोऽस्माभिरुक्तः सर्वाभिर्वायुः कामवशङ्कतः ॥'२५॥ [N
- २६] पितृमत्यः स्म भगवन् न स्वच्छन्दवरा वयम् ।^१
पितरं नोऽभियाचस्व न्यायतो यदि मन्यसे ॥'२६॥ [३
- २७] न वयं स्वैरचारिण्यः प्रसीद भगवन्निति ।
इत्युक्तः कुपितो वायुः प्रविश्यास्मांस्ततः प्रभो ॥'२७॥[N
- २८] बभञ्ज बलैवांस्तेन सर्वाः कुञ्जीकृता वयम् । [N

१. कै रा—अतः परमधिकः पाठः—

प्रोत्तिष्ठत्यः सुसंनस्ताः सङ्गजाः साभ्रह्मोचनाः ।

अबद्ध स पिता कन्यास्ततः परमकोपिः ॥

२. ज ल—विषेष्ट तानभाषत । भ-विषेष्टयो न भाषय ।

३. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

शंसन्वं किमिदं पुत्र्यः कुञ्जस्व कथमागतं ।

४. ज ल भ—ताः सुताः ।

५. ब—नास्ति ।

६. ज ब ल भ—अभिवाद्य पितुः पादौ सर्वा वचनमब्रवन् ।

वायुः सर्वत्रगः सोऽस्मान्कृदधर्षयितुं प्रभुः ।

७. ज ल भ—अगुभं मार्गमास्थाय न धर्मं पर्यवेक्षत ।

८. ज ल भ—पितृवस्थो वयं सर्वा न स्वातन्त्र्यमुपस्थिताः ।

९. ज ल भ—नास्ति ।

१०. ज ल भ—नास्ति ।

११. कै—वदतांस्तेन । पुनरपरकरशोषितोऽपपाठः ।

† ब—नैतदधर्षयितुं ।

इति तासां वचः श्रुत्वा कुम्भनाभो नराधिपः ॥२८॥'

२९] मृत्युवाच ततो रामं कन्याशतमिदं वचः । [६

यत् क्षान्तोऽतिक्रमो वायोः कृतं तन्मे महत् प्रियम् ॥' २९॥ [N

३०] पुत्र्यो मे यच्च युष्माभिः कुलमाभिर्ध्वं रक्षितम् ।'

अलङ्कारो हि नारीणां क्षमा पुत्र्यो विशेषतः ॥३०॥ [N

३१] पुंसां चैव विशेषेण क्षन्तव्यमिति मे मतिः ।

पु३२] दुष्करं च कृतं मन्ये यद् वायोः क्षान्तमीदृशम् ॥' ३१॥ [N

N] देशः कालश्च प्राप्तोऽयं सुपात्रप्रतिपादने ।'

प्रदानसमयं चैव मन्येऽहं वोऽद्य सूर्ध्वः ॥' ३२॥ [N

३३] गम्यतामिच्छतः पुत्र्यश्चिन्तयिष्यामि वो' हितम् ।

१. ज ल भ—इति तेन व्रथाणाः स्म वायुनोपहृता वृत्ता ।

तासां तु वचनं श्रुत्वा राजा परमधार्मिकः ।

२. ज—स धर्मात्मा । ल भ—महातेजाः ।

३. कै रा—वायुः ।

४. ज ल भ—भद्रं कृतमिदं पुत्र्यः कर्तव्यं महत्कृतम् ।

५. व—कुशयाभिः ।

६. ज ल भ—ऐकमत्वमुपागम्य कुलं वै रक्षितं मम ।

अलङ्कारः क्षमा पुत्र्यः स्त्रियो वा पुरुषस्य वा ॥

कै—अतः परमुपरिभागे पुनरपरकरादिभ्यस्तोऽधिकः पाठः—

भद्रं कृतमिदं पुत्र्यः कर्तव्यं च महत्कृतम् ।

ऐकमत्वमुपागम्य कुलं वै रक्षितं मम ॥

७. ज ल—दुष्करं तद्वचः क्षान्तं त्रिदशेषु विशेषतः ।

भ— .. तच्च वै

८. कै रा—म्यभिचारकृतं यस्मात्प्राप्तोयं तेन सुव्रताः ।

९. ज ल भ—प्राप्तोयं देशकाकञ्च सुपात्रप्रतिपादने* ।

यद्वायुना च कन्यास्तास्तत्र न्युज्यतीकृताः पुरा ॥

१०. रा—वै ।

*भ—ऐकमत्वमुपागम्य ।

*ल भ—०प्रतिपादने ।

- विद्युज्य चैव ताः कन्यास्ततः स नृपसत्तमः ॥३३॥' [N
 ३४] राजा प्रदानधर्मज्ञः चिन्तयामास मन्त्रिभिः ।'
 यद्वायुना चै ताः कन्यास्तत्र कुञ्जीकृताः पुरा ॥' ३४॥[N
 ३५] कान्यकुञ्जमिति ख्यातं ततः प्रभृति तत् पुरम् ।'
 एतस्मिन्नेव काले तु शूली नार्म महामुनिः ॥३५॥ [N
 ३६] ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचर्यं चकार किल दुष्करम् । [११
 तं ब्रह्मचारिणं राम तप्यमानं महत्तपः ॥३६॥'
 ३७] सोमपा नाम गन्धर्वी ऊर्णायुद्वहिता पुरा ।'
 परं नियममास्थाय सम्यक् परिचचार ह ॥'' ३७॥ [१२
 ३८] पुत्रार्थिनी ततो राम महर्षेर्भावितात्मनः ।'' [N

१. ज ब ल भ—कान्यकुञ्जमितिख्यातं* ततः प्रभृति तत्पुरः ।
 विद्युज्य कन्याः काकुत्स्थं राजा त्रिदशविक्रमः ॥

२. रा—प्रधानधर्मज्ञाः ।

३. ज ब ल भ—मंत्रज्ञो मंत्रयामास प्रदानं सह मंत्रिभिः ।

४. रा—शर्त ।

५. ज ल भ—नास्ति । पूर्वमायातः ।

६. ज ब—शूडिर्नाम । ल—शूडिर्नाम । इत्यपरहस्तेन ।

भ—शूडिर्नाम ।

७. ज ल—महामुनिः ।

८. ज ल भ—ऊर्ध्वरेताः शुभाचारो ब्रह्मतेजां ह्यङ्कृतः† ।
 तप्यमानं तु तस्यर्षिः‡ गन्धर्वी तमुवाच ह ॥

९. ज—सोमपा नाम भद्रं ते तूर्णायुद्वहिता पुरा ॥

ल भ—, , , , ऊर्णायुद्वहिता तदा ।

ब—सोमपा नाम गन्धर्वी तूर्णायुद्वहिता पुरा ।

१०. ज ल भ—नास्ति ।

*ल-कन्याकुञ्ज । †ब ल-तेजोऽम्ब ।

‡ल-शूडि सं तु ।

- साऽभवत् प्रयता भृत्वा शुश्रूषणपरायणा ॥३८॥ [१३पू
 ३९] स तां कालस्य महंतः प्रोवाच परितोषितः ।^१
 परितुष्टो ऽस्म्यहं भद्रे ब्रूहि किं करवाणि ते ॥^२३९॥ [१४
 ४०] परितुष्टं मुनिं दृष्ट्वा गन्धर्वी मधुराक्षरा ।
 उवाच प्राञ्जलिर्भृत्वा वाक्यमात्महितं तदा ॥^३४०॥ [१५
 ४१] दीप्यसे परया लक्ष्म्या ब्राह्म्या त्वमनया यथा ।^४
 तथाऽहं पुत्रमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मश्रियान्वितम् ॥४१॥ [१६
 ४२] स्वयं च वरये त्वाऽहं भर्तारमपरिग्रहा ।

१. ज ल—सा तदा ।

भ—सा तथा ।

२. ब—कालेन महता ।

३. ज ल भ—उवास काले धर्मज्ञस्तस्यास्तुष्टोभवद् गुरुः ।

स तथा काश्यपेन प्राञ्जलीप्रयुक्तम् ॥

४. ज ल भ—परितुष्टोस्मि भद्रं ते किं करोमि तव प्रिये ।

५. ज ल भ—परितुष्टं मुनिं ज्ञात्वा गन्धर्वी मधुराक्षरा ।

उवाच परमोदारं वाक्यञ्च वाक्यमब्रवीत्* ॥

६. ब—वया ।

७. ज ल भ—ब्रह्म्या† लक्ष्म्यानया ब्रह्मन्दीप्यसे ब्रह्मवित्तम् ।

त्वत्तो लक्ष्म्या‡ त्वया‡ ब्रह्मन्पुत्रमिच्छामि धार्मिकं ।

८. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

न पतिञ्जास्तिमे ब्रह्मन्म भार्या चास्मि कस्यचिद् ।

ब— नुदितः ।

* ल-वाक्यकोषिद्म् । † ल-वाद्या ।

‡ ल-तथा । भ-कस्या तथा ।

- अनन्यपूर्वा भज मां याचमानामनुव्रताम् ॥^{१४२} ॥ [१७
 ४३] तस्यै प्रसन्नो विमर्षिर्ददौ पुत्रं ययेप्सितम् ।
 ब्रह्मदत्त इति ख्यातः सोऽभेवच्छूलिनः सुतः ॥^{१४३} ॥ [१८
 ४४] ब्रह्मदत्तः स राजर्षिः पुरमध्यवसत् तदा ।
 काम्पिष्ठं नाम काकुत्स्थ देवराजसमद्युतिः ॥^{१४४} ॥ [१९
 ४५] तं श्रुत्वा परया लक्ष्म्या कुशनाभोऽन्वितं नृपम् ।
 ब्रह्मदत्ताय ताः कन्याः प्रदातुमुपचक्रमे ॥^{१४५} ॥ [२०
 ४६] स तमाहूय धर्मज्ञो ब्रह्मदत्तं महीपतिम् ।
 ददौ कन्याञ्चतं तस्मै सुप्रीतेनान्तरात्मना ॥^{१४६} ॥ [२१

१. ज भ—भजमानां पतिवतां । ल—भजमानं यत्नवतं ।

२. भ—भतः परमधिकः पाठः—

ब्राह्मण्ये ननु संयुक्तं दातुमर्हसि सुव्रतं ।

३. ज ल भ—तस्याः ।

४. ज ल भ—ब्रह्मर्षिर्ददौ ।

५. ज ब—सोभूष्ण्डीसुतो नृपः ।

ल—सोभूः शूलिसुतो नृपः । पुनः शोचितः ।

६. भ—ब्रह्मदत्त इति ख्यातोऽभेवच्छूडीसुतो नृपः ।

७. ज ल भ—वास्ति ।

८. रा—ते ।

९. ज ल—स बुद्धिमकरोद्राजा कुशनाभः सुधार्मिकः ।

भ—स बुद्धिमकरोजानु कुशनाभः सुधार्मिकः ।

१०. ज ल—ब्रह्मदत्ताय काकुत्स्थं दत्तं कन्याञ्चतं तदा ।

भ— ” ” ” ” ” ” ।

११. ज भ—तमाहूय महासेना ब्रह्मदत्तं महीपतिः ।

१२. ज भ—राजा ।

१३. ल—वास्ति ।

४७] यथाक्रमं च सर्वासां तासामनुपमद्युतिः ।

जग्राह विधिवत् पाणिं ब्रह्मदत्तो नराधिपः ॥४७॥' [२२

४८] तेन च स्पृष्टमात्रेषु ताः पाणिषु गतव्ययाः ।

बभूवुः सर्वज्ञः कन्या रूपौदार्यगुणान्विताः ॥'४८॥ [२३

४९] तां दृष्ट्वा वायुना मुक्ताः कुशर्नामो महीर्षतिः ।

विस्मयं परमं चक्रे मुमुदेऽभिननन्द च ॥'४९॥ [२४

५०] कृतोद्वाहं च राजानं ब्रह्मदत्तं रघूद्भवह ।'

सदारं प्रेषयामास स्वर्पूरं परमार्जितं ॥५०॥ [२५

१. ज भ—यथाक्रमं तथा पाणिं जग्राह रघुनन्दन ।

ब्रह्मदत्तो महीपाशस्तासां देवपतिर्षथा ॥

ल—नास्ति ।

२. ज भ—स्पृष्टमात्रे तथा* पाणौ किञ्चरं विपुलं क्षुचि ।

युक्तं परमया कन्या कन्यासतमभूतदा ॥

ल—नास्ति ।

३. ज ल भ—सः ।

४. ज ल भ—कुशनामः सुतास्तदा ।

५. ज ल भ—बभूव परमप्रीतो हर्षवाग्पाकुलेक्ष्वः ।

६. ज ल भ—कृतोद्वाहं तु राजा वै ब्रह्मदत्तं महासुनि ।

७. ज—सोपाब्जावगच्छं तथा ।

ल भ— ,, तथा ।

तं तथा सदृशैर्दारैरन्वितं पुत्रमागतम् ।

५१] मुमुदे सोमपा प्रीता दृष्ट्वा चाभिननन्द च ॥५१॥'

[२६

इत्यार्षे रामायणे बाळकाण्डे^२ ब्रह्मदत्तविवाहो^३

नाम त्रिंशः^४ सर्गः ॥^५३० ॥

१. ज ल भ—स सोमपास्तु* ताः प्राप्य पुत्रस्य सदृशीः त्रिंशः* ।

कन्या गृहीत्वा सम्पूज्य कुरानामं मुदा† यथा ॥

२. कै—आदिकाण्डे ।

३. ज ल—वैवाहिको । भ—कन्यावैवाहिको ।

४. कै रा—पंचत्रिंशः । ज—अष्टात्रिंशः ।

व ल भ—नास्ति ।

५. ज भ— ॥ २८ ॥

* ल—सोमपापितु तं प्राप्य सदृशीं त्रिंशाम् ।

भ—सोमपापितुः ।

† ल भ—तथा ।

[वं=३६]

[एकत्रिंशः सर्गः]

[दा=३४]

- कृतोद्वाहे गते तस्मिन् ब्रह्मदत्ते नराधिपे ।
१.] अपुत्रः कुशनाभोऽथ पुत्रीयामिष्टिमार्भत् ॥१॥ [१
तस्यां च वर्तमानायां कुशनाभं तदा नृपम् ।
२.] उवाच परमपीतः कुशो ब्रह्मसुतस्तदा ॥२॥ [२
पुत्रस्ते सदृशः पुत्र भविष्यति सुधार्मिकः ।
३.] गाधिः प्राप्स्यसि तेन त्वं कीर्तिं लोके च शाश्वतीम् ॥३॥ [३
एवमुक्त्वा कुशो राम कुशनाभं प्रोपतिम् ।
४.] जगामाकाशमास्थाय ब्रह्मलोकं सनातनम् ॥४॥ [४
कस्यचित् त्वथ कालस्य कुशनाभस्य धीमतः ।
५.] प्राजायत सुतो राम गाधिर्नाम महायज्ञाः ॥५॥ [५
स पिता मम धर्मात्मा गाधिः सत्यपराक्रमः ।

१. ज ल भ—तदा ।
२. ज ल भ—नराधिपः ।
३. कै रा—पुत्रीयामिष्टिमाहरत् ।
४. ज ल भ—इहयां तु ।
५. ज ल भ—गाधिः ।
६. भ—कीर्तिलोके च शाश्वती ।
७. ज—एवमुक्तः ।
८. रा—कुशनाभं ।
९. रा—प्राजापतिसुतो ।
१०. ज ल—जज्ञे परमसन्नुहो गाधिर्नाम सुतस्वतः ।
भ—वज्ञे परमधर्मिष्ठो " " ।
११. ज—काकुत्स्थो । ल भ—काकुत्स्थ ।
१२. ज ल भ—परमधार्मिकः ।

- ६] कुशवंशयोऽभेवद् राजा गाधिजोऽहं रघूद्रह ॥६॥ [६
 अनुजा भगिनी चापि मम राघव सुव्रता ।
- ७] नाम्ना सत्यवती राम ऋचीके प्रतिपादिता ॥७॥ [७
 भर्तृव्रतत्वाद् भर्त्रैव सह गत्वा सुरालयम् ।
- ८] कौशिकी परमोदारा सा प्रवृत्ता महानदी ॥८॥ [८
 स्वर्ग्या पुण्योदका रम्या हिमवन्तमुपाश्रिता ।
- ९] इयं पावयितुं लोकान् प्रवृत्ता भगिनी मम ॥९॥ [९
 अहं हि हिमवत्पार्श्वे वसामि निरतः सुखी ।
- १०] भगिन्याः स्नेहतो राम कौशिक्या नियतव्रतः ॥१०॥ [१०
 सैषा सत्यवती पुण्या सत्यधर्मपरायणा ।
- ११] पतिव्रता महाभागा कौशिकी सरितां वरा ॥११॥ [११

१. रा—कुशवंशोभेवद्राजा । व—०वरयो भवेद्राजा ।

२. ज भ—कृष्णादेवं प्रसूताः रम कौशिका रघुनन्दन ।
 ल—कृष्णादेव " " " " ।

३. ज ल भ—पूर्वजा ।

४. ज ल भ—वैव ।

५. ज—सुव्रत ।

६. ज ल भ—नाम ।

७. ज—भर्तारमनुरुष्यती सशरीरा दिवं गता ।

ल भ—भर्तारमनुष्यती ।

८. व—सात्र वृत्ता ।

९. ज ल—स्वर्गपुण्योदका ।

१०. ज ल भ—लोकस्य हितकामार्थं प्रवृत्ता भगिनी मम ।

११. ज ल भ—ततो हिमवतः पार्श्वे निवसामि ततः* सुखम्* ।

भगिन्या स्नेहसंयुक्तः कौशिक्या रघुनन्दन ।

१२. ज—सत्ये धर्मे च संस्थिता । भ—सत्यं धर्मं च संस्थिता ।

१३. ल—नास्ति ।

- अहं च नियमं कञ्चिदास्यातुं रघुनन्दन ।
 १२] सिद्धाश्रममनुप्राप्तः सिद्धोऽस्मि तव तेजसा ॥१२॥ [१२
 एषा राम ममोत्पतिः स्वस्य वंशस्य कीर्तिता ।
 १३] देवस्य वास्य निर्द्विषिं यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥१३॥
 स्थितोऽर्धरात्रः काकुत्स्थ कथां कथयतो मम ।
 १४] निद्रां भजस्व भद्रं ते विघ्नोऽयं माऽस्तु नोऽधुना ॥१४॥ [१४
 निःस्पन्दास्तरवः सर्वे संलीनमृगपक्षिणः ।
 १५] नैशेन तमसा व्याप्ता दिशश्च रघुनन्दन ॥१५॥ [१५
 सूक्ष्मेणाजनचूर्णेन नभः कृत्स्नमिवाजितम् ।
 १६] ग्रहनक्षत्रताराभिः काञ्चनीभिर्वावाहृतम् ॥१६॥ [१६
 उदेति चासौ शीतांशुर्लोककान्तो निश्चाकरः ।
 १७] अंशुभिः स्वैर्जगच्छीतैर्घर्मान्तं ह्लादयन्निव ॥१७॥ [१७
 निश्चाचराणि सर्वाणि सत्त्वानि विचरन्ति च ।
 १८] यक्षरक्षोगणाश्चैव ये चान्ये पिशिताशनाः ॥१८॥ [१८

१. ज भ—अहं तु नियमस्यास्य सिद्धयर्थं रघुनन्दन ।

ल—नास्ति ।

२. रा—निर्विषि ।

३. ज ब ल भ—गतोर्धरात्रः ।

४. ज ल भ—नास्ति ।

५. ज ल भ—निष्पन्मृगपक्षांस्तरवः संलीना मृगपक्षिणः ।

६. ज ल भ—काञ्चनाभिरिवाहृतं ।

७. ज ल भ—स्वैर्जगच्छीतैर्घर्मान्तं रघुनन्दन ।

८. ज ल भ—नास्ति ।

९. ज ल—यक्षरक्षोगणाश्चैव ये चान्ये पिशिताशिनः ।

भ—यक्षरक्षोगणाञ्चान्ये ये चैव पिशिताशनाः ।

१०. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

निद्रां भजस्व भद्रं ते विघ्नो वै माण्डवोऽस्तु वः* ।

- एवमुक्त्वा कौशिको वै' विररामं महाद्युतिः ।
 १९] साधु साध्विति 'ते सर्वे मुनयः प्रशंससिरे ॥१६॥ [१९
 रामोऽपि सहसौमित्रिः' किञ्चिदागतविस्मयः ।
 N] प्रणम्यं मुनिशार्दूलं निद्रावस्रमुपेयिवान् ॥२०॥ [२३

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे^८ विश्वामित्रवन्द- कीर्तनं
 नाम एकत्रिंशः^९ सर्गः ॥३१॥^{१०}

१. ज ल भ—महातेजा ।
२. ल—विरवामित्रो ।
३. ज ल भ—महाद्युतिः । व—महाद्युतिः ।
४. ज ल—तत् । व—सं ।
५. ज ल भ—प्रत्यपूजयत् ।
६. ज ल भ—राघवोपि सहसौमित्रिः ।
७. ज ल भ—प्रशंसत् ।
८. कै—वादिकाण्डे ।
९. कै—चत्त्रिंशः । रा—चत्त्रिंशः ।
 ज—एकोनत्रिंशः । व ल भ—नस्ति ।
१०. ज भ—॥२६॥

[वं=३७] [द्वात्रिंशः सर्गः] [दा=३५]

ते रात्रिशेषं मृषुषुः शोणतीरे महर्षयः ।

१] प्रभातायां तु शर्वर्यां विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ॥१॥^१ [१

कौसल्यामातरुत्तिष्ठ मुप्रभाता निशा तव ।

२] पूर्वा सन्ध्यामुपाभ्यर्चनां गमनायाभिरोचय ॥२॥^२ [२

तच्छ्रुत्वोत्थाय रामोऽपि कृत्वा पौर्वाह्निकक्रियाम् ।

३] गमनं रोचयामास वचनं चेदमब्रवीत् ॥३॥^३ [३

अयं शोणः शुचिजलो गाधः पुँलिनमण्डितः ।

४] कतमेन पथा ब्रह्मंस्तरिष्याम इमं वयम् ॥४॥ [४

१. रा—मित्रो भ्यभाषत ।

२. ज ल भ—शुचिण्यां तु ततस्तेषां शोणकूले मनोहरे ।

निशायां तु* प्रभातायां* विश्वामित्रोभ्यभाषत ।

मुप्रभाता निशा राम पूर्वसंध्या प्रवर्तते ।

व—पुस्तके केवलं तृतीया पङ्क्तिरधिका ।

३. ज भ—उचिहोसिद्ध भद्रं ते गमनं प्रतिरोचय † ।

४. ज भ ल—तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य कृत्वा पूर्वाह्निका‡ क्रियां ।

गमनं नोदयामास वाक्यं चेदमुवाच ह ।

५. कै—ह्यगाधः पुक्षि० । पुनरपरकरेण शोधितः ।

ज भ—ह्यगाधः पुक्षिनाम्बितः । ल—ह्यगाधा पुलिनाः ।

६. ज ल—कथमेव यथा ब्रह्मंस्तरिष्यामः सुखं वयम् ।

भ—कथयेनं यथा " " " ।

* भ—मुप्रभातायां । † ल भ—पुत्र रोचय । ‡ भ—पूर्वाह्निकी ।

- इत्युक्तः प्रत्युवाचाथ विश्वामित्र इदं वचः । [५४
 ५] रामं कमलपत्राक्षं तदा संहर्षयन्निव ॥५॥ [N
 गौध एष महाबाहो तरितव्यो यथासुखम् । [N
 ६] एष पन्था मयोद्दिष्टो येन यान्ति महर्षयः ॥६॥ [५३
 ते गत्वा दूरमध्वानं गते च दिवसे तदा ।
 ७] जाह्नवीं सरितां श्रेष्ठां ददृशुः परमर्षयः ॥७॥ [७
 तां दृष्ट्वा पुण्यसलिलां गङ्गां मुनिजर्नप्रियाम् ।
 N] कथमेतां तरिष्यामो गन्तव्यं वा कुतो मुने ॥८॥ [N
 इत्युक्तः प्रत्युवाचेदं विश्वामित्रो महामुनिः ।
 N] रामं कमलपत्राक्षं हर्षयन्निदमब्रवीत् ॥९॥ [N
 इतस्त्रियोजनादूर्ध्वं सन्तरिष्याम जाह्नवीम् ।
 N] अस्मिन्नेव समुत्तीर्य तीर्थं शोणपिर्मं नदम् ॥१०॥ [N
 एष पन्थाः शिवः क्षेमः स्वादुमूलफलोदकः ।
 N] अनेन राम यास्यामः पथां मुखमनामयम् ॥११॥ [N

१. रा—इत्युक्त्वा ।

२. ज ल भ—नास्ति ।

३. कै—अगाधः । पुनरपरकरेण शोधितः ।

४. ज ल भ—सोमबीजाद्य एषोत्र तरितव्यं यथासुखम् ।

५. कै रा—अतः परं द्वादशश्लोकान्तः पाठो नास्तिः ।

६. ज ल भ—इंससारससेवितां ।

७. ज—इत्युक्त्वा ।

८. ज—तीर्थं । भ—तीर्थे ।

९. ज व ल—शोणमिदं ।

१०. ज—वास्यामः पन्थाः । भ—यास्यामो वथा ।

११. ज—सुखमनामयः ।

- ते तमध्वानमचिरात् सुखेनोत्तीर्य^१ जाह्नवीम् ।
 N] ददृशुर्मुनयः सिद्धा आश्रमं श्रमनाशनम् ॥१२॥ [N
 तां ते शुचिजलां दृष्ट्वा हंससारसशोभिताम् ।
 C] बभ्रुवुर्मुदिताः सर्वे मुनयैः सहराघवौः ॥१३॥ [C
 तस्यास्तीरे च^२ ते^३ चक्रुस्तदा वासपरिग्रहम् । [९
 ९] ततः स्नात्वा यथाकामं सन्तर्प्य पितृदेवताः ॥१४॥
 हुत्वा चैवाग्निहोत्राणि प्राश्य चामृतवद्धविः । [१०
 १०] विविशुर्जाह्नवीतीरे शुचौ मुदितमानसाः ॥१५॥
 विश्वामित्रं महात्मानं परिवार्य ऋष्यन्तः । [११
 ११] अथै^४ तत्रै^५ तदा रामो विश्वामित्रमभाषत ॥१६॥
 भगवन् श्रोतुमिच्छामि यथेयं सरितां वरां । [१२
 १२] त्रैलोक्यपथंगां गङ्गां गता नदनदीपतिम् ॥१७॥ [१३
 नोदितो रामवाक्येन विश्वामित्रो महामुनिः ।

१. ज भ—मुखेनोत्तीर्य ।

२. ज ल भ—गंगां मुनिजनप्रियां ।

३. ज ल—राघवो मुनयस्तदा । भ—राघवो मुनयस्तथा ।

४. कै रा—तदा ।

५. ज ल भ—चक्रुर्निवासं मुनयस्तदा ।

६. ज ल भ—सर्वे ।

७. ज—वास तत्र । ल—वसंस्तत्र ।

८. कै—मगवांछोतु० । व—भगवं चोतुमि० ।

९. ज ल—गंगा त्रिपथगा नदी । भ—गंगां त्रिपथगां ।

१०. ज ल—त्रिलोक्यं कथमाक्रम्य ।

भ—त्रिलोक्ये कथमाक्रम्य ।

- १३] जन्मप्रमृति गङ्गायाः प्रावदत् प्रभवागमम् ॥'१८॥ [१४
 शैलेन्द्रो हिमवान् नाम रत्नानामाकरो महान् ।
- १४] तस्य कन्याद्वयं जैत्रे रूपेणाप्रतिमं भुवि ॥१९॥ [१५
 सुमेरोर्दुहितो राम तयोर्माता सुमध्यमा ।
- १५] नाम्ना मनोरमा देवी पत्नी हिमवतोऽभवत् ॥'२०॥ [१६
 तस्यां गङ्गेयमभवज्ज्येष्ठा हिमवतः सुता ।
- १६] उमा नाम द्वितीयाऽभूत् कन्या तस्यैव राघव ॥२१॥' [१७
 अथ ज्येष्ठां हिमवतः सुतां गङ्गामनिन्दिताम् ।
- १७] वरयाञ्चक्रिरे देवा आत्मकार्यचिकीर्षवः ॥२२॥' [१८
 ददौ चापि स धर्मेण तेभ्यस्त्रैलोक्यपावनीम् ।
- १८] स्वच्छन्दपथगां देवीं सुतां गङ्गां महानदीम् ॥२३॥' [१९
 प्रतिगृह्य च गङ्गां ते त्रैलोक्यपथचारिणीम् ।
- १९] यथागतं ययुर्देवास्तदा पूर्णमनोरथाः ॥२४॥' [२०

१. ज ल भ—वृद्धि जन्म च गङ्गाया वक्तुमवापचक्रमे ।

२. कै रा—रत्नाकरसमान्वितः ।

३. ज ल भ—राम ।

४. ज ल भ—मेरोर्दुहितरा । रा—मेरोर्दुहितरो ।

५. ज ल भ—नाम्ना मनोरमा नाम पत्नी हिमवतः प्रिया ।

६. ज ल भ—नस्ति ।

७. य—स तु कार्यचिकीर्षवः ।

८. ज ल भ—अथ ज्येष्ठां सुतां राम देवाः सत्रचिकीर्षवः ।

शैलेन्द्रं वरयामासुर्गंगां त्रिपथगां नदीं ॥

९. ज ल भ—ददौ धर्मेण हिमवांस्तनयां त्रैलोक्यपावनीं ।

स्वच्छां त्रिपथगां गंगां त्रैलोक्याहृतकाम्यया ॥

१०. ज ल भ—प्रतिगृह्य तु त्रैलोक्यं* त्रैलोक्य*—हितकाम्यया ।

गङ्गामादाय ते त्रैलोक्यं* कृतार्थास्त्वंतरात्मभिः ॥

* भ—तां गंगां त्रैलोक्यां ।

- सा तु शैलेन्द्रदुहिता द्वितीया रघुनन्दन ।
 २०] औग्र्यं व्रतमुपाश्रित्य तपस्तेपे तपोधनौ ॥२५॥ [२१
 तामप्युग्रतपःसिद्धां ददौ शैलवरंः सुताम् ।
 २१] रुद्राय याचमानाय उग्रां लोकनर्मस्कृताम् ॥२६॥ [२२
 इत्येते शैलराजस्य सुते राम बभूवतुः ।
 २२] गङ्गा च सरितां श्रेष्ठा देवीनां चाप्युमा वरं ॥२७॥ [२३
 तत्र पावयितुं लोकानिमांस्त्रीन् स्वेन तेजसा ।”

१. ज ल भ—यावत्सा* शैलतनया केशिनी लोद्वघुनन्दन ।
 २. ज ल भ—उग्रं सा व्रतमास्याय ।
 ३. ज—तपोधन ।
 ४. ज—उग्रेण तपसा युक्तं । ल भ—उग्रेण तपसा युक्तां ।
 ५. ल—शैलपति ।
 ६. ब—सर्वलोकनर्मस्कृतां ।
 ७. ज—रुद्रायाप्रतिवीर्याय लोकसंपूजितां पुमान् † ।
 ८. ज ल—एते ते शैलराजस्य उभे‡ सुदयिते सुते ।
 ९. ज ल भ—देवी चोमा रघूत्तम ।
 ब—,, ,, रघूद्वह ।
 १०. ज ल भ—एतत्ते सर्वमाख्यातं यथा त्रिपथगा नदी ।

* भ—या खन्या ।

† भ—लोकसंपूजितामिमां ।

‡ भ—शुभे ।

२३] गङ्गा भवर्तते राम सर्वभूतहिते रता ॥ २८ ॥'

[N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे^१ गङ्गोत्पत्तिर्नाम
द्वात्रिंशः^५ सर्गः ॥३२॥'

१. ज ल भ—गं गता^१ प्रथमं गंगा^२ गंगा^३ मतिमतां वर^४ ।

२. अतः परमधिकः पाठः—

ज—उवाच देवं भर्तारं संप्राप्ता च सुमध्यमा ।

ल—शैलेन्द्रः वरयामास ,, ,, ,, ।

भ—उमा च देवं भर्तारं ,, ,, ,, ।

३. कै व—आदिकाण्डे ।

४. कै रा—सप्तत्रिंशः । ज—खिद्यतितमः ।

व ल भ—नास्ति ।

५. ज भ—॥३०॥

1. ल भ—गां गता । 2. ल भ—राम । 3. ल—देवाः मन्त्रविकारिणः ।

[वं=३८] [त्रयस्त्रिंशः सर्गः] [दा=३६]

उक्तवाक्ये मुनौ तस्मिन् रामः पप्रच्छ तं पुनः ।

१] विश्वामित्रं सुखासीनं महात्मानं कृताञ्जलिः ॥१॥ [१

कथेयं कथिता ब्रह्मन् पुण्यश्रवणकीर्तना ।

२] या त्वया तां पुनः श्रोतुमिच्छामि बहुविस्तरम् ॥२॥ [N

उमा केनाभवद् देवी कौमारब्रह्मचारिणी ।

३] अर्वापि देवमतरं पतिं देवं महेश्वरम् ॥३॥

[N

हेतुना केन चैवेयं गंगा त्रिपथगाऽभवत् ।

[४पू

१. ज—तस्मिन्मुनौ तौ रामकथयतां ।

ल भ—तस्मिन्मुनौ ,, ,, ।

२. ज भ—प्रतिनद्य कथां वीरावभ्रतां मुनिपुंगवः ।

ल— ,, ,, वीरावभ्रतां पुनिपुंगवम् ।

३. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

युक्तरूपमिदं ब्रह्मकथितं मधुराक्षरं ।

४. रा—•अवनकीर्तना ।

५. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

बुद्धितुः सौख्यराजस्य ज्येष्ठा वा वस्तुमर्हसि ।

विस्तरं विस्तरञ्चोसि कथां नो दिशि चेह च ।

६. ज ल भ—पुनस्तां श्रोतुमिच्छामि त्वत्तोऽहं बहुविस्तरां* ।

७. रा—कौमारव्रतचारिणी । ल—•व्रतचारिणी ।

८. ज ल भ—अवाप्य ।

९. ज ल भ—भूत०

* ल—बहुविस्तरं ।

- ४] कथं देवनदी चेयं मानुषानं समुपागता ॥४॥ [N
 त्रिषु लोकेषु विख्यातां कैश्च धर्मैरधिष्ठिता । [४उ
 ५] एवं ब्रुवति काकुत्स्थे विश्वामित्रो महातपाः ॥५॥
 विस्तरेण कथामेतां व्याख्यातुमुपचक्रमे ।^० [५
 ६] पुरा राम कृतोद्वाहः शितिकण्ठो महातपाः ॥६॥
 उमा च स्पर्धया देवी मैथुनायोपजग्मतुः । [६
 ७] शितिकण्ठस्य देव्याश्च दिव्यं वर्षशतं गतम् ॥७॥ [७पू
 न चैवैकतरस्यासीत् तयोः राम पराजयः । [८पू
 ८] ततो देवीं ययुश्चिन्तां पितामहपुरोगमाः ॥८॥
 यदत्रोत्पत्स्यते भृतं सोढां कोऽस्य भविष्यति ।^१ [९
 ९] तेऽभिगम्यं सुराः सर्वे प्रणिपत्य वृषध्वजम् ॥९॥

१. अ—मानुषं । । ल अ—मानुष्यं ।

२. अ ल अ—अतः परमधिकः पाठः—

कथं* त्रिपञ्चगा गंगा प्रोच्यते देवमानुषैः ।

३. अ ल अ—धर्मज्ञ ।

४. अ ल अ—रघुहिता ।

५. रा—काकुत्स्थो ।

६. अ ल अ—तथा तयोस्तु ब्रुवतोर्विश्वामित्रो महातपाः+ ।

७. अ ल अ—निकितेन कथां दिव्यामृषिमध्ये तलोत्तरीय ।

८. ल—शितिकण्ठो ।

९. अ ल अ—शैवान्यतरस्यासीत् ।

१०. रा—सोढः । अ—सोढं ।

११. अ ल अ—यदि चोत्पत्स्यते पुत्रः सोढा कस्तं भविष्यति ।

१२. अ—तेऽपि गत्वा ।

* ल अ—कथानां । + ल—महातपः ।

- शितिकण्ठं महात्मानमिदं वचनमब्रुवन् । [१०
 १०] देवदेव महाभाग सर्वभूतहिते रत ॥^११०॥
 सुराणां प्रणिपातेन प्रसादं कर्तुमर्हसि । [११
 ११] न तेऽपत्यं धारयितुं शक्तेयं पृथिवी विभो ॥^३११॥ [N
 न लोकाः सर्वशश्चेमे सोढुं ते वीर्यसंभवम् ॥^५ [१२पृ
 १२] आत्मनैवात्मनस्तेजस्त्वं धारयितुमर्हसि ॥^११२॥^६ [N
 सहानयैव देष्या त्वं ब्रह्मचारी भवेश्वर ।^८
 १३] अस्माकं च धरायाश्च लोकानां हितकाम्यया ॥^९१३॥ [N
 पृ१४] धारयात्मभवं तेजः स्वयमेक्योमया सह ।^९
 रक्ष लोकानिमान् देव न, लोकान् हर्तुमर्हसि ॥^११४॥ [१३
 १६] इति तेषां वचः श्रुत्वा देवानां भगवान् शिवः ।
 शिवेन मनसा युक्तो देवान् वचनमब्रवीत् ॥^११५॥^{१०} [१४

१. ज ल भ—नास्ति ।

२. ज ल भ—देवदेवं महादेवं* सर्वभूतहिते रतं ।

३. ज ल भ—नास्ति ।

४. ज भ—न लोका धारयिष्यन्ति तवापत्यं सुरोत्तम ।

५. ज भ— नास्ति ।

६. ल—नास्ति ।

७. ज भ—ब्रह्मचर्यैव संयुक्तो देष्या सह तपस्वरत्नं ।

८ ज ल—त्रैलोक्यहितकामस्त्वं तेजो धारय तेजसा ।

९. ल—वयं च चरणं याता न लोकान् हर्तुमर्हसि ।

१०. ज ल भ—देवतानां वचः श्रुत्वा सर्वलोकमहेश्वरः ।

बाहामित्यब्रवीत्सर्वाङ्गुनमेवमुवाच ह ॥

* भ—महाभागं ।

† भ—परस्परं ।

- १७] धारयिष्याम्यहं तेजः समुद्भूतं सहोमया ।
 निर्दृत्ता भवतेत्येवं मुनींश्चेदमुवाच ह ॥१६॥ [१५
- १८] यच्चेदं क्षुभितं स्थानान्मम तेजो' हनुत्तमम् ।
 धारयिष्यति कस्तन्मे प्रोच्यतां सुरसत्तमाः ॥१७॥ [१६
- १९] एवमुक्तास्ततो देवाः प्रत्यूचुर्दृषभध्वजम् ।
 यत् तव क्षुभितं तेजस्तद् धरा धारयिष्यति ॥१८॥ [१७
- २०] एवमुक्तः सुरश्रेष्ठः प्रमुपोच महाबलः ।
 तेजस्तत् पृथिवी येन व्याप्तां सगिरिकाननां ॥१९॥ [१८
- २१] ततो देवाः पुनरिदमृचुः सर्वे हुताशनम् ।
 प्रविश त्वं महातेजो रौद्रं वायुसमन्वितः ॥२०॥ [१९
- २२] तदग्निना पुनर्व्याप्तं स जातः श्वेतपर्वतः ।
 दिव्यं शरवंणं चैव पावकादित्यवर्चसम् ॥२१॥
- २३] यत्र जातो महातेजोः कार्तिकेयोऽग्निसंभवः । [२०
 ततो देवीं शिवं चैव देवाः सर्वेऽभ्यपुंजयन् ॥२२॥

१. व—निर्दृता भवतीत्येवं ।

२. ज ल भ—नास्ति ।

३. ज ल भ—यद्विदं ।

४. ल—क्षुभितं ।

५. म—स्थानात्समरेतो ।

६. ज ल भ—कस्तं ।

७. ज ल भ—सुरपतिः ।

८. ज ल भ—व्याप्तं तदगिरिकाननं ।

९. ज ल भ—सुरपतिं प्रोचुः ।

१०. रा—रौद्रं ।

११. रा—शरवणं । कै व ज ल—शरवणं ।

१२. म—महावीर्यः ।

१३. ज ल भ—सर्षिणास्तदा ।

- २४] प्रह्वानतशिरःकायाः साधु साध्विति चाब्रुवन् । [२१
 अथ शैलस्रुता राम त्रिदशानंभिवीक्ष्य तांन् ॥२३॥ [२२पृ
 २५] समन्युरशपत् सर्वानै क्रोधसंरक्तलोचर्ना । [२३उ
 यस्मादपत्यं सदृशममरा मम नोऽभवत् ॥२४॥ [N
 २६] अपत्यं स्वेषु दारेषु र्ययं नोत्पादयिष्यथ ।^०
 उक्त्वा चैव सुरान् सर्वान् शशाप पृथिवीमपि ॥२५॥ [२६
 २७] त्वमप्यूषरसङ्कीर्णा भविष्यसि वसुन्धरे ।^० [N

१. ज ल भ—पूजयामासुरःसर्वं सुराःसुरपतिं यदा * ।

कै—पुनरपरहस्तेन र्षूःशरं शोधितः ।

२. ज ल भ—सर्वानेष तदा सुरान् ।

३. ज ल भ—देवी ।

४. ल ज भ—रोषात्सं० ।

५. कै—यस्मादपत्यदारेषु यूयमुत्पाभवत् ।

अपरहस्तेन पुनस्तत्रैव शोधितः ।

सदृशममराममनेच्छथ ।

ज ल भ—नास्ति ।

६. ज ल भ—युष्माकं न भविष्यति ।

७. अतः परमधिकः पाठः—

ज—भार्ययाद्यप्रभृतिभिर्भविष्यत्यप्रजाः सुराः ।

ल— ,, प्रभृति वै भविष्यत्यजाः सुरः ।

भ—भार्याश्च बोधप्रभृति ,, सुराः ।

८. ज ल भ—एवमुक्त्वा ।

९. कै व ल—सर्वा ।

१०. ज ल—एकरूपावने त्वं च बहुभोज्या भविष्यसि ।

भ—एकरूपा च नित्यं च ,, ,, ।

* कै—तथा ।

न चापत्यकृतां प्रीतिं मत्क्रोधकलुषीकृता ॥२६॥	
२८] प्राप्स्यसि त्वमनिच्छन्ती ममापत्यमभीप्सितम् । ^३	[२६
तां दृष्ट्वा व्यथितां देवीमुमां देवो महेश्वरः ॥२७॥	
२९] गर्न्तुं समुपचक्राम दिशं वरुणशलिताम् ।	[२७
स गत्वा तप आतिष्ठदुत्तमं संशितव्रतः ॥२८॥	
३०] हिमवत्प्रभवे शृंगे ^६ सह देव्या महेश्वरः ।	[२८
एष ते विस्तरौ राम शैलपुत्र्या निवेदितः ॥२९॥	
३१] गंगायां शृणु कौत्सर्येन प्रभवं सहलक्ष्मणः ।	[२९
N] कुमारां संभवं चैव बह्वर्थं सुरपूजितम् ॥३०॥	[N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे^१ उमामाहात्म्यं

नाम त्रयस्त्रिंशः^२ सर्गः ॥३१॥^३

१. कै रा—त्वमभीप्सन्ती ।
२. कै रा—न चापत्यमभीप्सितम् ।
३. ज—ममापत्यमनिच्छन्तीमेवं त्वमपि लप्स्यसे ।
ल— ० निच्छन्ती चैवाहं त्वमपि ,, ।
भ— ,, ,, ह्येवं त्वमपि ,, ।
४. ज ल भ—प्रीडितां ।
५. ज ल भ—सुरपतिस्तदा ।
६. ज ल भ—गमनाय मतिं चक्रे ।
७. रा—गंगे ।
८. ल—कांत्येव ।
९. ज भ—प्रभावं ।
१०. कै—० मारसंभवो । व—कुमारां संभवं ।
११. कै व—आदिकाण्डे ।
१२. कै—अष्टात्रिंशत्तमः । रा—अष्टात्रिंशत्तमः ।
व—नास्ति ।
१३. ज ल भ—नास्ति ।

[वं=३९] [चतुस्त्रिंशः सर्गः] [दा=३७]

तपस्तप्यति देवेशे त्र्यम्बके विबुधास्ततः ।^१

१] सेनापतिमभीप्सन्तः पितामहमुपागमन् ॥१॥ [१]

अन्नवंश्च सुराः सर्वे भगवन्तं पितामहम् ।

२] प्रणिपत्याञ्जलिं बद्ध्वा सेन्द्रा वह्निपुरोगमाः ॥२॥ [२]

यो नः सेनापतिर्देव दर्शो भगवता पुरा । [३पृ

३] स ब्रह्मचर्यमास्थाय तपस्तेपे सहोमया ॥३॥ [४३]

यदत्रानन्तरं कार्यं सर्वलोकैर्पितामहं ।

४] तत्कुरुष्वं भृशार्तिनां त्वं हि नः परमा गतिः ॥४॥ [५]

देवानां वचनं श्रुत्वा सर्वलोकनमस्कृतः ।^३

१. व—विविधास्ततः ।

२. ज ल भ—तप्यमाने महादेवे देवाः सर्षिगणाः पुरा ।

३. कै—०मुपागमत् ।

४. ज ल भ—प्रणिपत्य शुभां वार्ष्णीं सुबद्धाञ्जलिकुड्मलाः* ।

५. व—वेन ।

६. ज ल—०देवः कृतो । ०देव कृतो ।

७. रा—भगवतः ।

८. ज ल भ—स तपः परमास्थाय स्थितः सुमहद्वभुतं ।

९. ज ल भ—लोकानां हितकाम्यया ।

१०. ज ल भ—तद्विषयत्वे ।

११. कै—भृशार्तिनां । ज ल भ—विधानज्ञ ।

१२. कै—०नमस्कृतिः ।

१३. ज ल भ—देवतानां वचः श्रुत्वा ब्रह्मा लोकपितामहः ।

* भ—प्रबद्धाञ्जलि० ।

- ५] ब्रह्मा मधुरयो वाचा त्रिदशानिदमब्रवीत् ॥५॥ [६
 यथा हि यूयमुमया शप्ताः सामूयया पुरा ।^१
- ६] तथा तद्रचनं देवा न शक्यं कर्तुमन्यथा ॥६॥ [७
 इयं त्वाकार्शगा गङ्गा शैलराजमृतां पुरां ।
- ७] उमाया भगिनी ज्येष्ठा ततोऽपत्यं हुताशनः ॥७॥ [८
 जनयत्यात्मवीर्येण तपसा परमद्युतिः ।
- पृ८] ज्येष्ठा शैलेन्द्रदुहिता जनयिष्यति यं^२ सुतम् ॥७८॥
- N] स^३ उमाया बहुमतो भविष्यति न संशयः । [९
 ३८] भविष्यति स च श्रीमान् सेनापतिरभीप्सितः ॥७९॥ [N

१. ज—साम्बवया । ल—सांत्वयं । भ—सांत्वयन् ।

२. ज ल भ—श्लक्ष्णया ।

३. ज ल भ—शैलपुत्र्या प्रयुक्ताः स्थ प्रजा वो नो* भविष्यति ।

४. रा—तस्मात् ।

५. ज ल—पत्नीप्त्रिति च चादिष्ट तत्सत्यं नात्र संशयः ।

भ— ,, वचोश्रिष्ट ,, ,, ,, ।

६. रा—०काशका ।

७. रा—०सुतापरा ।

८. ज भ—येयमाकाशगंगेयमुपसृत्य+ हुताशनं ।

ल— ,, ,, सुपोष्ट्युद्गताशनम् ।

९. ज ल भ—जनयिष्यति देवानां सेनापतिमरिदम् ।

१०. भ—सं ।

११. कै रा—नास्ति ।

१२. ज—शतमाया । ल—शतुमाया । भ—शतमायो ।

१३. भ—संशयं ।

१४. ज ल भ—नास्ति ।

एतच्छ्रुत्वा वचो देवाः प्रणिपत्य पितामहम् ।

९.] प्रहृष्टमनसः सर्वे कृतार्थाः पुनराययुः ॥१०॥^२ [१०

ततः कैलासशिखरमागत्य सहिताः सुराः ।^३

१०.] अग्निं नियोजयामासुः पुत्रार्थं रघुनन्देन ॥११॥ [११

हितार्थमग्ने लोकानामपत्योत्पादनं कुरु ।

११.] आकाशपथचारिण्या संभूय सह गङ्गया ॥१२॥^४ [१२

तथेति च प्रतिज्ञाय वचस्तेषां हुताशनः ।

१२.] उवाच गङ्गां मत्तेजो धार्यतामिति राघव ॥१३॥^५ [१३

तमुवाच ततो गङ्गा हुताग्नेमिदं वर्चः ।

१. कै--एत [व ?] श्रुत्वा ।

२. ज ल भ—तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य कृतार्था रघुनन्दन ।

प्रणिपत्य सुराः सर्वे पितामहमपूजयन् ॥

३. ज ल भ—गत्वा तु पर्वतं राम कैलासं रत्नमण्डितं ।

४. कै रा—विज्ञापयामासुर्गंगां च ।

५. ज ल भ—सर्वदेवताः ।

६. ज ल भ—देवतानां कृते साधु पुत्रं जनय पावक ।

शैलपुत्र्यां महाभाग गंगायां तेज उत्तमं ॥

७. ज ल भ—देवतानां प्रतिज्ञाय गंगां प्रोवाच पावकः ।

गमं चारय वै देवि देवतानामिदं मियम् ॥

अतः परमधिकः पाठः—

ज व ल भ—कर्तव्यमिति सा श्रुत्वा दिष्टं गर्भमधारयत्—

दृष्टा तंमहिमानं + सा समंतादन्वकीर्षत* ॥

ज व ल भ—समंततश्च तां देवीमभ्यर्षिषत पावकः ।

ज व ल भ—सर्वभोतांसि पूर्वानि तस्याः X कासचरोचम X ।

८. ज भ—सर्वदेवपुरोहितं ।

+ भ—तन्महि० । *ल—०दधकथितं । Xल—तस्या—सन्धौ नरोत्तमश्च

- १३] अन्नक्ताऽहं धारयितुं त्वत्तेजो भगवन्निति ॥१४॥^३ [१६
तामुवाच ततो गङ्गां हुतभुग् भगवान पुनः ।
१४] प्रगृह्य गङ्गे मत्तेजः शैलेन्द्रे^४ त्वं त्रिसर्जय ॥१५॥^५ [१७
तथेत्युक्त्वा ततो गङ्गा तत्तेजः प्रत्यपर्धत ।
१५] प्रतिपद्य च सद्योऽभूद् विह्वला मूर्च्छिता च सा ॥१६॥^६ [१८
असहन्ती ततो गर्भं तं धारयितुमोजसा ।
१६] कैलासशिखरे राम साग्निरैतैः सृणाव तत् ॥१७॥^७ [N
अजातसारं प्रस्कन्नं सहसा भूरितेजसम् ।
१७] रम्ये शरवणोद्देशे समुत्सृज्य ततो ययौ ॥१८॥^८ [N

१. व—भगवानिति ।

२. ज—शक्ता धारयितुं नास्मि तव तेजःसमुपतं ।

भ— ,, ,, नास्मात्तव ,, ।

३. ल—नास्ति ।

अतः परमधिकः पाठः—

ज—असौ तु दह्यमाना या संप्रग्यथितचेतना ।

ल— ,, ,, दह्यमानाहा ,,

भ— ,, ,, दह्यमानाहं ,, ।

४. व—शैलेन्द्र ।

५. ज ल भ—अथाब्रवीद्विदं तत्र गंगां देवो हुताशनः ।

साधु हैमवते पार्श्वे गर्भमेनं* निवेशय* ।

६. रा—प्रतिपद्यत ।

७. ज ल भ—भ्रुत्वा तस्यापि वचनं तं गर्भमतिभास्वरं† ।

तं ससर्ज ‡ महातेजाः † क्षोतोभ्यो हि तदानव ॥

८. कै—सोग्निरेतः । रा—सोमे रेतः ।

* भ—गर्भ [मे] तं विसर्जय । † ज—०तिभासुरं । ‡ भ—विमसर्जं ।

+ ल भ—महातेजः ।

- तदिदं^१ निर्गतं तस्यास्तदा जांबूनदंभमम् ।
 १८] काञ्चनं धरणीं प्राप्तं हिरण्यं चाभवत् तदा ॥१९॥ [१९
 ताम्रं कृष्णायसं चापि वक्त्रादेतदजायत ।
 १९] मलं चाप्यभवत् तत्र त्रपुसीसकमेव च ॥२०॥
 N] तदेतद् धरणीं प्राप्य नानाधातुत्वमागतम् ।^१ [२०
 निक्षिप्तमात्रे गर्भे तु तेजसाऽर्प्यत्र रञ्जितम् ॥२१॥
 २०] सर्वं पर्वतसंबद्धं सौवर्णमभवद्भवनम् । [२१
 जातरूपमिदं ख्यातं ततः प्रभृति राघव ॥२२॥
 २१] सुवर्णं प्रादुरभवद् वह्नितेजोभवं^२ शुचि । [२३
 कुमारश्चाभवत् तत्र तरुणार्कसमद्युतिः ॥२३॥
 २२] वह्नितेजोभवः श्रीमान् गङ्गाकुक्षिपरिच्युतः ।^३ [N
 तं कुमारं ततो जातं दृष्ट्वा सेन्द्रो मरुद्गणाः ॥२४॥

१. रा—तदिन ।

२. ज ल—स्तस० । भ—तस्य तस० ।

३. भ—कपिशं ।

४. ल—तथा । ज—पुनरपरहस्तेन शोधितः ।

५. भ—तस्य ।

६. कै रा—नास्ति ।

७. ल—निक्षिप्तमात्रं ।

८. कै रा—०जसा भूरितेजसि ।

९. ज ल—सर्व० ।

१०. कै रा—०मभवत्तदा । ज—सौवर्णमभवद्भवनं ।

ल—सौभद्रमभ० । भ—०र्णमवनं तदा ।

११. ज ल भ—जातरूपमिति ।

१२. रा—तदा ।

१३. ज ल भ—नास्ति ।

१४. ज ल भ—देवा ।

- २३] तदा क्षीरप्रदानार्थं कृत्तिकाः सन्न्ययोजयन् । [२४
 ताः क्षीरं तस्य देवस्य समयेन ददुस्तदा ॥२५॥^२
- २४] स्यादस्माकमयं पुत्रः ख्यातो नाम्नेति^३ राघवै । [२५
 ततस्ता देवता ऊचुः कार्तिकेय ईति प्रभुः ॥^४२६॥
- २५] पुत्रोऽयं जगति ख्यातो भविष्यति न संशयः ।^५ [२६
 देवतानां वचः श्रुत्वा पूर्वं गर्भपरिस्त्रवे ॥२७॥
- २६] कृत्तिकाः स्कन्दयार्मासुस्तपादित्यसमप्रभम् ।^६ [२७
 स्कन्दं इत्येव तं देवाः प्रोचुरप्रतिमौजसम् ॥२८॥

१. रा—तठः ।

२. ज ल भ--क्षीरसंभवनाथार्था कृत्तिकाः समयोजयन् ।
 तत्क्षीरं जातमात्राय कृत्वा समयमुत्तमं ।
 ददुःपुत्रार्थमस्माकं सर्वासां प्रकरिष्यति ।

३. रा—नाम्नेभिराघव ।

४. ज ल—कार्तिकेयमिति ।

५. भ—ततस्ता देवताः सर्वाः कार्तिकेयमितिप्रभुं ।

६. भ—सेनापत्येभियोक्ष्यामो विजयायेति चाब्रवीत् ।
 ज ल—नास्ति ।

७. कै—०परिस्त्रवे । ज—सर्वं गर्भं परिस्त्रवे ।

ल--सर्वं गर्भं परिस्त्रवे । भ—तीर्थगर्भपरिस्त्रवे ।

८. कै रा—छन्दयामासु० ।

९. ज ल—सूपयामासुरथ तं दीप्यमानं यथा रविं ।

भ--स्नपयामासु ऋषये दीप्यमानं , , ।

भ—अतः परमधिकः पाठः--

स्कन्धत्वात्प्रतिजग्राह सुरसें तु शिबं तदा ।

१०. कै रा—सुप्त ।

११. कै रा—दृष्ट्वा । ज ल भ--देवा ।

१२. ज ल—ऊचुरप्रति० । भ—ऊचुरभिजम् ।

- २७] कार्तिकेयं महत्तेजः काकुत्स्थं ज्वलनप्रभम् । [२८
प्रस्नुतानां ततः क्षीरं तासां षण्णां षडाननः ॥२९॥
- २८] भूत्वा स बालोऽप्यपिबत् कृत्तिकानां परिस्रुतम् । [२९
पीत्वा तासां च तत् क्षीरं स कुमारो व्यवर्धत ।
- २९] अजयत् स्वेन वीर्येण दैत्यसैन्यगणान् बहून् ॥३०॥ [३०
सुरसेनागणपतिं ततस्तममरद्युतिम् ।
- ३०] अभ्यर्षिचन्द्र सुरगणाः समेत्याग्निपुरोगमाः ॥३१॥ [३१
इति ते कथितो राम गङ्गायाः संभवो मया ।^८
- ३१] देवस्य च कुमारस्य संभवः पुण्यवीर्यः । ३२॥ [३२

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे^{१०} कुमारोत्पत्तिर्नाम^{११}

चतुस्त्रिंशः^{११} सर्गः ॥३४॥^{१२}

१. ब—कार्तिकेय । ज ल—कार्तिकेयो ।
२. ज ल—महातेजाः । भ—महातेजः ।
३. ज—काकुत्स्थो ।
४. ज ल—ज्वलनोपमः । भ—ज्वलनोपमं ।
५. ज ल भ—प्रादुर्भूतं तदा* क्षीरं कृत्तिकानामनुकमं ।
६. ब—वासां ।
७. ज ल—षण्णां षडाननो भूत्वा जग्राह सुरजस्तदा ।
भ— " " " " सुरसं तदा ।
८. ज ल भ—नास्ति ।
९. ज ल भ—एष ते विस्तरौ राम गङ्गायाः कीर्तितो मया ।
कुमारः† संभवश्चैव धन्यः पूज्यः‡ सुखावहः ।
१०. कै ब—आदिकाण्डे ।
११. कै—० नामैकान्तत्वारितुमः ।
ज—एकत्रिंशः । रा ब ल भ—० नाम ।
१२. ज भ—॥३१॥

* ल भ—ततः ।

† ल भ—कुमारसम्भ० ।

‡ ल भ—पुण्यः ।

[वं=४०] [पञ्चत्रिंशः सर्गः] [दा=३८]

तां तथा कौशिको रामे निवेद्य मधुरां कथाम् ।

१] पुनरेव कथामेतां कथयामास कौशिकः ॥१॥ [१]

अयोध्याधिपतिः श्रीमान् पूर्वमासीन् नराधिपः ।

२] सगरो नाम धर्मात्मा प्रजाकामः स चाप्रजः ॥२॥ [२]

विदर्भराजतनयां केशिनी नाम नामतः ।

३] ज्येष्ठा सगरपत्न्यासीद् धर्मिष्ठा सत्यवादिनी ॥३॥ [३]

अरिष्टनेमिदुहिता रूपेणाप्रतिमा भुवि ।

४] द्वितीया सगरस्यासीत् पत्नी परमधार्मिका ॥४॥ [४]

ताभ्यां सह महेश्वासः पत्नीभ्यां तप्तवांस्तपः ।

५] अपत्यकामः काकुत्स्थं भृगुप्रस्रवणे गिरौ ॥५॥ [५]

१. ज ल भ—कथां ।

२. ज भ—मधुराचरां । ल—मधुराक्षरम् ।

३. ज ब ल भ—पुनरेवापरं वाक्यं काकुत्स्थमिदमब्रवीत् ।

४. ज ल भ—शूरः ।

५. ज ल भ—वैदर्भदुहिता राम ।

६. कै—०सीद्धर्मिष्ठा । ज ल—०रपत्नी सा च०

७. ज ल—हिमवन्तमुपाश्रित्य । भ—हिमवन्तमपाश्रित्य ।

८. कै रा—०प्रतरणे ।

९. कै—भक्तः परमधिकः पाठः

उत्तरपार्श्वे विन्यस्तः—

हिमवद्गिरिमाश्रित्य भृगुप्रस्रवणे गिरौ ।

अथ वर्षसते पूर्वे तपसाराधितो मुनिः ।

सगराय वरं प्रादा ।

अयं वर्षशते पूर्णे^१ तपसाऽऽराधितो मुनिः^२ ।

६] सगराय वरान् प्रादाद् भृगुः सत्यवतां वरः ॥६॥ [६

अपत्यलाभः सुमहांस्तव राजन् भविष्यति ।

७] कीर्तिमप्रतिमां लोके सन्तानोत्थामवाप्स्यसि ॥७॥^३ [७

एका जनयिता पुत्रं पत्नी वंशधरं तव ।

८] षष्टि पुत्रसहस्राणि द्वितीया जनयिष्यति ॥८॥ [८

मुनिमेवं भाषमाणं सत्यधर्मतपोनिधिम् ।

९] ते पत्न्यौ सगरस्येदं कृत्वाऽअलिमभाषताम् ॥९॥^४ [९

एकं का तेनयं ब्रह्मन् का बहून् अल्पिष्यति ।

१. कै रा—तस्मै वर्षसहस्रांते ।

२. भ—भृगुः ।

३. ज ल भ—वरं ।

४. भ—प्रादान्मुनिः ।

५. ज ल भ—अपत्यलाभः सुमहान् भविता ते नरेश्वर ।
कीर्तिं चाप्रतिमां लोके प्राप्स्यसे पुरुषर्षभ ॥

६. ज ल भ—राजपुत्रं वंशधरं तव ।

७. ज—षष्टिपुत्रसहस्राणामेका च जनयिष्यति ।

ल—षष्टिं पुत्रसहस्राणामन्यापि ,, ।

भ—,, ,, मेकापि ,, ।

८. रा—कृताअलिमभाषताम् ।

ब—कृताअलिमभाषतां ।

९. ज ल भ—एवं मुनिं भाषमाणं राजपत्न्यौ महेश्वरं ।

अचतुः परमप्रीते कृताअलिपुत्रे तदा ।

१०. ज—एकैकस्याः सुतो । ल भ—एकैकस्याः सुतो ।

- १०] भगवन् श्रोतुमिच्छावः सद्यः सोऽस्तु वरो हि नौ ॥^३ १० ॥ [१०
तयोरेतद् वचः श्रुत्वा स मुनिप्रवरस्तदा ।
११] उवाच मधुरं वाक्यं स्वच्छन्देन ददामि वाम् ॥११॥^४ [११
एका वंशधरं पुत्रमेका वंशान्तकार्त्तु बहून् ।
१२] यथेष्टं मां वरयतं तथा दास्यामि वाञ्छितम् ॥१२॥^५ [१२
मुनेरेतद् वचः श्रुत्वा केशिनी रघुनन्दन ।
१३] पुत्रं वंशधरं राम जग्राहैकमनिन्दितो ॥१३॥ [१३
'षष्टिं पुत्रसहस्राणि सुपर्णभगिनी तथै ।
१४] जग्राह कीर्तियुक्तानि सुमतिर्वरमीप्सितम् ॥^६ १४ ॥ [१४

१. कै—भगवं श्रो० । व—० वंश्रोतुमिच्छावः ।

२. व—सत्यः ।

३. ज ल भ—इत्येतच्छ्रोतुमिच्छावः सत्यं चास्तु वचस्तव ।

४. व—स्वाच्छन्देन ।

५. ज ल भ—तयोस्तु वचनं श्रुत्वा भृगुः परमधार्मिकः ।

उवाच मधुरां वाणीं स्वच्छन्देन विधीयतां ॥

६. व—वंशकरान् ।

७. कै—वाञ्छिताम् ।

८. ज ल भ—एको वंशकरो वास्तु* बहवो वा† महाबलाः ।
कीर्तिमंतो महोत्साहा एवं× का वरमिच्छति ।

९. ज ल भ—मुनेस्तु वचनं ।

१०. ज ल भ—वंशकरं ।

११. ज—राजा इ नृपसंसदि । ल भ—० इ नृपसंसदि ।

१२. ज ल भ—पुत्रान् षष्टिसहस्राणि ।

१३. ज ल भ—ततः ।

१४. ज ल भ—कीर्तियुक्तान् महोत्साहान् जग्राह सुमतिस्तदा ।

*ज ल—वोस्तु । †ज—वै । ल—वो । ×भ—एव ।

- प्रदक्षिणं ततः कृत्वा भृगुं धर्मभृतां वरम् ।
 १५] जगाम स्वपुरं राजा सभार्यो रघुनन्दन ॥१५॥ [१५
 अथ कालेन महतां पुत्रं ज्येष्ठौ व्यजायत ।
 १६] असमञ्जा इति ख्यातं काकुत्स्थ सगरात्मजम् ॥१६॥ [१६
 सुमतिश्च रघुश्रेष्ठं गर्भं तुम्भ्रं व्यजायत ।
 १७] षष्टिः पुत्रसहस्राणि भिन्ने तुम्बे विनिर्ययुः ॥१७॥ [१७
 घृतपूर्णेषु कुम्भेषु धान्यस्तानभ्यं वर्धयन् ।
 १८] ते च कालेन महतां यौवनं प्रतिपेदिरे ॥१८॥ [१८
 समानवयसः सर्वे तुल्यवीर्यपराक्रमाः ।^३
 १९] षष्टिः पुत्रसहस्राणि सगरस्य तृदाऽभवन् ॥१९॥ [१९
 स च ज्येष्ठोऽभवत् तेषामसमञ्जाः परन्तपः ।^७ [२०पृ

१. ज ल भ—प्रदक्षिणमृषिं कृत्वा शिरसा चाभिवाद्य च ।

२. ज ल भ—काले गते तस्मिन् ।

३. ज ल—ज्येष्ठं । भ—ज्येष्ठं ।

४. कै—असमंजा इति । ज ल भ—०मंजमिति ।

५. ज ल भ—सुपतिस्तु ।

६. ज ल भ—नरभ्याम् ।

७. ज—गभः ।

८. रा ज ल—षष्टिः । भ—षष्टिः ।

९. ज ल भ—तुम्बे भिन्ने ।

१०. ल भ—घृतकुम्भेषु पूर्णेषु ।

११. रा—धान्यास्ताः ।

१२. ज ल भ—कालेन महता ते तु ।

१३. ज ल भ—अथ दीर्घस्य काकस्य रूपयौवनशक्तिनः ।

१४. कै रा—षष्टिः । ज—पुत्रः षष्टिसह० । ल—पुत्राण्यष्टिसह० ।

भ—पुत्राः षष्टिसहस्राः ।

१५. भ—नास्ति । अतः परं २३ श्लोकान्तो नास्ति पाठः ।

१६. रा—०समंजः । ल—०समंजाः ।

१७. ज ल—स च ज्येष्ठो नरभ्याम् सगरस्यात्मसंभ्रमः ।

- २०] पौराणामहिते युक्तः पित्रा निर्वासितः पुरात् ॥२०॥ [२१३
 तस्य पुत्रोऽशुमान् नाम बभूव ह्यसमञ्जसः ।^२
- २१] संमतः सर्वलोकस्य सर्वलोकप्रियंवदः ॥२१॥ [२२
 अर्थे कालेन महता मतिरेवमजायत ।
- २२] सगरस्याश्वमेधेन यजेयमिति राघव ॥२२॥ [२३
 स कृत्वा निश्चिंतां बुद्धिं सोपाध्यायगणो नृपः ।
- २३] सगरो यष्टुमारेभे कृत्वा द्रव्यपरिग्रहम् ॥^३ २३॥ [२४
 ह्यथार्थे रामायणे बाह्यकाण्डे^{११} सगरपुत्रजन्म
 नाम^{१२} पञ्चत्रिंशः^{१३} सर्गः ॥१५॥^{१४}

१. रा—निवसितः । ज—‘विवासित’ इति मौलिकं पाठं संक्षोभ्य
 ‘निर्वासित’ इति कृतम् । ल—निवासितः ।
२. ज ब ल—तस्य पुत्रोऽशुमानास्त्रीदसमंजस्य वीर्यवान् ।
३. ज ल—सर्वस्यैव प्रियं० ।
४. ज ब ल—तस्य ।
५. ज ल—मतिरासीन्महात्मनः ।
६. ज ल—०रस्य नरश्रेष्ठ ।
७. ज ल—निश्चयं ।
८. ज ल—राजा ।
९. ज ल—०गण्यस्तदा ।
१०. ज ल—यज्ञकर्मणि वेदज्ञो यष्टुं समुपचक्रमे ।
 तत्र तस्यात्मजा रामः प्रविष्टाः कापिकं‡ वपुः ।
११. ब—आदिकाण्डे । कै—नास्ति ।
१२. कै रा—नास्ति ।
१३. कै रा—वत्वारिंशत्तमः । ब—नास्ति ।
१४. ज ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

[वं=४१] [षट्त्रिंशः सर्गः] [दा=३९]

विश्वामित्रवचः श्रुत्वा कथाऽन्ते रघुनन्दनः ।

१] उवाच परमप्रीतो मुनिं दीप्तमिवानलम् ॥१॥' [१]

श्रोतुमिच्छामि भगवन् विस्तरेण कथामिमाम् ।

२] पूर्वको मे यथा यज्ञं सगरः समवाप्तवान् ॥२॥ [२]

विश्वामित्रस्ततो राममुवाच प्रहसन्निव ।

३] श्रूयतां विस्तरो राम सगरस्य कथां प्रति ॥३॥ [३]

शङ्करश्वशुरैः श्रीमान् हिमवद्दालोत्तमः ।

४] विन्ध्यश्च स्पर्धयाऽन्योन्यं यत्र देशे निरक्षताम् ॥४॥ [४]

तस्मिन् देशे स यज्ञोऽभूत् सगरस्य महात्मनः ।'

५] स हि देशो महापुण्यैः प्रशस्तो यज्ञकर्मणि ॥५॥ [५]

तस्याश्वर्चर्यां काकुत्स्थं दृढधन्वा महारथः ।

१. भ—नास्ति । अतः परं १४श्लोकस्य पूर्वार्द्धपर्यन्तः
पाठो न दृश्यते ।

२. रा—पूर्वको मे यथा यज्ञमश्वमेधमवाप्तवान् ।

ज ल—पूर्वः को मे कथं ब्रह्मन्यज्ञान्तं समवाप्यथ ॥

३. ज ल—विश्वामित्रस्तु काकुत्स्थमुवाच ।

४. ज—०रोराम । ब ल—०रोनाम्

५. ज—विन्ध्यस्य पर्वतश्रेष्ठो निरीक्ष्यैते परस्परं ।

६. ज ल—तयोर्मध्ये प्रवृत्तोभूयज्ञो वै रघुनन्दन ।

७. ज ल—नरण्याम् ।

८. कै रा—क्यातः पुण्यजनाभितः ।

९. कै रा—तस्य चानन्तरो राम ।

● ल—समवाप्य ह ।

- ६] अंशुमानं करोद् वीरंः सगरस्य तदाऽऽज्ञया ॥६॥ [६
यजतस्तस्य तं यज्ञमुत्थार्य धरणीतलात् ।
- ७] तमश्वं यज्ञियं नागो जहारानन्तरूपधृत् ॥ ७॥^३ [७
हृतेऽश्वे यज्ञिये तस्मिन् सर्वे ते रघुनन्दन ।
- ८] याजकाः समुपागम्य यजमानं तदाऽब्रुवन् ॥८॥^४ [८
केनापि नागरूपेण हृतस्तेऽश्वः स यज्ञियः ।
- ९] हत्वा तमश्वहर्तारं तमेवाश्वं त्वमानय ॥९॥^५ [९
यज्ञच्छिद्रं महद्भयेतत् सर्वेषामशिवाय नः ।
- १०] तथा तत् क्रियतां राजन् यथाऽच्छिद्रः क्रतुर्भवेत् ॥१०॥^६ [१०
उपाध्यायवचः श्रुत्वा तस्मिन् सदसि पार्थिवः ।
- ११] षष्टिं पुत्रसहस्राणि समाहूयेदमब्रवीत् ॥११॥ [११
न गतिं राक्षसानां हि पश्यामीह महाक्रतौ ।

१. कै रा—० नमवद्वीरः । ज ल—० नकरोत्तात् ।

२. रा—यज्ञं मुक्त्वाथ ।

३. ज ल—तस्य पर्वणि तं यज्ञं यजमानस्य राघवः ।
राक्षसीं तनुमास्थाय केनाप्यश्वस्तदा हृतः ।

४. रा—तथाब्रुवन् ।

५. ज ल—द्वियमाणे तु काकुत्स्थ तस्मिन्काके महात्मनः ।
उपाध्यायगणः सर्वो यजमानमथाब्रवीत्* ।

६. रा व—० रवहंतारं ।

७. ज ल—अयं पर्वणि वेगेन याज्ञिकोश्वोपवीचते ।
हर्तारमस्य राजेन्द्र जहि माश्वः प्रब्रस्यतु ।

८. ज ल—नास्ति ।

९. ज ल—वाक्यमेतदुवाच ह ।

* ल—यजमानस्य राघव ।

१२] नागानां चापि चान्येषां रक्षिते हि महर्षिभिः ॥१२॥' [१२
केनापि तु स देवेन हृतोऽश्वो नागरूपिणा ।

१३] अमर्षतोच्छिद्रमेतद् दृष्ट्वा दीक्षामुपागतम् ॥१३॥' [N
योऽसौ रसातलगतो यदि वान्तर्जले स्थितः । [N

१४] तं^३ हत्वाऽऽनयताश्वं मे^३ पुत्रका भद्रमस्तु वः ॥१४॥

समुद्रमॉलिनीं कृत्स्नां पृथिवीमनुमार्गथं । [१३

१५] प्रोत्खनन्तः प्रयत्नेन यावत्तुरगदर्शनम् ॥'१५॥ [N

एकैकं योजनं भूमिं निर्भिन्दन्तोऽनुगच्छत ।^५

१६] अस्माकमश्वहतरं मार्गमाश्वं भ्रमाज्ञयां ॥'१६॥ [१४,१५

दीक्षितः पुत्रसंहितः सौपाध्यायगणस्त्वहम् ।

१७] इह स्थास्यामि भद्रं वो यावत् तुरगदर्शनम् ॥१७॥ [१६

१. ज ल—न गतिर्हरयते तावद्भ्रमसः पुरुषर्षभाः ।

भ्रमविभिर्महाभागैरधिष्ठितामिवं सद्गुः ॥

२. ज ल—नास्ति ।

३. ज ल भ—तद्दृष्टत समथकाः ।

४. ज—०नीभिमां । ल—०नीमेनां । भ—०नीमेतां ।

५. कै—०नुगच्छत । रा—०नुगच्छतु । ज—०नुमार्गथ ।

६. ज ल भ—एकैकं योजनं पुत्रा विस्तामपुत्रांश्वं ।

७. कै रा—निर्भिन्दंतोनु० ।

८. ज ल भ—यावत्तुरगसंदर्शस्तावत्खनतमेदिनी ।

पूर्वोत्तरच्छोकार्द्विपरिष्वासो हरयते ।

९. कै—०मनुज्ञया ।

१०. ज ल भ—नास्ति ।

११. भ—वैत्र सहितः ।

१२. ल भ—०गबो हहं ।

१३. रा—०दर्शनात् ।

असमाप्तक्रतुस्तावद् भविष्यामीह पुत्रकाः ।

१८] युष्माभिर्यावदश्वो मे न मत्याहियते पुनः ॥१८॥' [N

इत्युक्त्वा हृष्टमनसः पित्राऽथै सगरेण ते ।^१

१९] विभिदुर्वसुधां राम पितुर्वचनकारिणः ॥१९॥ [१७

योजनायामविस्तारमेकैको धरणीतलम् ।

२०] विभेर्दं पुरुषव्याघ्रं वज्रसारेर्भुजैः^२ क्रमात् ॥२०॥ [१८

कुद्दालैः परिधैः शूलैर्मुसलैः शक्तिभिस्तथा ।

२१] भिद्यमाना वसुमती तैरातेव^३ ननाद सा ॥२१॥'^२ [१९

नागानां वध्यमानानां सर्पाणां च महौजसाम् ।^४

१. ज ल भ--नास्ति ।

२. रो--इत्युक्त्वा ।

३. कै--पुत्राय ।

४. ज ल भ--ते सर्वे हृष्टमनसो राजपुत्रा महाबलाः ।

५. ज--चक्रुर्महीतलं । ल--चक्रुः महीतलं ।

भ--चेरुर्महीतलं ।

६. ज ल--० न मंत्रिताः । भ--० यंत्रिताः ।

७. ज ल--तेषां योजनविस्तीर्णमेकैको ।

भ--तेषां योजनविस्तीर्णम् ० ।

८. कै रा--विभिदुः ।

९. कै रा--पुरुषव्याघ्रा ।

१०. ज ल भ - वज्रस्पर्शसमैर्भुजैः ।

११. रा तैरातेव ।

१२. ज ल भ--शूलैरशानिकल्पैश्च हलैश्चापि सुदारुणैः ।

भिद्यमानाः वसुमती विदधे^x रघुनन्दन ।

१३. रा--वण्य० ।

१४. ज ल भ--नागानां हन्यमानानामसुराणां च राघव ।

‡ ल--भिद्यमाना । x भ--विदधे ।

- २२] रंक्षसामसुराणां च बभ्रुवार्तस्वरो महान् ॥२२॥ [२०
 षष्टिं हि योजनानां ते सहस्राणि महौजसः ।^१
- २३] धरण्यां विभिदुः क्रुद्धाः सर्वे यावद् रसातलम् ॥२३॥ [२१
 एवं पर्वतसंबाधं जम्बुद्वीपं नृपात्मज ।
- २४] खनन्तस्ते नृपसुताः सर्वतः परिवभ्रमुः ॥२४॥ [२२
 ततो देवाः सगन्धर्वा सहोरगगणास्तर्या ।
- २५] संभ्रान्तमनसः सर्वे पितामहमुपागमन् ॥२५॥ [२३
 तेऽभिवन्धं महात्मानं विषण्णवदनांस्तदा ।
- २६] अम्बुवन्न परमञ्जस्ताः पितामहमिदं वचः ॥^{१२}२६॥ [२४
 N] सपर्वतवना देव सरिद्वीपसमाकुलौ ।^{१५} [N

१. ज ब ल भ—राक्षसानां च घोराणां ।
 २. कै—०वात्तस्व० । रा—०भ्रुवांतं वरो० ।
 ज—नांतः समुपपद्यते । ल भ—नांतः समुपलभ्यते ।
 ३. ज—योजनानां सहस्राणि चाशीतिं रघुनेन्दन ।
 ब ल भ— ,, ,, अशीतिं ,,
 ४. ज ब ल भ—विभिदुर्धरण्यां वीराः ।
 ५. भ--ब्रु० ।
 ६. ज—प्रतिचक्रमुः । ल भ--परिचक्रमुः ।
 ७. ज ल भ—तदा ।
 ८. ज ल भ—सासुराः सहपत्न्याः ।
 ९. ज ब ल—०मुपाद्रवन् । भ—०मुपाद्रवन् ।
 १०. ज ल भ—ते प्रसाथ ।
 ११. कै रा—संभ्रांतमनसः सुराः ।
 १२. ज ल भ—जघुः परमसंभ्रांताः ससंभ्रममिदं वचः ।
 १३. ज ल भ—ससरिद्वीपसकुला ।
 १४. कै रा—नास्ति ।

भगवन् पृथिवी सर्वा खन्यते सगरात्मजैः ॥२७॥

२७] खनद्विधैव तैर्ब्रह्मन् हन्यन्ते मुनयरतया ।

[२५

उ२८] इति ते सर्वभूतानि निग्नन्ति सगरात्मजाः ॥२८॥'

[२६३

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे^२ पृथिवीदःखं

नाम^३ षट्त्रिंशः सर्गः^३ ॥३६॥

१. ज ल भ—महाम्नात्र महात्मानो बध्यते जलधारिणः ।

२. कै—आदिकाण्डे

३. कै—नामैकचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ।

रा ब—नाम सर्ग । ज ल भ—पुस्तकेषु सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

[वं=४२] [सप्तत्रिंशः सर्गः] [दा=४०]

इति तेषां वचः श्रुत्वा देवानां प्रपितामहः ।

१.] प्रत्युवाच भयोद्विग्नान् सर्वान् देवानिदं वचः ॥^११॥ [१

बिभर्ति यो जगत्सर्वं यस्योत्पत्तिं न विब्रहे ।

२.] तेनाश्वो वासुदेवेन कपिलेनापवाहितः ॥२॥^२ [N

पृथिव्याश्चैव भेदोऽयं दृष्टस्तेनेति मे मतिः ।^३

३.] सगरस्य च पुत्राणां विनाशोऽमिततेजसाम् ॥३॥ [४

पितामहवचः श्रुत्वा ततस्ते त्रिदिवालयः ।

४.] देवर्षिपितृगन्धर्वाः प्रतिजगुर्यथागतम् ॥^४॥ [५

सगरस्य च पुत्राणां प्रादुरासीन् महौजसाम् ।

५.] खनतां पृथिवीं शब्दो वज्राशनिसमस्वनः ॥^५॥ [६

१. ज ल भ—देवानां वचनं ।

२. ज ल भ—भगवान् ।

३. कै—भयोद्विग्नाः ।

४. ज ल भ—ताम्प्रत्युवाच संग्रस्ताम्सर्वदेवानिदं वचः ।

५. ज ल भ—यस्येयं वसुधा वस्ता वासुदेवस्य दीयते * ।

कापिलं † रूपमास्थाय हयस्तेनापवाहितः ।

६. ज ल भ—पृथिव्याश्चापि निर्भेदो दृष्ट एव पुरातनः ।

७. ज ल भ—तु ।

८. ज ल भ—दीर्घजीविनां ।

९. ज ल भ—त्रयस्त्रिंशद्विंशत् ।

१०. ज ल भ—देवाः परमसंहृष्टाः सर्वे जगुर्यथागतं ।

११. ज ल भ—तु ।

१२. ज ल भ—महास्वनः ।

१३. ज ल भ—पृथिव्यां भिद्यमानायां निर्घातस्वनवत्सदा ।

* ज—दीर्घते । † भ—कपिलं ।

- ते' भित्त्वा पृथिवीं सर्वीं कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् ।
- ६] उपेत्य पितरं सर्वे सगरं वाक्यमब्रुवन् ॥६॥ [७
परिक्रान्ता मही सर्वा महद्विशसनं कृतम् ।
- ७] यादोगणमहाग्राहदैत्यदानवरक्षसाम् ॥७॥ [८
न चापर्शयाम तं राजन् यज्ञविघ्नकरं तव ।
- ८] किं कुर्महे पुनस्तात विनिश्चित्य प्रशाधि नः ॥८॥ [९
तेषामेतद्वचः श्रुत्वा पुत्राणां सगरस्तदा ।
- ९] निश्चित्योवाच तान् सर्वान् पुनः पुत्रानिदं वचः ॥९॥ [१०
भूयो मृगयताश्वर्यं विभिद्येदं रसातलम् ।
- १०] कृतार्थाः सन्निवर्तध्वं गृहीत्वाऽन्वापवाहकम् ॥१०॥ [११

१. ज ल भ—ततो भित्त्वा महीं कृत्वा ।

२. रा—पुत्रास्ते ।

३. ज ल भ—पार्थिवं सगरं सर्वे पितरं वाक्यमब्रुवन् ।

४. कै—०द्विशसनं० । ज व ल—महान् सत्त्वबधः कृतः ।
भ—महासत्त्वबधः कृतः ।

५. ज ल भ—गंधर्वयक्षवृक्षाणां पिशाचोरगरक्षसां* ।

६. ज ल भ—परयामो न च ।

७. ज ल भ—†तत्करिष्यामहे भूयस्तं‡ बुद्ध्या साधु चिन्त्यतां ।

८. ज ल भ—पुत्राणां वचनं श्रुत्वा तेषां तु रघुनन्दन ।
समन्युरब्रवीद्वाक्यं सगरः पुरुषर्षभः ॥

९. ज ल भ—भूयः खनत भद्रं वो निर्भिष्य वसुधातलं ।

१०. कै रा—अश्वहर्तारमासाथ कृतार्थास्सिन्यवर्तत ।
रा—पुस्तकेऽतः परं—॥ १००० ॥

*ज—राक्षसाम् । भ—†यत्० । ‡ ल भ—०तत् ।

पितुरेतद्वचः श्रुत्वा सगरस्यात्मसंभवाः ॥^२

११.] वैष्टिः पुत्रसहस्राणि रसातलमुपागमन् ॥^११॥ [१२

पुनः खनन्तस्ते तत्र ददृशुः पर्वतोपमम् ।

१२.] आशांगजं विरूपाक्षं धारयन्तमिमां महीम् ॥१२॥ [१३

शिरसा नरशार्दूल सशैलवनकाननाम् ।^{१०}

१३.] नानाजनपदाकीर्णा नानापत्तनशोभिताम् ॥^{११}१३॥ [१४

यदा च पर्वणि शिरः? खेदाच्चालयते शिरः ।^{१२}

१. कै रा—पुनरेत० ।

२. ज ल भ—पितुर्वचनमाश्राय सगरस्य महात्मनः ।

३. भ—षष्टिं ।

४. ज ल भ—०जमथाद्रवन् ।

५. कै रा—सागराः षष्टिसाहस्राः पितामहमुपागमन् ।

६. ज ल भ—खन्यमाने तदा तस्मिन् ।

७. रा—अशांगजं ।

८. ज ब—विरूपाक्षं ।

९. ज ल भ—धारयन्तं महीमिमां ।

१०. ज ल भ—सपर्वतवनां कृत्स्नां पृथिवीं स नरोत्तम† ।

११. ज—सदा विभर्ति काकुत्स्थ विरूपाख्यो महागजः ।

भ— ” ” ” दिक्पाक्षं कुंजरोत्तमं ।

खनमाना दिशो राम जग्मुर्भिस्त्वा वसुंधरां ।

तरूपाख्यो महागजः ।

ब ल—नास्ति ।

१२. ज भ—यदा पर्वणि काकुत्स्थ विश्रामार्थं स वारणः ।

ब—सदा विभर्तुं ये जातु ” ” ” ।

ल— ” ” काकुत्स्थ ” ” ” ।

- १४] सपर्वतवना राम तदेयं चलति क्षमा ॥ १४ ॥ [१५
 तं ते^३ प्रदक्षिणं कृत्वा दिक्पालं कुञ्जरोत्तमम् ।
- १५] मन्यमाना दिशां पालं दक्षिणां विभिदुर्दिशम् ॥ १५ ॥ [१६
 दक्षिणस्यामपि पुनर्ददृशुस्ते गजोत्तमम् । [१७उ
- १६] महापद्मं महात्मानं तिष्ठन्तं मन्दरोपमम् ॥ १६ ॥
 तं च दृष्ट्वा महाकायं विस्मयं परमं ययुः । [१८
- १७] कृत्वा तमपि नागेन्द्रं प्रदक्षिणमरिन्दम ॥ १७ ॥
 सगरस्यात्मजा रामं पश्चिमां विभिदुर्दिशम् । [१९
- १८] पश्चिमायामपि दिशि कैलासशिखरोपमम् ॥ १८ ॥
 आशागजं सौभंसं ददृशुस्ते महाबलम् । [२०

१. ज व ल भ—ईषणालयते स्कंधं कंपते मेदिनी तदा ।

२. ज ल-- ते तं ।

३. कै रा—दिशो गजमरिन्दम । भ—दिक्पालं तु गजोत्तमं ।

४. ज भ—स्नमाना *दिशं पूर्वां जग्मुर्भित्वा वसुंधरा [म] ।
 ततः पूर्वां दिशं भित्वा दक्षिणां विभिदुः पुनः ॥
 ल—नास्ति ।

५. भ—दक्षिणस्यां पुनश्चैव ददृशुस्ते गजोत्तमं ।
 ल—नास्ति ।

६. ज ल भ—शिरसा धारयंतं गां ते† दृष्ट्वा विस्मयं गताः ।

७. ज ल भ—ततः प्रदक्षिणं कृत्वा सगरस्य महात्मनः ।

८. रा—सागर० । ज ल—षष्टिःपुत्रसहस्राणि ।
 भ—षष्टिं पुत्रसहस्राणि ।

९. ज—तदा महात्मचक्रोत्तमं । ल भ—तदा महात्मचक्रोपमम् ।

१०. ज ल भ—दिक्कुञ्जरं सुमनसं ।

* भ-- दिशो राम ज० । † भ—तं ।

- १९.] तं ते' प्रदक्षिणं कृत्वा पृष्ठा चानामयं तथा ॥१९॥
 प्रोत्खनन्तो ययुर्वीरा दिशं हैमवतीं ततः । [२१]
- २०.] उत्तरस्यामपि तयो ददृशुर्हिमपाण्डुरम् ॥२०॥
 भद्रं भद्रेण वपुषा धारयन्तमिमां महीम् । [२२]
- २१.] समालभ्य च ते' सर्वे कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् ॥२१॥
 र्सहिताः पुनरेवेदं विभिदुर्धरणीतलम् । [२३]
- २२.] प्रागुत्तरां दिशं गत्वा ततस्ते सगरात्मजाः ॥२२॥
 अमर्षवशमापन्नाश्चल्लनुरेव धरामिमाम् । [२४]
- २३.] तत्राथ प्रोत्खनन्तस्ते क्षोणीमपि समन्ततः ॥२३॥ [N
 ददृशुः कपिलं नाम देवं नारायणं प्रभुम् ।'
 [२५उ]
- २४.] हयं च यन्नियं तस्य चरन्तमविदूरतः ॥२४॥ [N

१. र ज ल—ते तं ।

२. ज ल—चैवमनामयं । भ—चैनमनामयं । कै रा—०मयं ततः ।

३. ज ल भ—खनंतः समतिक्रान्तां दिशं हैववतीं तदा ।

४. ज ल भ—०स्यां रघुभेष्ट ।

५. ज ल भ—धारयंतं धरामिमां ।

६. कै—तमप्यालभ्य ते ।

रा—तमप्यालभ ते ?

७. ज ल भ—चैनं प्रदक्षि० ।

८. ज ल भ—राजपुत्रास्ततो भूयो ।

९. ज भ ल—ततः प्रागुत्तरं गत्वा चाशिया† पृथिवीमिमां ।

१०. ज ल भ—अभ्यन्नं‡ रुषिताः सर्वे काकुत्स्थ सगरात्मजाः ।

११. ज ल भ—ददृशुः कपिलं तत्र वसुदेवं महाबलं* ।

१२. ज ल भ—नास्ति ।

† ल—चाशिया । ‡ ल—अभ्यन्नं ।

* भ—महाबल

ते' तं' यद्गह्यं मत्वा क्रोधपर्याकुलेक्षणाः ।

२५] अभ्यधावन्त ते क्रुद्धास्तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रुवन् ॥ २५ ॥ [२७

संमूढा न विदुस्तं वै देवमक्षयमव्ययम् ।

ततस्तेनाप्रमेयेण तेऽपध्याता महात्मना ।

२६] भस्मराशीकृताः सर्वे समेताः सगरात्मजाः ॥ २६ ॥ [३०

इत्यार्षे रामायणे बाळकाण्डे कपिलदर्शनं
नाम सप्तत्रिंशः सर्गः ॥ ३७ ॥

१. भ तं ते ।

२. ज ल भ—यद्गह्यं ।

३. ज ल भ—ज्ञात्वा ।

४. ज ल भ—अभ्यधावन्तरेष्ट तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रुवन् ।

५. कै रा—नास्ति ।

६. ज ल भ—ततस्तेनाप्रमेयेण तेन* शशा महात्मना ।

७. ज ल भ—काकुत्स्थ ।

८. कै—द्विचत्वारिंशत्तमः । रा ल—नास्ति ।

ज ल भ—सर्गसमाप्तिर्न द्रश्यते ।

*ज ल—येत्याश्रिते ।

[वं=४३] [अष्टत्रिंशः सर्गः] [दा=४१]

पुत्रांश्चिरगतान् मत्वा सगरो रघुनन्देन ।

- १] नम्रारमब्रवीद् वाक्यं दीप्यमानं स्वतेजसा ॥१॥ [१
 पितेन् गच्छ त्वमन्वेष्टुं येन चाश्वोऽपवाहितः । [२३
 २] अन्तर्भूमिनिवासीनि सन्ति सत्त्वान्यनेकशः ॥२॥ [३
 तेषां प्रतिविधानार्थं गृहीत्वा ब्रज कार्मुकम् ।
 ३] तानासाद्य पितंस्तात यज्ञविघ्नकरं च मे ॥३॥ [४
 कृत्तार्यः सन्निवर्तेथा यज्ञादुत्तारणसूत्रं माम् ।
 ४] शूरोऽसि कृतविद्यश्च पूर्वैस्तुल्यपराक्रमः ॥४॥ [२५
 N] शीघ्रमायाहि भद्रं ते यथा धर्मो न लुप्येते । [N
 एवमुक्तोऽशुभांस्तेन सगरेण महात्मना ॥५॥

१. ज ल भ—ज्ञात्वा ।

२. रा—रघुनन्दनः ।

३. ल—सुतेजसम् ।

४. ज ल भ—पितृणां गतिमन्विच्छ ।

५. ज ल भ—अन्तर्भूमिनिवासीनि स्वानि वीर्यवन्ति महांति च ।

६. ज ल भ—तेषां त्वं प्रतिघातार्थमसि गृहीत्वा कार्मुकं ।

ब—तेषां प्रतिविधानार्थं ,, ,, ,, ।

७. ज ल भ—अभिघ्नजाभिवाद्यत्वं संहृत्य च रिपूनपि ।

८. रा—कृतार्था ।

९. ज ल भ—सिद्धार्थः सन्निवर्तस्व मम यज्ञस्य पारगः ।

१०. ज ल भ—नास्ति ।

११. रा—अन्वते ।

१२. ज ल भ—एवमुक्तो राम ।

- ५] धनुरादाय स्वहृगं च ययौ त्वरितविक्रमः । [५
तमेव पितृभिर्यातं पन्थानमनुसंचरन् ॥^१६॥
- ६] ययौ वेगेन महता पितृस्तान् द्रष्टुमञ्जसा । [६
बीक्षमाणो विशसनं कृतं तैर्यक्षरक्षसाम् ॥७^१॥
- ७] सोऽवैक्षत विरूपाक्षमाशागजमवस्थितम् ।^३ [७
स तं प्रदक्षिणं कृत्वा पृष्ट्वा चानोमयं ततः ॥८॥
- ८] पितर्न् स्वान् परिपप्रच्छ ह्यहर्तारमेव च । [८
आंशागजोऽपि तच्छ्रुत्वा पृच्छतोऽशुमतो वचः ॥^{१५}९॥
- ९] तमुवाच कृतार्थस्त्वमेष्यसीत्यभितः स्थितः ।^१ [९
इति^१ तस्य वचंः श्रुत्वा सर्वानेव हि दिग्गजान् ॥१०॥
- १०] यथाक्रमं यथान्यायं प्रष्टुं समुपचक्रमे । [१०
एतदेव च तैरुक्तो गजैराशुपराक्रमैः ॥^{१२}११॥

१. कै—चरितविक्रमः । रा—चरतिविक्रमः ।

२. रा—०नमनुसंस्मरन् ।

३. ज ल भ—दैत्यदानवरक्षोभिः पिशाचपतंगोरगैः ।

स्तूयमानो महातेजा दिग्गजं स ददर्श ह ॥

४. कै—तां ।

५. ज ल—चैवमवामयम् । व—चैनामनामयं ।

भ—चैनमनामयं ।

६. ज ल भ—पितृस्तान् ।

७. ज ल भ—बाजिहर्तारमेव ।

८. ज ल भ—दिग्गवारणस्तु तच्छ्रुत्वा सौम्यमंशुमतो वचः ।

९. ज ल भ—तमुवाच कृतार्थस्त्वं हयं त्वं प्राप्स्यसीति च ।

१०. ज ल भ—तस्य तद्वचनं ।

११. कै व ल—यथान्याय्यं ।

१२. ज म ल—दिग्पादैः समुतैः सर्वैर्वाक्यतो वाक्यकोविदैः ।

† भ—तं ।

‡ ज ल—संततैः ।

- ११] पूजितः सहयश्चैव गन्ताऽसीत्यंशुमानपि । [११
 तेषां सं वचनं श्रुत्वा जगौम लघुविक्रमैः ॥१२॥
- १२] भस्मराशीकृता यत्र पितरस्तस्य सागराः । [१२
 स दुःखवशमापन्नः सुतोऽथ ह्यसमञ्जसः ॥१३॥
- १३] चुक्रोशार्तस्वरं दृष्ट्वा भस्मराशीकृतान् पितृन् । [१३
 पृ१४] अपर्श्यत् तुरगं तं तु चरन्तमविदूरतः ॥१४॥ [१४
 स तेषां राजपुत्राणां कर्तुर्कामो जलक्रियाम् ।
 १५] सलिलार्थी महातेजा नापश्यत् सलिलं क्वचिद् ॥^२१५॥ [१५

१. ज ल—पूजितः सहि जिवैव गन्तासीत्यभिभाषितः ।
 भ—पूजितः स समस्तैस्तु गन्तासीत्यवभाषितः ।
२. ज ल भ—तु ।
३. रा—जगामाह ।
४. ज—सागरः ।
५. ज—अतः परमधिकः पाठः—
 स दुःखवशमापन्नाः पितरस्तस्य सागराः ।
६. ज ल भ—स दुःखवशमापन्नस्त्वसमंजसुतस्तदा ।
७. ज ल भ—चुक्रोष* परमायस्तो वधे तेषां सुदुःखितः ।
८. ज ल भ—यश्चियं च हयं तत्र ।
९. ज—अरिचमवि० ? ।
१०. अतः परमधिकः पाठः—
 कै—यथा पर्षणि नागेन कृतं वेलावनेस्ति..... ।
 रा—तदा ,, ,, ,, वेलां वने स्थितम् ।
 ज ल भ—दृष्ट्वा पुरुषभ्यामो दुःखशोकसमन्वितः ।
११. कै ज ल भ—कामोजलक्रियां ।
१२. ज ल भ—सलिलार्थं महातेजास्तदापरयजलाशयं ।

- पातयन्धाभितो दृष्टिं ततस्तत्र ददर्श ह ।
 १६] पितृणां मातुलं राम सुपर्णं पतगोत्तमम् ॥१६॥ [१६
 स चैनमब्रवीद् वाक्यं वैनतेयो महाबलः ।
 १७] मा शुचः पुरुषव्याघ्र बधोऽयं लोकसंमतः ॥१७॥ [१७
 कपिलेनाग्रमेयेण दग्धा ह्येते महाबलाः ।
 १८] सलिलं नार्हसे वीर दातुमेषां त्वमन्यतः ॥१८॥ [१८पृ
 गङ्गा हिमवतो ज्येष्ठा दुहिता संरिता वरा । [१९पृ
 १९] भस्मराशीकृतानेतान् पावयेल्लोकेपावनी ॥१९॥
 यावत् क्रिममिदं भस्म गङ्गया लोककान्तया ।
 २०] यदैषां भविता तात स्वर्गमेष्यन्ति वै तदा ॥२०॥ [२०
 गङ्गामानय भद्रं ते नाकलोकान्महीतलम् ।

१. कै ज ल भ—विचार्य निपुणं दृष्ट्वा ।

२. भ—ततस्तत्रददर्श ।

३. ज ल भ—सुपर्णमनिजोपमम् ।

४. ज ल भ—नास्ति ।

५. ब—०मेभ्यस्त्वमभ्यतः ।

६. ज ल भ—अर्होसि सलिलं वीर दातुमेषो नरोत्तम ।

७. ज ल भ—पुरुषर्षभ ।

८. ज—पावयेल्लोकभावन । ल—प्रावयेल्लोकभावन ।

भ—प्रावयेल्लोकभावना ।

९. ज ल भ—तया ।

१०. ज ल भ—नास्ति ।

११. ल भ—दातुं तुभ्यः ।

- २१] क्रियतां यदि शक्तोऽसि गङ्गाया अवतारणम् ॥२१॥ [२१
 गच्छाश्वमेतमादाय पुनरेव यथागतम् ।^१
- २२] यज्ञं पैतामहं वीरं निर्वर्तयितुमर्हसि ॥२२॥ [२२
 सुपर्णवचनं श्रुत्वा वीर्यवानंशुमानैथ ।
- २३] त्वरितो ह्यमादाय यज्ञमार्यान् महायशाः ॥२३॥^२ [२३
 स राजानं समासोद्य दीक्षितं रघुनन्दन ।
- २४] तस्मै निवेदयामास सुपर्णवचनं तदा ॥२४॥ [२४
 तच्छ्रुत्वा व्यथितो राजा राघवांशुमतो वचः ।^३
- २५] यज्ञं समापयामास नातिदृष्टमना इव ॥२५॥ [२५

१. रा—शक्नोसि ।

२. अ ल—षट् तानि सहस्राणि शुक्रवीकाय दास्यति† ।

भ— ” ” ” यार्ष्यन्तीन्द्रसन्नोक्तां ।

३. रा—०मेतदादाय ।

४. ज—गच्छ चाश्वं महातेजाः प्रगृह्य पुरुषर्षभ ।

ल—गंगां चाशु महातेजः ” ” ।

भ—गच्छ चाश्वं ” ” ” ।

५. रा—पैतामहो वीर । ज—वैत्यं महावीर ।

६. ल—नास्ति ।

७. ज—सुपर्णो राम नामतः । ब—वीरवानंशुमानथ ।

भ—सोऽशुमाश्वाम नामतः ।

८. ज भ—त्वरितं ।

९. ज—पुनरायां । भ—पुनरायान् ।

१०. ल—नास्ति ।

११. ज ल भ—राजानमथा० ।

१२. ज भ—न्यवेदयद्यथावृत्तं । ल—न्यवेदयन्मथावृत्तं ।

१३. ज ल भ—ततः ।

१४. ज ल भ—तच्छ्रुत्वा घोरसंकाशं वाक्यमंशुमतो वृषः ।

१५. ज ल भ—यज्ञं निवर्तयामास यथारब्धं* यथाविधि ।

† ल—दास्यति । * भ—यथारंभं ।

स्वपुरं च ययौ धीमेनिष्टयज्ञो महीपतिः ।

२६] गङ्गायाश्चागमे राजा नाध्यगच्छत् स निश्चयम् ॥२६॥ [२६
अगत्वा निश्चयं चापि युयुजे कालधर्मणा ।^१

२७] त्रिंशद्द्वर्षसहस्राणि पालयित्वा महीभिर्भाम् ॥२७॥ [२७

विधाय सोपानमिव क्रंतुं स
प्रतार्पविद्योतितभूमिपृष्ठः ।

आरुह्य देवालयमुग्रतेजा—

N] श्चिक्रीड देशेषु मनोरमेषु ॥२८॥^० [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे- यज्ञसमाप्ति^१ नाम
अष्टत्रिंशः^१ सर्गः ॥३८॥^१

१. ज ल भ—स्वपुरं चागमद्धीमा० ।

२. ज ल भ—नाध्यगच्छद्विनिश्चयं ।

३. ज ल भ—अगत्वा† निश्चयं राजा कालेन महता महान् ।

४. ज ल भ—राज्यं कृत्वा दिवं ययौ ।

५. भ—कृत्वा ।

६. ज—०भूमिपृष्ठः । ल—विद्योतिवभूमिपृष्ठः । कै रा—०सृष्टः ।

७ कै रा—नास्ति ।

८. ल—आदिकाण्डे ।

९. ज भ—सगरयज्ञस० । ल—सगरयज्ञसमाप्ति ।

१०. कै—त्रिंशत्वारिंशत्तमाध्यायः ।

रा—त्रिंशत्वारिंशत्तमः सर्गः ।

ज—द्वात्रिंशः सर्गः । व भ—सर्गः ।

ल—नास्ति ।

११. ज भ—॥ ३२ ॥

† ल—अकाले ।

[वं=४४] [एकोनचत्वारिंशः सर्गः] [दा=४२]

ततः प्रकृतयो राम स्वर्गते सगरे नृपे ।^१

१] धार्मिकं रोचयामासुरंशुमन्तं नराधिपम् ॥^२१॥ [१]

सै राज्ञामंशुमानासीदंशुमान् रघुनन्दन ।

२] तस्य पुत्रैः समभवेद् दिलीप इति विश्रुतः ॥२॥ [२]

तस्मिन् राज्यं समावेश्यै दिलीपेऽथांशुमानपि ।

३] हिमवच्छिखरे रामं तपस्तेपे महायज्ञाः ॥३॥ [३]

गङ्गावतरणं पुण्यं चिकीर्षुरमरद्युतिः ।

४] अनवाप्यैव तं कामं स वै ऋषुत्तिसत्तमः ॥४॥^{१०} [N]

द्वात्रिंशत्स सहस्राणि वर्षाणाममितद्युतिः ।

५] तपस्तैप्त्वा मंहोघोरं स्वर्गं लेभे महामनाः ॥५॥ [४]

१. ज ल भ—काबधर्मं गते राम सगरे प्रकृतजिनः ।

२. ज ल—राज्ञानं चोदयमास* भंशुमन्तं महाद्युतिः ।

३. ज ल भ—राजा च सुमहानासीदंशु० ।

४. ज ल भ—पुत्रो महातेजा ।

५. ज ब ल—समावेश्यै ।

६. ज भ—दिलीपे रघुनन्दन । ल—दिलीपं रघुनन्दन ।

७. ज ल भ—रम्ये

८. ज ल भ—तदांशुमान् ।

९. रा—०मितद्युतिः ।

१०. ज ल भ—वास्ति ।

११. भ—द्वात्रिंशच्च ।

१२. ज—०मितप्रभः । ल—०मितप्रभुः । भ—०प्रभाः ।

१३. ज ब ल भ—तपोबने ।

१४. ज ब ल भ—तपः कृत्वा ।

१५. ज ब ल भ—स्वकर्मजं ।

* भ—रोचयामास ।

दिलीपस्तु महातेजाः श्रुत्वा पैतामहं वरम् ।

- N] दुःखोपहतया बुद्ध्या नाध्यगच्छत् सं निश्चयम् ॥६॥^१ [५
कथं गङ्गावतरणं कथं तेषां जलक्रिया ।
- N] तारयेयं कथं बन्धूनिति चिन्तापरोऽभवत् ॥७॥^३ [६
तस्य चिन्तयतो नित्यं धर्मेण विजितात्मनः ।
- N] पुत्रो भगीरथो नाम जज्ञे परमधार्मिकः ॥८॥ [७
दिलीपोऽपि महातेजा यज्ञैर्बहुभिरिष्टवान् ।
- ६] त्रिंशच्चैव सहस्राणि वर्षाणां गामपालयत् ॥९॥ [८
निश्चयं चार्प्यगत्वैव गङ्गावतरणे ततः ।^४
- ७] व्याधिना नरशार्दूल कालस्य वशमीर्यिवान् ॥१०॥^{११} [९
इन्द्रलोकं गतो राजा सोऽर्जितं पुण्यकर्मणा ।^{१२}

१. ज ल भ—वधम् ।

२. भ—स्व० ।

३. कै रा—नास्ति ।

४. भ—०धार्मिकः ।

५. ज ल भ—दिलीपस्तु ।

६. ज ल—यज्ञैश्च बहुभिर्यजन् । भ—यज्ञैर्बहुविधैर्यजन् ।

७. ज ल भ—विशतिं वै ।

८. रा—चापि गत्वैव ।

९. ज ल भ—अगत्वा निश्चयं तांस्तु† समुद्धर्तुमशक्नुवन् ।

१०. व—०मेयिवान् ।

११. ज ल भ—विधिना नरशार्दूल कालधर्ममुपेयिवान् ।

१२. ज—इन्द्रलोकगतो राजा स्वर्जितं स्वेन कर्मणा ।

ल—इन्द्रलोकं गतो " " " " ।

भ—इन्द्रलोके " राजाऽर्जितं " " ।

† ज—त्वां तु ।

- ८] राज्यं भगीरथे पुत्रे निक्षिप्य पुरुषषभे ॥'११॥ [१०
 भगीरथोऽथ राजाऽभूद् धार्मिको रघुनन्दन ।
 ९] अनपत्यः स चाकांक्षन् सदृशीमात्मनः प्रजाम् ॥१२॥' [११
 स तपो महदातिष्ठद् गोकर्णेऽनुपमद्युतिः ।^१
 १०] ऊर्ध्वबाहुः पञ्चतपा ग्रीष्मे भूत्वा यतव्रतः ॥१३॥ [१३
 जलशायी च हेमन्ते वर्षास्वभ्राव'सनः ।
 ११] शीर्णपर्णकृताहारो यतात्मा जितमैथुनः ॥१४॥' [N
 तस्य वर्षसहस्रान्ते तपसोग्रेण तोषितः ।
 १२] आजगामाश्रमं ब्रह्मा प्रज्जुनां पतिरीश्वरः ॥१५॥' [१५
 वृतः सुरगणैः श्रीमान् विमानवरमास्थितः ।
 १३] स एनमाभाष्य तदा तप्यमानं तपोऽब्रवीत् ॥१६॥' [१६

१. ज ल भ—*राज्ये भगीरथं पुत्रं निक्षिप्य †पुरुषषभं ।

२. ज ल भ—भगीरथोपि ।

३. ज ल भ—नास्ति ।

४. ज ल भ—नास्ति ।

५. ज—पञ्चतपो ।

६. ज ल भ—मिताहारो जितेन्द्रियः ।

७. रा—ब्रह्माशये ।

८. रा—वर्षासुभावकासन । पुनः ककारो क्लिप्तः ।

ब—वर्षेस्वभाव'सनः ।

९. ज ल भ—नास्ति ।

१०. ज ल भ—तस्य वर्षसहस्रेण तपसुग्रे महात्मनः ।

ब्रह्मा प्रतिसम्ब्राम प्रजानां प्रभुरीश्वरः ॥

११. ज ल भ—ततः सुरगणैः सर्वैः सहस्रोकापितामहः ।

भगीरथं तप्यमानं महात्मानं वचोब्रवीत्X ॥

*ल—राज्यं । † पुरुषषभं । X भ—ततोऽञ्ज० ।

भगीरथ महाभाग प्रीतस्तेऽहं नरेश्वर ।

१४] गृहाण वरमस्मत्तः कांक्षितं पृथिवीपते ॥^२ १७॥^३ [१७

तमुवाच ततो दृष्ट्वा ब्रह्माणं स्वयमागतम् ।^४

१५] भगीरथो नरश्रेष्ठ कृताञ्जलिरिदं वचः ॥^५ १८॥ [१८

यदि मे भगवान् प्रीतो यद्यस्ति तपसो बलम् ।

१६] ततः सगरपुत्रास्ते मत्तः सलिलमाप्नुयुः ॥१९॥ [१९

गङ्गाजलप्लुते तस्मिन् देहभस्मनि चानघ ।

१७] गच्छेयुर्मलाः स्वर्गं सर्वे नः प्रपितामहाः ॥२०॥^६ [२०

इयं च सन्ततिर्देव नावसानं कथञ्चन ।

२८] इक्ष्वाकूणां कुले गच्छेदेष मेऽस्त्वंपरो वरः ॥२१॥ [२१

इत्युक्तवाक्यं राजानं सर्वलोकपितामहः ।^७

१. ल—भगीरथं ।

२. ज ल भ—तपसा त्वं सुतसेन वरं वर[य]सुमत ।

३. ब—नास्ति ।

४. ज ल भ—उवाच सः महात्मानं सर्वलोकपितामहं ।

ब—नास्ति ।

५. रा ज ल भ—भगीरथो महातेजा बद्ध्वा शिरसि चाञ्जलि ।

६. रा ज ल भ—तपसः फलम् ।

७. रा ज ल भ—सगरस्यात्मजाः सर्वे ।

८. रा ज ल भ—गंगासलिलसंक्रिन्ने ते भस्मनि महौजसः ।

*स्वर्गं गच्छेयुस्त्वन्तं× सर्वे ते† प्रपितामहाः ।

९. कै भ—नावसानं ।

१०. ज ल भ—कदाचन ।

११. ज ल—मेस्तु वरो वरः । भ—मेस्तु वरः परः ।

१२. ज—उक्तवाक्यं च । भ—उक्तवाक्यं तु ।

१३. रा ल—नास्ति ।

‡ ल—सुमहात्मानं । * ज—स्वर्गं । × भ—रत्यंते । † भ—मे ।

- १९] प्रत्युवाच शुभां वार्ष्णीं मधुराक्षरभूषिताम् ॥२२॥ [२२
तपोधन महाभाग भगीरथ महारथ ।
- २०] एवं भवत्वविच्छिन्नमिक्ष्वाकुकुलमध्ययम् ॥'२३॥ [२३
इयं च गङ्गा प्रवरा सरितां स्वर्गतश्च्युता । [२४पू
- २१] दारयेत् पृथिवीं सर्वा निपतन्ती महौघिनी ॥२४॥^२ [N
तदस्या धारणे राजन् महादेवः प्रसाद्यताम् ।^३ [२४उ
- २२] गङ्गायाः पतनं व्यक्तं भूमिः सोढुं न शक्यति ॥२५॥ [२५पू
N] अतिवेगात् पतन्ती गां भित्वा पातालमाविशेत् । [N
- २३] तस्या धारयितारं च नान्यं पृथ्यामि शङ्करात् ॥२६॥ [२५पू
वेगं सुदुःसहं लोके^४ तस्मात् त्वं तं प्रसादय । [N
तमेवमुक्त्वा राजानं भगवान् प्रपितामहः ।
- २४] आभाष्य च महीं नेतुं गङ्गां स त्रिदिवं ययौ ॥'२७॥[२६
इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे^१ भगीरथवत्प्रदानं
नाम एकोनचत्वारिंशः^२ सर्गः ॥ ३६ ॥^३

१. कै—०कुलसंभव । ज—०भवतु भद्रं वै चेत्त्वाकु० ।
रा ज भ—भवतु भद्रं व इक्ष्वाकु० ।
२. रा ज ल भ—या सा देवनदी गंगा ज्येष्ठा हिमवतः सुताः ।
३. रा ज ल भ—तां वै धारयितुं राजन् शिवो देवः प्रसाद्यताम् ।
४. रा ज भ—राजन् । ल—राजं ।
५. ज ल—पतन्ती ।
६. कै—नास्ति ।
७. व—मध्ये ।
८. रा ज ल भ—नास्ति ।
९. रा ज भ—गंगां आभाष्य लोककृत् ।
ल—गंगामाभाष्य लोककृत् ।
१०. रा ज ल भ—नियुक्ता जगतीं गंतुं गंगां प्रतिययौ ततः ।
पुराणं देवसदनं सर्वदेववत्सकृतः ॥

१६. कै व—आदिकाण्डे ।
१२. कै—चतुश्चत्वारिंशत्तमः । व—नास्ति ।
१३. रा ज ल भ—सर्गसमाप्तिर्नास्ति ।

[वं=४५] [चत्वारिंशः सर्गः] [दा=४३, ४४]

प्रजापतौ गते तस्मिन्नङ्गुष्ठाग्रपीडितम् ।

१] कृत्वा महीतलं राजा संवत्सरमुपावसत् ॥१॥ [१

ऊर्ध्वबाहुर्निरालम्बो वायुभक्षो निराश्रयः ।

२] अर्चलः स्थाणुवत् स्थित्वा रात्रिन्दिवमतन्द्रितः ॥२॥ [२

अथ संवत्सरेऽतीते सर्वदेवनमस्कृतः ।

३] उमापतिः पशुपतिर्भगीरथमभाषत ॥३॥ [३

प्रीतस्तेऽहं नरश्रेष्ठ करिष्यामि प्रियं महत् । [४पृ

४] पतन्तीं धारयिष्यामि दिवस्त्रिपथगां नदीम् ॥४॥ [५उ

ततो हिमवतः शृङ्गमधिरूढ महेश्वरः ।

१. रा ज ल भ—देवदेव गते राम सोगुष्ठाग्रेण पीडिताम् ।

२. रा भ—वसुमती । ज ल—वसुमती ।

३. रा ज—मुपागतम् । ल—मुपागतम् ।

४. कै—अचला० ।

५. रा ज ल भ—नास्ति ।

६. रा ज ल भ—स्सरे पूर्णे ।

७. रा ज ल भ—उमापतिः पशुपती राजानमिदमब्रवीत् ।

८. रा ज ल भ—तव ।

९. रा—प्रियाम् । ल—प्रियम् । ज भ—प्रियं ।

१०. रा ज ल भ—शिरसा धारयिष्यामि शैलराजसुतामिमां* ।

११. अतः परमधिकः पाठः—

रा ज ल—ततो हिमवतीं उयेष्टां सर्वलोकनमस्कृतां ।

भ—ततो हिमवतीं शेषा सर्वलोकनमस्कृता ।

अधितयक्षदा [गङ्गा] देवानामपि दुर्धरा ।

वसाम्यहं हि पाताळममसागुह्य शंकरं ।

तथावलिस्तां विज्ञाय क्रुद्धोभूद्भगवान्हरः ।

१२. रा ज ल भ—ततः स हिमवतं तमधिरूढ महेश्वरः X ।

* ल भ—सुतामहम् । X ज—समततः ।

- ५] निपतेत्यब्रवीद् गङ्गामाभाष्याकाशगां तदा ॥५॥ [N
जटाकलापं विपुलं प्रैविकीर्य समन्ततः ।
- ६] बहुयोजनविस्तारं शैलकन्दैरसम्भिभम् ॥६॥ [N
तस्मिन् पपात गगनाद् गङ्गा देवनदीच्युता ।
- ७] वेगेन महता राम शिरस्यमिततेजसः ॥७॥ [७
तत्र संवत्सरं पूर्णं बभ्राम परिमोहिता । [१२५
- ८] गङ्गा शिरसि देवस्य निःश्रिता वेगवाहिनी ॥८॥ [N
ततः प्रसादयामास पुनरेव भगीरथः ।
- ९] गङ्गायाः परिमोक्षार्थं महादेवमुमापतिम् ॥९॥ [N
तस्याथ वचनाद् गङ्गामुत्ससृज भृङ्गाक्षिहं ।
- १०] जटामेकां समापीड्य स्रोतः सञ्जनयन् स्वयमे ॥१०॥ [N

१. रा ज ल भ—पतस्वेत्यब्रवी० । व—निपतस्वेत्यब्रवी० ।

२. ज ल—तथा ।

३. कै—विनिकीर्य ।

४. भ—शैलकन्दर० । [लेखकाभ्तर लिखितम्]

५. भतः परमधिकः पाठः—

रा ज ल भ—उत्ससृजे जलं तत्र तीव्रशब्दपुरस्कृतम्* ।

भाकाशगंगामासाद्य धारयामास शंकरः ॥

६. रा ज ल भ—ततः ।

७. भ—प्रतिमोहिता ।

८. रा ज ल भ—विद्यता । रा—पुनः शोचयित्वा कृतम् ।

९. कै—परिमोक्षाय ।

१०. कै—भगार्दनः । रा—भगादिहा ।

ज—भगादिह ।

११. कै—समाक्षिप्य ।

१२. ल—दृषम् ।

* भ—पुरः सरम् ।

- स्रोतसा तेन सुस्त्राव गङ्गा त्रिपथगा नदी ।^{*}
- ११] पावयेन्ती जगद् रामं पुण्या देवनदी शुभा ॥११॥ [N
गगनाच्च छंकरशिरस्ततश्च धरणीं गता ।
N] तां प्रच्युतामृषिगणाः शिरसा जगृहुस्तदा ॥१२॥^० [N
N] सेन्द्रैः सुरगणैः सार्द्धं पूजयंतो महानदीम् ।
पृ१२] ततो देवर्षिगन्धर्वा यक्षाः सिद्धगणास्तथा ॥१३॥[†] [२१पू
उ१३] स्वयं चानुर्जगामैनां ब्रह्मा लोकपितामहः ।^० [N
तदद्भुततमं लोके गङ्गापतनमुत्तमम् ॥१४॥
१४] दिदृक्षवो देवगणाः समीयुरमितौजसः । [२३

१. रा ज ल भ—ततस्त्रिपथ० । कै—०त्रिपथगामिनी ।

२. रा ज ल भ—प्लावयन्ती जगद्धाम ।

३. कै—नास्ति ।

४. रा ज ल भ—नास्ति ।

५. कै—अतः परमाधिकः पाठः—

विमानैर्विबिधै राम ह्यैर्गजवरैस्तथा ।

६. कै—चावजगा० । रा ज—चात्र जगामैतां ।

ल—चाद्राजगामैतां । भ— चात्र जगामै० ।

७. अतः परमाधिकः पाठः—

रा ज ल भ—नागारुच शोषचामासु मार्ग* रम्यां X महौजसः ।

जेपुर्वैवर्षयो ÷ जप्यां सिद्धारुच परमर्षयः †

जगुरुच देवगन्धर्वा यक्षाः सिद्धगणास्तथा ।

व्याकुलां पतितं गंगां गगनाद्गंगां गतां तथा ॥

विमानैर्गणैर्ह्यैर्ह्यैर्गजवरैस्तथा ।

परिप्लवगतारुचाम्ये देवतास्तत्राभिहितः ‡ ।

* अ—०सुमर्गे । X ज—तस्यां । ल—तस्या म० । ÷ ल—अर्षं ।

† अ—वाप्यं । ‡ अ—विमानैस्त० ।

संपतद्भिः सुरगणैस्तेषां चाभरणौजसा ॥१५॥

- १५] शतादित्यमिवासीत् तु गगनं गततोयंदम् । [२४
 कचिद् द्रुततरं प्रायात् कुटिलं चार्थं कंचित् ॥१६॥
- १६] विनम्रं कचिदुद्वृत्तं शनैरपि पुनः पुनः । [२७
 सलिलेनैव सलिलं कचिदभ्याहनत् पुनः ॥१७॥ [२८पृ
- १७] शिशुमारोर्गगणैर्मीनैरपि च चञ्चलैः ।
 विद्युद्भिरिव विक्षिप्तमाकाशमभवद् दृत्तम् ॥१८॥ [२५
- १८] पाण्डुरैः संलिलोत्पीडैः कीर्यमाणं सहस्रधा ।
 शरच्छुभ्रमिवाभाति गगनं हंससंप्लवैः ॥१९॥ [२६
- १९] पुनरुर्ध्वमधो गत्वा पपात् धूर्त्वातले । [२८उ

१. रा ज ल —०स्तेषामाभरणौजसाम् ।

भ—० ,, जसा ।

२. रा—द्रुततोयदम् ।

३. रा ज ल भ—कचिदायतम् ।

४. कै—विततं ।

५. कै—रा ज भ—कचिद्वृत् ।

६. कै—०दभ्यावधीत् ।

७. रा ज ल म—अतः परमधिकः पाठः—

सुवेगोद्भ्रमितावर्ता X फेनमालावतंसका* ।

महाजलावर्तवती महाफेनप्रवाहिनी † ॥

८. ल—०पै पीनैरपि ।

९. रा ज ल भ—विषिसैराकाश० । कै—०वचद्वतम् ।

१०. कै—सखिलोत्पातैः ।

११. रा ल म—शरच्छुद्ध० ।

१२. कै—हंसविप्लवैः ।

१३. रा ज ल—सुहूर्ताधमधो । भ—सुहूर्तं तमधो ।

X ल—स्ववेगो० । * ज—फेन । ल—हेम मा० ।

† ज—महाफेन । ल—महादेव ।

१२०]	तच्छङ्करशिरोभ्रष्टं गतं भूमितलं पर्यः ॥२०॥	
	N] विरराज तैदां तोयं ^१ निर्मलं ^२ गतकल्मषम् । ^३	[२९
३२०]	ग्रहाः सगर्गन्धर्वा वसुधातलनिवासिनः ॥२१॥	[३०पृ
	नागाश्च शोधयामासुर्मागर्मस्य महौजसः । ^४	[N
२१]	भवाङ्गसंज्ञते तोये ^५ पवित्रे तत्र पृजिते ॥२२॥	[३०उ
	कृत्वाऽभिषेकं ते सर्वे बभूवुर्गतकल्मषाः ।	[३१पृ
२२]	शापात् प्रपतिता ये तु गगनाद् वसुधातलम् ॥२३॥	[३१उ
	पृतात्मानः पुनस्ते च सलिलेन दिवं गताः ।	[३२
२३]	जेपुर्देवर्षयो जप्यं सिद्धाश्च परमर्षयः ॥२४॥	[N
	जगुश्च देवगन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरोगणाः ।	[N

१. रा ल--तज्ज[ङ्]हरशिरोभ्रष्टं । ज--उज्जहासि० ।

२. रा ज ल भ--पुनः ।

३. रा--ततस्तोयं ।

४. रा--निर्मलं ।

५. कै--नास्ति ।

६. ल--सघनगन्ध० ।

७. ब--र्गमस्या ।

८. रा ज ल भ--नास्ति ।

९. रा ज--संगतो ।

१०. रा ज--वेन

११. रा ज ल भ--पवित्रत्वासु !

१२. रा ज ल भ--कृत्वा तत्राभिषेकान्ते ।

१३. कै--च ।

१४. रा ज ल भ--पुनस्तेन ।

१५. रा ज ल भ--नास्ति ।

- २४] मुनिसंघां मुमुदिरे प्रह्लादं जगदाप च ॥२५॥^२ [N
 त्रयोऽपि लोका मुदिता गङ्गाऽवतरणे तदा । [N
 २५] भगीरथोऽपि राजर्षिर्दिव्यं स्यन्दनमाश्रितः ॥२६॥^३
 प्रायादग्रे महातेजास्तं गङ्गां पृष्ठतोऽन्वयात् । [३४
 २६] महातरङ्गौघवती प्रनृत्यन्तीव राघव ॥^४२७॥^५ [N
 स्ववेगोद्भासितजला पद्ममालाऽवतंसका ।
 २७] महाजलावर्तवती महावेगप्रवाहिनी ॥२८॥^६ [N
 प्रययौ विलसन्ती च भगीरथपथानुगा ।^७
 २८] देवाः सर्षिगणाः सर्वे दैत्यदानवराक्षसाः ॥२९॥ [३५
 गन्धर्वयक्षप्रवेराः सकिन्नरूपहोमर्षिणः ।
 २९] सर्वाश्चाप्सरसो रामं भगीरथरथानुगाः ॥३०॥ [३६
 गङ्गामन्वगमन् प्रीताः सर्वे जलचराश्च ये । [३७

१. ब—मुनिसंगा ।

२. रा ज ल भ—नास्ति ।

३. रा ज ल भ—^७दिव्यमाख्या वै रथम् ।

४. ब—नास्ति ।

५. रा ज ल भ—^८अन्वयात् ।

६. रा ज ल भ—नास्ति ।

७. ब—नास्ति ।

८. ब—^९गोवृद्धमितावती ।

९. ब—^{१०}केनमाद्या ।

१०. ब—^{११}वर्तनदी ।

११. रा ज ल भ—नास्ति ।

१२. रा ज ल—^{१२}प्लवगा ।

१३. ल—^{१३}गंगापन्वमहोरगाः ।

१४. ज—^{१४}वीर ।

- ३०] येतो भगीरथो राजा तैतो गङ्गा यशस्विनी ॥३१॥
जगाम नरशार्दूल सर्वलोकनमस्कृता । [३७
- ३१] स गत्वा सागरं राजा गङ्गायाऽनुर्गतस्तदा ॥३१॥
प्रविवेश तलं भूमिः खातं यत् सगरात्मजैः । [४४.१
- ३२] उपानीय ततो गङ्गां रसातलतलं प्रभुः ॥३३॥ [३२
तर्पयामास तान् सर्वान् भस्मीभूतान् पितामहान् ।
- ३३] अथ गङ्गाऽम्भसा तत्र प्र्लाविताः सगरात्मजाः ॥३५॥^{१०}
दिव्यमूर्तिधरा भूत्वा जग्मुः स्वर्गं मुदा युताः । [४४
- ३४] तान् दृष्ट्वा प्र्लावितान् सर्वान् पितृस्तेन महात्मना ॥३५॥^{११}
भगीरथमुवाचेदं ब्रह्मा सुरगणैः सह । [२ उ
- ३५] तारिता नरशार्दूल त्वया पूर्वपितामहाः ॥३६॥^{१२}

१. रा ज ल भ—यथा ।

२. भ—गंगा ।

३. रा ज ल—तथा । भ—तथा ।

४. भ—वा सा ।

५. कै—राम ।

६. रा ज ल—गंगायानुगतस्तदा ।

७. रा ज ल भ—भूमिर्यत्र ते भस्मसाकृताः ।

८. रा ज ल भ—नास्ति ।

९. कै—ताः ?

१०. रा ज ल भ--भस्मन्यथाप्लुते तेन गांगोदेन† नरोत्तमः ।

११. रा ज ल भ—नास्ति ।

१२. रा ज ल भ—सर्वलोकप्रभुर्ब्रह्मा राजानमिदमब्रवीत् ।

तारितानि नृपश्रेष्ठ दिवं यातानि देववत् ॥

† अ—गंगोदेन । भ—गंगोदेन

- पंष्टिः पुत्रसहस्राणि सगरस्य महात्मनः । [३
 ३६] अस्ययः सगरस्यायं नाम्ना ख्यातो महोदधिः ॥३७॥^३
 व्यक्तं सागर इत्येवं ख्यातिं लोके गमिष्यति ।^३
 ३७] यावच्च सागरो लोके स्थितोऽर्यमिह शाश्वतः ॥^३ ३८ ॥
 सगरः सहितः पुत्रैस्त्वावत् स्वर्गं निवत्स्यति ।^३ [६
 ३८] इयं च दुहिता राजंस्तैव गङ्गा भविष्यति ॥३९॥
 भागीरथीति विख्याता त्रिषु लोकेषु भूपने ।^३ [५
 ३९] गङ्गेति गमनादं भूमेः ख्याता भागीरथीति च ॥ ४०॥ [६
 भविष्यति सरिच्छ्रेष्ठा लोके त्रिपथेगति च ।^३

१. ज—षष्टिं ।

२. ज—पुत्रसहस्रस्य ।

३. रा ज ल भ—नास्ति ।

४. ब—स्थितोहमिह ।

५. रा ल भ—सागरस्य जलं यावद्दोके स्थास्यति पार्थिव ।

६. रा ज ल भ—सगरस्यात्मजास्तावद्दोके* स्थास्यति देववत्† ।

अतः परमधिकः पाठः—

रा ज ल भ—दिव्यमात्रांबरेवृता‡ दिव्यमाल्यानुलेपनाः× ।

दिव्यरूपधरायैव भविष्यति गुह्यान्विताः ॥

७. रा ज ल—तु ।

८. रा ज ल भ—ज्येष्ठा तव ।

९. रा ज ल भ—स्वकृतेन= च नाम्ना तु लोकधात्री ÷ तु विभ्रता ।

१०. रा—प्रथमं नाम तथा । ज—प्रथितं । राजंस्तथा ।

ल भ—प्रथितं नाम तथा ।

११. रा ज ल भ—नास्ति ।

* ज-०स्यात्मजास्ता० । † ज-स्थास्यति । ‡ भ-दिव्यमात्रांब० ।

× ल भ-दिव्यगन्धानु० । = भ-स्वकृते तव । ÷ ज-लोकधात्रीतिवि०

- ४०] त्रिपथगेति नामास्यास्त्रिमार्गगमनादिदम् ॥'४१॥ [६
 त्रीँलोकान् पावयन्त्या वै मुरर्षिभिरुदाहृतम् ।
 ४१] द्वितीयं चापि गङ्गेति गां गताया विशांपते ॥४२॥^f [N
 ४२] भागीरथीति चाप्येतत् तृतीयं चापि सुव्रत ।
 यावच्च भुवि गङ्गेयं भविष्यति महानदी ॥४३॥^f [N
 ४३] तावत् तवाक्षया कीर्त्तिलोकैकेषु विचरिष्यति । [N
 पितामहानां सर्वेषां त्वमत्र मनुजाधिप ॥४४॥
 ४४] कुरुष्व सलिलं राजन् प्रतिज्ञा (ज्ञां ?) परिपालय । [७
 पूर्वर्जेनापि ते राजंस्तेनातियशसा सतां ॥४५॥^f
 ४५] धर्मिणां प्रवरेणापि नैष प्राप्तो मनोरथः । [८
 तथैवांशुमता तात लोकेऽप्रतिमतेजसा ॥४६॥

१. कै—त्रिपथगेति चाप्येतत्तृतीयं चापि सुव्रत । मध्ये पाठं विच्छिद्य
 ४२ तमश्लोकस्य पूर्वार्द्धेन सह योजितः ।

रा ज ल भ—त्रिपथेति च नामास्यास्त्रिमार्गगमनात् स्मृतं ।

२. ज—पावयन्त्यो ।

३. रा ल भ—गतायां ।

४. कै—नास्ति ।

५. रा ज ल भ—भागीरथीति चाप्येव* तृतीयं नाम सुप्रथमम् ।

भविष्यति च स्वप्नीत्या† मत्प्रीत्या च विचक्ष्ण‡ ।

६. रा ज ल—पूर्वं केनापि । भ—पूर्वं केनापि ।

७. रा ज ल भ—तदा ।

८. कै—कुरुष्व सलिलं राजंस्तेनातियशसा सता । अपरकरोष पूर्वपाठे
 'प्रतिज्ञामनुपाकृत्यन्' इति लिखितम् ।

९. रा ज ल भ—चर्मैश्च ।

* ज भ—चाप्येवं । † भ—स्वप्नीति । ‡ ज—विचक्ष्णः
 रा—विचक्ष्णा ।

- ४६] गङ्गां प्रार्थयमाणेन न प्राप्तः काम एष हि । [९
 राजर्षीणां पुराणानां महर्षिसमतेजसाम् ॥४७॥
- ४७] अतुल्यतपसा चापि क्षत्रधर्मस्थितेन च । [१०
 दिलीपेन महाभाग तव पित्राऽतितेजसा ॥४८॥
- ४८] पुनर्न शंकिता तेन गङ्गां प्रार्थयताऽर्नघ । [११
 सा त्वया समनुप्राप्ता प्रतिज्ञा पुरुषर्षभा ॥४९॥
- ४९] प्राप्तोऽसि परमं लोके यश्छिदशसम्भ्रतंम् । [१२
 यच्च गङ्गाऽवतरणं त्वया कृतमरिन्दम ॥५०॥
- ५०] अनेन च मेहेत् प्राप्तं धर्मस्थानं त्वयाऽनघ । [१३
 पार्वर्येस्व स्वमात्मानं नरोत्तम 'नरोचते' ॥५१॥
- ५१] सलिले पुरुषश्रेष्ठ शुचिः पुण्यफलो भव । [१४
 पितामहानां सलिलं कुरुष्व च यथामुखम् ॥५२॥

१. रा ज ल भ—नास्ति ।
 २. रा ज ल भ—गुणवतां ।
 ३. रा ज ल भ—महर्षिप्रतिमौजसाम् ।
 ४. कै—चापि ।
 ५. कै—शोभितं । रा—शंकिता ।
 ६. भ—भव ।
 ७. भ—भव । मध्यस्थं वाटं भ्रान्तिवशादपहाय क्षिपितमिदम् ।
 ८. ज—प्राप्तसि ।
 ९. ज—परमे ।
 १०. कै—दशसम्भ्रतम् ।
 ११. कै—त्वया ।
 १२. रा ज ल भ—प्रावय त्वं ।
 १३. कै—त्वमात्मानं ।
 १४. कै—सदोचिते । रा ज ल भ—सदोचिते ।
 १५. कै—पुण्यफलाय च । व—पुण्यफला भव ।

- ५२] स्वस्ति तेऽस्तु गमिष्यामि स्वर्लोकं नरपुङ्गवे । [१५
इत्युक्त्वा भगवान् ब्रह्मा भगीरथमरिन्दम ॥५३॥
- ५३] जगाम सहितो देवैर्ब्रह्मलोकमनामयम् । [१६
भगीरथोऽपि राजर्षिः कृत्वा तेषां जलंक्रियाः ॥५४॥ [१७पृ
- ५४] पितामहानां सर्वेषामयोध्यां पुनरागमत् । [१८
समृद्धार्थो नरश्रेष्ठो राज्यं चानुशशास ह ॥५५॥ [१८
- ५५] प्रसुमोद च लोकस्तं नृपमासाद्य राघव । [१६पृ
इति ते राम गङ्गाया विस्तरोऽभिहितो मया ॥५६॥
- ५६] स्वंस्ति प्राप्नुहि भद्रं ते सन्ध्यां काल उपस्थितः । [२०
धन्यं यशस्यमायुष्यं स्वर्ग्यं पौवनमेव च । [२१पृ

१. रा ज ल भ—स्वगृहं ।

२. रा ज ल भ—गम्यतामिति ।

३. रा ज ल भ—इत्येवमुक्त्वा ब्रह्मलोकः* सर्वलोकपितामहः ।

४. रा ज ल भ—यथागतं† जगामाथ ब्रह्मलोकं‡ पितामहः ।

५. रा ज ल भ—सखिलमुत्तमम् ।

६. रा ज ल भ—यथाक्रमं यथान्यायं‡‡ सागराणां रघूत्तम ।

रा ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

कृतोदकः शुची राजा स्वपुरं प्रविवेश ह ।

७. कै—नर श्रेष्ठो । रा ज ल भ—नरश्रेष्ठ ।

८. रा ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

नष्टशोकः समृद्धार्थो× बभूव विगतज्वरः ।

९. रा ज ल भ—पृथ ।

१०. कै—स्वस्ति ।

११. रा ज ल—०कालोभिवर्तते । भ—०कालोतिवर्तते ।

१२. रा ज ल भ—पुष्यं ।

१३. रा ल भ—स्वर्ग्यं तथैव । ज—स्वर्गं तथैव ।

* ज—सर्वेशः । † ल—यथामतं । ‡ ल—ब्रह्मलोकः ।

‡‡ ल—यथान्यायं । × स सिद्धार्थो व० ।

- ५७] इदमाख्यानमाख्यातं गङ्गाऽवतरणं मेया ॥५७॥ [२२४
 भागीरथीति विदिता भुवनत्रयेऽस्मिन्
 पीयूषनिर्मलजलप्रचलत्तरङ्गा ।
 भस्वीकृताखिलजगत्कलुषा धरण्यां
 N] स्वैरं प्रखेलैति विहंगमशब्दरम्या ॥५८॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डेऽ गङ्गाऽवतरणो
 नाम चत्वारिंशः^१ सर्गः ॥४०॥^६

१. रा ज ल भ—शुभम् ।
२. रा ज ल—प्रजाक्षिता० । भ—प्रक्षाक्षिता० ।
३. रा ल भ—हि खेळति । ज—च खेळति ।
४. कै व—आदिकाण्डे ।
५. कै—पञ्चचत्वारिंशत्तमः । ज—प्रयक्षितः ।
 रा व ल भ—नास्ति ।
६. भ— ॥ ३१ ॥

[वं=४६] [एकचत्वारिंशः सर्गः] [दा=४५]

विश्वामित्रवचः श्रुत्वा राघवंः सहलक्ष्मणः ।

१] विस्मयं परमं गत्वा प्रोवाचेदं वचस्तदा ॥१॥ [१]

अत्यद्भुतमुपाख्यानां त्व ऽऽख्यातं महामुने ।^१

२] गङ्गाऽवतरणं पुण्यं सागरेरस्य च पूरणम् ॥२॥ [२]

इयं नो रजनी पुण्या गुणभूता भविष्यति ।^२

३] इमां चिन्तयतामेव कथां पापभयापहाम् ॥^३३॥ [३]

ततः सा शर्वरी सर्वा सह सौमित्रिणा तदा ।

४] गता चिन्तयतश्चैवं विश्वामित्रस्य तां कथाम् ॥४॥ [४]

ततः प्रभाते विमले विश्वामित्रं महामुनिम् ।

५] उवाच रामः सत्कृत्य कृत्वाह्निकमिदं वचः ॥^५५॥ [५]

गता भगवती रात्रिः श्रोतव्यं परमं श्रुतम् । [६]

१. कै—रामो दशरथात्मजः ।

२. रा ज ल भ—विश्वामित्रमथाब्रवीत् ।

३. रा ज ल भ—अत्यद्भुतमिदं ब्रह्मन्कथितं परमं त्वया ।

४. रा ज ल भ—समुद्रस्य ।

५. रा ज ल भ—अथभूता हि रात्रिर्मे वृत्तेयं सुमहाव्रत ।

६. रा ज ल भ—इमां चिन्तयतः सर्वा निश्चिन्नेन कथां* तव ।

७. कै—तस्या सा रजनी पुण्या ।

८. रा ज ल भ—चिन्तयतस्तस्य ।

९. कै—कृत्वाह्निकं ।

१०. रा ज ल भ—उवाच राघवो वाक्यं कृतपूर्वाह्निकक्रियः ।

* भ—कथं । † रा—इव ।

- ६] सन्तरामः सरिच्छ्रेष्ठां पुण्यां त्रिपथगां नदीम् ॥६॥ [७
 हृदयेयं नौः^३ सुविस्तीर्णा सन्तारयितुमार्पणाम् ।
- ७] भवन्तमिह संप्राप्तं दृष्ट्वैवेति मतिर्मम ॥७॥ [७
 इत्येतद् वचनं श्रुत्वा रामस्याक्लिष्टकर्मणाः ।
- ८] सन्तारं कारयामास विश्वामित्रो महामुनिः ॥८॥ [८
 उत्तरं तीरमासाद्य ततः स मुनिपुङ्गवः ।
- ९] अपश्यत् तत्र निरतांस्तापसान् नियतव्रतान् ॥९॥ [९
 स तान् संपूज्य विधिवज् जगाम सहराघवः ।^४
- १०] विशालां नगरीं रम्यां दिव्यां स्वर्गपुरीमिव ॥१०॥ [१०
 ततो रामो महाबुद्धिर्विश्वामित्रमिदं तदा ।^५

१. रा ज ल भ—*तरामः सरितां श्रेष्ठां पुण्यां †त्रिपथगामिनीम् ।

२. रा ल—कथा श्रुता । भ—नौरेषा हि ।

३. रा ज ब ल भ—सुविस्तीर्णा ।

४. रा ज ल—मुनीनां पुण्यकर्मणां । भ—मुनीनां भावितात्मनां ।

५. रा ज ल भ—भगवंतमिह प्राप्तं ज्ञात्वा स्वरितमागता ।

६. रा ज ल भ—तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राघवस्य महामुनिः ।

सन्तारं तारयामास सर्षिसंघः× सहराघवः ॥

७. रा ज ल भ—कृत्वासाद्य ।

८. रा ज ब ल—संपूज्यार्थिगणं ततः । भ—संपूज्यार्थिगणं ततः ।

९. रा ज ल भ—गंगातीरे निविष्टास्ते विशालां दृष्ट्वाः पुरीम् ।

१०. रा ज ल भ—ततो मुनिवरो द्रष्टुं जगाम सहराघवः ।

११. कै—विशालं ।

१२. ज—दिव्यं ।

१३. रा ज ल भ—अथ रामो महामाज्ञो विश्वामित्रं महामुनिं ।

*ज—घां रामः । भ—स रामः । † भ—०गामिनां । ×ज—सर्षि-

- ११] पप्रच्छ प्राञ्जलिभूत्वा विशालां प्राप्य तं पुरीम् ॥११॥ [११
 केतमो राजवंशोऽयं विशालस्य महात्मनः ।
 १२] श्रोतुमिच्छामि भद्रं ते परं कौतुहलं हि मे ॥१२॥ [१२
 तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राघवस्य मुनिस्तदा ।
 १३] आख्यातुमुपचक्राम विशालस्य पुरातनम् । [१३
 श्रुता मयेयं शक्रस्य पुरा कथयतः कथा ॥१३॥
 १४] यथा दिवि सभामध्ये शृणु तां मम राघव । [१४
 आसन् कृतयुगे राम दितेः पुत्रा महाबलाः ॥१४॥
 १५] अदितेश्च महावीर्याः सुवीर्यबलदर्पिताः। [१५
 भ्रातरः स्पर्धिनः पुत्राः कश्यपस्य महात्मनः ॥१५॥ [N

१. कै—वैशाखीः । रा ज भ—विशालामुत्तमां ।

२. रा ल भ—कतरो ।

३. रा ज ल—महासुणे ।

४. कै—नास्ति ।

५. कै—विश्वामित्रो महातपाः ।

६. रा ज ल भ—*अता मया महेन्द्रस्य कथा कथयतः शुभां ।

७. रा ज ल भ—तां मे निगदतो बल्ल शृणु तत्त्वेन राघव ।
 पूर्वं कृतयुगे वीर दितिपुत्रा महाबलाः ॥

८. रा भ—अदितेश्च समानार्था वीर्यवंतो महाबलाः ।

ज—,, समानार्था ,, ,,

ल—अदितेः शसमनार्था ,, ,,

रा ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

तसस्तेषां नरश्रेष्ठ बुद्धिरासीन्महात्मनां ।

९. भ—नास्ति ।

*ल—अथा । † रा—निगदितो ।

- १६] मातृष्वस्त्रीयाः सापत्नाः परस्परजिगीषवः ।^२ [N
तेषां किल समेतानां बुद्धिरासीन्महौजसाम् ॥१६॥
- १७] अजराश्चामराश्चैव कथं स्यामेति राघव । [१६
तेषां चिन्तयतां राम बुद्धिरासीत् सुनिश्चला ॥१७॥^३
- १८] क्षीरोदसागरं सर्वे मथ्नीमः सहिता वयम् ।^४ [१७
नानौषधीः समाहृत्य प्रक्षिप्य च ततस्ततः ॥१८॥ [N
- १९] यत्तत्रोत्पत्स्यते सारं तत् पास्यामस्ततो वयम् ।
तेनाजरंमरा लोके^५ भविष्यामो गतज्वराः ॥१९॥ [N
- २०] तेजोवीर्यबलोपेताः कर्णित्तुष्टुतिसमन्विताः । [N
इति ते निश्चयं कृत्वा भ्रमन्थुर्वरुणालयम् ॥२०॥

१. कै—मातृस्वश्रेयाः ।

२. रा ज ल भ—नास्ति ।

३. भ—ततस्तेषां नरश्रेष्ठ ।

४. रा—०रासीद्विनिश्चिता । भ—०रासीन्महात्मनां ।

५. ज ल—विनिश्चिता ।

६. रा भ—नास्ति ।

७. भ—नास्ति ।

रा ज ल भ—अतः परमाधिकः पाठः—

क्षीरोदमथनाद्विर रसं संभाष्य तत्र वै ।

८. रा ज ल भ—सर्वौषधीः ।

९. रा ज ल भ—यद्ब्रूतोत्पत्स्यते ।

१०. रा ल—तथाजरामरा । ज—तथाजरामा? । भ—तथा तथाजरा ।

११. ज—कोके च ।

१२. रा—तेषां वीर्यबलान्मराः ।

ज ल भ—तेजोवीर्यबलान्मराः ।

- २१] मन्यानं मन्दरं कृत्वा नेत्रं कृत्वा च वासुकिम् । [१८
 अप्सु निर्मथ्यमानासु रसात् तस्माद् वरस्त्रियैः ॥२१॥
- २२] उत्पेतुंस्तु रसाद् यस्मात् तस्मादप्सरसः स्मृताः । [३३
 षष्टिः कोट्योऽभवन् राम तासामप्सरसां तदा ॥ ॥२२॥ [३४पृ
- २३] दिव्यानां दिव्यरूपाणां दिव्याभरणवाससाम् ।
 रूपयौवनमाधुर्यगुणाढ्यानां सुवर्चसाम् ॥२३॥ [N
- २४] असंख्येर्या बभूवुर्ध्वं यास्तासां परिचारिकाः । [३४ उ
 N] तास्तैतः प्रतिसंप्राप्ता जगृहुर्देवदानवाः ॥२४॥
- २२५] अप्रतिग्रहणात् ताश्च सर्वाः साधारणीकृताः । [३६
 वरुणस्य ततः कन्या वारुणी रघुनन्दन ॥२५॥

१. रा ज ल भ—तेषु निश्चित्य मनसा नेत्रं कृत्वा † तु वासुकिम् ।
 मंधानं मंदरं चैव *ममन्थुः पुरुषोत्तम ॥

२. रा—निर्मथ्यमानासु ।

३. रा—०स्मात्पुरस्त्रियः । ल—०स्मात्पुरस्त्रियः ।
 भ—रन्वात् तस्माद्द्वाराः स्त्रियः ।

४. रा ज ल भ—उत्पेतुः पयसस्तस्मात् ।

५. ज भ—षष्टिः कोट्यस्तु †संभूतास्तस्मादप्सर[सः]पुरा ।
 ल—षष्टिकोट्यस्तु काकुत्स्थ यास्मादप्सरसः पुरा ।

६. ज ल भ—असंख्येयास्तु काकुत्स्थ ।

७. रा—यस्तासां ।

८. ज—ततस्ताः ।

९. कौ रा—न त्वेता जगृहुर्देवास्तत्र देव्याश्च राघव ।

के पुस्तके पाठमसुं छित्वा पुनरपरकरेण मूळस्थपाठो विन्यस्तः ।

१०. ज ल भ—अप्रतिग्रहणाच्चैव ततःसाधारणास्तु ताः ।

† ज—कृत्वाच । *ल—कृत्वा । ‡भ—षष्टिको० ।

- २६] उत्पपात रसात् तस्मान् मार्गमाणां परिग्रहम् । [३६
दितेः पुत्रा न तां राम जगृह्वरुणात्मजाम् ॥२६॥
- २७] अदितेस्तु सुताः प्रीतास्तामगृह्णन्त वै सुराः । [३७
सुरापरिगृहाद् देवाः सुरा इत्यभिविश्रुताः ॥^३ २७॥
- २८] अप्रतिग्रहणात् तस्या दैतेया असुरास्तथा ।^४ [३८ पू
उच्चैःश्रवाश्च तत्राश्वो मणिरन्नं च कौस्तुभम् ॥२८॥ [३९ पू
- २९] तस्मादेतत् समुद्भूतममृतं चाप्यनन्तरम् । [N
अमृतानन्तरं चापि धन्वन्तरिरैजायत ॥२९॥
- ३०] वैद्यराडमृतस्यैव बिभ्रत् पूर्णं ह्यमण्डलम् । [३२ पू
धन्वन्तरेस्तदुद्भूतं विषं लोकविषादकृत् ॥^{१२} ३०॥ [N

१. ज ल भ—महावीर्या ।

२. ज ल भ—वाञ्छमाना । ब—वाञ्छिमाना ।

३. ज ल भ—अदितेस्तु †सुता वीरा जगृह्वस्तामनिदितां ।
तेनाभवन्सुरा देवा दैतेया *आसुरास्ततः ॥

४. रा—दैत्येया ।

५. ज—हृष्टाः प्रमुदिताश्चासन्वारुणीग्रहणास्सुराः ।
ल—हृष्टाः प्रमुदिताश्चासं वारुणीग्रहणात्मनाः ।
भ—हृष्टाः प्रमुदिता आसन्वारुणीग्रहणास्सुराः ।

६. ल भ—उच्चैःश्रवास्तु ।

७. ज—तस्मादेव च । ल भ—तस्मादेव ।

८. ज—संभूतममृतं ।

९. रा ज ल भ—धान्वन्तरि० ।

१०. रा—पूर्वक० ।

११. रा—धान्वन्तरे तदमृतं । ज ल—धान्वन्तरेरनुद्भू० ।
व भ—धन्वन्तरेरनुद्भूतं ।

१२. ज ल—सर्वविषादकम् । भ—सर्वविषादकं ।

†ल—सुरा । *०तेया असुरा०

- ३१] तन्नागा जगृहुः सर्वे ज्वलनादिससन्निभम् । [N
तन्नामृतार्थे देवानामसुराणां च विग्रहः ॥^३३१॥ [४७ पृ
३२] आसीद् बलवतां राम लोकक्षयकरो महान् ।^१
तस्मिन् विमर्दे महति तेषाममिततेजसाम् ॥^२३२॥ [४८ उ
३३] अदितेरात्मजा राम निजघ्नुस्तान् दितेः सुतान् ।^३ [५१
निहत्य च दितेः पुत्रान् राज्यं प्राप्य पुरन्दरः ।
३४] मुमोर्दद्धि परां प्राप्य सर्वदेवाभिपूजितः ।^४ ॥३३॥ [५२

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे अमृतमथने अमृतोत्पत्तिर्नाम
एकचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४१ ॥

१. ज ल भ—तं नागा ।
२. रा—तन्नामृतार्थी ।
३. ज ल भ—दृष्ट्वा देवास्ततोभावन्नमृतं चापि भास्वरं ।
४. ज ल भ—अमृतस्य कृते राम महानासीत्कुलक्षयः ।
५. ज ल भ—नास्ति ।
६. कै—सुरान् ।
७. ज ल भ—अदितेरात्मजास्तत्र दि*तिपुत्रास्त्रिजगिरे ।
८. ज ल भ—तु ।
९. रा—मुमोर्दद्धि ।
१०. ज ल भ—विज्वरो निहिताभिन्नो †विदुधैर्मुमुदे सह ।
ज ल भ—तदा तु मुदिता लोका सर्षिसंघाः सचारवाः ।
११. कै व—आदिकाण्डे ।
१२. कै रा—दृष्टत्वारिंशत्समः । व—नास्ति ।
१३. ज ल भ—सर्गसमाप्तिर्न इत्येते ।

*—दितेः पु० । † ल भ—मुमुदे विदुधैः ।

[वं=४७] [द्विचत्वारिंशः सर्गः] [दा=४६]

- हतपुत्रो ततो देवैर्दितिः परमदुःखिता ।^१
 १] मारीचं कश्यपं देवी^२ भर्तारमिदमब्रवीत् ॥१॥ [१]
 हतपुत्राऽस्मि भगवन् पुत्रैः शक्रादिभिस्तव ।
 २] शक्रहन्तारमिच्छामि पुत्रं दीर्घतपोऽर्जितम् ॥२॥ [२]
 साऽहं तपैः करिष्यामि गर्भमाधातुमर्हसि ।
 ३] तत्र मे शक्रहन्तारं पुत्रं त्वं जयिष्यसि ॥^३ ३॥ [३]
 तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा मारीचः कश्यपस्तदा ।
 ४] प्रत्युवाच महातेजा दिति परमदुःखिता^४ ॥४॥ [४]
 एवं भवतु मद्रं ते शुचिर्भव तपोधने ।
 ५] जनयिष्यसि पुत्रं त्वं शक्रहन्तारमीप्सितं^५ ॥५॥ [५]

१. कै—हतपुत्रस्तो ।

२. ज ल भ—हतेषु पुत्रेषु दितिः परं दुःखेन मोहिता ।

३. रा—मारीची ।

४. ज ल भ—राम ।

५. ज ल—०बंस्तव पुत्रैर्महात्मभिः ।

भ—०वन् तव पुत्रैर्महात्मभिः ।

६. ज—०हर्तारमिच्छामि ।

७. ज ल भ—तपकरिष्यामि । व—तव करिष्या० ।

८. ज ल भ—इदं शक्रहन्तारं त्वमनुज्ञातुमर्हसि ।

९. ज—०दुःखितं ।

१०. ज—शक्रहन्तारमाहवे । ल भ—०हन्तारमाहवे ।

† ज—शक्रहन्तार । भ—ऋतुहन्तारं ।

- पू६] पूर्ण वर्षसहस्रं च शुचिर्यदि भविष्यसि ।
 N] पुत्रं त्रैलोक्यहन्तारं मत्तो वै^३ जनयिष्यसि ॥६॥ [६
 उ६] एवमुक्त्वा महातेजाः पाणिना सम्ममार्जं ताम् ।
 संस्पृश्य चोक्त्वा स्वस्तीति जगाम तपसे मुनिः ॥^७॥ [७
 ७] गते तस्मिन् मुनिश्रेष्ठे दितिः परमहर्षिता ।
 उदक्प्रस्रवणे देशे तप आतिष्ठदुत्तमम् ॥^८॥ [८
 ८] चरन्त्याश्च तपस्तस्याः परां सन्नतिमास्थितः ।
 परिचर्यां स्वयं शक्रश्चकाराधनतत्परः ॥^९॥ [९
 ९] समित्कुशं मूलफलं पुष्पमग्निं तथा जलम् ॥^{१०}॥ [१०
 प्रयत्नवानाजहार तस्याः काले पुरन्दरः ॥^{११}॥ [११]

१. ज ल भ—त्वं ।

२. ज—०हर्तारं । कै रा—त्वं शक्रहर्तारं ।

३. ज ल भ—ततस्त्वं ।

४. ज ल भ—संमार्ज्यं †चात्र भवनं जगाम स महानृषिः ।

५. ज ल—नरभेष्ट । भ—नरभेष्टे ।

६. भ—परमदुःखिता ।

७. ज ल भ—कुशप्रवणमासाद्य तपस्तेपे सुदारुणम् ।

८. ज ल भ—तपस्तस्याश्च कुर्वत्याः परिचर्यां चकार ह ।

सहस्राक्षो नरभेष्ट *परया भक्तिसंपदा ॥

९. ज ल भ—‡समिधोभिं कुशान्पुष्पंXमहीमूलफलं हविः ।

समिधोभिकुशान्पुष्पं महीं मूलं फलं हविः ॥

१०. कै ज ल भ—शक्रो न्यवेदयत्तस्यै यच्चान्य ÷ दपि काञ्चित् ।

†ल—च त्रिभुवनं । *ल—०क्षोऽनरभेष्टो । ‡ज—समिधो० ।

Xभ—पुष्पं महींमूलं फलं । ÷ज—०न्यदाभक्तं० ।

- १०] गात्रसंवाहने चैव श्रमापनयने तथा ।
शक्रः सर्वेषु कार्येषु दितिं परिचचार ह ॥११॥ [११
- ११] गते वर्षसहस्रे तु दशोने रघुनन्दन ।
दितिः प्रीता सहस्राक्षमिदं वचनमब्रवीत् ॥१२॥ [१२
- १२] प्रीता तेऽहं सहस्राक्ष दशवर्षाणि पुत्रक ।
अवशिष्टानि भद्रं ते द्रष्टांसि भ्रातरं ततः ॥१३॥ [१४
- १३] तमहं त्वत्कृते पुत्र समाधास्ये यथा तथा ।
पू१४] सौभ्रात्रेणैव सहितस्त्वं हि राज्यमवाप्स्यसि ॥१४॥ [१५
- N] त्रैलोक्यं निखिलं पुत्र भोक्ष्यथः सह विज्वरौ । [N
- उ१४] एवमुक्त्वां दितिः 'शक्रं विश्वस्तौ शक्रसंभिधौ ॥१५॥ [१६
- उ१५] कृतपादां शिरःस्थाने प्राप्ते मध्यं दिवाकरे ।

१. ज ल भ—गात्रसंवाहने *चात्र श्रमापनयनेन सः ।
२. ज ल भ—कालेषु ।
३. ज ल भ—अथ वर्षघाते पूर्वे दशमे ।
४. ज ल भ—दितिः परमसुप्रीता सहस्राक्षमुवाच ह ।
५. ज ल भ—भ्रातरं द्रक्ष्यसे ।
६. कै ज ल भ—जयोस्तुकं ।
७. ज ल भ—नास्ति ।
८. भ—भोक्ष्यथे ।
९. कै रा—नास्ति ।
१०. रा—एवमुक्तः ।
११. कै रा—ततः ।
१२. ज ल भ—नास्ति । कै—वर्षाणिद्वेनावहः ।
१३. ज ल भ—नास्ति ।
१४. ज—प्राप्तं मध्ये दिवाकरे ।

- पृ १५] निद्रयापहृता देवी^१ पादौ कृत्वा तु शीर्षतः ॥१६॥^३ [१६
 दृष्ट्वा तामश्नुचि शक्रः पादयोः कृतमूर्द्धजाम् ।
 १६] वैपरीत्येनं सुप्तां चै मुमुदे च जहास च ॥१७॥ [१७
 तस्याः शरीरं विकृतं प्रविश्य बलसूदनैः ।^५
 १७] विभेद सप्तधा गर्भं वज्रेण शतपर्वणा ॥१८॥ [१८
 एकैकं चैव गर्भं स पुनश्चिच्छेद सप्तधा ।
 १८] विस्फुरन्तं बलाद् राम रुदन्तं चार्तर्या गिरा ॥१९॥ [N
 भिद्यमानस्तदा गर्भः कुक्षौ वज्रेण वज्रिणा ।^३
 १९] हरोद सुस्वरं राम ततोऽदितिरबुध्यत ॥२०॥ [१९
 मा रोदीरिति तं शक्रैः प्ररुदन्तमभर्षत ।
 २०] विभेद चैवं वज्रेण रुदन्तमपि वासवः ॥^१ २१॥ [२०

१. ज—निद्रयापहृतां । ल—दिद्रयां पहृतां ।

२. ज ल—देवी ।

३. रा—कृतपादा शिरःस्थाने मुमुदे च जहास च ।

४. ज ल—तामश्नुचिः ।

५. ज ल—कृतायां शिरसःस्थाने । भ—कृतायाः शिरसः स्थाने

६. कै ज ल भ—जहास मुदितोपि च ।

७. ज ल—विवेश स पुरंदरः । भ—प्रविवेश पुरंदरः ।

८. ज ल भ—गर्भं च सप्तधा †राम विभेद परमात्मवान् ।

९. ज ल—गर्भासु ।

१०. ज—विस्फुटं तु । ब ल—विस्फुटं ।

११. ज—हरोदैर्वातया । ल—हरोदैर्वातया ।

१२. भ—नास्ति ।

१३. ज ल भ—भिद्यमानस्ततो गर्भो वज्रेण शतपर्वणा ।

१४. ज ल भ—शक्रो गर्भं चैवाभ्यभाषत ।

१५. ज ल भ—विभेद च महातेजा एकैकं सप्तधा पुनः ।

†भ—कृत्वा ।

ने हन्तव्यो न हन्तव्य इति^१ तं^२ दितिरब्रवीत् ।

२१] निर्ययौ च ततः शक्रो मातुर्वचनगौरवात् ॥२२॥ [२१

प्राञ्जलिश्चाब्रवीदेनां विनिःसृत्याग्रतः स्थितः ।^३

२२] अशुचिर्देवि सुप्ताऽसि पादयोः कृतमूर्धजा ॥२३॥ [२२

लब्ध्वा तदन्तरं चाहं मद्विनाशार्थमाहितम् ।^४

२३] गर्भं ते हतवान् देवि तन्मे त्वं क्षन्तुमर्हसि ॥२४॥ [२३

इत्याद्यं रामायणे बालकाण्डे^५ दितिगर्भच्छेदो^६ नाम

द्विचत्वारिंशः^७ सर्गः ॥४२॥^८

१. रा—न हन्तव्यं न हन्तव्यं ।

२. ज ल भ—इत्येवं ।

३. ज भ—निर्ययावय देवेशो । ल—निर्ययाविति देवेशो ।

४. ज ल भ—प्राञ्जलिश्चाब्रवीत्सहितो दितिचैवाम्बभाषत ।

५. ज ल भ—पादतः ।

६. रा—वीर्यं ।

७. ज ल भ—सदन्तमहं लब्ध्वा †शक्रहन्तारमाहवे ।

८. ज ल भ—मिथ्यावांससथा ।

९. कै ब—भादिकाण्डे ।

१०. अ—दितिगर्भच्छेदभेदो । ल—गर्भच्छेदं ।

भ—भेददर्शनो ।

११. कै रा—सप्तचत्वारिंशः । ज—चतुर्दशः ।

ब भ—वासि ।

१२. भ—॥ ३४ ॥

† अ—शक्रहन्तारमा० ।

[वं=४८] [त्रिचत्वारिंशः सर्गः] [दा=४७]

एकोनपञ्चाशद्वा तु भिन्ने गर्भे तदा दितिः ।

१] सहस्राक्षं दुराधर्षमुवाच भृशदुःखिता ॥१॥' [१]

ममापराधाद् गर्भोऽयं सप्तधा विदलीकृतः ।

२] नापराधोऽस्ति देवेश भवतः स्वैहितैषिणः ॥२॥' [२]

एवं गतेऽपि वत्स त्वं प्रियं मे कर्तुमर्हसि ।

१. ज ल भ—सप्तधा तु हते 1 गर्भे दितिः परमदुःखिता ।

सहस्राक्षं दुराधर्ष 2 वाक्यं सानुनयाप्रवीक्ष ॥

२. ज ल भ—तव ।

३. रा—सुहितैषिणः । ज ल भ—कश्चन पुत्रक ।

४. ज व ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

प्रियं तु कृत 3 मिच्छेयमस्मिन्गर्भविषर्षवे ।

सप्त स्थानानि सप्तैते मरुतः 4 पाठ्यंतु ते ।

वातस्कन्धाः 5 सदा सप्त चरंतु 6 मम पुत्रक ।

मरुतश्चेति च 7 विख्याता दिव्यरूपा महाबलाः ।

ब्रह्मलोकं चरत्वेक 8 इंद्रलोकं तथापरः 8 ।

विश्वंवायुरिति 9 ख्यातस्तृतीयस्तु महाबलाः ।

चत्वारस्तु नरश्चेष्ट दिवो वै तव ज्ञासवात् ।

संचरिष्यंति भद्रं ते वैषरूपा महाबलाः ।

त्वत्कृतेनैव मरुत इति नाम्ना च विभृताः ।

संचरिष्यंति भद्रं ते काकेन हि ममात्मजाः ।

५. व—नास्ति ।

1. ज ल भ—कृते । 2. ज—दुराधर्षा । 3. ज—गतनि० । 4. ज—
मारुतः । 5. ज व ल—वातस्कन्धाः । 6. व—वर्षंतु । ल—चरंतु । 7. ज—
मरुतेति च । व—मारुतश्चेति । 8. ज—चरत्वेके इंद्रलोकं तथापरे । 9. भ—
विश्वंवायु इति ।

- ३] इमे ते सप्तधा सप्त मरुतो नाम विश्रुताः ॥३॥^२ [३
 चरन्त्वाज्ञाकराः सप्त वातस्कन्देषु सप्तसु । [४पृ
- ४] सहैभिर्मम पुत्रैस्त्वं मरुद्भिर्जहि शात्रवान् ॥४॥^६ [N
 ब्रह्मलोके चरन्त्वेके इन्द्रलोके तथापरे ।^६ [५पृ
- ५] दिक्षु चैतासु सर्वासु विचरन्तु तवाज्ञया ॥५॥^६ [N
 दिव्यमूर्तिधरा भूत्वा मरुतोऽमृतभोजनाः ।
- ६] तवैवाज्ञाकराः शक्र कुरुष्वैतद्रचो मम ॥६॥^६ [N
 तस्यास्तद्रचनं श्रुत्वा शक्रं शक्तिमतां वरं ।
- ७] उवाच प्राञ्जलिर्वाक्यमेवमस्त्विति राघव ॥^७ ७॥^२ [७
 त्वत्कृतेनैव नाम्ना हि भविष्यन्ति तवात्मजाः ।^७
- ८] ख्याता मरुत इत्येते दिव्यरूपा ममाज्ञया ॥८॥ [६ उ
 सर्वमेतद् यथात्थ त्वं करिष्ये ऽहमशेषतः ।

१. रा ज—सप्तभिः ।

२. ल भ—नास्ति ।

३. रा—चरन्त्वाज्ञाः कराः । ज—चरन्त्वातेकराः ।

४. रा—महन्निर्जहि ।

५. रा—शातवान् ।

६. ल भ—नास्ति ।

७. रा—चरन्त्वेने ।

८. ज—खलुकृतेनैव नाम्ना हि भविष्यन्ति तवात्मजाः ।

ख्याता मरुत इत्येते दिव्यरूपा ममाज्ञया ॥

पृथ देशः स काकुत्स्थ महेंद्राद्युषितः पुरा ।

दिति यत्र सप्तःसिद्धामेवं परिचचार सः ॥

९. ज—तवैवाज्ञाकराः ।

१०. ल भ—सहस्राचः पुरंवरः ।

११. ल भ—उवाच प्राञ्जलिर्वाक्यं दिति बलनिपूवनः ।

१२. ज—नास्ति ।

१३. ज ल भ—नास्ति ।

- ६] अमृतप्राञ्चिनः पुत्रा इमे ते सहिता मया ॥१॥' [N
विचरिष्यन्ति लोकांस्त्रीन् निर्भया विगतज्वराः ।
- १०] निर्वृता भव भद्रं ते करिष्ये वचनं तव ॥१०॥' [N
सर्वमेतद् यथोक्तं ते भविष्यति न संशयः । [C पृ
- ११] एवं तौ निश्चयं कृत्वा मातापुत्रौ परस्परम् ॥११॥
जग्मतुस्त्रिदिवं राम कृतार्थाविति नः श्रुतम् । [६
- १२] एष देशः स काकुत्स्थ महेन्द्राध्युषितः पुरा ॥१२॥
दितिं यत्र तपःसिद्धामेवं परिचचार सः । [१०
- १३] इक्ष्वाकोरत्र राजर्षेः पुत्रः परमधार्मिकः ॥१३॥
अलंबुसायामुत्पन्नो विशाल इति विश्रुतः । [११
- १४] तेनेयं निर्मिता राम वैशाली नगरी पुरी ॥१४॥
विशालस्य सुतो राम हेमचन्द्रोऽभवन्नृपः । [१२

१. ल भ—नास्ति ।

ज—अतः परमधिकः पाठः—

तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा सहजाचःपुरंदरः ।

उवाच प्राञ्चिर्वाक्यं दितिं बलनिसूदनः ॥

२. ज भ—मातृपुत्रौ ।

३. ज भ—तपोवने ।

४. ल—तस्य पुत्रो महातेजाः संग्रत्येव पुरीभिमाम् ।

५. ज ल भ—नास्ति ।

६. ज ल—विश्वम्बायोस्तु । भ—विश्वम्बायोस्तु ।

७. ज ल भ—काकुत्स्थ ।

८. भ—अलंबुसायां ।

९. ज ल भ—नः श्रुतम् ।

१०. रा—वेशाकी ।

११. ल—शुचि । भ—शुभा ।

१२. ल भ—महाबलः ।

- १५] सुचन्द्र इति विख्यातो हैमचन्द्रिर्महायशाः ॥१५॥ [१३
 सुचन्द्रतनयो राम धूम्राश्वे इति विश्रुतः ।
 १६] धूम्राश्वैतनयो राम सञ्जयः समजायत ॥१६॥
 सञ्जयस्य सुतः श्रीमान् सहदेवः प्रतापवान् । [१४
 N] कृताश्वः सहदेवस्य पुत्रः परमधार्मिकः ॥१७॥
 कृताश्वस्य महातेजाः सोमदत्तः सुतोऽभवत् ।
 १८] सोमदत्तस्य काकुत्स्थं पुत्रोभुञ्जजनमेजयः ॥१८॥ [१६
 तस्य पुत्रश्चै काकुत्स्थं पात्येतां सांप्रतं पुरीम् ।
 १९] धर्मात्मौ नरशार्दूल सुमतिर्नाम वीर्यवान् ॥१९॥ [१७

१. रा—हैमचन्द्रिर्महायशाः ।

ज—हैमचन्द्रो महायशाः ।

२. रा—धूम्राश्व । ब ल—धूम्राश्वः ।

३. रा—धूम्राश्व० ।

४. रा ज ब—सञ्जयः ।

५. ल—धूम्राश्वतनयश्चापि सञ्जयः समपद्यत ।

भ—धूम्राश्वतनय ” ” ” ।

६. रा ज ब ल—सञ्जयस्य । भ—नास्ति ।

७. ल—सुतो राम । भ—भीमान् ।

८. ज ल भ—कृशाश्वः ।

९. ज ल भ—कृशाश्वस्य ।

१०. ल भ -- पुत्रस्तु ।

११. ल भ—काकुत्स्थ जनमे० ।

१२. ब ल भ—पुत्रो महातेजाः ।

१३. ल भ—अप्यास्ते ।

१४. ल भ—प्रमितिर्नाम ।

१५. ल भ—दुर्जयः ।

१६. ल—विश्वग्वायोःप्रसादेन विशाखाः सर्वपार्थिवाः ।

भ--विश्वग्वायोः ” ” ” ।

- इक्ष्वाकवः सर्वे एव ख्याता वैशालका नृपाः ।
 २०] दीर्घायुषो महात्मानो वीर्यवन्तो महाबलौः ॥२०॥ [१८
 इहाद्य रजनीं राम स्रुवं वत्स्यामहे वयम् ।
 २१] श्वः प्रभाते तु जनकं ध्रुवं द्रक्ष्याम राघव ।^५ ॥२१॥ [१९
 स्रुमतिस्तं ततः श्रुत्वा विश्वामित्रमुपागर्तम् ।
 २२] प्रत्युद्गम्य महात्मानं पूजयामास पार्थिवः ॥^६२२॥ [२०
 पाद्यार्घ्यासनदानेन सोपाध्यायगणस्तदा ।^७
 २३] प्राञ्जलिः कुशलं चैनं पृष्ट्वेदं वाक्यमब्रवीत् ॥२३॥ [२१
 पृतोऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि यस्य मे विषयं मुनिः ।
 २४] संप्राप्तो दर्शनं चैव नास्ति धन्यतरो मम ॥२४॥ [२२
 अद्य मे सफलं जन्म संपूर्णञ्च मनोरथः ।
 २५] येनैवां कुशलिनं ब्रह्मन् पश्यामि समुपागतम् ॥२५॥ [N
 इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे सुमतिसमागमो
 नाम^{१५} त्रिचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४१ ॥^{१५}

१. ल भ—वीर्यवन्तः ।
२. ल—सुधार्मिकः । भ—सुधार्मिकाः ।
३. ल—वत्स्यामः सुसुखा वयम् । भ—वत्स्यामः सुसुखा वयं ।
४. ज—श्वःप्रभाते तु जनकं द्रक्ष्याम ध्रुवमेव हि ।
 ल भ— „ नरश्रेष्ठ जनकं द्रष्टुमर्हसि ।
५. ल भ—अथासौ प्रमिती राजा । अथासौ प्रमती राजा ।
६. भ—मित्रमुपागतम् ।
७. ल भ—अस्वा नरवरः श्रेष्ठः पुरात्प्रत्युद्ययौ तदा ।
८. ल भ—पूजां च परमां कृत्वा सोपाध्यायः सर्वांशवः ।
९. ल भ—पृष्ट्वा विश्वामित्रमथाब्रवीत् ।
१०. ल भ—धन्योऽस्म्यनु० ।
११. ल भ—मया ।
१२. ल भ—संवृततश्च ।
१३. कै रा ज भ—यस्त्वां ।
१४. कै—नामाष्टाचत्वारिंशः । रा व—नाम ।
 ज—नाम पञ्चत्रिंशः ।
१५. ल भ—सर्गसमाप्तिर्न ऋयते ।

[वं=४९] [चतुश्चत्वारिंशः सर्गः] [दा=४८]

पृष्ठा तु कुशलप्रभं परस्परमेशेषतः ।

- १] कथान्ते मुमतिर्वाक्यं विश्वामित्रमभाषत ॥१॥ [१
 इमौ कुमारौ भगवन् कुतः कस्य च शंस मे । [२ पृ
 २] किमर्थं च त्वया सार्धं रमेते देवरूपिणौ ॥२॥* [६ पृ
 सिर्हर्षभर्गती वीरौ शार्दूलवृषभाविषं । [२ उ
 ३] पद्मपत्रविशालाक्षौ वरायुधधरावुभौ ॥३॥
 अश्विनाविव रूपेण समुपस्थितयौवनौ । [३
 ४] यदृच्छया क्षितिं प्राप्तौ देवलोकादिहागतौ ॥४॥
 कथं पद्म्यामिह प्रप्तौ किमर्थं कस्य वा सुंतौ । [४
 ५] भूषयन्ताविमं देशं चन्द्रसूर्याविवाम्बरंम् ॥५॥

१. ज—कुशलं प्रभं । ल भ— कुशलं तत्र ।

२. ल भ—० रसमागमे ।

३. ल भ—कथां ते प्रमतिर्वाक्यं व्याजहार महामुनिम् ।

४. ज—मद्यतः ।

५. ल भ—इमौ कुमारौ भद्रं ते देवतुल्यपराक्रमौ ।

६. ल भ—गजसिंहगती ।

७. रा—० लवृषकाविव ।

८. कै—वीरेण । रा—वीरेण ।

९. रा—० दिह स्थितौ । ल भ—दिवामरौ ।

१०. रा—प्राप्तं ।

११. ल भ—भुजे ।

१२. व ल भ—सूर्यचन्द्राविवाम्बरं ।

* ल—प्रमितिः ।

- परस्परस्य सदृशौ प्रमाणास्थितिचेष्टितैः^१ । [५
 ६] वरायुधधरौ वीरौ श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥६॥ [६ ब
 तस्यैतद्वचनं श्रुत्वा यथावृत्तं न्यवेदयत् । [७ पृ
 ७] सिद्धाश्रमकथां चैव राक्षसानां वधं तथै ॥७॥ [८ ब
 राक्षसानां वधं श्रुत्वा सुर्मतिर्भृशविस्मितः । [N
 ८] अतिथी पूजयामास पुत्रौ दशरथस्य तौ ।^{१०} ॥८॥ [६ ब
 ततः परमसत्कारं सुर्मतेः प्राप्य राघवौ ।
 ९] उषित्वा च निशां तत्र जग्मतुर्मिथिलां पुरीम् ॥^{११} ॥९॥ [१०
 ते^{११} हृष्टा दूरतः सर्वे जनकस्य पुरीं शुभाम् ।
 १०] मुनयो हृष्टमनसः शशंसुः साधु साध्विति ॥१०॥^{१२} [११
 मिथिलोपवने तस्मिन्नाश्रमं प्रेक्ष्य राघवः ।
 ११] पप्रच्छ मुनिशार्दूलं किमिदं निर्जनं वनम् ॥^{१३} ॥११॥ [१२

१. ब ल भ—परस्परेण ।

२. रा—स्थितिं चेष्टितौ । ज—चेष्टितौ ।

३. ल भ—तस्य तद्वचनं

४. ल भ—रक्षसां वधमेव च ।

५. ज ब ल भ—विश्वामित्रवचः ।

६. ब—स मुनि० । ल भ—विस्मितः स महायशाः ।

७. ल—बभूव इष्ट्वा सदृशौ पुत्रौ दशरथस्य वै ।

भ—बभूवत्वीर्यौ ,, ,, तौ ।

ल भ—अथ तौ पूजयामास नृपतिः स यथाविधि ।

८. ल—प्रमितेः । भ—प्रमतेः ।

९. ब—उषित्वा ।

१०. ल भ—व्युप्य तत्र निशामेकां जग्मतुर्मिथिलां तदा ।

११. ल भ—इष्ट्वा तु मुनयः ।

१२. ल भ—शुभां पुरीं ।

१३. भ ल—साधु साध्विति संहृष्टा मिथिलां समपूजयन् ।

१४. ल भ—पुराणं निर्जनं चैव पप्रच्छाव महासुनिम् ।

श्रीमानं विरलच्छायो मुनिसंघं विवर्जितः ।

१२] श्रोतुमिच्छामि भगवन् कस्यासीदयमाश्रमः ॥१२॥ [१३

पृ१३] इति तस्य वचः श्रुत्वा विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ।* [१४

अहं ते कथयिष्यामि शृणु यस्यायमाश्रमः ।^१

१४] यथा शून्यो यथा चायं शप्तः कोपान्महात्मनः ॥^२ १३॥ [१५

गौतमस्यार्श्रमः पुण्यो ह्ययमासीन्महात्मनः ।

१५] नित्यपुष्पफलोपेतैः पादपैरुपशोभितः ॥^३ १४॥ [१६

स चेह तप आतिष्ठदहल्यास्मृहितो मुनिः ।

१. भ—श्रीमांस्तु विर०

२. रा—मुनिसंग ।

३. ल भ—तच्छ्रुत्वा राघवेणोक्तं वाक्यं वाक्यविशारदः ।

प्रस्थुवाच महातेजा विश्वामित्रो महामुनिः ॥

कै रा ज—कथाज्ञो मुनिशार्दूलः प्रहसन्वाक्यमुत्तमं ।

विनयावनतं धीरं धर्मज्ञं सत्यवादिनं ।

रामं कमलपत्राक्षमाभाष्य मधुरं वचः ॥

४. व—हन्त ।

५. ल भ—हन्त ते वर्णयिष्यामि शृणु तत्त्वेन राघवः ।

६. रा ज—०म्महात्मना ।

७. ल भ—यथायमाश्रमः पूर्वं शप्तः कोपान्महात्मना ।

८. व—०पुण्यः । ल—गौतमस्य नरभेष्ट ।

भ—गौतमस्य नरभेष्टः ।

९. व भ—पूर्वमासीन्महामुनेः । ल—पूर्वमासीन्महामुने ।

१०. व—०फलोपेतः ।

११. ल भ—आश्रमोऽयं महापुण्यः सुरैरपि सुपूजितः ।

* भ—वर्णयिष्यामि ।

- १६] संवत्सरसहस्राणि बहूनि रघुनन्दन ॥'१५॥ [१७
 अहर्ल्यया रघुश्रेष्ठ तरुणादित्यरूपया ।
 N] तदस्याश्चाश्रमं कृत्वा रम्यरूपं पुरन्दरः ॥१६॥^३ [N
 तस्यान्तरं विदित्वाऽथ कामार्तस्त्रिदशेश्वरः ।
 १७] मुनिवेशधरो भूत्वा अहल्यामिदमब्रवीत् ॥'१७॥ [१८
 ऋतुकालप्रतीक्षोऽपि न प्रतीक्षे सुमध्यमे ।
 १८] सङ्गमं शीघ्रमिच्छामि पृथुश्रोणिं सह त्वया ॥१८॥ [१६
 मुनिवेशधरं शक्रं सा ज्ञात्वाऽपि परन्तप ।
 १९] र्मतिं चकार दुर्मेधा देवराजकुतूहलात् ॥१९॥ [२०
 अब्रवीच्च सुरश्रेष्ठं कृतार्थं सा वचस्तदा ।
 २०] कृतार्थाऽस्मि सुरश्रेष्ठ गच्छ शीघ्रमलक्षितः ॥२०॥^१ [२१

१. ल—स चेह तप आतिष्ठदहल्यामिदमब्रवीत् ।

२. ज—अहल्याया ।

३. ब ल भ—नास्ति ।

४. भ—सोहल्यामिद० ।

५. ल—नास्ति ।

६. ब ल—ऋतुकालः प्रतीक्षयोपि । भ—ऋतुकालप्रतीक्षयोपि ।

७. भ—प्रतीक्षे ।

८. ल—मुनिवेशधरो भूत्वा सोहल्यामिदमब्रवीत् ।

संवत्सरसहस्राणि बहूनि रघुनन्दन ॥

तस्यान्तरं विदित्वाऽथ सहस्राक्षः पुरन्दरः ।

मुनिवेशधरं ज्ञात्वा सहस्राक्षं तथापि सा ॥

९. व—रतिं ।

१०. रा—० कुतूहलम् । भ—देवराजे कुतू० ।

११. ल भ—अब्रवीच्च सुरश्रेष्ठं गच्छ शीघ्रमर्दिदम् ।

आत्मानं मां च देवेश सर्वथा रक्ष मानद ॥

- उ२१] तामिन्द्रः प्रहसन् वाक्यमहल्यामिदमब्रवीत् ।' [२२३
 मुश्रोणि परितुष्टोऽस्मि गमिष्यामि क्षमस्वै वे०॥२१॥ [२३
 २२] एवमुक्त्वा ततोऽहल्यां निष्क्रामन्नुटजान्मुनेः ।
 संभ्रमात् त्वरितो रामं शङ्कितो गौतमं प्रति ॥२२॥ [२४
 २३] ददर्श सहसाऽऽयान्तं गौतमं दीप्ततेजसम् ।
 देवैरपि मुदुर्धर्षं तपोवीर्यबलाश्रयात् ॥२३॥' [२५
 २४] पुण्यतीर्थोदकविलम्बमाज्यविलम्बमिवानलम् ।^०
 N] समित्कलापं सकुशमादायायन्तमाश्रमम् ॥२४॥ [२६
 दृष्ट्वैव च तदा शक्रो विषादमगच्छत् परंम् ।'' [२७
 २५] सोऽपि' दृष्ट्वैव देवेन्द्रं' मुनिवेशंधरं मुनिः ॥२५॥
 दुर्दृत्तं दृत्तसंपन्नो रोषाद् वचनमब्रवीत् । [२८

१. ल—सहसाऽस्तथेत्युक्त्वा स्वहल्यां† देवरूपिण्यम् ।

२. ल भ--उवाच ।

३. ल भ--यथासुखम् ।

४. ल भ--निष्क्रामोऽजात्तदा ।

५. ल भ--समं संचरन् राम ।

६. ल भ--गौतमं तु ददर्शार्थं प्रविष्टान्तं शचीपतिः ।

देवदानवदुर्धर्षं तपोबलसमन्वितम् ॥

७. व--पुण्यतीर्थोदकक्रिन्नं दीप्यमानमिवानलं ।

ल भ--तीर्थोदकपरिक्रिन्नं ,, ,,

८. ल भ--गृहीतसमिधं विप्रं सकुशं पुरुषर्षभ ।

९. रा--पुरम् ।

१०. ल भ--दृष्ट्वा सुरपतिमस्तो विषसाद् भयान्वितः ।

११. ल भ--दृष्ट्वा सहसाक्षं ।

१२. भ--मुनिवेश० ।

†भ--०त्वा अहल्यां ।

- १६] मम रूपसमं रूपं कृतवानसि दुर्मते ॥२५॥
 अर्कैर्तव्यमिदं यस्मात् तस्मात् त्वं विकलो भव । [२९
- २७] गौतमेनैवमुक्तस्य सरोषेर्ण महात्मना ॥२६॥
 पेततुर्दृषणौ भूमौ सहस्राक्षस्य तत्क्षणात् । [३०
- २८] व्यथितश्च तदा सोऽभृद्धतौजा विकलीकृतः ॥२७॥
 र्षिषितस्तपसोग्रेण कश्मलं चैनमाविशत् । [३१
- २९] तं शप्सैवं मुनिवरो भार्या तामपि शप्तवान् ॥२८॥
 वर्षपूगानसंख्येयांस्त्वं पापे द्रुष्टचारिणि । [३२
- ३०] तप्यमाना निरालम्बा सततं भस्मशायिनी ॥२९॥
 अदृश्या सर्वभूतानां वनेऽस्मिंस्त्वं निवत्स्यसि । [३३
- ३१] यदा त्विदं^१ वनं घोरं रामो दशरथात्मजः ॥३०॥

१. ब ल भ—रूपं समास्थाय ।

२. रा—भूपते ।

३. रा ज ब—०.विफलो भव । ल भ—विफलस्त्वं भविष्यसि ।

४. ल भ—कुप्तिनेन ।

५. रा—दृषितश्च ।

६. ज—विफलीकृतः ।

७. ल भ—नारित ।

८. कै—ऋषितस्तप० ।

९. रा—कश्मलं ।

१०. ल—तथाचोक्तं सहस्राक्षं भार्यामपि च शप्तवान् ।

११. ल भ—०.तानामाश्रमे त्वं ।

१२. ज—न वस्यसि ।

१३. ल भ—चेदं ।

१४. ल भ—दाशरथिर्बिभुः ।

१५—०.चोपवा ।

- आगमिष्यति तं दृष्ट्वा धृतपापां भविष्यसि । [३४
 ३२] तस्यातिथ्यं सुदुर्मधे कृत्वा लोभविवर्जिता ॥३१॥^३
 मत्समीपं मुदोपेता समुपैष्यस्यसंशयम् । [३५
 ३३] एवमुक्त्वा महातेजाः शप्त्वा भार्या मनीषिणीम् ॥३२॥^३
 उ३४] हिमवच्छिखरं गत्वा तपस्तेपे महामनाः ॥३३॥ [३६

इत्यापि रामायणे बालकाण्डे^१ शक्राहस्ययोः^२ शापो^३
 नाम^३ चतस्रस्वारिण्युः^३ सर्गः ॥ ४४ ॥

१. ज—धृतपाया । ब—पदा पूता ।
 २. रा—तस्यातिथि ।
 ३. ल भ—आगमिष्यति दुर्द्धर्षस्तदा पूता भविष्यसि ।
 तस्यातिथ्येन दुर्द्धर्षे लोभमोहविवर्जिता ॥
 ४. ब—समुपैष्यसि संशयं ।
 ५. ल—तदा काले मुदा युक्ता स्वं रूपं धारयिष्यसि ।
 भ—तदाकालमुदा युक्तं स्वरूपं धारयिष्यसि ।
 ६. ब ल भ—एवमुक्त्वा महातेजा गौतमो दुष्टचारिणी ।
 ७. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—
 पुण्यं देशं समासाद्य सिद्धचारणसेवितम् ।
 ८. ल—हिमवच्छिखरे । भ—हिमवच्छिखरे ।
 ९. ल भ—रम्ये ।
 १०. ल भ—महातपाः ।
 ११. कै ब—आदिकाण्डे । भ—नास्ति ।
 १२. ल भ—इन्द्राहस्याद्यापो ।
 १३. कै—नामोनपंचाशः । रा—०एकोनपंचाशः ।
 ज—०षट् त्रिंशः ।

विकलस्तु कृतः शक्रो देवानग्निपुरोगमान् ।

- १] अब्रवीद् दुर्मना राम सहसिद्धर्षिचारणान् ॥ १॥ [१
 कुर्वता तपसो विघ्नं प्राप्तेयं^३ विक्रिया मया ।
 २] गौतमात् क्रोधमुत्पाद्य सुरकार्यचिकीर्षुणा ॥^२२॥ [२
 अफलोऽहं कृतस्तेन क्रोधेन च निराकृतः ।
 ३] शापमोक्षेण तेनास्य तपोविघ्नः कृतो मया ॥^३३॥ [३
 तस्मात् सुरगणाः सर्वे सर्षिसंधाः सचारणाः ।
 ४] सुरकार्यं तु संकलं संकलं कर्तुमर्हथ ॥४॥ [४
 शतक्रतुवचः श्रुत्वा देवा अग्निपुरोगमाः ।^२
 ५] ऊचुः पितृगणान् वाक्यमिदं तत्र समागतान् ॥^५५॥ [५

१. ज—विकलस्तु । व ल भ—अफलस्तु ।

२. ल भ—अब्रवीत्तत्र वचनं सर्षिसंधान्, सचारणान् ।

३. व ल भ—गौतमस्य महात्मनः ।

४. व ल भ—क्रोधमुत्पाद्य तु*मया#सुरकार्यमिदं कृतम् ।

५. व ल भ—अफलोस्मि ।

६. व ल भ—क्रोधात्स ।

७. व ल भ—शापमोक्षेण महता तपोस्यापहतं मया ।

८. कै रा ज—तस्मात् ।

९. व ल भ—सुरवराः ।

१०. व ल भ—सुरसाहाय्यकर्तारं ।

११. व—मां फलं ।

१२. ल भ—तस्य तद्वचनं श्रुत्वा पितृदेवाः समागताः ।

१३. ल भ—पितृन् Xदेवानुवाचाग्निः सहितान्समकृतवान् ।

‡ ल—सर्षिसंधान् । *भ—तरसा । Xभ—पितृदे०

- एष मेषः सवृषणः शक्रश्चावृषणीकृतः ।
 ६] अस्येमौ वृषणौ छित्त्वा महेन्द्राय प्रयच्छतं ॥६॥^१ [७
 अफलस्तु तंतो मेषः परां पुष्टिमुपैष्यति । [८
 ७] भक्तामुपयोगेन तच्चार्स्य तु' महाफलम् ॥७॥^२ [९
 श्रुत्वाऽथाग्निपुरोगांनां देवानां पितरो वचः ।^३
 ९] उत्कृत्यं मेषवृषणाविन्द्रायोपददुस्तदा ॥८॥^४ [१०
 तंतः प्रभृति काकुत्स्थ पितरंः क्रन्व्यभोजिनः ।

१. ज—एवमेषः । ल भ—अयं हि मेषो ।
 २. ल भ—वृषणी ।
 ३. कौ—प्रयच्छतु ।
 ४. भ—भस्यापहत्य वृषणं महेन्द्राय प्रयच्छथ ।
 ५. ल—अस्यापहत्य वृषणं सहजाक्षे समादधुः ।
 तदा प्रभृति काकुत्स्थ पितृदेवसमागताः ॥
 ६. ल भ—अफलम् ।
 ७. रा—तम्हे । ल भ—कृतो ।
 ८. ल भ—पुष्टिं गमिष्यति ।
 ९. ल भ—तद्वचस्य ।
 १०. रा—तु महाफलम् । ल भ—सुमहत्फलं ।
 ११. कौ रा ज—तस्मान्मेषस्य वृषणौ छित्त्वा तौ दातुमर्हथ ।
 इंद्राय सुरकार्यार्थं विफलाय पितामहाः ॥
 १२. ज—पुरोगाणां ।
 १३. ल भ—अग्नेस्तु वचनं श्रुत्वा पितृदेवाः समागताः ।
 १४. व—उत्पाद्य ।
 १५. ल भ—मेषवृषणं सहजाक्षे समादधुः† ।
 १६. भ—तदा ।
 १७. भ—पितृदेवाः ।
 १८. रा वं—क्रन्व्यभोजनाः । भ—समागताः ।

- १०] अफलं भुञ्जते मेषं सफलं तु न भुञ्जते ॥६॥ [११
 इन्द्रश्च मेषवृषणस्ततः प्रभृति राघव ।
- ११] गौतमस्य प्रभावेणै बभूवामिततेजसः ॥१०॥ [१२
 तस्मात् प्रसाद्य रामाद्यु गौतमं मुनिसत्तमम् ।
- १२] तारयेमां महाभार्गामहल्यां शापवैकृताम् ॥११॥ [१३
 विश्वामित्रवचः श्रुत्वा रामैः सौमित्रिणा सह ।
- १३] विश्वामित्रं पुरस्कृत्य प्रविवेशाश्रमं ततैः ॥१२॥ [१४
 स ददर्श महाभागां तपसा द्योतिर्तप्रभाम् ।
- १४] सेन्द्रैरपि सुरैः साक्षादनालक्ष्यां समागतैः ॥१३॥ [१५
 पर्यन्नाभिर्मितां धात्रा दिव्यां मायामयीमिव ।
- १५] धूमेनाभिर्परीताङ्गीं दीप्तामग्निशिखामिव ॥१४॥ [१७उ
 तुषारेणावृतां साभ्रां पूर्णचन्द्रप्रभामिव ।
- १६] मध्येऽर्भसो दुराधर्षा दीप्तां सूर्यप्रभामिव ॥१५॥ [१७पू

१. ल भ—ते ।

२. ल भ—इन्द्रश्च ।

३. रा ज ल भ—प्रभावेण ।

४. ल भ—तपसः सुमहत्फलम् ।

५. व ल भ—तस्माद्गच्छामहे तस्य गौतमस्याश्रमं X द्रुतम् ।

६. ल—०भागां चाहल्यां ।

७. व—शापवैकृताम् । ल भ—कामरूपिणीम् ।

८. ल भ—राघवः सहस्रव्रमणः ।

९. ल भ—प्रविवेश महावनम् ।

१०. ल भ—०धुषितप्रभाम् ।

११. ल—एकामथ समासाद्य दुर्दृष्टामसुरैः । सुरैः ।

१२. रा—०भिर्मितं । ज—०भिर्मिता ।

१३. रा—दिव्ये ।

१४. ज—०नापिपरीताङ्गीं ।

१५. ल—तुषारेणावृतां ।

१६. व—मध्येनभो । ल—नभोमध्ये ।

X ल भ—आत्मनं पुण्यकर्मणः । । भ—दुर्दृष्टामसुरासुरैः ।

सा हि गौतमवाक्येन दुर्निरीक्षा बभूव ह ।^३

१७] त्रयाणामपि लोकानां यावद् रामस्य दर्शनम् ॥१६॥ [१८

दृष्ट्वैव राघवौ तैस्योः पादौ जगृहतुस्तदा ।

१८] सा चैतौ^४ पूजयामास स्मृत्वा गौतमभाषितम् ॥१७॥ [१६

पाद्यार्घ्यासनसत्कारैर्यथावत् प्रीतमानसां ।^५

१९] प्रतिजग्राह रामश्च^६ पूजां तां विधिवत् तदा ॥^७१८॥ [२०

दध्वन्तुर्देववाद्यानि पुष्पवृष्टिः पपात च ।^८

२०] गन्धर्वाप्सरसां चैवं महानासीत् समागमः ॥१९॥ [२१

सांथुं साध्विति देवाश्च तदाऽहल्यामपूजयन् ।

२१] विद्युदां तपसोव्रेण तदा रामसम्रागमे ॥^९२०॥ [२२

१. भ—दुर्निरीक्षया ।

२. ज—नास्ति ।

३. ल—दर्शनात् ।

४. भ—राघवौ तु ततस्तस्याः ।

५. रा ज भ—च तौ ।

६. भ—प्रतिजग्राह ।

७. ल—नास्ति ।

८. रा—० सत्कार्यैः ।

९. रा—० मानसः ।

१०. ल—नास्ति ।

११. ल भ—प्रतिजग्राह रामस्तु शास्त्राद्येन कर्मणा ।

१२. ङ—रुष्वनु० ।

१३. ल भ—पुष्पवृष्टिर्मेहत्यासीद्विष्वन्तुभिनिःस्वनः†

१४. ल—वापि । भ—वापि ।

१५. रा ल—साध्व० ।

१६. रा—० मयोजवत् ।

१७. ल—तपोवत्तपसिद्युदा सा गौतमस्य वशान्वगात् ।

भ— ” इां तां ” वशानुगां ।

† भ—० सीधेवन्तुभिनिस्वनः ।

- बौतमश्च महातेजा दृष्ट्वा दिव्येन चक्षुषा । [२३प
 २२] स्वमाश्रमपदं राममागतं प्रत्यपूजयत् ॥२१॥ [N
 समेत्त भार्यया चैव पूतयाऽहल्यया तदा । [N
 २३] तयैव सहितो भूयस्तपस्तेपे महायज्ञाः ॥२२॥^x [२३उ
 रामोऽपि परमां पूजां गौतमादृषिसंत्तमात् ।
 २४] अवाप्य विधिवत् तस्माज्जगाम मिथिलां प्रति ॥२३॥ [२४

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे^७ अहल्यादर्शनं नाम^८
 पञ्चत्वारिंशः^९ सर्गः^{१०} ॥ ४६^{११} ॥

१. ब ल भ—गौतमश्च+ महातेजा अहल्यासहितः सुखी ।
 रामं संपूज्य विधिवत्तपस्तेपे महातपाः ॥
 २. रा—सूतया० ।
 ३. रा—तथैव । ज—तथैव ।
 ४. ल भ—नास्ति ।
 ५. ल भ—गौतमस्य महामुनेः ।
 ६. ल भ—सकाशाद्विधिवत्वाप्य जगाम मिथिलां तदा ।
 ७. कै ब—आङ्गिकाण्डे ।
 ८. भ—अहल्यामुक्तिर्नाम ।
 ९. कै—पंचाशत्तमः । रा ब भ—नास्ति । ज—सप्तत्रिंशः ।
 १०. म—सर्गाः ।
 ११. ज—॥३७॥ भ—॥३६॥
 ल—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

[वं=५१.]

[षट्चत्वारिंशः सर्गः]

[दा=५०]

ततः प्रागुत्तरां गत्वा दिशं रामः सलक्ष्मणः ।

१] विश्वामित्रं पुरस्कृत्य यज्ञवाटं ददर्श ह ॥१॥^३ [१

तं रामो मुनिशार्दूलं दृष्ट्वा यज्ञमभाषत ।

२] अहो समृद्धिर्यज्ञस्य जनकस्य महात्मनः ॥२॥^४ [२

पु३] बहूनीहं सहस्राणि नानादेशनिवासिनाम् ।^५

दृश्यन्ते ब्राह्मणानां च निवासौ विविधाः कृताः ॥३॥^६ [३

४] देशः परीक्ष्यतां हृद्यो वत्स्यामो यत्र वै सुखंम् ।^७ [४३

१. ज—प्रागुत्तरं ।

२. अस्य श्लोकस्यादौ पाठोऽयमधिकः—

व ल—विश्वामित्रं पुरस्कृत्य पश्यं देशं निमेषतथा ।

भ— ” ” पश्यन्देशमिदंस्तथा ।

३. ज—मुनिशार्दूल ।

४. ल भ—रामस्तु मुनिशार्दूलमुवाच सहस्रसमयाः ।

साध्वयं सुसमृद्धोऽस्य जनकस्य †महाऋतुः ॥

५. ल—बहवः शतसाहस्रये ।

६. भ—बहवः शतसाहस्रा नानादेशनिवासिनः ।

७. ज—निवासाश्च पृथक् कृताः ।

८. ल भ—ब्राह्मणानां समेतानां *वेदभाषाविचारिणां ।

९. अतः परमधिकः पाठः—

ल—यज्ञवाटाश्च बहवः शकटीशतसंकुखाः ।

भ—यज्ञभागाश्च ” शकटीशत ” ।

१०. कै ज—वयम् । रा—यसम् ।

११. ल—देशे विधीयतां ब्रह्मन् यत्र वासं सुखी भवेत् ।

भ—देशोपि धीयतां ” ” वासः ” ”

†भ—महान् ऋतुः । *भ—देशभा०

- इति' समर्वचः श्रुत्वा विश्वामित्रो महामनाः ॥४॥
 ५] निवेशमकरोद् देशे विविक्ते सलिलाच्छ्रुते । [५
 विश्वामित्रमृषिं प्राप्तं श्रुत्वा स मिथिलेश्वरः ॥५॥
 ६] शतानन्दं पुरस्कृत्य पुरोहितमकल्पयम् । [६
 ऋत्विग्भिः सहितश्चान्यैरार्दायार्घ्यं त्वराऽन्वितः ॥६॥
 ७] विश्वामित्राय सत्कृत्य ददौ मन्त्रपुरस्कृतम् । [७
 प्रतिगृह्य सैं त्वां पूजां जनकान्मुनिसत्तमः ॥७॥
 ८] पप्रच्छानामयं चैव यज्ञसामृच्छयमेव च [८
 तांश्चैवान्पन्न मुनीन् सर्वानागतान् स पुरोहितः ॥८॥'
 ९] यथान्यायं यथायोग्यं पर्यपृच्छदनामयम् ।'^३ [९
 अथ राजा मुनिश्रेष्ठं कृताञ्जलिर्भोषत ॥९॥

१. ल भ—रामस्य वचनं ।
 २. ल भ—महायथाः ।
 ३. ल भ—सखिजाश्रिते ।
 ४. ल भ—विश्वामित्रं मुनिं प्राप्तं जनकः सह मंत्रिभिः ।
 ५. ल भ—पुरोषसमनिदितम् ।
 ६. व—०रामायार्घ्यं ।
 ७. ल भ—ऋत्विक् परिवृतस्तूर्णमर्घ्यमादाय धर्मवित् ।
 ८. ल भ—धर्मेण ।
 ९. ल भ—तु ।
 १०. ल भ—जनकस्य महात्मनः ।
 ११. ल भ—पप्रच्छ कुशवं राज्ञो राष्ट्रे +वापि निरामयम् ।
 तांश्चैव +समुनिः सर्वानुपाध्यायपुरोषसः ॥
 १२. व—यथान्याय्यं ।
 १३. ल भ—समागच्छद् यथान्याय्यं *यथाविधिं यथाचनम् ।
 १४. ज—मुनिं श्रेष्ठं । भ—मुनिवरं ।
 १५. रा—०रभाषित ।

- १०] आसनं भगवन् क्लृप्तमुपवेष्टुमिहार्हसि ।^३ [१०
जनैकेनैवमुक्तो विश्वामित्रोऽथै महामुनिः ॥१०॥
- ११] निषसाद तैतश्चैनं स राजा मृद् मन्त्रिभिः । [११
उपविष्टमुपेत्येदं कृताञ्जलिरभाषत ॥^४ ११॥ [१२
- १२] अमृतस्यैव संप्राप्तिरद्य मे भगवन् मुने । [N
१३] अथ यज्ञसमृद्धिर्मे सफला दैवतैः कृता ॥१२॥^५ [१३पृ
धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि यस्य मे त्वं^६ महामुने ।
- १४] यज्ञस्यावभृथं पुण्यं द्रष्टाऽसि सपदानुगः॥^७ १३॥ [१४
द्वादशाहं च शेषं मे यज्ञस्याद्भृज्जातयः ।^८

१. कौ रा ज ब—कस्यसमुप० ।

२. ल भ—आसने भगवानास्तां भ्रमं मोक्तुमिहार्हसि X ।

३. ल भ—जनकस्य वचः श्रुत्वा निषसाद ।

४. ल भ—पुरोहितो द्विजाश्चैव ।

५. ल भ—आसने तु यथान्वाच्यमुपविष्टं यथाविधि ।

६. ज ब—अमृतस्येव । रा—अमृतसेव ।

७. ब—भगवां ।

८. ल भ—दृष्ट्वा नरपतिस्तत्र विश्वामित्रमथानुब्रवीत् ।

अद्यायं सफलो यज्ञो महर्षे देवतैः कृतः ॥

अद्य यज्ञफलं प्राप्तं तव सन्दर्शनान्मया ।

९. ल भ—सुविपुंगवः ।

१०. ल भ—यज्ञावसाने* संप्राप्तो द्रष्टुं मुनिवरैः सह ।

११. ल भ—महर्षे द्वादशाहं तु शेषमाहुर्मनीषिणः ।

X भ—मोक्तुं त्वमर्हसि ।

† भ—यथान्वाच्यमु० । * भ—यज्ञावसानं

- १५ ततो भागार्थिनो देवानिह द्रक्ष्यस्युपागतान् ॥१४॥' [१५]
 उष्यतैमिह मत्पीत्यै सहैभिर्ब्रह्मवादिभिः ।
- १६] एतान्यहानि सुसुखं ततो यास्यथ सत्कृताः ॥१५॥' [N
 एतौ च मुनिशार्दूल कुमाराविव पावकी ।
- १७] काकपक्षधरौ कस्यै किमर्थं चाभ्युपौगतौ ॥१६॥ [२०
 व्यूढोरस्कौ महाबाहू खड्गदूणधनुर्धरौ ।
- १८] अश्विनोः सदृशौ रूपे कस्यैतौ प्रियदर्शनौ ॥१७॥ [१८
 किमर्थं मुकुमाराङ्गावैरण्यं संश्रितावुभौ ।^{१०}
- १९] बालावेवानवघाङ्गौ श्रोतुं कौतूहलं मम ॥१८॥ [N
 तस्य तद्वचनं श्रुत्वा जनकस्य महात्मनः ।
- २०] न्यवेदयन्महात्मानौ सुतौ दशरथस्य तौ ॥१९॥ [२४

१. ज—द्रक्ष्याम्युपा० ।

२. ब—यज्ञं भागार्थिनो देवां द्रष्टुमर्हसि कौशिक ।

ल भ—यज्ञभागार्थिनो देवान्, ,, ,,

३. रा—उषितामिह ।

४. रा ज—ससुखं ।

५. ल भ—वास्ति ।

६. ल भ—इमौ ।

७. ल भ—वीरौ कस्येमौ मुनिपुंगव ।

८. ल भ—अश्विनाविव रूपेण कस्येमौ देववर्षिनौ ।

९. ज—वारण्यं ।

१०. ल भ—किमर्थं च मुनिश्रेष्ठ प्रपन्नौ दुर्गमान्वयः* ।

११. ल—बलावबहितौ ब्रह्मं श्रोतुमिच्छाम्यसंशयम् ।

भ— ,, ब्रह्मन् श्रोतुमिच्छामि संशयं ।

१२. ल भ—महामुनिः ।

१३. ल भ—पुत्रौ ।

* भ—दुर्गमान्वय ।

तदागमनमव्यग्रं राक्षसानां च तद्बधम् ।

२१] सिद्धाश्रमनिवासं च विशालस्य च दर्शनम् ॥२०॥ [२५

गौतमस्यापि शापान्तमहल्यायाश्च दर्शनम् ।

२२] रामस्य धनुषश्चैव जिज्ञासाऽर्थमुपागमम् ॥२१॥^१ [२६

इति सर्वे महातेजा जनकाय महात्मने ।^२

२३] निवेद्य विररामार्थं विश्वामित्रो महामुनिः ॥२२॥^३ [२७

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे जनकदर्शनं नाम

पट्चत्वारिंशः सर्गः ॥४६॥

१. ब ल भ—०मस्युग्रं ।

२. ज ल भ—तं ।

३. ल भ—गौतमाश्रमकार्यं च गौतमस्य च दर्शनम् ।

महाधनुषि जिज्ञासा कार्यं चैषां महात्मनाम् ॥

४. ल भ—एतत्सर्वं महातेजाः कौशिको जनकाय वै ।

५. ल भ—विररमाद्यु ।

६. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

मुनिमध्ये स्थितः प्राज्ञो वसुनामिव पादकः ।

७. कौ रा ब—आदि कारये ।

८. कं रा—नामैकपञ्चाशत्तमः । ज—नाम अष्टत्रिंशः ।

ब—नाम ।

९. ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

[वं=५२]

[सप्तचत्वारिंशः सर्गः]

[दा=५१]

तस्य तद्वचन श्रुत्वा विश्वामित्रस्य धीमतः ।

- १] दृष्टरोमा भृशं भृत्वा शतानन्दो महातपाः ॥१॥ [१
गौतमस्य सुतो ज्येष्ठस्तपसां द्योतितप्रभः ।
२] रामसन्दर्शनं प्राप्य विस्मयं परमं ययौ ॥२॥ [२
स निषण्णाबुभौ दृष्ट्वा सदृशौ रामलक्ष्मणौ ।
३] शतानन्दो मुनिश्रेष्ठं विश्वामित्रर्मभाषत ॥३॥ [३
अपि त्वर्यां मुनिश्रेष्ठं मम माता तपस्विनी ।
४] दर्शिता राजपुत्रस्य रामस्य च महात्मनः ॥४॥ [४
अपि रामाय मे माता पूजाऽर्हाय महामुने ।
५] पूजां कृतवती सम्यगहृत्वा भृशदुःखिता ॥५॥^{१२} [५

१. ज—महामुनिः ।

२. ल भ—दृष्टरोमा महातेजाः ज्येष्ठेन समपद्यत ।

३. ज—ज्येष्ठस्तपसः ।

४. रा ज—द्योतितः प्रभुः ।

५. ल भ—परं विस्मयमागतः ।

६. ल भ—स निषण्णौ तु तौ दृष्ट्वा सुखासीनौ नृपात्मजौ ।

७. ल—मुनिश्रेष्ठो । ज—नास्ति ।

८. भ—०मित्रमुवाच ह । ज—नास्ति ।

९. ल भ—०ते मुनिशार्दूल । ज—मुनिश्रेष्ठ ।

१०. ल भ—राजपुत्राय ।

११. ल—तपोदीर्घमुपागता । भ—तपोदीर्घमुपागता ।

१२. ल भ—नास्ति ।

अपि रामाय कथितं पुरावृत्तं महासुने ।

६] मम मातुर्महाबुद्धे दैवेन दुरनुष्ठितम् ॥६॥^१ [६

अपि कौशिक माता मे सङ्गता गुरुणा पुनः ।

७] शापाग्निदग्वा पित्रा मे रामदर्शननिर्मला ॥७॥^२ [७

अपि प्रीतेन मनसा गुरुर्मे कुशिकात्मज ।

८] पूतां दीर्घेण तपसा मातरं मेऽभ्यनन्दत ॥८॥^३ [N

अपि मे गुरुणा ब्रह्मन् पूजितोऽसि यथाऽर्हणः ।

९] इहागतो महाभागं पूजां प्रीप्य महात्मनः ॥९॥ [६

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य विभ्रुषितो महातेजाः ।

१०] प्रत्युवाच शतानन्दं वाक्यं वाक्यविदांवरैः ॥१०॥^४ [१०

१. ल भ—अपि माता विमुक्ता* मे तस्माच्छापात्सुदारुणात् ।

२. ल भ—अपि x कौशिक भद्रं ते गुरुणा चापि‡ संगता ।

माता मुनिगणश्रेष्ठ रामसंदर्शनादशु ॥

३. कै—कुशिकात्मजा ।

४. कै रा—मेभ्यनन्दन ।

५. ल भ—नास्ति ।

६. रा—पूजितासि ।

७. ल भ—यथार्हणम् ।

८. ज—इहागतौ ।

९. ल भ—महातेजाः ।

१०. ल भ—श्रुत्वा ।

११. ल—महात्मनां ।

१२. भ—शतानन्दस्य धीमतः ।

१३. भ—वाक्यज्ञो वाक्यकोविदः ।

१४. ल—नास्ति ।

* भ—विमुक्ता । x ल—अपि । ‡ भ—चापि ।

- नातिक्रान्तमिदं ब्रह्मन् यत् कार्यं तत् कृतं मया ।
 १.१] सङ्गता गुरुणा पत्नी भार्गवेणेव रेणुका ॥११॥^१ [११
 तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य विश्वामित्रस्य धीमतः ।
 १.२] शतानन्दैस्ततो राममिदं वचनमब्रवीत् ॥१२॥ [१२
 स्वागतं ते रघुश्रेष्ठ दिष्ट्या प्राप्तोऽसि मे प्रभो ।
 १.३] विश्वामित्रेण सहितो यज्ञवाटं महात्मना ॥१३॥ [१३
 अचिन्त्यो ह्यसि धर्मात्मा रामं त्वममितद्युतिः ।
 १.४] विश्वामित्रो महातेजा यस्य ते परमो गुरुः ॥१४॥ [१४
 नास्ति धन्यतरो राम त्वर्दन्यो भुवि कश्चन ।
 १.५] यस्य ते हितकामोऽयं विश्वामित्रस्तपोनिधिः ॥^१ १५॥ [१५
 श्रूयंतां च पुरावृत्तं कौशिकस्य महात्मनः ।

१. व—०मिमं ।

२. अ—नातिक्रमो मुनिश्रेष्ठ सर्वमेतन्मया कृतं ।

संगता मुनिना पत्नी रेणुकेव महात्मना॥

ल—नास्ति ।

३. ल अ—शतानन्दो महातेजा रामं ।

४. ल अ—दृष्टोश्चि राघव ।

५. ल अ—विश्वामित्रं पुरस्कृत्य तं चाश्रममुपागतः ।

६. ल अ—शेष ।

७. ल अ—महर्षिरमितप्रभः ।

८. ल अ—०तेजास्तवायं† परमा गतिः ।

‘अ’ पुस्तके पुनरपरहस्तेन शोधितः ।

९. ल अ—त्वयेह भुवि यस्य ते ।

१०. ल अ—गोप्ता कुशिकपुत्रस्ते येन तप्तं महत्प्रभः ।

११. ल अ—भूयतामभिधास्यामि ।

- १६] यद्वीर्यो यत्प्रभावोऽयं यद्धर्मश्च महायशाः ।^१ [१६
 राजाऽभ्रुदेष धर्मात्मा दीर्घकालमरिन्दमः ॥१६॥
- १७] धर्मज्ञश्च क्रियावांश्चै प्रजानां पालने रतः । [१७
 पितामहसुतस्त्वासीत् कुशो नाम महातपाः ॥१७॥
- १८] कुशस्य पुत्रो बलवान् कुशनाभः सुधार्मिकः । [१८
 कुशनाभसुतश्चासीद् गांधिरित्येव विश्रुतः ॥१८॥
- १९] गांधेः पुत्रो महातेजा विश्वामित्रो महामुनिः । [१९
 विश्वामित्रस्तु धर्मात्मा पालयन् मेदिनीमिमाम् ॥१९॥
- २०] बहूने वर्षगणान् रामं राजा राज्यमकारयत् । [२०
 कदाचित् सं महातेजा योजयित्वा वैश्विनीम् ॥२०॥
- २१] असौहिणीपरिवृतः परिचक्रामं मेदिनीभं । [२१
 सरितः पर्वतांश्चैव वनानि नगराणि च ॥२१॥

१. कै रा ज—यद्वीर्यम् ।

२. ल भ—यथाबलं यथावृत्तं तन्मे निगदतः श्रुणु ।

३. ब ल—बलम्यम् । कृतशब्ध ।

४. ल—प्रजानां च हिते । भ—प्रजाभ्यश्च हिते ।

५. कै रा ज—सुतश्चासीत् ।

६. कै रा—कुशनाभश्च । ज—कुशनाभस्तु ।

७. ल भ—कुशनाभसुतस्त्वासीत् ।

८. कै रा ज—धिर्नाम महामतिः ।

९. कै रा ज—तस्य ।

१०. ल—पृथिवीमिमाम् ।

११. कै रा ज—वर्षायुतान्यनेकानि ।

१२. रा ज ब ल भ—सु० ।

१३. कै रा ज—षडंगिनीम् ।

१४. कै—परिवृता ।

१५. ल—पर्वतराज्यं पर्वतराज्यं पर्वतराज्यं । भ—यथा गण्यं पर्वतराज्यं ।

- २२] विचरन् क्रमशो राजा आजगाम महायशाः । [२२
 वसिष्ठस्याश्रमपदं नानापुष्पफलद्रुमम् ॥२२॥
- २३] नानामृगगणाकीर्णं सिद्धचंगणसेवितम् । [२३
 देवर्षिगणसङ्कीर्णं ब्रह्मर्षिगणपूजितम् ॥२३॥^१
 तपश्चरद्भिः संसिद्धैरग्निकल्पैर्महर्षिभिः^२ । [२५
- २४] सततं संकुलं श्रीमद् ब्रह्मकल्पैर्महात्मभिः ॥२४॥
 अढंभैर्वायुभक्षैश्च शीर्णपर्णाशनैस्तथा ।
- २५] फलमूलाशिभिर्दान्तैर्जितक्रोधैर्जितेन्द्रियैः ॥२५॥ [२६
 संपक्षालैरश्मकुट्टैर्दन्तोलूखलिभिस्तथा । [N
- २६] ऋषिभिर्बालखिल्यैश्च जपहोमपरायणैः ॥२६॥ [२७५

१. भ—विचिन्वन् ।

२. भ—तदागच्छन् ।

३. भ—०फलप्रभं ।

४. ल—०कीर्णं ।

५. ल भ—देवर्षिगणपूजितं ।

६. ल भ—बहुपुष्पफलं रम्यं यक्षराक्षसवर्जितम् ।

७. ल भ—देवदानवगन्धर्वाकिनरैरुपशोभितम् ।

८. ल—भतः परमधिकः पाठः—

प्रशान्तहरियाकीर्णं नानाविहगनादितम् ।

९. ल भ—तपश्चरणं ।

१०. ल भ—०महात्मभिः ।

११. कै—०महर्षिभिः ।

१२. कै ल—अभक्षैः ।

१३. ल भ—०पर्णाशिभिस्तथा ।

१४. कै—०दिभिर्दान्तैः । ल भ—फलमूलाशनैः ।

१५. ल भ—०जितरोषैः ।

१६. भ—०किमिस्तथा ।

१७. ल भ—०बाह्वस्त्रित्वाद्यैर्जपः ।

वसिष्ठस्याश्रमपदं ब्रह्मस्थानमनुत्तमम् ।

२७] अपश्यद् यजतां श्रेष्ठो विश्वामित्रो महाबलः ॥२७॥ [२८

वातोद्भूतं तपनवाहनिभं नियम्य

वल्गावशेन तुरगं च शशांकशुभ्रम् ।

दिव्यप्रभानिकरकुण्डललोलमान-

N] कर्णस्तुरंगमवरान्नुप उक्तार ॥२८॥

[N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे^१ वसिष्ठाश्रमवर्णनं^२ नाम^३
सप्तचत्वारिंशः^४ सर्गः ॥ ४७ ॥^५

१. ल भ—०जपतां ।
२. कै—महाबलाः ।
३. ज—वातोद्भूतमुपवनवाहनिभं । ल—वातोद्भूतं तपनवाहसमं ।
भ—वातोद्भूतं पवनवेगसमं ।
४. ल—दीप्यत्प्रभा० । भ—०कुण्डललोलमान० ।
५. कै व—आदिकाण्डे । भ—नास्ति ।
६. ल भ—०दर्शनं नाम । कै व रा—नास्ति ।
७. कै रा व—द्विपञ्चाशत्तमः । ज—एकोनचत्वारिंशः ।
८. ज—॥ ३९ ॥ भ—॥ ३७ ॥

[वं=५३, ५४] [अष्टचत्वारिंशः सर्गः] [दा=५२, ५३]

- N] वसिष्ठं तु तदा तस्मिन्नाश्रमे मुनिसत्तमम् । [N
दृष्ट्वा तु परमप्रीतो विश्वामित्रो महामैनाः ॥१॥
- १] प्रणतो विनयाद् वीरो वसिष्ठं जपतां वरम् । [१
स्वागतं च तवेत्युक्त्वा वसिष्ठेन महात्मना ॥२॥
- २] आसनं तेन विधिवत् प्रदत्तं जगतीर्षतेः । [२
उपविष्टाय च तदा विश्वामित्राय धीमते ॥३॥
- ३] वृंस्यां वैन्यं मुनिवरः फलमूलमुपाहरत् । [३
प्रतिगृह्य वरां पूजां वसिष्ठाद् राजसत्तमः ॥४॥
- ४] तंदाऽग्निहोत्रे शिष्येषु पर्यपृच्छदनामयम् । [४
विश्वामित्रो महातेजा वनस्पतिगणे तथा ॥५॥
- ५] सर्वत्र कुंशलं चोक्त्वा वसिष्ठो मुनिसत्तमः । [५
मुखोपविष्टं राजानं विश्वामित्रं महातपाः ॥६॥

-
१. रा—तस्मिन्नाश्रमे ।
२. कै—०सत्तम ।
३. ल—महामुनिः ।
४. कै ज—वजतां । रा—वदतां ।
५. ल भ—भषतेत्युक्त्वा ।
६. ल भ—जगतीर्षतौ ।
७. रा—वस्यां । ल—वृष्यं ।
८. ल—वंधं ।
९. कै—०मुपाहरत् ।
१०. रा—तदग्नि० ।
११. ल—कुशिकं ।

- ६] पप्रच्छे जपतां श्रेष्ठो गाघेयं ब्रह्मणः सुतः । [६
कश्चित् ते कुशलं राजन् कश्चिद् धर्मेण रक्षयन् ॥७॥
- ७] प्रजाः पालयसे नित्यं राजवृत्तेन धार्मिके । [७
कश्चित् ते सुभृता भृत्याः कश्चित् तिष्ठन्ति शासने ॥८॥
- ८] कश्चित् ते विजिता सर्वे रिपवो रिपुसूदन । [८
कश्चित् ते कुशलं कोशे मित्रेषु च परन्तप ॥९॥
- ९] कुशलं ते नरव्याघ्र पुत्रपौत्रेषु चानघ । [९
सर्वत्र कुशलं राजा वसिष्ठं प्रत्युवाच ह ॥१०॥
- १०] विश्वामित्रो महातेजास्तमथो विनयान्वितः । [१०
कृत्वा तौ सुचिरं कालं धर्मिष्ठां तां कथां तदां ॥११॥
- ११] मुदा परमया युक्तावभिन्न्धै परस्परम् । [११
ततो वसिष्ठो भगवान् कथान्ते मुनिसत्तमः ॥१२॥
- १२] विश्वामित्रमिदं वाक्यमुवाच प्रहसन्निव । [१२
आतिथ्यं कर्तुमिच्छामि बलस्यास्य महाबल ॥१३॥
- १३] तव चैवाप्रमेयस्य यथाऽहं प्रतिगृह्यताम् । [१३
सत्क्रियां हि भवांस्तात प्रतीच्छतु ममोद्यताम् ॥१४॥

१. रा—०जगतां । ल भ—अपृच्छजपतां ।

२. कै रा—धार्मिकः ।

३. भ—पुत्रेषु ।

४. ब ल भ—राघवे ।

५. ल भ—भवतः ।

६. ल भ—महातेजा वसिष्ठं ।

७. ल -- बहुवृत्तां तु संकथाम् ।

भ—बहुवृत्तांतसंकथां ।

८. कै ल—०भिवंघ ।

९. ल—प्रहसन्निव ।

१०. ल भ—ममोद्यतां ।

- १४] राजंस्त्वमतिथिश्रेष्ठः पूजनीयः प्रयत्नतः । [१४
 एवमुक्तो वसिष्ठेन विश्वामित्रो महीपतिः ॥१५॥
- १५] कृतमित्यब्रवीद् राजा पूजां चानेन मे कृता । [१५
 फलमूलेन भगवन् विद्यते यत् तत्राश्रमे ॥१६॥
- १६] पाद्येर्नाचमनीयेन भगवन् दर्शनेन च । [१६
 सर्वथा च महाबाहो पूजाऽर्हेणास्मि पूजितः ॥१७॥
- १७] गमिष्यामि नमस्तुभ्यं पश्य मैत्रेण चक्षुषा । [१७
 एवं स्तुवन्तं राजानं वसिष्ठः पुनरेव च ॥१८॥
- १८] न्यमन्त्रयदमेयात्मा पुनः पुनरुदारधीः । [१८
 वांढमित्येव गांधेयो वसिष्ठं प्रत्यभाषत ॥१९॥
- १९] यथा प्रियं भगवतस्तथाऽस्तु मुनिसत्तम । [१९
 एवमुक्तो महातेजा वसिष्ठो जपतां वरः ॥२०॥
- २०] आजुहाव ततः प्रीतः शबलां धृतकल्मषैः । [२०
 एहोहि शबले क्षिप्रं शृणु चैव वचो मम ॥२१॥

१. भ—प्रजा ।

२. ल भ—नाथेन । रा—बाधेन ।

३. भ—भगवान्विद्यते ।

४. ल—पाद्ये आचमनीये च ।

५. कै भ—भगवद्दर्शनेन ।

६. ल—सर्वदा ।

७. ज—महाबुद्धे ।

८. व ल भ—वन्तं ।

९. रा—निमंत्रं । ल भ—न्यमन्त्रयत धर्मोत्तमा ।

१०. कै व—मित्येवागाधेयो ।

११. रा—वगतां ।

१२. कै ज ल भ—कल्मषां । रा—कल्मषां ।

१३. ल भ—धृतकल्मषः ।

१४. व ल—शृणुष्व वचनं । भ—शृणु चेदं वचो ।

- २१] सबलस्यास्य राजर्षेः कर्तुं व्यवसितो ह्ययम् ।
भोजनेन महार्हेण सत्कैरं तद्विधत्स्व मे ॥२२॥ [२१]
- २२] यस्य यस्य यथाकामः षड्रसेष्वभिवाञ्छितः ।
तत् सर्वं कामधुर्गुं 'देवि पुरयस्वँ कृते मम ॥२३॥ [२२]
वरेणान्नेन पानेन चोप्यलेह्येन चाप्यमुम् ।
- २३] राजानं सपरीवारं शंभूले मत्प्रियेच्छया ॥२४॥ [२३]
N] यथा सर्वो जनस्तुष्येत् स्वाशितस्तुं यथा भवेत् । [N]
एवमुक्त्वा वसिष्ठेन शबला शत्रुमूर्धन ॥२५॥
- ५४,१] त्रिदशे कामधुर्कं कौमं यथा यस्येप्सितं तथा । [५३,१]
इक्षुंश्च मधुं लाजांश्च मैरेयं च वरासवम् ॥२६॥

१. व—०स्वयहं ।
२. ल—महाध्वेण ।
३. ल—संकरं ।
४. रा ल भ—यथाकामं ।
५. रा—षड्रसेषुभिवां० । ल—षट्सुभीष्टो रसेष्विह ।
भ—यद्यभीष्टो रसेष्विह ।
६. ज ल—कामधुर्देवि ।
७. ज ल भ—पुरय त्वं ।
८. ज—मानेन ।
९. ल—चाप्ययम् । भ—चाप्ययं ।
१०. ल—सुपरीवारं ।
११. ल भ—सबलो । भ—पुनः कृतः ।
१२. व—स्वशितस्तु । ल भ—स्वाशितम् ।
१३. ल—रघुनन्दन ।
१४. कै—कामधुर्कामं ।
१५. कै—मधु० ।
१६. रा ज—०लाजांश्च । ल—०जाशं च ।

- २] एतानि च महाऽर्हाणि भक्ष्यांश्चोच्चावचान् बहून् । [२
वाष्पाढ्यस्यौदनस्यौपि राक्षीन् पर्वतसन्निभान् ॥२७॥
- ३] मिष्टार्त्नानि तथाऽपूपान् दधिकुल्यास्तथैव च ' [३
नानास्वादुरसानां च षाडवानांमितस्ततः ॥२८॥
- ४] भाजनानि सुपूर्णाणि गौडानां च सहस्रशः । [४
सर्वमासीत् सुसन्तुष्टं हृष्टपुष्टजनायुतम् ॥२९॥
- ५] विश्वामित्रबलं राम वसिष्ठेनाभिनन्दितम् । [५
यस्य यस्य यथा कामस्तेस्य तस्य तथा तथा ॥३०॥ [N
- ६] अभिवर्षति कामांश्च शबला शत्रुसूदन । [N
एवमस्य बलं सर्वं सर्वकामैः प्रपूजितम् ॥३१॥
- ७] विश्वामित्रैस्य राजर्षे हृष्टपुष्टजनायुतम् ।
सान्तेःपुरः सहामात्यः परितुष्टो नृपोत्तमः ॥३२॥ [६

१. भ—पाषाणि ।

२. ल—महार्हाणि ।

३. ल भ—०दनस्यात्र ।

४. ल भ—सृष्टानि ।

५. ज—षाडवाना० । ल—०मितस्तथा ।

भ—षडसाना० ।

६. ज—सुपूर्णाणि ।

७. रा—०स्वसंतुष्टं । भ—सर्वमासीत् संश्लष्टं

८. भ—०जनायुतं ।

९. रा—सर्वं । ज—नाम ।

१०. भ—वसिष्ठेना० ।

११. ल भ—कामं तस्य ।

१२. भ—सुपूजितं ।

१३. ल भ—सर्वं तत्रास्य ।

१४. रा व—राजर्षेःहृष्टपुष्ट० ।

१५. भ—सान्तेःपुर० ।

- ८] संपौरो मन्त्रिसहितः सभृत्यबलवाहनः ।
युक्तः परमहर्षेण वसिष्ठमिदमब्रवीत् ॥३३॥ [७
- ९] पूजितोऽहं त्वया ब्रह्मैव पूजनाहं क्वचित् ।
श्रूयतामभिधास्यामि वाक्यं वाक्यविदां वर ॥३४॥ [८
- १०] गवां शतसहस्रेण दीयतां शबला मम । [६
रत्नं हि भगवन्मेषा रत्नहारी हि पार्थिवः ॥३५॥
- ११] तस्मान्मे शबलां देहि धर्मतो द्विजसत्तम । [१०
एवमुक्तस्तु भगवान् वसिष्ठो मुनिसत्तमः ॥३६॥
- १२] विश्वामित्रेण धर्मात्मा प्रत्युवाच महीपतिम् । [११
नाहं शतसहस्रेण गवां कोटिशतैरपि ॥३७॥
- १३] राजन् दास्यामि शबलां राशिभी रजतस्य हि १ । [१२
न परित्यागमेह्यं मत्सकाशैरिन्दम ॥३८॥
- १४] शान्भती शबलेयं मे कीर्तिरात्मैवतो यथा । [१३

१. ल भ—पैरैः स ।

२. व—पूजितोयं ।

३. भ—महाब्रह्मन् ।

४. कै—०बभ्रेषां । ल भ—०बभ्रेतद्रत्न० ।

५. ल—ममैषा धर्मतो द्विज । भ—ममैषा धर्मतो द्विज ।

६. रा—एवमुक्तं तु ।

७. रा—भगवन् ।

८. भ—वसिष्ठो ।

९. भ—धर्मात्मा ।

१०. ल भ—नापि कोटिशतैर्गवाम् ।

११. रा भ—राशीभी ।

१२. ल—ह ।

१३. ज व—मत्सकाशमिन्दम ।

१४. कै—शकलेयं । रा—शबलेयं ।

१५. रा—०रात्मवृत्तो ।

अत्र केव्यं च हव्यं च प्राणयात्रा तथैव मे ॥३९॥

१५] आसन्नमग्निहोत्रं च बलिर्होमैस्तथैव च । [१४

स्वाहाकारवषट्कारौ विद्याश्च विविधा नृष ॥४०॥

१६] आपन्नो ह्यत्र राजर्षे सर्वमन्यदसंशयम् । [१५

पू१७] सर्वस्वमेतत् सस्यं ते मम पुष्टिकरं तथा ॥४१॥ [१६पृ

वसिष्ठेनैवमुक्तस्तु विश्वामित्रोऽब्रवीत् ततः ।

१८] संरन्धतरमत्यर्थं वाक्यं वाक्यविशारदः ॥४२॥ [१७

सुवर्णकक्ष्याग्रैवेद्यान् सर्वाभरणभूषितान् ।

१९] ददामि कुञ्जरांस्तुभ्यं सहस्राणि चतुर्दश ॥४३॥ [१८

हैरण्यानां तथाऽश्वानां श्वेतानां वै चतुर्युजाम् ।

२०] लक्षणैरुपपन्नानां किङ्किणीजालमालिनाम् ॥४४॥ [१९

हयानां देशजातीनां कुलजानां महौजसाम् ।

२१] सहस्रमेकं दश च ददामि तव सुव्रत ॥४५॥ [२०

१. ल—हव्यं च कर्तव्यं । भ—हव्यं च कस्यं च ।

२. ब ल—आयतुमग्नि० । भ—आयत्तम० ।

३. कै—बहिर्होमस्त० । ज ल—बलिहो० ।

४. रा—आसन्ना० । ब ल—आयत्ता० । भ—आयत्तास्तत्र ।

५. ल भ—सर्वस्वमेव ।

६. ब—सदा । ल—सुदा ।

७. ल—संरन्धतरमत्यर्थं ।

८. ल—वानशविदां वर ।

९. रा—स्ववर्णकक्ष्याग्रै० । ज—सुवर्णकक्ष्याग्रैवेद्यान् ।

ल—हैरण्यकक्ष्याग्रै० । भ—हैरण्यकक्ष्याग्रै० ।

१०. ल भ—च ।

११. ज—अज्ञात्परुष० ।

१२. रा—देशजातीनां । ज ल भ—देशजाता० ।

नानावर्णविभक्तानां वयःस्थानां तथैव च ।

- २२] ददांम्येकां गवां कोटिं दीयतां शबला मम ॥४६॥ [२१
एवमुक्तस्तु भगवान् विश्वामित्रेण धीमता ।
२३] नैव दास्यामि शबलामिति राजानमब्रवीत् ॥४७॥^१ [२३
३२४] एतदेव हि मे सर्वमेतदेव हि जीवितम् । [२४३
दर्शश्च^१ पौर्णमासीश्च यज्ञश्चैवाप्तदक्षिणः ॥४८॥
२५] एतदेव हि मे राजन् क्रियाश्च विविधास्तथा । [२५
५२६] एतन्मूलाः क्रियाः सर्वा मम राजन् न संशयः ॥४९॥ [२६५

इत्यार्षे रामाचये बालकाण्डे बृहस्पतिविरचिते श्रीमद्भागवतसंवादे धेनुप्रभावो नाम

अष्टत्वारिंशः सर्गः ॥४८॥

१. ल भ—०विरक्तानां ।
२. रा—ददांम्येकां । ज—दास्याम्येकां ।
३. रा—भगवत् ।
४. भ—वै तदा ।
५. ल भ—अतः परमाधिकः पाठः—
एतदेव हि मे सर्वमेतदेव हि मे धनम् ।
६. भ—सत्यमे० ।
७. ज ल भ—दर्शश्च ।
८. ल—पौर्णमासी च ।
९. रा—०वासदक्षिणम् ।
१०. ल भ—एतन्मूलाः ।
११. कै व—आदिकांठे ।
१२. ल भ—नास्ति ।
१३. कै—चतुर्पंचाक्षरमः । रा—चतुर्पंचाक्षरमः ।
ज—चत्वारिंशः । ल भ—नास्ति ।
१४. भ—॥३८॥

[वं=५५]

[एकोनपञ्चाशः सर्गः]

[दा=५४]

कामधेनुं वसिष्ठो हि न तत्याज यदा मुनिः ।

१] ततोऽस्य शबलां राजा विश्वामित्रस्तदाऽहरत् ॥१॥ [१

नीयमानां तु शबला राम राज्ञा बलीयसा ।

२] ध्यायन्ती चिन्तयामास रुदंती शोकविह्वला ॥२॥ [२

परित्यक्ता वसिष्ठेन किमहं सुमहात्मना ।

३] सांऽहं दीर्णा राजभृत्यैर्द्विये^० परमदुःखिता ॥३॥ [३

किं मयाऽपकृतं तस्य महर्षेर्भावितात्मनः ।

४] यन्मायनागसं साध्वीं भक्तां सजति धार्मिकः ॥४॥ [४

इति सा चिंतयित्वा तु निःश्वस्य च पुनः पुनः ।

५] प्रययावंथं वेगेन वसिष्ठं प्रति राघव ॥५॥ [५

निर्धूयं तान् राजभृत्यान् शतशोऽथ सहस्रशः ।

१. ज—नीयमानस्तु ।

२. व ल—रुदंती ।

३. ल भ—शोककर्षिता ।

४. व—किमर्थ ।

५. ल भ—याहं ।

६. ल—भृत्या । भ—हता ।

७. व—द्विये । भ—द्विये ।

८. रा—०पहृतं ।

९. ल—व ।

१०. ल भ—प्रययौ साथ ।

११. ल भ—विधूय ।

१२. भ—राजभृत्यः ।

- ६] जगामानिलवेगा सा पादमूलं महात्मनः ॥६॥ [६
 गत्वा तु रुदती शोकादिदं वचनमब्रवीत् ।
- ७] शोकसन्तप्तहृदया श्वसेन्ती च सुदुःखिता ॥७॥ [७
 किं मयाऽपकृतं ब्रह्मंस्त्वयि ब्रह्मविदां वर ।
- N] यन्मामनागसं शिष्टां भक्तां त्यजसि धार्मिक ॥८॥ [N
 N] श्रुत्वा तु शबलावाक्यं वसिष्ठ इदमब्रवीत् । [९ पृ
 न त्वां त्यजामि शबले नहि मेऽर्पकृतं त्वया ॥९॥
- १०] एष त्वां नयते राजा बल्वन्मम महाबलः । [१०
 न हि तुल्यं बलं भद्रे रंज्ञो मम विशेषतः ॥१०॥
- ११] बली राजा क्षत्रियश्च पृथिव्याः पतिरेव च । [११
 इयमसौहिणी पूर्णा गजवाजिरथाकुला ॥११॥
- १२] पत्तिध्वजंशरौघैश्च तथैव^३ बलवत्तरैः । [१२

१. ल—महात्मना ।

२. कै—रुदती ।

३. ल—सवाप्सा च । भ—स्वसा यद्वत् ।

४. ल भ—धर्मभृतां ।

५. रा—वसिष्ठमिदं । ल—वसिष्ठैश्चैवमब्रवीत् । भ—वसिष्ठश्चेदमं ।

६. रा—दु ।

७. ल—त्यजसि ।

८. रा—मे परमं ।

९. भ—विभे ।

१०. व ल—राज्ञां विभ्रैर्महाबलैः । भ—क्षत्रियै सुमहाबलैः ।

११. ल—शरौघैश्च । भ—शरौघैश्च ।

१२. ल—यथैव । भ—यथैव ।

१३. ज—बलवत्तराः ।

- N] विश्वामित्रो महावीर्यस्तेजश्चास्य दुरासदम् ॥१२॥ [N
एवमुक्त्वा वसिष्ठेन प्रत्युवाच विनीतवत् ।
- १३] वचनं वचनज्ञा सा ब्रह्मर्षिममितप्रभम् ॥१३॥ [१३
न बलं क्षत्रियस्याद्ब्राह्मणा बलवत्तराः ।^१
- १४] ब्रह्मन् ब्रह्मबलं दिव्यं क्षत्रात् तु बलवत्तरम् ॥^{१४}॥ [१४
अप्रमेयं बलं तेऽस्ति नायं तु बलवत्तरः ।
- १५] विश्वामित्रो महातेजस्तेजस्तव दुरासदम् ॥^{१५}॥ [१५
नियुर्ध्व मां महातेजस्त्वं ब्रह्मबलवत्तरम् ।^१
- १६] बलं दर्पं च यावद्धि नाशयामि दुरात्मनः ॥१६॥ [१६
एवमुक्तस्तया राम वसिष्ठः सुमहातपाः ।
- १७] सृज त्वमिति होवाच बलं परंबैलादर्दनम् ॥१७॥ [१७
तस्या हंभारवोत्सृष्टाः पल्लवाः शतंशो नृपाः ।

१. ल—०तेजस्तु च । भ—०तेजसा च ।

२. भ—दुरासदः ।

३. ल—न बलं क्षत्रिये प्राहुर्ब्राह्मणो बलवत्तरः ।
भ—न बलं क्षत्रियस्यास्य ब्राह्मणो ,, ।

४. ल भ—क्षत्रात् ।

५. कै रा ज—नास्ति ।

६. ल—नायं हि । भ—नाम्योस्ति ।

७. रा ज—महातेज० ।

८. ल भ—नास्ति ।

९. रा—नियुं च ।

१०. ल भ—ब्रह्मबलसंवृतः ।

११. ल—शतः परमाधिकः पाठः—

ब्रह्मन् ब्रह्मबलं दिव्यं क्षत्रात् बलवत्तरम् ।

१२. भ—वशिष्ठः ।

१३. भ—परबलार्दनम् ।

१४. ल भ—शतशस्तदा ।

- १८] अनाशयन् बलं सर्वं विश्वामित्रस्य पश्यतः ॥१८॥ [१६
 राजा तु परमायस्तः क्रोधविस्तारितेक्षणः ।
- १९] पङ्कवान् नाशयामास शस्त्रैरुच्चावचैस्तथा ॥१९॥ [२०
 विश्वामित्रहतान् दृष्ट्वा पङ्कवान् शतशस्तदा ।
- २०] भूय एवासृजद् घोरान् शकान् यवनमिश्रितान् ॥२०॥ [२१
 तैरासीदावृता भूमिः शकैर्यवनमिश्रितैः ।
- २१] मधावद्भिर्महावीरैः पद्मकिञ्जल्कसन्निभैः ॥२१॥ [२२
 पू२२] दीर्घासिपट्टिशधरैर्हेमवर्मायुधाङ्गैः । [२३पू
 N] शैलस्थैर्विकृताकारैर्भीमवेगपरार्क्रमैः ॥२२॥ [N
 ३२२] निर्दग्धं तद्बलं सर्वं प्रदीप्तैरिषि पावकैः । [२३उ
 ३२३] अथास्त्राणि महातेजा विश्वामित्रो ह्वासृजत् [२४पू
 N] येषां विसृज्यमानानां त्रष्ट्येदपि शतक्रतुः ॥२३॥ [N
 इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे कामधेनुप्रकोपो नाम
 एकोनपञ्चाशः सर्गः ॥४९॥

१. ल भ—क्रोधपर्वाङ्कुलेक्षणः ।
 २. रा—पङ्कवाप् ।
 ३. रा—यवम्भमिश्रितान् ।
 ४. ल—०रासीस्तम्भृता । भ—०संवृता ।
 ५. ल—सर्वा । भ—सेना ।
 ६. ल भ—०महावीर्यैः ।
 ७. ल—हेमवर्णैरिषावृता । भ—रिषावृता ।
 ८. रा ज—वरयेदपि । कै—पुत्रः क्षोभितः ।
 ९. कै व—नास्ति ।
 १०. कै रा व—नास्ति ।
 ११. कै—पञ्चपञ्चाशत् । रा व—पञ्चपञ्चाशः ।
 ज—एकपञ्चारिंशः ।
 १२. ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

[वं=५६] [पञ्चाशः सर्गः] [दा=१५५]

ततस्तान् व्याकुलान् दृष्ट्वा विश्वामित्रास्त्रमोहितान् ।

- १] वसिष्ठश्चोदयामास त्वं धेनो सृज योधिन् ॥१॥ [१]
तस्या हंभारवोज्जाताः कांभोजा रविसभिभाः ।
२] उरसस्त्वभिसंजाताः पल्लवाः शस्त्रपाणयः ॥२॥ [२]
योनिदेशाच्च यवनाः शकृत्स्थानाच्छकास्तथा ।
३] म्लेच्छास्तु रोमकूपेभ्यस्तुषीराः सकिरातकाः ॥३॥ [३]
तैस्तु निःसृदितं सैन्यं विश्वामित्रस्य तत्क्षणात् ।
४] सपदातिर्गणं साश्वं सरथं रघुनन्दन ॥४॥ [४]
दृष्ट्वा निःसृदितं सैन्यं वसिष्ठेन महात्मना ।
५] विश्वामित्रमुतानां च शतं नानाविधायुधैर्म् ॥५॥ [५]

१. ल भ—वसिष्ठो नोदयामास ।

२. ल—हंभारवाज्जाताः । भ—हंभारवोत्सृष्टाः ।

३. ल—हृदयादाभिसंजाताः । भ—हृदयादाभिसंजाताः ।

४. ल—कांभोजाः । भ—कांभोजाः ।

५. ल—योनिदेशाच्च ।

६. ल भ—शकृत्स्थानास्तथा शकाः ।

७. भ—०स्तुषराः ।

८. कै रा—०निःसृदितं । ज—निःसृदितं ।

ल—तैर्निःसृदितं । भ—तैर्निःसृदितं ।

९. व ल भ—सपदातिर्गणं ।

१०. व—निःसृदितं । भ—निःसृदितं ।

११. व—नानाविधायुधैः ।

- अभ्यधावत् सुसंरब्धं वसिष्ठं जपतां वरम् । [५]
 ६] हुंकारेणैव तान् सर्वान् निर्ददाह महामुनिः ॥ ६॥ [६]
 गजाश्वरथपादाता वसिष्ठेन महात्मना ।
 ७] भस्मीकृता मुहूर्तेन विश्वामित्रमुतास्तदा ॥७॥ [७]
 दृष्ट्वा विनाशितान् पुत्रान् भग्नं च सुमहद्वैलम् ।
 ८] सत्रीदृश्चिन्तयानश्च विश्वांमित्रोऽभवत् तदां ॥८॥ [८]
 समुद्र इव निर्वेगो भग्नदंष्ट्र इवोरगः ।
 ९] उपरक्त इवादित्यः सद्यो त्रिश्चेष्टतां गतः ॥९॥ [९]
 हतपुत्रबलो दीनो लूनपक्ष इव द्विजः ।
 १०] हतामार्थो हतोत्साहो निर्वेगैः समपद्यंत ॥१०॥ [१०]
 पुत्रमेकं तु राज्ये च नियुज्य परिपाल्यताम् ।
 ११] 'पृथिवीति महान्तेजा वनमेवान्वपद्यत ॥११॥ [११]
 गत्वा हिमवतः पार्श्वं किन्नरैरुपशोभितम् ।

१. ल म—सुसंरुद्धं ।

२. रा—जपतां ।

३. भ—सुमहाबलं ।

४. रा भ—०क्षितयामास ।

५. भ—०मित्रस्तदानघ ।

६. भ—भग्नदंत ।

७. भ—विःप्रभतां ।

८. कै—हतामार्थो । रा—हतामार्थो

९. भ—निर्वेदं ।

१०. कै ल—समुपद्यत ।

११. भ—पुत्रमेकं तु राज्ये च नियुज्य परिपाल्यते ।

१२. भ—पृथिवी वीरबर्मेव ।

- १२] महादेवप्रसादार्यमतप्यत महत्तपः ॥ १२॥ [१२
 ऊर्ध्वबाहुः स राजर्षिः पादाङ्गुष्ठाग्रसंस्थितः ।
 N] अभक्षयद् वर्षशतं वायुमात्रं भुजङ्गवत् ॥१३॥ [N
 तत् तस्य तादृशं दृष्ट्वा तपस्त्रैलोक्यपावनम् ।
 N] प्रीतात्मा स्वयमेवास्य स्वयम्भूर्दर्शनं ययौ ॥ १४॥ [N
 ३१३] आर्गत्य वरदो देवो विश्वामित्रमभाषत । [N
 किमर्थं क्रियते राजंस्तपो ब्रूहि चिकीर्षितम् ॥१५॥^१
 १४] वरदोऽस्मि वरो यस्ते कांक्षितः^२ सोऽभिधीयतांम् । [१४
 एवमुक्तस्तु देवेन विश्वामित्रो महातपाः ॥१६॥^३
 १५] प्रणिपत्य महादेवमिदं वचनमब्रवीत् । [१५
 यदि तुष्टोऽसि मे देव धनुर्वेदः प्रदीयताम् ॥ १७॥^४

१. ल—देवानां हि प्रसा० ।

भ—०प्रसादार्यं तपस्तेये सुदुः करं ।

२. ल भ—०लोक्यतापनम् ।

३. रा—प्रेतात्मा ।

४. व ल—वदौ ।

५. भ—केनचित्कथं कालेन महादेवो वृषभ्यजः

६. व—आदित्य० ।

७. भ—तप्यते ।

८. भ—विचक्षितं ।

९. ल—नास्ति ।

१०. भ—कांक्षितोऽस्वभिधीयतां ।

११. ल—नास्ति ।

१२. ल—स तं प्रब्रूय विचित्रगर्भतमभाषत ।

यदि तुष्टो महादेव धनुर्वेदो ममानव ॥

- १६] साङ्गोपाङ्गः सोपनिषत् सरहस्यस्तथैव च [१६
यानि देवेषु चास्त्राणि दानवेषु तथैव नृषु ॥१८॥
- १७] गन्धर्वयक्षरक्षःसु प्रतिभान्तु च तानि मे ।
भवत्यसादाद् भवतुं देवदेव ममेप्सितम् ॥१९॥ [१७
- १८] एवमस्त्विति देवेशो वाक्यमुक्त्वा दिवं ययौ । [१८
प्राप्य चास्त्राणि दिव्यानि विश्वामित्रो महार्त्षाः ॥२०॥
- १९] हर्षेण महतांऽऽविष्टो दर्पपूर्णस्तथाऽभवत् । [१९
विवर्धमानो वीर्येण समुद्र इव पर्वणि ॥२१॥
- २०] हतमेव तदा मेने' वसिष्ठमपिसत्तमम् । [२०
आगत्य चाश्रमपदं तान्यस्त्राणि ततोऽर्जुनत् ॥२२॥
- २१] तैस्तत् तपोवनं सर्वं निर्दग्धमभवत् तदा । [२१

१. ल—सरहस्यः प्रदीयतां । भ—सरहस्यो वृषण्यम् ।

२. ल—वेदेषु ।

३. व ल—तथर्षिषु । भ—सुरारिषु ।

४. भ—वचनगणधररक्षसुं ।

५. भ—तव प्रसादात्प्रगवन् ।

६. भ—एवमुक्तस्तु देवेशे तदेवमुक्त्वा दिवं गतः ।

७. ल भ—राजर्षिर्विश्वामित्रो ।

८. भ—महावराः ।

९. भ—महता बुद्धे ।

१०. रा—विवर्धमानो ।

११. ल—० तदाज्ञासीद् । भ—हतं मेने तदा धीमात् ।

१२. ल—आगत्य । ज—आगत्या ।

१३. भ—मुसोचास्त्राणि ।

१४. ल—ततोऽर्जुनम् । भ—तस्य सः ।

- उदीर्घमाणमेक्षं तद् विन्वामित्रस्य धीमतः ॥२३॥
 २२] दृष्ट्वा विप्राश्चे ते भीतौ ऋषयः शतशस्तया । [२२
 वसिष्ठस्य च ये शिष्यास्तथैव मृगपक्षिणः ॥ २४॥
 २३] प्राद्रवन्त भयोद्विग्नो दिशः सर्वे सहस्रशः । [२३
 वसिष्ठस्याश्रमपदं शून्यमासीन्महात्मनः ॥२५॥
 २४] मुहूर्ते चैव निःशब्दमासीद् वै रघुनन्दनं । [२४
 अवदच्च वसिष्ठस्तान् मा भैष्टेति' मुहुर्मुहुः ॥२६॥
 २५] नाशयाम्येष गाधेयं नीहारमिव भास्करः । [२५
 एवमुक्त्वा महातेजा वसिष्ठो जपतां वरः ॥२७॥
 २६] विन्वामित्रं तदेतौ वाक्यं सरोषमिदमब्रवीत् । [२६
 आश्रमं चिरसंवृद्धं यद्वै विनोशितवानसि ॥२८॥

१. म—०मेवं तु ।

२. ज—भीतारथ । ङ—विप्रांरथ । ।

३. ज ङ—विप्रा ।

४. ङ—शतशस्तया ।

५. म—दृष्ट्वा विप्रा जुता भीता ऋषयोश्च सहस्रशः ।

६. म—नास्ति ।

७. ङ—विप्रावचस्ततो[यो]द्विग्नो ।

८. म—मुहूर्तादिषु ।

९. ङ—०मासीच्चरजसचिभं ।

म—०मासीदीरिवाक्षमिभं ।

१०. म—अब्रवीत् ।

११. कै—भैष्टेति ।

१२. म—वदतां ।

१३. ज—विन्वामित्रमिदं ।

१४. म—सरोषमिदम० ।

१५. ङ—वदि नाशितवानसि ।

- २७] कुराचारोऽसि संमूढं तस्मात् त्वं न भविष्यसि । [२७
इत्युक्त्वा परमक्रुद्धो दण्डं जग्राह सत्त्वरः ।
२८] सधूममिव कालाग्निं यमदण्डमिवापरम् ॥ २९ ॥ [२८

इत्यर्थे रामायणे बालकाण्डे बलिहासमदाहो नाम
पञ्चाक्षः सर्गः ॥ २० ॥

१. भ—मे मूढ ।
२. भ—विषंक्षसि
३. रा—परम० क्रुद्धो ।
४. भ—दंडमुद्यम्य संस्थितः ।
५. भ—सधूम इव कालाग्निमदण्ड इवापरः ।
६. भ—आदिकाण्डे ।
७. कै रा—बलिहासमदाहः । भ—बलिहासमदाहः ।
छ—० असमिनाशो नाम ।
८. कै रा—वदपंचाशत्तमस् । ज—द्विचत्वारिंशः ।
भ—नास्ति ।
९. भ—नास्ति ।

[वं=५७]. [एकपञ्चाशः सर्गः] [दा=५६]

एवमुक्तो वसिष्ठेन विश्वामित्रो महाबलः ।

- १] आग्नेयमस्त्रमुत्क्षिप्य तिष्ठ तिष्ठेति' चाब्रवीत् ॥१॥ [१]
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा वसिष्ठः प्रत्यभाषत । [२उ]
२] स्थितोऽस्म्येषं क्षत्रबन्धो यद् बलं तन्निदर्शयं ॥२॥
नाशयाम्येष ते' दर्पमस्त्रस्याप्यस्य गाधिर्ज । [३]
३] क्व च क्षात्रं बलं मूर्धं क्व च ब्राह्मं महद् बलम् ॥३॥
पश्यं ब्राह्मं बलं दिव्यं मम क्षत्रियपांसन । [४]
४] तद्धोत्रं गाधिपुत्रस्य घोरमाग्नेयमुत्तमम् ॥४॥
ब्रह्मदण्डहतं शान्तमग्निवेग इवाम्भसा । [५]
५] रौद्रं च वारुणं चैव शैवं^२ पाशुपतं तथा ॥५॥

१. भ—तिष्ठेत्स्वामिणीय ।

२. भ—स्थितोऽस्म्यं ।

३. ज—क्षात्रबन्धो । व ल—क्षत्रनिध ।

४. ल भ—तदि दर्शय ।

५. ल—ते दर्पमस्त्रस्याप्यत्र । भ—दर्पं ते शस्त्रस्याप्यत्र ।

६. रा—गाधिप ।

७. ल—क्षात्रबलं । भ—क्षत्रबलं ।

८. रा—मूर्धं ।

९. भ—महाबलं ।

१०. ल—श्वचि[द्] ।

११. भ—सबाहं ।

१२. क—शैवं । भ—पशुं ।

- अवास्तुजत् तथैषीकं' कुंपितो गाधिनन्दनः । [६
 ६] मानसं मानवं चैव गांधर्वं स्वार्पनं तथा ॥६॥
 जृम्भणं मोहनं चैव सन्तापनविलौपनम् । [७
 ७] शोषणं दारणं चैव ब्रजमस्रं चं दुर्जयम् ॥७॥^१ [८ पृ
 ८] दण्डास्त्रबध वैशाचं क्रौञ्चमस्रं तथैव च । [९ उ
 ९] धर्मचक्रं कालचक्रं विष्णुचक्रं तथैव च ॥१०॥^२ [१० पृ
 ब्रह्मर्षेशं कालपाशं ब्राह्मणं पाशमेव च । [११ उ
 १०] पैनाकमस्रं दशितं शुष्कार्द्रं अक्षनी तथैव ॥११॥^३ [१२ पृ

१. भ—केचिच्चैव विद्येप ।

२. ल भ—रुषितो ।

३. भ—मानवं मानवं ।

४. ल—स्थापनं ।

५. भ—भ्रंशनं ।

६. ज—मोहनं ।

७. भ—सन्तापनविलौपने ।

८. ज—अतः परममधिकः पाठः—

शोषणं दारणं चैव संतापनविलौपनं ।

९. ज भ—दास्यं । ब ल—दाहनं ।

१०. ज ल—सुदुर्जयं । भ—सुदास्यं ।

११. रा—नास्ति ।

१२. ल भ—नास्ति ।

१३. रा—नास्ति ।

१४. ल—ब्राह्मणपाशं ।

१५. ज—पाशं ब्राह्मणमेव च ।

१६. ल—पिनाकमस्रं ।

१७. ज—आक्षणी तथा । ब—अक्षणीह्वयं ।

ल—आक्षणीह्वये ।

१८. रा भ—नास्ति ।

- पृ११] वायव्यं यक्षं वैव अक्षं ह्यशिरस्ताथा । [१०
 उ८] सक्तिद्वयं च व्यसृजत् केङ्कालं मुमुर्लं तथा ॥१०॥
 पृ१५] स्थावरं च महाऽक्षं वै कालस्यमतिदारुणम् ।
 उ११] त्रिशूलोक्षं च द्रयितं कपालमथ किङ्किणीयं ॥११॥ [११
 एतान्यस्त्राणि दिव्यानि विश्वामित्रस्त्वप्रासृजत् ।
 १२] वसिष्ठे सुमहाभागे तदद्भुतमिवाभवत् ॥१२॥ [१२
 ब्रह्मदर्पेण सर्वाणि जग्राह ब्रह्मणः सुतः ।
 १३] शान्तेषु तेषु ब्रह्मास्त्रमगृह्णाद् गाधिनन्दनः ॥१३॥ [१३
 तदस्त्रमुद्यतं दृष्ट्वा देवाश्चोग्रिपुरोगमाः ।
 १४] देवर्षयश्च वित्रस्ता गन्धर्वाश्च महोरगाः ॥१४॥ [१४

१. ल—मयने चैनमक्षं ।
 २. ज—ब्रह्मशिरस्ताथा ।
 ३. भ—नास्ति ।
 ४. भ—चिक्षेप ।
 ५. भ—कालेव० ।
 ६. रा—नास्ति ।
 ७. ल—च ।
 ८. भ—नास्ति ।
 ९. भ—त्रिशूलमक्षं चोरं च ।
 १०. ज भ—किङ्किणी ।
 ११. ज व ल—प्रेषयामास । भ—तु महाभागे ।
 १२. भ—तामि दंष्ट्रम् ।
 १३. भ—भवतीद् ।
 १४. भ—तेषु शान्तेषु ब्रह्माक्षं प्राक्षिपद् गाधिनन्दनः ।
 १५. ल—वसिष्ठाग्रिपुरोगमाः ।
 १६. भ—संजगता ।
 १७. भ—गन्धर्वा समहोरगाः ।

- त्रैलोक्यमासीत् सन्त्रस्तं ब्रह्मास्त्रे समुदीरिते ।
 १५] तद्युक्तंमस्त्रं घोरं^१ तु^२ ब्राह्मं ब्राह्मेर्ण तेजसा ॥१५॥ [१५
 वसिष्ठोऽग्रसदव्यग्रो ब्रह्मदण्डेन राघव । [१६
 १६] ब्रह्मास्त्रं ग्रसमानस्य वसिष्ठस्य महात्मनः ॥१६॥
 त्रैलोक्यमोहनं रौद्रं रूपमासीत् सुदारुणम् । [१७
 १७] सर्वेभ्यो रोमकूपेभ्यो वसिष्ठस्य महात्मनः ॥१७॥
 मरीचंयो विनिष्पेतुः^३ सधूमज्वलनप्रभाः । [१८
 १८] जज्वालं ब्रह्मदण्डेश्च वसिष्ठस्य करोथैतः ॥१८॥
 सधूम इव कालाग्निर्यमदण्ड इवापरः । [१९
 १९] ततो^४ऽस्तुवंस्तु ऋषयो वसिष्ठं जपतां वरम् ॥१९॥

१. व ल—संतप्तं । भ—सिद्धिर्न ।

२. कै ल—तमुक्तमस्त्रं । ज—तद्युक्तमस्त्रम् ।
 भ—तमत्युग्रं ।

३. भ—महाघोरं ।

४. भ—ब्राह्मेण ।

५. ल—वसिष्ठो अग्रमे सर्वात् । भ—० वस्युग्रो ।

६. भ—ग्रसतस्तस्य ।

७. ल—महात्मना ।

८. भ—सुदारुणं ।

९. कै रा ज—नास्ति ।

१०. भ—मरीचश्च इषोत्पन्नाः ।

११. रा—सधूमज्वलनप्रभाः । ज—सधूमा ज्वलनप्रभाः ।
 ल—सधूमज्वलनप्रभाः । भ—० ज्वलनप्रभाः ।

१२. भ—प्रकज्वाल ब्रह्मदण्डो ।

१३. भ—करोत्पितः ।

१४. कै ज—ततोस्तुवंस्तु ० । रा—ततस्तुवंस्तु मन्त्रचक्रो ;
 भ—ततोस्तुवंस्तं मुच्यते ।

- अमोघं ते बलं ब्रह्मंस्तेजो धारय तेजसा । [२०
 २०] निगृहीतस्त्वया राजा विश्वामित्रो महातपाः ॥२०॥ [२१ पृ
 विश्वामित्रोऽपि निकृंतो विनिःश्वस्येदमब्रवीत् । [२२ उ
 २२] धिगूबलं क्षत्रियबलं ब्रह्मतेजो महद्बलम् ॥२१॥
 एकेन ब्रह्मदण्डेन सर्वास्त्राणि हतानि वै^१ । [२३
 २३] एतद्बलं समीक्ष्याहं सर्वेन्द्रियसमाहितः ॥२२॥
 तपोबलं समास्थीस्ये तद्वै ब्रह्मप्रवर्तकम् । [२४
 २४] एवमुक्त्वा महातेजा राष्ट्रमुत्सृज्य दुःखितः ।^१
 उ२५] स जगाम तदा राम तपश्चरणनिश्चितः ॥^२ २३॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे विश्वामित्रप्रतिज्ञा नाम

एकपञ्चाशः सर्गः ॥१६॥

१. रा—०मित्रोपनिहृतो ।
 २. भ—बलं बले ।
 ३. ब ल भ—मे ।
 ४. भ—तदेतद्बलमाकोप्य ।
 ५. रा—०समाहितः । ज—०समाहितः ।
 ६. ल—समास्थाय ।
 ७. भ—वद्वत् ।
 ८. ल—ब्रह्म प्रवर्तते । भ—ब्रह्मकारिणां ।
 ९. भ—महातेजाः शस्त्रमुत्सृज्य ।
 १०. ल—वास्तु ।
 ११. भ—महाराजा ।
 १२. ल—एवं सुविश्रयं कृत्वा ब्राह्मणो एतजानसः ।
 १३. कै व भ—आदिकाण्डे ।
 १४. ज—विश्वामित्रप्रतिहतिनाम । भ—०मित्रप्रतिज्ञा ।
 १५. कै रा—सहस्रंवाद्यधमः । ज—मित्रत्वारिणः । भ—वास्तु ।
 १६. ज—॥४३॥ भ—॥४४॥ ल—सर्गसमाप्तिर्न पर्यते ।

[वं=५८]

[द्विपञ्चाशः सर्गः]

[दा=५७]

- सोऽतप्यंत तपो घोरं विश्वांभिन्नो महामुनिः । [N
१] विनिःश्वस्य विनिःश्वस्य कृतवैरो महामनाः ॥^११॥ [१ उ
दिशं तु दक्षिणं गत्वा महिष्या सह कौशिकैः । [२ पृ
२] फलमूलाशनो दान्तः परमं चाकरोत् तपः ॥^२२॥ [३ पृ
ब्रह्मर्षित्वमभिप्रेष्यु र्बसिष्ठस्पर्धया विभुः ' ' ' [N
३] दृष्ट्वा ब्रह्मतपोयोगं बसिष्ठस्यात्मनोऽधिकम् ॥३॥
तताप परमं राव तप्येव नमुपपन्नितः ।
४] ब्राह्मणः स्वामिति 'मति-सैमा' श्व महातरपीः ॥^३४॥ [N

१. उ—अतप्यत ।
२. अ—विश्वामिन्नस्ततो मुनिः ।
३. उ—महातपाः ।
४. ज—नास्ति ।
५. उ—दक्षिणं तु दिशं । अ—दक्षिणा दिशमास्ताव ।
६. ज—महिष्यः ।
७. उ—रावव ।
८. अ—फलमूलाशनस्तत्र चत्वार मुनयश्चपः ।
९. रा—०मभिप्रेष्य । अ—०मनुप्रेष्युर्ब० ।
१०. अ—मुनिः ।
११. उ—नास्ति ।
१२. अ—मनः ।
१३. ज—समादाव ।
१४. अ—महामनाः ।
१५. उ—नास्ति ।

तत्रास्यं जज्ञिरे पुत्राश्चत्वारो लोकविश्रुताः ।^१

५] हविःष्यन्दो मधुष्यन्दो दृढनेत्रो महोदरः ॥५९॥ [३ ब

इत्यस्य शासतो राज्यमष्टौ पुत्रा महाबलाः ।

६] जज्ञिरे राजशार्दूल वीर्यवन्तो महौजसः ॥६॥ [N

वर्षाणां तत्र पूर्णैर्षं सहस्रे तपतां वरः ।

७] जज्वाल तपसा धीमान् कौशिकोऽग्निरिवोत्थितः ॥७॥ [N

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीक्यादे विश्वामित्रप्रसादा नाम

द्विपञ्चाशः सर्गः ॥५२॥

१. ब—ततोस्य ।

२. ल—अजायंत ततस्यास्य पुत्रा धर्मपरावशाः ।

३. ल—महिष्ययो ।

४. कै—हविष्यंदमधुष्यंददृढनेत्रमहोदराः ।

रा—हविष्यन्द ” ”

ज—हविःष्यन्द ” ”

भ—हरिस्कंदमधुस्कंदवीर्यनेत्रमहोदरा

५. भ—तदा च ।

६. भ—नास्ति ।

७. ज—पूर्णे च ।

८. ज—सहस्रं ।

९. भ—कौशिकोग्निरिव ज्वलन् ।

१०. ल—नास्ति ।

११. कै ब—आदिकांठे ।

१२. कै रा—नामाष्टपंचाशत्तमः ।

ज—नाम चतुश्चत्वारिंशः । ब—नाम ।

भ—नास्ति ।

१३. भ—नास्ति ।

१४. ज—॥४४॥ भ—॥४१॥

ज्ञ—सर्गसमाहर्षिर्न इत्यन्ते ।

[वं=५९]

[त्रिपञ्चाशः सर्गः]

[दा=५७]

पूर्णे वर्षसहस्रेऽथ ब्रह्मा लोकपितामहः ।

- १.] आगम्य गौधिजं राम सोऽब्रवीन्मधुरं वचः ॥१॥^१ [४
जितो राजर्षिलोकंस्ते सुमहान् कुशिकात्मज ।
- २.] अनेन तपसा युक्तं राजर्षिं त्वां समर्थये ॥२॥ [५
एवमुक्त्वा महातेजा जगाम सह दैवतैः ।
- ३.] त्रिविष्टपाद् ब्रह्मलोकं जगाम प्रभुरेव्ययः ॥३॥ [६ ड
विश्वामित्रस्तु तच्छ्रुत्वा हिंसा किञ्चिदवाङ्मुखः ^२ ।
- ४.] दुःखेन महता युक्तः समन्युरिदमब्रवीत् ॥४॥^३ [७
तपश्च सुमहत् तप्तं राजर्षिरिति चैव मे ^४ ॥४॥

१. व—ब्रह्मलोकपितामहाः । भ—ब्रह्मलोकपितामहः ।

२. ज—आगत्य ।

३. रा—गाधिकं ।

४. ल—पूर्णे वर्षसहस्रे तु तपसा द्योतितप्रभम् ।

आजगाम ततो द्रष्टुं ब्रह्मा लोकपितामहः ।

अब्रवीन्मधुरं वाक्यं विश्वामित्रं तपोधनम् ।

५. व ल—राजर्षिवंशस्ते ।

६. व ल—तपसा ।

७. रा ज—राजर्षिं ।

८. ल—एवमुक्त्वा ।

९. रा—रितिचैव मे ।

१०. भ—त्रिविष्टपादेवब्रह्मलोकं लोकानां प्रभुरीश्वर ।

११. भ—विश्वामित्रोपि ।

१२. कै ल—० दवाङ्मुखः । भ—किञ्चित्पराङ्मुखः ।

१३. रा—नास्ति ।

१४. ल—राजर्षीति मां विदुः । भ—० चैव मां ।

१५. रा—नास्ति

- ५] अद्यापि भगवानाह नास्ति शङ्के तपः फलम् ॥५॥' [८
 एवमुक्त्वा महातेजा भूय एव महामुनिः ।
 ६] तपश्चकौर काकुत्स्थ परमं परमाप्तवान् ॥६॥ [९
 एतस्मिन्नेव काले तु सत्यधर्मपरायणः ।
 ७] त्रिशङ्कुरिति राजाऽऽसीदिह्वाकुकुलनन्दनः ॥७॥ [१०
 तस्य बुद्धिः समुत्पन्ना यजेर्यमिति राघव ।
 ८] गच्छेयं स्वशरीरेणं रामं स्वर्गमिति^१ प्रभो ॥८॥
 स वसिष्ठं समाहूय मतिमेतां^२ न्यवेदयत् ।^३
 ९] अशक्यमेतदित्युक्तो वसिष्ठेनं च धीमता ॥९॥ [१२

१. ल—देवास्तार्षिण्याः सर्वे नास्ति मन्ये तपःफलम् ।
 २. म—महातपाः ।
 ३. ज भ—तपश्चकार ।
 ४. म—एतस्मिन्नेव काले ।
 ५. ल—सत्यवादी महावशाः ।
 ६. ल—त्रिशङ्कुरिति । म—त्रिशङ्कुरिति ।
 ७. म—राजाभूदि० ।
 ८. म—यजेर्यमिति ।
 ९. व ल—गच्छेयं ।
 १०. ल—सशरीरेण ।
 ११. व ल—गच्छेयं । म—रमे ।
 १२. म—स्वर्ग इति ।
 १३. व—मतिमेतां ।
 १४. ल—वसिष्ठं स समाहूय मंत्रावित्वा स राघव ।
 म— ,, ,, मतिमेतां न्यवेदयत् ।
 १५. ल—अशक्यमिति वाच्युक्तो । म—नास्ति ।
 १६. म—नास्ति ।

- प्रत्याख्यातो वसिष्ठेन प्रययौ दक्षिणां दिक्षम् । [१३पृ
 १०] वसिष्ठस्य शतं यत्र पुत्राणां तप्यते तपः ॥१०॥
 त्रिंशद्भुः सं महातेजाः शतसंख्यास्तपस्विनः ।
 ११] वसिष्ठपुत्रान् ददृशे तप्यमानान् महत् तपः ॥११॥ [१४
 सोमिबार्थ महातेजाः सर्वानेव कृताञ्जलिः । [१५
 १२] कुशलं चाव्ययं चैव पृष्ट्वा चैताननांभयान् ॥१२॥ [N
 अब्रवीत् सं महाभागो गुरुपुत्रान् नराधिपः ।
 १३] प्रत्याख्यातो वसिष्ठेन ह्रिया किञ्चिदवाङ्मुखः ॥१३॥ [१५पृ
 शरणं वैः प्रपन्नोहं शरुष्यान् शरणप्रदान् । [१६पृ
 १४] त्रातुमर्हथ मां सर्वे प्रपन्नं शरणागतम् ॥१४॥ [N

१. अ—नास्ति ।

२. ल—दक्षिणामुखः ।

३. ज—ताप्यते ।

४. ल—वसिष्ठा दीर्घतपस्तप्यन्ते पत्र वे तपः ।

भ—वसिष्ठस्य शतपुत्राः तप्यन्तं परमं तपः ।

५. ल—त्रिंशद्भुस्तु ।

६. रा—शतसंख्यां तपस्विनः ।

७. भ—त्रिंशद्भुस्य पुत्राणां वसिष्ठस्य शतं ततः ।

ददर्श दीर्घतपसः तपस्तप उच्यते ॥

८. रा—सोमिबार्थ ।

९. भ—सोमिगम्याञ्जलिं कृत्वा तानुवाच तपोधनान् ।

१०. भ—चैतांस्ततो वचः ।

११. ल—स महाभाग । भ—सुमहातेजा ।

१२. कै—०द्वांमुखः । भ—किञ्चित्पराङ्मुखाः ।

१३. ल—नास्ति ।

१४. ल—वा ।

१५. ल—प्रपन्नोहं

१६. कै—शरण्यो । ल—शरण्याः ।

१७. रा—शरणागतान् । ल—शरणागतः । भ—शरणागतं ।

१८. ल—नास्ति ।

- प्रत्याख्यातोऽस्मि गुरुणा वसिष्ठेन महात्मना । [१६]
 १५] यष्टुकामो मद्वायज्ञं तमनुज्ञातुमर्हथ ॥१५॥
 गुरुपुत्रानहं सर्वान् नमस्कृत्य पुरोधसः । [१७]
 १६] शिरसा प्रणतो भूत्वा यांचे वस्तंपसि स्थितान् ॥१६॥
 ते^६ मां भवन्तः सिद्धार्था यार्जयन्तु तपोधनाः ।
 १७] सशरीरो यथा स्वर्गे यज्ञेन समवाप्नुयाम् ॥१७॥ [१८]
 प्रत्याख्यातो वसिष्ठेन गतिमन्यां तपोधनाः ।
 १८] गुरुपुत्रानृते सर्वानं नाहं पश्यामि तस्वतः ॥१८॥ [१९]
 इक्ष्वाकूणां च सर्वेषां वसिष्ठं प्रवेरो गुरुः । [२०पू
 १९] तस्मादनन्तरं सर्वे भवन्तो गुरुर्यो मम ॥१९॥ [२१]
 इत्यार्षे रामायणे वाल्मीक्यादि त्रिशङ्कप्रत्याख्यानं नाम त्रिपञ्चाशः सर्गः ॥ ५३ ॥

१. ल—अद्रं वो । २. ज—तदनुज्ञातु० । ल—तन्मेजुज्ञातु० ।
 ३. भ—पुरस्कृत्य । ४. ल—ये वै । ५. रा—व तपसे । भ—वै तपसि ।
 ६. रा—तेषां । ७. ल—सिद्धयर्थं । ८. कै—यजयन्तु ।
 ९. रा—नास्ति । १०. रा—सर्वानहं । भ—नाहं सर्वान् ।
 ११. ल भ—पुरोधाः ।
 १२. रा—प्रभवो गुरुः । ल भ—परमा गतिः । १३. ल—दैवतं ।
 १४. ल भ—अतः परमाधिकः पाठः—
 भवत्रिः संपरित्यक्तः प्रणिपत्य गुरोः सुतान् ।
 अन्व्यं गुरुमुपाश्रिष्ये यज्ञार्थं कृतमानसः ।*
 १५. कै व भ—आदिकांठे ।
 भ—अतः परमाधिकः पाठः—शतानन्दवाक्ये ।
 १६. रा—०प्रत्याख्यातो ।
 १७. कै रा—नामोत्पत्तिमत्सर्गः व—नाम सर्गः ।
 ज—नाम पंचचत्वारिंशः सर्गः । भ—नास्ति ।
 १८. ज—॥४५॥ भ—॥४२॥ ल—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

[वं=६०] [चतुःपञ्चाशः सर्गः] [दा=५८]

त्रिशङ्कोर्वचनं श्रुत्वा ततः क्रोधसंमन्वितम् ।

१] ऋषिपुत्रशतं रामं राजानमिदंमब्रवीत् ॥१॥ [१]

प्रत्याख्यातोऽसि दुर्बुद्धे गुरुणा ब्रह्मवादिना ।

२] तदतिक्रम्य वचनं कस्मादस्मानुपागतः ॥२॥ [२]

मूलमुत्सृज्य कस्मात् त्वं शास्त्रमिच्छसि सेवितुम् ।

३] नैतत् ते साधु यद्राजन्मस्मीनिच्छसि सेवितुम् ॥३॥ [N

इश्वाकूणां हि सर्वेषां शुरोभ्यः परमा गतिः ।

४] न ते क्षमं तु तत्र तस्य बन्धोऽतिक्रम्य वक्तितुम् ॥४॥

अशक्यमिति यत्र प्रोह वसिष्ठो भगवानृषिः ।

५] तदस्माभिः कथं शक्यं कर्तुं राजन् बलादिव ॥५॥ [४]

१. भ—समन्विताः ।

२. भ—ऋषिपुत्राः समं ।

३. रा—नाम ।

४. भ—मद्भुवन् ।

५. छ भ—सत्यवादिना ।

६. छ—न चातिक्रमितुं शक्यं वचनं सत्यवादिनः ।

७. ज—०मिच्छामि । भ—शास्त्रां सेवितुमिच्छसि ।

८. भ—याजकान् ।

९. ज—नास्ति ।

१०. छ—नास्ति ।

११. भ—च ।

१२. भ—अतः क्षमं न ते ।

१३. छ—चोवाच ।

१४. भ—कर्तुमद्य बलादिव ।

१५. छ—तमद्य वयमाहर्तुं कथं शक्या कर्तुं तव ।

- बालिशोऽसि सुमन्दात्मन् गम्यतां स्वपुरं पुनः ।
 ६] याजने भगवानेव शक्तोऽसौ न वयं हि ते ॥६१॥ [५
 तेषां तद्वचनं श्रुत्वा क्रोधपर्याकुलाक्षरम् ।
 ७] राजां मन्युसमाविष्टो गुरुपुत्रानुवाच तान् ॥७॥ [७
 प्रत्याख्यातो वसिष्ठेन भवद्भिस्तदनन्तरम् ।
 ८] अन्यां गतिं गमिष्यामि यष्टुं विदितमस्तु वः ॥८॥ [८
 ऋषिपुत्रास्तु तच्छ्रुत्वा क्रोधपर्याकुलाक्षरम् ।
 ९] शेषुस्तं परमं क्रुद्धाश्चण्डालस्त्वं भविष्यसि ॥९॥ [९
 'इति श्रुत्वा च' राजानं त्रिविशुस्ते स्वमाश्रमम् । [१०
 १०] अथ रात्रौ व्यतीतायां तैस्यां राजा बभूव सैः ॥१०॥

१. भ—अनुशिचसि मंद त्वं ।

२. रा—यजने ।

३. ल—वालिहस्तं नृपश्रेष्ठ गुरुपुत्रान् य इच्छसि ।
 तपोरतांश्चावायितुं गम्यतामिष्टतो नृप ।

४. ल—स्नेहपयाकुलाः । भ—क्रोधभ्याकुलिताश्चः ।

५. रा—राजमन्यु० ।

६. ल—गुरुपुत्रान्मात्रवीत् । भ—मुनिपुत्रा० ।

७. ल—गुरुपुत्रैस्तथैव च

८. ल—स्वास्ति बोस्तु तपोधनाः । भ—यद्यद्विदितम० ।

९. ल—वसिष्ठपुत्रास्तच्छ्रुत्वा ।

१०. ल—वाक्यं चोराक्षरं तदा । भ—चोराक्षरपदं वचः ।

११. ज—परमं क्रुद्धा० । भ—०श्चांडालस्त्वं ।

१२. रा—०क्षयवा तु । रा--इत्येवमुक्त्वा ।

१३. ल—राश्यां । भ—राश्यां ।

१४. ल—रात्रौ चण्डालदर्शनः ।

चण्डालदर्शनो राम सद्य एव दुराकृतिः ।'

- ११] अधो नीलाम्बरधरो रक्ताम्बरकृतोत्तरः ॥११॥ [१२
 संरन्धताम्रघोराक्षः करालो हरिपिङ्गलः ।
- १२] ऋक्षचर्मनिवासी च लोहाभरणभूषितः ॥१२॥ [N
 तं दृष्ट्वा सचिवास्तंख्य सद्यश्चण्डालतां गतम् ।
- १३] द्रुद्रुवुः स्वपुरं राम पौरा ये चानुयायिनः ॥१३॥ [१३
 एक एव ततो राजा जगामाकुलंचेतनः ।
- १४] शापजेन सुदुःखेन दह्यमानो दिवानिशम् ॥१४॥^१
 विश्वामित्रं महात्मानं ततः शरणमाययौ ।^२ [१४
- १५] स्पर्धमानं वसिष्ठेन शङ्खार्थं तपोधनम् ॥१५॥ [N
 विश्वामित्रोऽपि दृष्ट्वैव राजानं तु तथागतम् ।
- १६] चण्डालरूपिणां राम कारुण्यं समुपागतम् ॥१६॥^३ [१५

१. ल—नास्ति ।

२. भ—०धरोत्तरः ।

३. कै—ऋषिरामनिवासी ।

४. ल—विचित्रमाख्याभरण भायसाभरणस्तथा ।

५. ल—मंत्रिणः सर्वे ।

६. ल—साक्षाच्छण्डालतां ।

७. रा—गतिम् ।

८. ब भ—सुपुरं ।

९. भ—जगामाकुलंचेतनः ।

१०. ल—अथैक एव राजा स जगाम परमासुखान् ।

दह्यमानं दिवाराम्बौ महासुनिम् ।

११. ज ब—समुपागतम् । भ—समुपागतः ।

१२. ल—विश्वामित्रस्तु तं दृष्ट्वा राजानं विस्मयीकृतम् ।

चण्डालरूपिणं घोरं ततः कारुण्यमीषिवात् ।

कारुण्याच्च महातेजा वाक्यं वाक्यविशारदः ।

- १७] अब्रवीद् गतलक्ष्मीकं राजानं घोरदर्शनम् ॥१७॥ [१६
किमागमनकृत्यं ते^१ इक्ष्वाकुकुलनन्दन ।
- १८] अयोध्याऽधिपते वीरै^२ शपाञ्चण्डालतां गतः ॥१८॥ [१७
अथ तद्वाक्यमाकर्ण्य राजा चण्डालदर्शनः ।
- १९] अब्रवीत् प्राञ्जलिर्वाक्यं विश्वामित्रं तपोधनम् ॥१९॥ [१८
प्रत्याख्यातोऽस्मि गुरुणा गुरुपुत्रैस्तथैव च ।
- २०] इमं विपर्ययं प्राप्तः काममप्राप्य कांसितम् ॥२०॥ [१९
सशरीरो दिवं यायामिति मे^३ सौम्य^४ निश्चयः ।
- २१] महायज्ञफलेनेति तं च^५ न^६ प्राप्तवानहम् ॥२१॥ [२०

१. ल—घोरदर्शनं ।

२. कै—०कृत्यं त । क० गमनहेतुस्ते ।

३. रा—अबोध्याधिपतिर्षदिः ।

४. भ—शापाञ्चण्डालतां गत ।

५. ज—चाण्डाल० । पुनरपरहस्तेन कृतः ।

६. ल—वाक्यज्ञो ।

७. रा—तपोनिधिम् । ल—वाक्यकोविदः ।

८. ल—अनवासञ्च तं काममहं प्राप्तो विपर्ययं ।

९. ल—मा ।

१०. रा ब—सौम्य निश्चयः । ज—सौम्यनिश्चयः ।

ल भ—सौम्यदर्शनं ।

११. ल—मयास्वोदाहृतो यज्ञस्तं च ।

भ—महायज्ञफलेनेति तच्च ।

१२. रा—न प्राप्तवानहम् । भ—नैवाप्यते मया ।

- अनृतं नोक्तपूर्वं हि' विश्वामित्र मया कर्चित् ।
 २२] कृच्छ्रेऽपि वर्तमानेन क्षत्रधर्मेण ते^३ शपे^३ ॥२२॥ [२१
 यज्ञैर्बहुभिरिष्टं मे^४ प्रजां धर्मेण पालितां ।
 २३] गुरवश्च महात्मानः शीलवृत्तेन^५ तोषिताः ॥२३॥ [२२
 धर्मे प्रयतमानस्य शुद्धवाग्बुद्धिकर्मणः ।
 २४] परितोषं नं^६ गच्छन्ति गुर्वो मुनिपुङ्गव ॥२४॥ [२३
 दैवमेवं^७ परं मन्ये पौरुषं नात्र कारणम् ।^८
 २५] शुभाशुभफलप्राप्तौ नराणामिति मे मतिः ॥^९ २५॥ [२४
 तस्य मे परमार्तस्य दैवोपहतकर्मणः ।
 २६] शरणार्थं प्रपन्नस्य प्रसादं^{१०} कर्तुमर्हसि ॥^{११} २६॥ [२५

१. ल—न भविष्यं कदाचन ।
 २. ल—कृच्छ्रेऽपि गतः सौम्य ।
 ३. ज—ते शपे ।
 ४. ल—०र्बहुविधेरिष्टं । भ—यज्ञैर्मयेष्टं विविधैः ।
 ५. भ—धर्मतः पालिता मही ।
 ६. ल—महाभागाः । भ—मया सर्वे ।
 ७. ल—शीलधर्मेण ।
 ८. ल—प्रयतमानानां । भ—प्रपद्यमानस्य ।
 ९. ल—शुद्धवाग्बुद्धिकर्मणां ।
 १०. ज—तु ।
 ११. ल—रिपवो मुनिसत्तम ।
 १२. ल भ—दैवमत्र ।
 १३. ल भ—नास्ति ।
 १४. ब ल—दैवमाक्रमते बुद्धिं दैवं हि परमा गतिः ।
 १५. ल—नास्ति ।
 १६. ल—परमात्मस्य ।
 १७. ल—प्रसादं मुनिपुंगव ।
 १८. ल—कर्तुमर्हसि भद्रं ते दैवोपहतकर्मणः ।
 भ—शरणागतस्य भगवत्प्रसादं कर्तुमर्हसि ।

नान्यां गतिं प्रपश्यामि नान्यः शरणौऽस्ति मे ।
२७]द्वैवं पुरुषकारेण निवर्तयितुमर्हसि ॥२७॥

[२६

दावानलोपद्रुतपत्रसंघो

यथा तरुर्हर्षमुपैति दृष्ट्वा ।

वर्षासु मेघं तडिदुर्ज्ज्वलाङ्ग

N]

तथा ऋषिं प्राप्य नृपस्त्रिसंकुं ॥२८॥

[N

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीक्यायते त्रिसंकुवाक्यं नाम
चतुष्पञ्चाशः सर्गः ॥ २४ ॥

१. कै—नान्यं ।
२. ल—गतिमुपास्यामि ।
३. कै—शरणौऽस्ति । ल—शरणमास्ति ।
४. म—नास्ति ।
५. व—दृष्ट्वा ।
६. व—तनिदुर्ज्ज्वलाङ्गं ।
७. ल—नृपस्त्रिसंकुः ।
८. कै व भ—आदिकांठे ।
९. ल—त्रिसंकुवाक्यो ।
१०. कै रा—वदित्तमः । ज—वदत्त्वारिणः ।
व ल भ—नास्ति ।
११. ज—॥ ४६ ॥ म—॥ ४३ ॥

[वं=६१] [पञ्चपञ्चाशः सर्गः] [दा=५९]

उक्तवाक्यं तु राजानं विश्वामित्रो महामुनिः ।

१] अब्रवीन्मधुरं वाक्यं त्रिशङ्कोर्हर्षवर्धनम् ॥१॥ [१]

इक्ष्वाको स्वागतं वत्सं जानामि त्वां सुधार्मिकम् ।

२] शरणं ते भविष्यामि वत्स्यसि त्वं ममाश्रमे ॥२॥ [२]

सर्वानामन्त्रयिष्यामि त्वत्कृतेऽत्र तपोधनान् ।

३] कांसितस्यास्य ते राजन् भिद्यते यज्ञकर्मणः ॥३॥^{१०} [३]

गुरुशार्पकृतं रूपं यदिदं धार्यते त्वया ।

४] संसिद्धस्त्वमनेनैव रूपेण स्वर्गमेष्यसि ॥^{११}४॥ [४]

१. ज—त्रिशङ्कं ।

२. व—तेस्ति । ल—तेस्तु ।

३. कै—सुधार्मिकाम् । रा—स्वधार्मिकम् ।

व—सुधार्मिकां ।

४. व ल म—वसेह ।

५. ल—नृपसत्तम ।

६. ज म—सर्वानामन्त्रयिष्येहं ।

७. भ—स्वत्कृते तु ।

८. भ—वाञ्छितस्यास्य ।

९. रा—०कर्मणा । म—०कर्मणि ।

१०. ल—अहमामन्त्रये सर्वानृषीन्परमधार्मिकान् ।

यज्ञसाहाय्यकरश्चो ततो वक्ष्यसि निर्वृत्तः ॥

११. भ—गुरुणा प्रकृतं ।

१२. भ—वदेतद्धार्यते त्वया । ल—०स्वधि वर्तते ।

१३. ल—अनेनैव च रूपेण सशरीरो गमिष्यसि ।

- हस्तमात्रमहं मन्ये स्वर्गं ते नृपसत्तम ।
 ५] यत् त्वं मां समुपागम्य त्रिदिवं गन्तुमिच्छसि ॥१॥' [५
 एवमुक्त्वा महातेजाः पुत्रानाहूय सर्वशः ।
 ६] शिष्यांश्च सुहृदश्चान्यानुवाचेदं वचस्तदा ॥३६॥ [६ पृ
 आनयध्वमिह क्षिप्रं यद्गद्रव्याप्यशेषतः ।
 ७] मदीयेनैव यज्ञोऽयं द्रव्येणास्य भविष्यति ॥७॥' [N
 शिष्यानुवाच चाहूय सर्वानेव तदा वचः ।
 ८] सर्वानृषीनानयध्वं समुपेखाज्ञया मम ॥८॥' [६ उ
 यश्च यद् वचनं ब्रूयान् मम वाक्यप्रचोदितैः । [७ पृ
 ९] तन्मे भवद्भिरावेद्यं यथाप्रोक्तमशेषतः ॥ ९॥ [८
 शिष्यास्ततोऽस्य ते जग्मुर्दिशः सर्वास्तदाज्ञया ।
 १०] आमन्थ्य चाप्युपावृत्ता न चिरेण तपोधनाः ॥ १०॥

१. उ —हस्तमात्रमहं मन्ये स्वर्गं ते वनरेश्वर ।

यस्त्वं कौशिकमाज्ञाय शरण्यं शरण्यं गतः ।

भ—नास्ति ।

२. उ—विश्वामित्रो महामुनिः ।

३. उ—शिष्यांश्च सुहृदश्चैव श्चत्विजस्सपुरोधसः ।

४. क—मदीयेष्वैव ।

५. उ—अने।व्यम्महातेजा यज्ञसंभारकारणं ।

६. उ—शिष्यांश्च सर्वानानाय वाक्यज्ञो वाक्यमब्रवीत् ।

गत्वा मुनिविरान्धर्वांसमानयत सत्वरम् ॥

७. उ—मद्वाक्यपरिबोदितः ।

८. उ—तत्सर्वमक्षिकेनोक्तं समाक्येयं विनाशृतम् ।

९. भ—सर्वे तदाज्ञया ।

१०. उ—ततस्तद्ब्रूयान् श्रुत्वा दिशो जग्मुः पृथक् पृथक् ।

११. भ—तपोधनान् ।

१२. उ—आजग्मुरय दोषेभ्यः सर्वेभ्यो ब्रह्मवादिनः ।

प्रोचुः प्राञ्जलयोऽभ्येत्य विश्वामित्रमिदं वचः ।

- ११] तं चामन्त्रिताः सर्वे मुनयोऽस्माभिराज्ञया ॥११॥^३ [१०
 आज्ञा प्रतिगृहीता तैः सर्वैरेव तपोवनैः ।
 १२] अस्माभिरुक्तैरभ्येत्य वजयित्वा महोदयम् ॥१२॥^४ [११
 वसिष्ठस्य च पुत्राणां शतं क्रोधसर्माकुलम् ।
 १३] यदुवाच वचो घोरं शृणु तन्मुनिपुंगव ॥१३॥^५ [१२
 क्षत्रियो याजको यत्र चण्डालस्य यियक्षतः ।
 १४] कथं सदसि भोक्ष्यन्ते हविस्तत्र सुरोत्तमाः ॥१४॥ [१३
 ब्राह्मणा वा महात्मानो भुक्त्वा चण्डालभोजनम् ।
 १५] कथं स्वर्गं गमिष्यन्ति विश्वामित्रेण पातिताः ॥१५॥ [१४

१. अ—उचुः ।

२. ज—उवाचमन्त्रिताः । अ—उपोपामन्त्रिताः ।

३. ल—ते तु शिष्याः समागम्य मुनिं उचकनतेजसं ।
 अमुवन् वचनं सर्वे यथोक्तं ब्रह्मवादिभिः ।

४. रा—०रभ्येति । ज—०रम्यर्ष्य ।

५. ल—भूत्वा ते वचनं सर्वे समायांति द्विजातयः ।
 भगवन्सर्वदेशेभ्यो वर्जयित्वा महोदयम् ॥

६. अ—क्रोधे समाकुले ।

७. ल—वासिष्ठं च शतं सर्वे शृणु तन्मुनिपुंगव ।

८. अ—चाण्डालस्यापि ।

९. कै ल—विरोधतः । अ—यद्यतः ।

“कै” पुस्तके पुनरपरहस्तेन कृतः ।

१०. ल—भोक्षारो । अ—भोक्ष्यं तद् ।

११. ल—सुरक्षयः । अ—सुरोत्तमैः ।

१२. ल—हि ।

१३. रा अ—चाण्डालभोजनम् ।

१४. रा—पातिताः । अ—पाक्षिताः ।

निष्पुंरं वचनं प्राहुरेते संरक्तलोचनाः ।

१६] वासिष्ठा नरशार्दूल सर्वे ते समहोदयाः ॥ १६ ॥ [१५

इति तेषां वचः श्रुत्वा शिष्याणां मुनिपुङ्गवः ।

१७] क्रोधसंरक्तनयन इदं वचनमब्रवीत् ॥ १७ ॥ [१६

ये दूषयन्त्यदुष्टं मां वासिष्ठा मन्दचेतसः ।

१८] भस्मीभृता दुरात्मानः कालस्य वशमागताः ॥ १८ ॥ [१७

अद्य ते कालपाशेन नीता वैवस्वतक्षयम् ।

१९] सप्तजातिशतान्येवं भृता यांस्यन्ति सर्वशः ॥ १९ ॥ [१८

स्वमांसनिर्यताहारा पुक्कसा नाम निर्घृणाः ।

२०] विकृताश्च विरूपाश्च लोकाननुचरन्त्विति ॥ २० ॥ [१९

१. रा—०रैष्यं । भ—०रेतव ।

२. रा—स महोदयः ।

३. भ—वासिष्ठं मुनिशार्दूलं सर्वे ते समहोदयाः ।

४. ल—एतद्ब्रह्मचरैर्निष्पुंर्य कृतं रक्तबिलोचनैः ।

वासिष्ठैर्नरशार्दूलैः सर्वैः सह महोदयैः ॥

५. ल—तेषां तद्ब्रह्मचरं श्रुत्वा यथोक्तं मुनिपुंगवः ।

क्रोधात् संरक्तनयनः सरोषमिदमब्रवीत् ।

६. रा—प्रदुष्टयन्त्यदुष्टं ।

७. ल—तप उग्रमुपागतं ।

८. ल—भस्मभृता ० । भ—०भृतात्मनः सर्वे ।

९. भ—०शतान्येव ।

१०. भ—भृतयः ।

११. व--वास्यंतु । भ—संतु ।

१२. ल—सप्तजातीशतास्मर्तुम्यत्तपा संतु सर्वशः ।

१३. रा—०हाराः । ज—सुमांसनिघताहाराः ।

ल—स्वमांसुनिरताहाराः ।

१४. कै ज—मुष्टिका ।

महोदयश्च दुर्बुद्धिरदुष्टं मां प्रदूषयन् ।^१

२१] दूषितः सर्वलोकेषु निषादत्वमवाप्स्यति ॥२१॥ [२०

प्राणातिपातनिरतो निरनुक्रोशतां गतः ।

२२] दीर्घं कालं मम क्रोधाद्दुर्गतिं वर्तयिष्यति ॥२२॥ [२१

एतावदुक्त्वा वचनं विश्वामित्रो महींमुनिः ।

२३] विरराम महातेजास्तस्मिन् मुनिसमागमे ॥२३॥ [२२

इत्यार्षे रामावबोधे बाह्यकाण्डे वासिष्ठशापो^{११}

नाम पञ्चपञ्चाशः सर्गः ॥२५॥^{१५}

१. व—महोदरश्च ।

२. ल—महोदयश्च दुर्बुद्धिर्मानवूष्यं प्रदूषयन् ।

भ— ,, दुष्टं मां च दूषयन् ।

३. कै—दूषितः । ल—दूषतः ।

४. कै रा—०मवाप्स्यसि । ल—निषाद इति विभ्रुतः ।

५. ल—तिपातेनिरतो । भ—०तिपातिनि० ।

६. ज ल भ—दीर्घकालं ।

७. ल—महातपाः ।

८. ल—विरराम महातेजा मुनिमध्ये महामतिः ।

९. ज ल—अतः परमधिकः पाठः—

सक्रोधं विषमुत्सृज्य गाधितो रघुर्नन्दन ।

१०. कै व भ—आदिकाण्डे ।

११. कै—०शापे । रा—वासिष्ठशापे ।

भ—अतार्वन्द्वाक्ये वासिष्ठानुरापो ।

१२. कै रा—वास्ति ।

१३. कै रा—एकवचः । ज—सप्तचत्वारिंशः ।

१४. ज—॥४७॥ भ—॥४४॥

ल—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ॥

[त्रं=६२] [षट्पञ्चाशः सर्गः] [दा=६०]

- १३] तपोबलहतान् कृत्वा वासिष्ठान् समहोदयान् ।
 ऋषिमध्ये परं वार्क्यं विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ॥१॥ [१]
- २] अयमिष्वाकुदायादस्त्रिशंकुरिति विश्रुतः ।
 धार्मिकैः सत्यसन्धश्च मां चैव शरणं गतः ॥२॥ [२]
- ३] स्वेनानेन शरीरेण स्वर्गं गन्तुर्मभीप्सति ।
 तदिदं मुनयः सर्वे समनुज्ञातुमर्हथ ॥३॥ [३]
- ४] विश्वामित्रवचः श्रुत्वा तत्रे ते मुनिसंसमाः ।
 मियः संमन्त्रयामासुर्विश्वामित्रभयार्दिताः ॥४॥ [४]
- ५] अयं कुशिकदायादस्तपस्वी क्रोधेनो भृशम् । [५ पू
 न विग्रहः सहानेन क्षमोऽस्माकं शरीरिणाम् ॥५॥ [N

१. भ—तपोबलात् हतान् ।

२. ल—इष्ट्वा ।

३. रा—वासिष्ठान् ।

४. ल—महातेजा ।

५. व—अस्मात् श्लोकात्पूर्वमित्थं पाठः—

.....मुत्सृज्य.....रघुनन्दन ।

६. ल—०शिशुदृक्० ।

७. ल—धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च ।

८. ल—लोकं जिगीषति ।

९. भ—तद्विमं ।

१०. ल—अथैवं भाषिते वार्क्यं महायज्ञफलैषिणा ।

११. ल—सर्वे एव महर्षयः । भ—ततस्ते मुनि० ।

१२. ल—ऊचुः समेत्य वचनं धर्मज्ञा धर्मवंत्रिताः ।

१३. रा—क्रोधतो ।

१४. ल—कुशिकदायादो मुनिः परमकोपनः ।

यदाह वचनं सम्यगेतत्कार्यमसंशयम् ॥

- ६] अभिकोपो हि भगवान् शापं दास्यति रोषितः ।
तस्मात् प्रवर्ततां यज्ञो यथैवोक्तं महर्षिणा ॥६॥ [६
- ७] क्रियतां च तथा यत्रः सन्नरीरो यथा दिवम् ।
गच्छेदिक्ष्वाकुदायादो विश्वामित्रस्य तेजसा ॥७॥ [७
- ८] ततः प्रवृत्ते यज्ञः सर्वसंभारसंभृतः ।
अध्वर्युरभवत् तत्र विश्वामित्रो महातर्पाः ॥८॥ [८
- ९] ऋत्विजश्चाभवंस्तत्र मुनयः संशितव्रताः ।
तस्य यज्ञे तदा तस्मिंस्त्रिशङ्कोर्भूरितेजसं ॥ ९॥ [९ पू
- १०] विश्वामित्रोऽथ भगवान् मन्त्रवन्मन्त्रकोविदः ।
चकारांवाहनं यज्ञे भामार्थं दिवोकसाम् ॥ १० ॥ [१०
- ११] नाभ्यगच्छन् यदाहूता भागार्थं तत्र देवताः ।
ततः क्रोधसमाविष्टो विश्वामित्रो महामुनिः ॥११॥ [११

१. ल—अभिरूपो ।

२. रा—रोषतः ।

३. रा—प्रवर्ततां ।

४. ल—सर्वांगः सर्वधिहितः । भ—सर्वसंपन्निः संभृतः ।

५. ल—वाजकश्च महायज्ञे । भ—अध्वर्युश्चाभवत्तस्य ।

६. ज—महामुनिः ।

७. भ—ऋत्विजाश्चाभवंस्तस्य ।

८. ल—ऋत्विजश्चानुपूर्व्येण मन्त्रवन्मन्त्रकोविदः ।

९. भ—०रमितौजसः ।

१०. ल—नास्ति ।

११. भ—०मंत्रपारगः ।

१२. व—चकार वाहनं ।

१३. ल—चक्रवाहनं तत्र देवानां देवसंमिताः ।

१४. ज—नाभिगच्छन् ।

१५. ल—न वाजमुत्सृतास्तत्र भागार्थं सर्वदेवताः ।

- १२] स्रुवमुद्यम्य संक्रुद्धस्त्रिशङ्कुमिदमब्रवीत् । [१२
 पश्य मे तपसो वीर्यमूर्जितस्य नरेश्वर ॥१२॥
- १३] एष त्वां स्वशरीरेण नयामि स्वर्गमोजसा । [१३
 ७१४] बाल्यात् प्रभृति यत्किञ्चिन् मया सम्यक् तपश्चितम् ॥१३॥
 तेजसा तस्यै तपसैः सशरीरो दिवं व्रज । [१४
 १५] उक्तवाक्ये भुनौ चैवं सशरीरो नृपस्तदा ॥१४॥
 ययौ स्वर्गं स्वमाविश्य मुनीनां पश्यतां तदा । [१५
 १६] त्रिदिवं तं गतं दृष्ट्वा त्रिशङ्कुं पाकशासनः ॥१५॥
 संह सर्वैः सुरगणैरिदं वचनमब्रवीत् । [१६
 १७] त्रिशङ्को पतै भूमौ त्वं न त्वं स्वर्गे कृतालयः ॥१६॥

१. कै रा ज ल—स्रुचमु० ।
 २. ल--सक्रुद्धस्त्रिशङ्कुं तं वचोब्रवीत् ।
 भ--भगवांस्त्रिशङ्कुमिदं० ।
 ३. रा--वीर्यमूर्जितं० । ल--वीर्यं पूजितस्य ।
 ४. ज ल भ--सशरीरेण ।
 ५. ल--बाल्यात्प्रभृति यद्यस्ति किञ्चिन्मे तपसः फलम् ।
 ६. ल--तेजस्तस्य ।
 ७. ज--तपसा । ल--महतः ।
 ८. ज--उक्तवाक्यं ।
 ९. व भ--०चैवं । ल--मुनावेवं । भ--तु ।
 १०. व--ते ।
 ११. ल--स्वर्गजगाम विप्राणां तत्र परयतां ।
 देवलोकेगतं दृष्ट्वा त्रिशङ्कुं पाकशासनः ।
 १२. भ--स तु ।
 १३. भ--यात् । श्रुद्धेपि मूढपाठे यकारभावनाया दीर्घमात्रा—
 विन्वासः प्रामादिकः पत इत्यस्यैव संगतेरिति तु दृश्यम् ।
 १४. भ--नास्ति ।
 १५. ल--स्वर्गं । भ--स्वर्गं ।

- गुरुशापोपहतो मृदः शीघ्रमवाक्(शि)राः । [१७]
 १८] एवमुक्तो महेन्द्रेण त्रिशङ्कुरपतद् दिवः ॥१७॥
 उपक्रोशन् स पाहीति विश्वामित्रमवाक्शिराः ।^३ [१८]
 १९] तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य पाहीति पततो मुनिः ॥१८॥
 विश्वामित्रो भृशं क्रुद्धस्तिष्ठ तिष्ठेत्युवाच तम् ।^४ [१९]
 २०] ततो ब्रह्मतपोयोगार्त् प्रजापतिरिवापरः ॥१९॥
 पृ२१] असृजद् दक्षिणे मार्गे सप्तर्षीनपरांस्ततः ।^५ [२०]
 पृ२२] नक्षत्रचक्रंमपरं चासृजेत् क्रोधंमूर्च्छितः ॥२०॥^६

१. ल—०तद्भुवि । श्—शि .कुः प्रापतद्विवः ।
 २. रा—उदक्रोशन् । भ—उपाक्रोशन् ।
 ३. व ल—त्रायस्वेति विक्रोशन्विश्वामित्रं तपोधनम् ।
 ४. रा ज—पतितो ।
 ५. ल—तस्य तद्वचनं श्रुत्वा पतमानस्य भंत्रिणः ।
 ६. रा—तिष्ठेति चाब्रवीत् ।
 ७. ल—शेषमाहारयतीत्रं तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ।
 ८. ल—ऋषिमध्ये च काकुत्स्थ ।
 ९. ल—ततो दक्षिणमार्गस्थाम्सप्तर्षीनपराञ्जितः
 भ—सृष्ट्वा दक्षिणमार्गस्थाम्स सप्तर्षीनपरान् प्रभुः ।
 १०. रा—नक्षत्रचर्ममपरं ।
 ल—नक्षत्रमात्ममपरां । भ ०वर्गमपरं ।
 ११. कै रा ज भ—अष्टुं समुपचक्रमे ।
 १२. अतपरमधिकः पाठः—
 ल—दक्षिणां दिक्षमास्थाय मुनिमध्ये महातपः ।
 सृष्ट्वा नक्षत्रमाकां च क्रोधेन कलुषीकृतः ।
 भ—अहस्व दक्षिणे मार्गे तेजोब्रह्मकाशयात् ।
 सृष्ट्वा च नक्षत्रगर्भं क्रोधसंरक्तकोचनः ।

- उ२३] इन्द्रादीनिवराणं देवान् स्रष्टुं समुपचक्रमे ।^१ [२२
 ततः परमसंभ्राम्ताः सदेवर्षिगैणाः सुराः ॥२१॥
- २४] विश्वामित्रं महात्मानमूचुः सानुनयं वचः । [२३
 अयं राजा शुचिः सौम्येय गुरुशापपरिसृतः ॥२२॥
- २५] सशरीरो दिवं गन्तुं नार्हत्यकृतयाचनः । [२४
 प्रमाणानि च पाल्यानि यत्रतो हि भवादृशैः ॥^२ २३॥
- २६] प्रमाणैः स्थापितां संस्थां नातिक्रमिष्यति ।^३ [N
 इति तेषां वचः श्रुत्वा देवानां मुनिपुङ्गवः ॥^३ २४॥
- २७] अब्रवीत् स्नेहवद् वाक्यमिदमाभाष्य देवताः । [२५
 सशरीरस्य त्रिबुधास्त्रिशङ्कोरस्य धीमतः ॥२५॥^४

१. म—० पराहोक्तान् ।

२. ल—देवानपि च संक्रुद्धः स्रष्टमेवाकरोम्मतिम् ।

३. ज—सर्षिदेवगणाः सुराः । ल—सर्षिसंघाः सुरासुराः ।

४. ज भ—राजात्मजः ।

५. कै व—सौम्य । रा—सम्बन्ध ।

६. ल—वांसं ।

७. ल—नार्हत्येष महायज्ञाः । म—० कृतपावनः ।

८. रा—माख्यानि ।

९. ल—नास्ति ।

म—प्रमाणानि पुराख्यैः परिपाख्यानि वदतः ।

१०. म—पुराणे ।

११. व म—० क्रामिष्यति ।

१२. ल—नास्ति ।

१३. ल—तासां तु वचनं श्रुत्वा देवताणां महद्यतिः ।

१४. रा—स्नेहवाद् । म—सुसहद् ।

१५. ल—अत्रधीम्मपुरं वाक्यं वाक्यत्रयः सर्वदेवताः ।

सशरीरस्य मद्रं व हृत्वाकोरमितप्रमाः ॥

- २८] आरोहणं प्रतिज्ञाय नानृतं कर्तुमुत्सहे ।' [२६
गमनं सशरीरस्य त्रिशङ्कोर्मत्परिग्रहात् ॥२६॥
- २९] नक्षत्राणि च सर्वाणि ध्रुवार्णीमानि सन्तु वैः । [२७
यावल्लोका धरिष्यन्ति तार्वत् स्थास्यन्त्यमूर्न्यपि ॥२७॥
- ३०] एवं प्रतिज्ञां विहितां समनुज्ञातुमर्हथ । [२८
बभूर्बुर्विबुधा भीता एवमेस्तिवति राघव ॥२८॥^१
- ३१] ज्योतींष्येतानि तिष्ठन्तु वैश्वानरपथाद् बहिः । [३०
अवाक्शिरां एव चायं त्रिशङ्कुरिह तिष्ठतु ॥२९॥^२ [३१३
- ३२] दक्षिणस्यामभिरतो दिशि स्वप्रभया ज्वलन् ।

१. ल—आरोहणप्रतिज्ञां नै नानृतां कर्तुमर्हथ ।

२. ल—स्वर्गस्तु ।

३. ब ल—०मेवनुप्र०

४. रा ञ ल भ—ध्रुवानीमानि । ब—०ध्रुवानीमानि ।

५. रा—वा । भ—नः ।

६. ल—स्थिताम्येतानि वै यथा ।

भ—तावस्थास्यत्यसावपि ।

७. भ—सर्वे मे समर्थयितुमर्हथ ।

८. भ—तमूर्बुर्वि० ।

९. कै—एवमिच्छति ।

१०. ल—सकृतानि सुराः सर्वे तदनुज्ञातुमर्हथ ।

एवमुक्ताः सुराः सर्वे प्रत्यूचुर्मुनिपुंगवम् ।

एवं भवतु भद्रं ते तिष्ठन्वेतानि सर्वतः ।

११. ल—नक्षत्राणि च । भ—तिष्ठन्वेतानि ।

१२. कै—सर्वाणि । पुनरपरहस्तेन कृतः । ल—सर्वाणि ।

भ—ज्योतींषि ।

१३. कै ब—अवाक्शिरा । रा—अवाक्शिरा ।

१४. ञ—त्रिशङ्कुरिह ।

१५. ल—नास्ति ।

- विश्वामित्रस्तु तच्छ्रुत्वा देवानां वचनं तदा ॥३०॥^१ [N
 ३३] वाढमित्यब्रवीत् तत्र सर्वदेवैरभिष्टुतः । [३३
 ततो देवा ययुः सर्वे यथागतमरिन्दम ॥३१॥^२
 ३४] ऋषयश्च महात्मानो यज्ञस्यान्ते तपोधनाः । [३४

इत्योषं रामायणे बाह्यकाण्डे त्रिंशंकुम्भगारोहण
 नाम षट्पञ्चाशः सर्गः ॥३६॥

१. ल—विश्वामित्रश्च धर्मात्मा सर्वदेवैरभिष्टुतः ।
२. भ—० बीद्वाक्यं ।
३. म—सर्वदेवैर० ।
४. ल—ऋषिभिश्च महातेजा वाढमित्यब्रवीद्ब्रह्मः ।
 ततो देवा महात्मान ऋषयश्च तपोधनाः ।
५. ल—नास्ति ।
६. कै व भ—आदिकाण्डे ।
७. म—नास्ति ।
८. ज—अष्टचत्वारिंशः । कै रा म—नास्ति ।
९. म—नास्ति ।
१०. ज—॥४८॥ म—॥४५॥
 ल—सर्गसमाप्तिर्न द्रव्यते ।

[वं=६३] [सप्तपञ्चाशः सर्गः] [दा=६१]

मुनीन् प्रतिगतान् दृष्ट्वा विश्वामित्रस्तपोधनः ।

१] अब्रवीन्मुनिशार्दूलः सर्वास्तान् वनवासिनः ॥१॥^१ [१]

महान् विमैर्दो वृत्तोऽयं दक्षिणामभितो दिशम् ।

२] दिक्षमन्यामितो यामस्तप्स्यामो^२ यत्र वै तपः ॥२॥ [२]

पश्चिमायां दिशि सुखं पुष्करारण्यमाश्रिताः ।

३] वयं तपः करिष्यामः परं^३ तद्धि तपोधनाः ॥३॥^३ [३]

एवमुक्त्वा महातेजाः पुष्करैः परमाश्रितः ।

४] तप उग्रं दुरार्धष तेपे मूलफलाशनः ॥४॥ [४]

अथ तत्रापि वसतो विश्वामित्रस्य राघव ।

१. कै—मुनीन्प्रतिगतां ।

२. ल—नास्ति ।

३. ज ल—विमंभो ।

४. भ—यामस्तप्स्यामस्तत्र ।

५. भ—परिचमां दिशमास्थाय ।

६. ज—०माश्रितः ।

७. रा—०वरं । भ—तपरचरिष्यामः परं ।

८. भ—तपोधनं ।

९. ज—नास्ति ।

१०. ल—परिचमायां विशाखायां पुष्करेणु तपोधनः ।

सुखं तपश्चरिष्यामः परं वित्तं तपोधनम् ॥

११. ल—पुष्करेणु तपोधनः ।

१२. रा—०फलाशनाः । ल—परमदायकम् ।

- ५] अम्बरीषस्य राजर्षेर्यष्टुं मतिरजायत ॥५॥^१ [५
 तस्यापि यजमानस्य नरमेधेन भूपतेः ।
- ६] प्रोक्षितं मन्त्रवद् यूपात् पशुमिन्द्रो जहार हँ ॥६॥^१ [६
 ७] तस्मिन् हृते पशौ विप्रो राजानमिदमब्रुवन् । [N
 पशुर्यः प्रोक्षितो राजन् केनापि स हृतो बलात् ॥७॥^१
- ८] अरक्षितारं चै नृपं घ्नन्ति देवा नरेश्वर । [७
 प्रायश्चित्तं महद्दयेतत् तं त्वं पशुमुपानयं ॥८॥^१
- ९] अर्न्यं वाऽप्यानय क्रीत्वा यावत्कर्म प्रवर्ततामँ । [८

१. रा--०रिष्टुं । भ--०द्रष्टुं ।

२. ल-एतस्मिन्नेव काळे तु अथोभ्याधिपतिर्नृपः ।

असुरीष इति ख्यातो वष्टुं समुपचक्रमे ॥

३. भ-तस्य वै ।

४. भ-तं ।

५. व-तस्यापि यजमानस्य पशुमिन्द्रो जहार ह ।

ल-तस्य वै " " " " ।

भ-अतः परमधिकः पाठः-

नरं लक्ष्म्यसंपन्नं पशुत्वे विनियोजितं ।

६. ल-प्रणष्टे च पशौ तस्मिन् विप्रो राजानमब्रवीत् ।

पशुरभ्याहृतो राजम्बनष्टस्तव दुर्नयात् ।

७. ल-राजानं ।

८. ल-दोषा ।

९. कै ल-नरेश्वरम् ।

१०. भ-महद्येतत् ।

११. ज-तत्त्वं ।

१२. भ-पशुमिद्वानय ।

१३. ल-नास्ति ।

१४. ल-जानयस्व पशुं क्षीमं । भ-अभ्यस्यानयनं कृत्वा ।

१५. भ-प्रवर्तत ।

- उपाध्यायवचः श्रुत्वा सं राजा बहुशस्तदा ॥९॥
- १०] अन्वेष्टुं पशुमारमे पुरुषं लक्षणान्वितम् । [६
देशान् जनपदांश्चैवं नगराणि वनानि च ॥१०॥
- ११] आश्रमांश्च तथा पुण्यान् प्रविशन् वै महार्मनाः । [१०
अन्वेषमाणः सोऽपश्यद् ऋचीकं नाम राघव ॥११॥
- १२] बहुपुत्रं दरिद्रं च द्विजं गृहनिवासिनम् । [११
अभिगम्याम्बरीषस्तं विप्रं वचनमब्रवीत् ॥१२॥
- १३] तपःस्वाध्यायनिरतं पृष्ट्वा कुशलमादितः । [१२
गवां शतसहस्रेण सुतंमेकं प्रयच्छ मे ॥१३॥
- १४] नरमेधे महायज्ञे पश्वर्थं भो द्विजोत्तम ।
बहुपुत्रो दरिद्रश्च वृद्धश्चीरिं द्विजोत्तम ॥१४॥ [N

१. ल—पेषकाकः ।

२. ल—सोमितप्रभः । भ—नाभगात्मजः ।

३. ल—अम्बियेष महाबाहुः पशुं गोभिः सहस्रशः ।

४. ल—० इचापि ।

५. रा—वनानि नगराणि ।

६. रा भ—प्रविशद्द्वै० । ल—प्रविचिन्वन्महायशाः ।

७. ल—स पुत्रसहितं तातमभायां रघुमंजन ।

८. ज—अभिगम्या० । भ—० रीषस्तमृषिं ।

९. ल—शृगुतुञ्जे समासीनमृषीकं तं वदर्थं ह ।

अम्बरीषो महातेजाः प्रणिपत्याभिवाच च ।

१०. ज—पुत्रमेकं ।

११. ल—सर्वत्र कुशाक्षं पृष्ट्वा ऋचीकं तं महाशुनिम् ।

उवाच च महातेजा प्रव्यम्याभिप्रमाद्य च ॥

१२. रा—मे ।

१३. भ—० इचापि ।

१४. ल—प्रहार्षितपसा दृष्टिं राजर्षिरमितप्रभः ।

अगर्षं शतसहस्रेण वचास्त्वं वदि मे सुखम् ।

- १५] यदि ते रोचते ब्रह्मन् सुतमेकं प्रयच्छ मे' । [N
बहवो विचिंता देशा न लभे यज्ञियं^३ पशुम् ॥१५॥'
- १६] दातुमर्हसि मूल्येन सुतमेकं द्विजोत्तम । [१४उ
पशोरर्थे कृतार्थः स्यामहं काश्यप सुव्रत ॥'१६॥ [१३उ
- १७] इत्युक्तोऽथाम्बरीषेण ऋचीको रघुनन्दन ।
न विक्रेष्याम्यहं पुत्रं ज्येष्ठमित्यब्रवीद्वचः ॥'१७॥ [१५
- १८] ऋचीकवचनं श्रुत्वा माता तेषां यंशस्विनी ।
उवाचर्चीकपुत्राणां तं राजानमिदं वचः ॥१८॥' [१६
- १९] अविक्रेयं सुतं ज्येष्ठं भगवानाह काश्यपः ।

१. अ—परित्यज ।

२. रा ज—विदिता । अ—०भिसृता ।

३. ज—याज्ञियं ।

४. ल—पशोरर्थे कृतार्थोऽस्मि अहं काश्यप सुव्रत ।
सर्वे परिभृता देशा याज्ञिय व लभे पशुं ।

५. अ—दीक्षितोहं च ।

६. रा अ—मूलेन ।

७. ल—यावत्कर्म प्रवर्तते ।

८. कै रा ज—पशोरथ ।

९. ल—नास्ति ।

१०. ल—एवमुक्तो महातेजा ऋचीकस्तमुवाच ह ।
नाहं ज्येष्ठं नरमेव विक्रीषीष्यां कथंचन ॥

११. ज—यदृच्छया ।

१२. ल—ऋचीकस्य वचः श्रुत्वा तेषां माता महात्मना
उवाच नरशार्दूलं तं राजानं महाव्रतम् ॥
अ—नास्ति ।

- ममाप्येकं कनीयांसं सुतं विद्धि परं प्रियम् ॥१६॥^१ [१७
 २०] पितृणां बल्लभा ज्येष्ठाः प्रायेण हि सुता नृप ।^२
 मातृणां हि कनीयांसस्तस्माद् रक्ष्या हि मे सुताः ॥^३ २० ॥ [१८
 २१] उक्तवाक्ये मुर्नावेवं मुनिपत्न्यां तथैव च ।
 शुनःशेषो^४ महार्पणो मध्यमो वाक्यमब्रवीत् ॥२१॥ [१९
 २२] ज्येष्ठः पितुरविक्रेयः कनीयान्मातुरेव च ।
 विक्रेयं^५ मध्यमं मन्ये राजपुत्रं नयस्व माम् ॥२२॥ [२०
 २३] गवां शतसहस्रेण शुनःशेषं^६ नरेश्वरं ।
 गृहीत्वा परमपीतो जगाम रघुनन्दन ॥२३॥ [२२

१. ज—ममाप्येवं ।

२. भ—राजन् विद्धि सुतं ।

३. ल—आविक्रेयं सुतं ज्येष्ठं पिता प्राह महाद्यते ।

ममाप्येवं कनीयांसं तस्माद्रक्ष्या हि मे सुताः ॥

४. कै भ—पितृणां बल्लभो ज्येष्ठः प्रायेण तु नरश्रेष्ठ ।

भ— ,, ,, ज्येष्ठः ,, हि सुतो नृप ।

५. भ—मातृणां च कनीयांसं तस्माद्रक्ष्यौ सुतो नृप ।

६. भ—मुनौ तस्मिन् ।

७. ल—शुनः शेषो । भ—शुनः शेष ।

८. भ—इदं तत्र ।

९. ल—विक्रेयं ।

१०. भ—राजपुत्रम् ।

११. भ—शुनः शेषं ततो नृपः ।

रथमारोप्य तं राम शुनःश्लेषं त्वराऽन्वितः ।

२४] आजगाम ततो यज्ञं समापयितुमात्मनः ॥ २४ ॥ [२३

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे अतानन्दवाक्ये शुनःश्लेषविक्रियो
नाम सप्तपञ्चाशः सर्गः ॥५७॥

१. भ—शुनः श्लेषं ।
२. ल—अम्बरीषस्तु राजर्षी रथमारोप्य सत्वरः ।
शुनः श्लेषं महातेजा जगाम च वयागतम् ।
स्वयं च मदर्न प्राप्तः पुष्करे समागतम् ॥
३. भ—आदिकाण्डे । कै रा ब—नास्ति ।
४. ज भ—नास्ति ।
५. रा—० विक्रियो । ज ब—विक्रियो । भ—विक्रयः ।
६. कै रा—नाम त्रिषष्टितमः । ब—नाम । भ—नास्ति ।
ज—नाम एकोनपञ्चाशत्तमः ।
७. भ—नास्ति ।
८. ल—॥४६॥ भ—॥४६॥ ल—असमाप्तः सर्गः ।

[वं=६४]

[अष्टपञ्चाशः सर्गः]

[दा=६२]

- शुनःशेषं तमादाय स राजा श्रान्तवाहनः ।
१] व्यश्रमत् पुष्करे तीर्थे^१ मध्यमे रघुनन्दन ॥१॥^३ [१
तस्य विश्राम्यतेस्तत्र शुनःशेषो^२ महार्मतिः ।
२] पुष्करं ज्येष्ठमागम्य विश्वामित्रं ददर्श ह ॥२॥ [२
स दीर्णहृदयो दीनो^४ विक्रयेण श्रमेण च ।
३] जगाम शिरसा पादौ मुनेर्वाक्यमुवाच हं ॥३॥^१ [३
न मेऽस्ति माता न पिता ८. मुहूर्त्तं च बान्धवैः ।

१. भ—शुनः शेषं ।

२. कै रा—तीरे ।

३. रा—शुनः शेषं नरश्रेष्ठो गृहीत्वाथ महाबलः ।
विश्रम्य पुष्करे राम मध्यमे रघुनन्दन ॥

४. रा—०मतस्तस्य । ल—विश्रमतस्तत्र ।
भ—विश्रमतस्तस्य ।

५. ल—शुनः शेषो । भ—शुनः शेषो ।

६. ल—महातपाः भ—महामुनिः ।

७. ज—तीर्थमा० ।

८. कै—शीर्षे० ।

९. ज—भीतो ।

१०. व—व ।

११. ल—विपूर्यमानहृदयो लज्जया च श्रमेण च ।
पपातांके मुनेस्तत्र वचनं वेदममवीत् ॥

१२. ल—ज्ञातिर्न ।

१३. रा ल—बांधवाः ।

- ४] त्रातुमर्हसि मां त्यक्तं बन्धुभिः शरणागतम् ॥४॥^१ [४
 राजा च कृतकार्यः स्याज्जीवेयं चाप्यहं यथा ।
- ५] भवतो वीर्यमाश्रित्य तथा त्वं कर्तुमर्हसि ॥५॥^२ [६
 नाथो मे त्वमनाथस्य भव भव्येन चेतसा ।
- ६] पितेव पुत्रं कृपणं त्रातुमर्हसि मां मुने ॥६॥^३ [७
 तस्यैतद् वचनं श्रुत्वा विश्वामित्रस्तपोधनः ।
- ७] सान्त्वयित्वा शुर्नःशेषं स्वान् पुत्रानिदमब्रवीत् ॥७॥ [८
 यत्कृते पितरः पुत्रानिच्छन्ति गुणवत्तरान् ।
- ८] दुर्गसन्नारणार्थाय तस्य कालोऽयमागतः ॥८॥^४ [९
 अयं मुनिमुतो बालो मत्तः शरणमिच्छति ।
- ९] अथ जीवितदानेन प्रियं^५ मे^६ कर्तुमर्हथ^७ ॥९॥ [१०

१. ल—सोम्य तन्मे त्वं मुनिपुंगव ।

२. ल—मतः परमधिकः पाठः—

त्रात^१ त्वं हि मुनिभेष्ट पितेव मम सुमत ।

३. ल—राजा च कृतकृत्यः स्यादयं यश्चक्षुर्भक्तिं ।

स्वर्गलोकमुपादनीयास्तव सौम्याभिदर्शनात् ॥

४. म—दिव्येन तेजसा ।

५. ल—मम नाथो ह्यनाथस्य भव व्यमनचेतसः ।

पितेव पुत्रं धर्मात्मस्त्रातुमर्हसि किंविधात् ॥

६. ल—तस्य तद् ।

७. ल—विश्वामित्रो महातपाः ।

८. ल—बहुविधं । म—शुनः शेषं ।

९. ल—पुत्रानिदमुवाच ह ।

१०. ल—यत्कृते पितरः पुत्रा जयन्ति शुभार्थिनः

परलोके हितार्थाय तस्य कालोऽयमागतः ॥

११. कै व—पुत्रं ।

१२. ल—कृत्स्न पुत्रकाः ।

सर्वे सुकृतकल्याणाः सर्वे सुचरितैव्रताः ।

१०] ते यूयं मभियोगेन मोक्षयध्वं मुनेः सुतम् ॥१०॥^३ [११

अध्वराग्नेः समिद्धस्य गत्वा तृप्तिं प्रयच्छत ।

११] मोक्षयध्वमिमं चैव पशुत्वान्मम शासनात् ॥११॥^४ [N

शरणं मामनुप्राप्तमृचीकस्य मुनेः सुतम् । [N

१२] स्यादविघ्नो यथा तस्य राजर्षेः क्रियतां तथा ॥१२॥^५ [१२पृ

इति पित्राऽनुसृष्टास्ते मधुच्छन्दादयस्तदा ।

१३] साभिमानमिदं वाक्यमूचुः पितरमभियम् ॥^६ १३॥ [१३

कथमात्मसुतास्त्यक्त्वा ज्ञाता परसुतानसि ।^७

१४] भगवन् कार्यमेतत्ते ते स्वर्गस्येव भक्षणं ॥१४॥ [१४

इति तेषां वचः श्रुत्वा पुत्राणां मुनिरभियम् ।

१. ज व—च कृत कल्याणाः ।

२. ज—च चरित० । ल—धर्मपरायणाः ।

३. ल—नास्ति ।

४. ल—पशुत्वे राजर्षिहस्य तृप्तिमग्नेः प्रयच्छत ।

५. कै—राजर्ष ।

६. ल—नाथता च मुनः बोधे यज्ञे चाभिज्ञता भवेत् ।

देवतास्तर्पिताश्च स्युर्मम त्याज्य वचः कृतम् ।

मुनेस्तु वचनं श्रुत्वा मधुच्छन्दादयस्ततः ।

७. भ—०शुश्रूषास्ते ।

८. रा—स्वाभिमान० ।

९. ज—पितरमभ्यवर्ष ।

१०. ल—साभिमानं मुनिभेदे सतीकमिदमब्रुवन् ।

११. रा भ—०सावपि ।

१२. ल—कथमात्मसुतं त्यक्त्वा ज्ञातसेऽन्यसुतं प्रभो ।

१३. व ल—अकार्यमेतत्पशामः ।

१४. ल—भोजने ।

- १५] क्रोधसंरक्तनयनः पुत्रांस्तानशपत् क्रुधो ॥१५॥^३ [१५
निःसाध्वसमिदं वाक्यं धर्मादभिहितं बहिः^४ ।
- १६] यस्मात् पुमांसमुद्दिश्य युष्माभिरवमन्य माम् ॥^५ १६॥ [१६
स्वमांसद्वैत्तयस्तस्माद् वासिष्ठा इव जर्तिषु ।
- १७] गता वर्षसहस्रं वै कुत्सिता विचरिष्यथ ॥^६ १७॥ [१७
इति शापाग्निना दग्ध्वां पुत्रान् स्वान् कुशिकात्मजः ।
- १८] शुनःशेषमुवाचेदं वर्चनं परिसान्त्वयेन् ॥१८॥^७ [१८
यदा तौत पशुत्वे त्वं प्रोक्षितः स्यास्तदा जपेः । [१९

१. कौ—बुधा । भ—तदा ।

२. ल—तेषां तद्वचनं श्रुत्वा सुतानां मुनिपुंगवः ।

क्रोधसंरक्तनयनो व्याहर्तुमुपपद्यते ।

३. रा— धर्मादभिहितं । ब—धर्मतोभिहितं ।

४. ब ल—मया ।

५. रा ल—स्वमांसमुद्दिश्य । भ—स्वमांसमुद्दिष्टं ।

६. ल—स्वमांसमिति यत्प्रोक्तं दारुणं क्रोमहर्षयं ।

७. ल—स्वमांसभोजिनस्त० ।

८. भ—पातिताः ।

९. ब—पूर्वं वर्षसहस्रं वै पृथिवीमनुबल्यंथ ।

ल—” ” ” ” मनुबल्यंथ ।

भ—पातिताः सहस्रवर्षाणां भ्रंशिता विचरिष्यथ ।

१०. रा—दग्धान् ।

११. भ—शुनः शेषमिदं वाक्यमुवाच ।

१२. रा—परिसंत्वयेत् ।

१३. ल—दत्त्वा शापं च सोयुकं दारुणं क्रोमहर्षयम् ।

अथाग्नीष्युनः शेषं कृत्वा रक्षां निरामयां ।

१४. भ—पशुत्वे पुत्र ।

- १९] इमं मन्त्रं मया प्रोक्तमिन्द्राभिष्टवसंयुतम् ॥१९॥' [२० पृ
जपन्तमेनं मन्त्रं त्वां मोक्षयिष्यति वासवः । [N
- २०] पशुत्वादस्य चाविघ्नं भविष्यति महीपतेः ॥२०॥' [N
शुनःशेषोऽथं तन्मन्त्रमधीत्य त्वरितं तदा ।
- २१] उपेत्य हृष्टो राजानमम्बरीषमभाषत ॥२१॥' [२१
एहि राजन्नितः शीघ्रं नय मां यज्ञमात्मनः ।
- २२] 'त्वं मां मन्त्रयुतं प्रोक्ष्य दीक्षामेतां समापय ॥२२॥' [२२
तद् वाक्यमृषिपुत्रस्य श्रुत्वा हर्षसंमन्वितः ।
- २३] जगाम नृपतिः श्रीमान् सुं देवयजनं तदा ॥२३॥ [२३

१. ल—पवित्रपाशैराविष्टो रक्तमास्यानुलोपेनः ।
वैष्णवं रूपमासाद्य ध्यायन्मां मनसा मुहुः ।
२. भ—जपन्तं मन्त्रमेवं ।
३. रा—महीपते ।
४. ल—इमे च गाथे द्वे योगी गाथेस्त्वं मुनिपुत्रक ।
अम्बरीषस्य यज्ञार्थं ततः सिद्धिमवाप्स्यसे ॥
५. भ—शुनः शेषोऽथ ।
६. ज—मन्त्रं तदधीत्य । भ—तं मन्त्रमधीत्य ।
७. म—स्वरितस्तदा ।
८. ल—शुनः शेषोऽथं तदा कृत्वा पाठे गाथे समाहितः ।
त्वरया राजसिंहं तमम्बरीषमुवाच ह ।
९. भ—पशु मां मन्त्रतः ।
१०. ल—राजसिंहं नरश्रेष्ठ गच्छ क्षीप्रमतः परम् ।
निवर्तय मया सौम्य अविज्ञेन महाकृत्स्नम् ॥
११. ल—समुत्सुकः ।
१२. ज ल—शीघ्रं । भ—नृपतिर्हीमान् ।
१३. ल—वज्रपाटमतांश्रितः । भ—स्वमेव यजनं ।

सदस्यानुमतं सोऽथ पवित्रं कृतलक्षणम् ।

- २४] शुनैःशेषं पशुं यूपे बबन्धे मुनिर्यन्त्रितम् ॥२४॥^१ [२४]
 स यूपबद्धस्तुष्टाव देवेन्द्रं हरिवाहनम् ।
 २५] भागार्थिनमनुप्राप्तं स्वरेणोच्चैर्विनादयन् ॥२५॥^२ [२५]
 तस्मै प्रीतः सहस्राक्षस्तदां प्रादादभीप्सितम् ।
 २६] आयुरिष्टं यशश्चाग्न्यं शुनःशेषाय राघव ॥^३ २६॥ [२६]
 स राजा तु क्रतुफलं तदा प्राप यथेप्सितम् ।^४
 २७] धर्म्यं यशः श्रियं^५ चाग्न्यं सहस्राक्षप्रसादतः ॥२७॥^६ [२७]

१. भ—स तस्यानुमते ।

२. भ—पवित्री ।

३. भ—शुनः शेषं ।

४. ज—०मुनिमं० । भ—निबबन्धानुमंत्रितं ।

५. ल—सदस्यानुमतो राजा पवित्रीकृतलक्षणः ।

एकं रक्ताम्बरं कृत्वा यूपमूले न्ययोजयत् ।

६. ज—यूपबद्धं ।

७. भ—स्वावनाथे विनोदयन् ।

८. ल—स बद्धो बाग्भिस्त्राभिःरभिःपुत्र्य महोजसम् ।

इन्द्रमिन्द्रानुगांश्चैव यथावन्मुनिपुंगवः ॥

९. ल—ततः ।

१०. ल—०स्तस्य स्तुतिभिरीक्षितः ।

११. भ—यशश्चेष्टं ।

१२. भ—०शेषाय ।

१३. व—नास्ति । ल—दीर्घमायुस्ततः प्रादाच्छुनःशेषाय राघव ।

१४. व—नास्ति ।

ल—स च राजा नरश्चेष्ट तस्य यशस्य लब्धवान् ।

भ—, ,, क्रतुफलं तदवाप यथेप्सितं ॥

१५. रा ज—धर्मं । भ—धर्मं ।

१६. रा—श्रियाचाग्न्यं । भ—श्रियं चाग्न्यं ।

१७. ल—एकं बहुमुखं राम सहस्राक्षप्रसादजं ।

विश्वामित्रोऽपि धर्मात्मा चर्चोरोग्रं तपस्तपो ।
२८] पुष्करेष्वेव वर्षाणां सहस्रं नियतव्रतः ॥ २८॥

[२८

इत्यार्षे रामावणे बाँलकाण्डे विरचामित्रमाहात्म्ये
अम्बरीषवल्लो नाम अष्टपञ्चाशः सर्गः ॥५८॥

१. ल—तसर्वा ।
२. ल—सुमहत्तपः । भ—महत्तपः ।
३. ल—उग्रं परमनाष्टुष्यं ब्राह्मण्ये कृतमानसः ।
सहस्रं शरदामेकं पुष्करेषु तदानघ ॥
४. कै भ—आदि काण्डे ।
५. रा ज—नास्ति ।
६. कै—०षड्भ्युःपठितमः ।
रा—चतुषडितमः । ज—नामपञ्चमः ।
भ—नाम ।
७. ज—॥५०॥ भ—॥५७॥
व ल—सर्गसहास्रं दृश्यते ॥

[वं=६५] [एकोनषष्टितमः सर्गः] [दा=६३]

पूर्णं वर्षसहस्रे तु व्रतस्नातं महामुनिम् ।

- १] अभ्यागच्छन् सुरां रामं तपोवनसमोहितम् ॥१॥ [१
तत्रैनमब्रवीद् ब्रह्मा पुनैः सुरुचिरं वचः ।
- २] ऋषिश्रेष्ठो र्मतो नस्त्वं निवर्तस्व तपोधन ॥ २॥ [२
इत्युक्त्वाऽनन्तरं ब्रह्मा जगामाशु यथागतम् ।
- ३] विश्वामित्रोऽपि तच्छ्रुत्वा चचारैव पुनस्त्पः ॥३॥ [३
तत्रै चैनं^{१२} तपस्यन्तं कालस्य महत्स्ततैः ।

१. रा—०वर्षं सह० । भ—पूर्णवर्षसहस्रेय ।

२. कै रा ज—०ज्ञानं । ल—०भातं ।

३. के रा ज भ—अभ्यगच्छन् ।

४. रा—दुरा राम । व ल—सुराः सर्वे ।

५. व—तत्तपोवकविश्रितः । ल—तत्तपोवकविश्रिताः ।

भ—तपोवक० ।

६. ल—अब्रवीद् महातेजा ।

७. ज व—पुरः । ल—ब्रह्मा । भ—मुनिं ।

८. रा—मनतस्त्वं ।

९. ल—ऋषिस्त्वमपि भद्रं ते वर्जितं कर्मभिः शुभैः ।

भ—ऋषिस्त्वमसि भद्रं ते स्वर्जितैः कर्मभिः शुभैः ।

१०. ल—एवमुक्त्वाथ देवेशस्त्रिदिवं पुनरभ्यगात् ।

भ—एवमुक्त्वा तु ,, पुनरभ्यगात् ।

११. ल—धर्मात्मा तपः परमतप्यत ।

१२. भ—तत्रैवाथ ।

१३. भ—०रूपः

- ४] आजगामाप्सरा राम तं वै^१ लोभयितुं रहः ॥ ४॥^३ [४
 मेनका नाम सुश्रोणी विश्वामित्राश्रमं प्रति ।
- ५] पुष्करे सा सुचार्वङ्गी मेनका निर्जने वने ॥^५॥ [४
 N] जलप्रविलम्बवसना स्नातुं समुपचक्रमे । [४
 तां^५ ददर्शाद्भुताकारां मेनकां कुशिकात्मजः ॥६॥
- ६] रूपेणाप्रतिमां राम श्रियं मूर्तिमतीमिव । [५
 तां दृष्ट्वा चारुसर्वाङ्गीं मेनकां निर्जने वने ॥^६७॥ [६
- ७] जलप्रविलम्बवसनां मनोहरतराङ्गतिम् ।^३
 कन्दर्पवशगोऽभ्येख मुनिर्वचनमब्रवीत् ॥^७८॥ [६
- ८] का त्वं कस्य कुतो वेदं वने भद्रेऽभ्युपागता ।

१. भ—०माश्रमं ।

२. भ—प्रसोम० ।

३. ल—ततः कालस्य ब्रह्मते मेनका नाम याप्सराः ।

४. भ—नास्ति ।

५. ल— नास्ति ।

६. ल—पुष्करे तु नरभेष्ट । भ— नास्ति ।

. ल—तामपरयन्महातेज ।

८. भ—वैव ।

९. ल—राजन्तीमिव विद्युत्तम् ।

१०. ल—नास्ति ।

११. भ—अखेन विलम्बवसनां ।

१२. भ—मनोहरकृताङ्गतिं ।

१३. अतः परमधिकः पाठः—

भ—स्वयात्कनककेयूरनादापरितद्विस्तृणां ।

ल— , कीयूरनादपूरिदिमुखां ।

१४. ल—कन्दर्पवशगो मुनिस्तामिदमब्रवीत् ।

एहि विश्रम्यतां भीरु ममाश्रमपदं प्रति ॥१०॥^१ [७

९] मेनका तद् वचः श्रुत्वा विश्वामित्रमभाषत ।^२

अप्सरा मेनका नाम त्वत्प्रीत्याऽहमुपागता ॥१०'॥ [N

१०] रोचते यदि ते ब्रह्मन्ननुरक्तां भजस्व माम् ।

इति तां रुचिरं वाक्यं भाषमाणामनिन्दिताम् ॥११॥^३ [N

११] पाणौ गृहीत्वा भगवानाश्रमं प्रविवेश ह ।^४ [N

१. ज—विश्राम्यतां ।

२. व—वारित ।

३. ल—नास्ति ।

अ—मेनके स्वागतं तेस्तु वसेहाद्य मया सह ।

अनुगृह्णीष्व मां भद्रे मदनेन प्रमोहितं ॥

४. भ—इत्युक्त्वा सा वरारोहा कौशिकेन महात्मना

उवाच प्रभितं वाक्यं प्रणयात्प्रीतिवर्द्धनं ।

५. भ—स्वप्रीत्यर्थे० ।

६. ल—नास्ति ।

७. ल—नास्ति ।

व ल—अतः परमाधिकः पाठः—

मेनके स्वागतं तेस्तु वसेहाद्य मया सह ।

अनुगृह्णीष्व मां भद्रे मदनेन प्रमोहितं ॥

इत्येवमुक्त्वा कुशिकारमणेन

सा मेनका नाम मनोहरांगी* ।

तन्नावसत्तस्य बन्धोनुरोधात् ।

कंदर्पभार्येव मनोभवेन ॥

इत्यार्षे रामायणे बालकांडे विश्वामित्रतपो

नाम सर्गः ॥

इत्युक्त्वा सा वरारोहा तन्नावसमगात्तदा ।

तपसस्तु महाबिभ्रो विश्वामित्रमुपागमत् ॥

*ल—मनोरमाङ्गी ।

- तानि वर्षाण्यतीतानि पञ्च पञ्च चै राघवे ॥१२॥ [९५
 १२] विश्वामित्रस्य रमतः क्षणवदं व्यतिचक्रमुः ।
 क्षतविज्ञानबुद्धिर्हि तथा मुनिरसौ तयो ॥१३॥ [N
 १३] तानि वर्षाण्यतीतानि बुबोधैकमैहर्यथा ।
 अथ काले गते तस्मिन् बुद्ध्वा बुद्ध्वाऽऽत्मविक्रियाम् ॥१४॥ [N
 १४] जगादैवं तदा वाक्यं विश्वामित्रस्तपोधनः ।
 सोऽमर्षस्तं मे ज्ञानं तत्तपः स च^३ निश्चयः ॥१५॥^२ [N
 १५] नष्टान्येकपदेनेह सर्वथा किमपि स्त्रिया ।
 अनयो लोभयित्वा^१ मां तपोपहरणं कृतम् ॥१६॥^२ [N

१. ल—तस्यां वसत्यां वर्षाणि । ३—तथा च सह वर्षाणि ।

२. कै—वराणि च ।

३. भ—क्षयाबुध्यातिचक्रमुः ।

४. ज—क्षणवि० । भ—इतविज्ञा० ।

५. ज भ—तदा । ज पुस्तके पुनः शोधनम् ।

६. ल—विश्वामित्राश्रमे रम्ये सम्यक्परिचचार इ ।

स तेषु बुद्धिरूपत्वा सामर्षां रघुमन्दन ॥

७. भ—०कमहो यथा ।

८. भ—बुद्धया ।

९. ल—विज्ञोयं देवाबिहितस्तपसो मे महात्मनः ।

अथ काले गते तस्मिन्विश्वामित्रो महावक्त्राः ।

१०. रा व—०स्तपोधनाः ।

११. भ—सर्षार्थस्तच्च ।

१२. भ—विनिश्चयः ।

१३. ल—संज्ञस्तद्द्वयस्तत्र शिताशोकसमम्बितः ।

सर्वं श्रुत्योच कर्मैवं तपोपहरणं मम ॥

१४. भ—शियः ।

१५. ज—आनयित्वा ।

१६. भ—मे ।

- १६] इन्द्रमियं चिकीर्षन्त्या तस्मादेनां सजाम्यहम् ।' [N
ततस्तां मधुरैर्वाक्यैर्विसृज्य कुशिकात्मजः ॥१७॥
- १७] पुष्कराणि परित्यज्य जगामोत्तरपर्वतम् । [१४
नैष्ठिकीं बुद्धिमास्थाय जेतुं काममर्मषितः ॥१८॥'
- १८] कौशिकीतीरमासाद्य तपस्तेपे सुदारुणम् । [१५
सहस्रमपरं राम वर्षाणाममितद्युतिः ॥१९॥'
- १९] चचार दुश्चरं तेन देवा भयसमन्विताः । [१६
समेत्य मन्त्रयामासुः सर्षिसंधाः सवासवाः ॥२०॥'
- २०] महर्षिश्चन्दं लभतां साध्वयं कुशिकात्मजः । [१७
मा च नस्तपसोग्रेण तापयत्वेवमुद्यतः ॥' २१॥

१. ल—नास्ति ।

ब ल—अतः परमाधिकः पाठः—

अहोरात्रापदेशेन गताः संवत्सरा दश ।

काममोहाभिभूतस्य विज्ञोयं प्रत्युपास्थितः

स निःशसन्मुनिश्रेष्ठः पश्चात्तापेन मूर्च्छितः ।

भीतामप्सरसं दृष्ट्वा वेपमानां कृताञ्जलिं ॥

२. कै—ततस्त्वा । ब ल—मेजकां ।

३. भ—स जेतुं काममागतः ।

४. ल—उत्तरं पर्वतं राम विश्वामित्रोन्मत्तबाल्युनः ।

कृत्वा सुमिक्षितां बुद्धिं कामं जेतुं महाबलाः ।

५. ल—तपे [पो ?] तप्यत दारुणं ।

६. ल—सस्मिन्वर्षसहस्रं तु तप्यमानो महत्तपः ।

७. रा—राम । भ—ते तु ।

८. ल—उत्तरे पर्वते राम देवानामभयजयम् ।

ते मन्त्रबाहुः सहिताः सर्षिसंधाः सुरासुराः ।

९. ल—कौशिकात्मजः ।

१०. ल—नास्ति ।

- २१] निवर्ततामयं ब्रह्मस्तपसोग्रथादिति प्रभो । [N
 देवानां निश्चयं श्रुत्वा ब्रह्मो लोकपितामहः ॥२२॥
- २२] अब्रवीन् मधुरं वाक्यं विश्वामित्रं महामुनिम् । [१८
 महर्षे विनिवर्तस्व तपसैः कुशिकात्मज ॥२३॥
- २३] महत्वमृषिमुख्यानां ददामि तव सुव्रत । [१९
 ब्रह्मणस्तद्दं वचः श्रुत्वा विश्वामित्रस्तपोर्धनः ॥२४॥ [२०
- २४] प्राञ्जलिः प्रणतो वाक्यं प्रत्युवाच महायशाः । [२१
 ब्रह्मर्षिशब्दं भगवन् दुर्लभं तपसार्जितम् ॥२५॥^{१४}

१. भ—विबर्त्ततामयं ।

२. ल—देवतानां ।

३. व—वचनं । ल-- वचः ।

४. ज—कृत्वा ।

५. ल—सर्वलोकपितामहः ।

६. व—भगवन् ।

७. रा—तपसा ।

८. ल—महर्षे स्वस्ति ते वत्स तपसोग्रेण कर्षितः ।

९. भ—अत्रचीद्वाभिजं ब्रह्मा वरं वाचस्व सुव्रत ॥

१०. रा—महत्त्वैशुद्धिमुख्यानां ।

ल—महर्षिस्त्वं दुरावापं ।

११. ल—पितामहवचः ।

१२. रा व—स्तपोधनाः ।

१३. कै रा ल भ—तपसोर्जितम् ।

१४. ल—प्राञ्जलिः प्रणतो भूत्वा विश्वामित्रस्तपोधनीत् ।

महर्षिशब्दमनुष्ठं तपोवत्समाश्रितम् ॥

भ—प्रत्युवाच रजुश्रेष्ठ विश्वामित्रो महातपाः ।

महर्षिशब्दं भगवन्मुर्क्षं तपसार्जितं ।

- २२] लभेयं त्वत्प्रसादेन यदि मेऽस्ति तपश्चित्तम् ।^१ [२२
 तमुवाच ततो ब्रह्मा न तावत् त्वं जितेन्द्रियः ॥२६॥ [२३
 २६] कामक्रोधावनिर्जित्य कथं ब्रह्मत्वमिच्छसि ।
 जयेन्द्रियाणि तावत् त्वं कामक्रोधौ च कौशिक ॥२७॥ [२३
 २७] ततः परं त्वं ब्रह्मत्वं समवाप्स्यसि दुर्लभम् ।
 इत्युक्त्वा प्रययौ ब्रह्मा पुनरेव यथागतम् ॥२८॥ [N
 २८] विश्वामित्रोऽपि तत्रैव तेपे घोरतरं तपः ।
 ऊर्ध्वबाहुं निरालंब एकपादप्रतिष्ठितः ॥२९॥^२
 २९] वायुभक्षः स्थितः स्थाने एकस्मिन् स्थाणुवत् स्थिरः ।^३ [२४
 'धर्मं पञ्चतपो भूत्वा वर्षास्वभ्रावकाशिकः ॥३०॥
 ३०] शिशिरे जलशायी च भूत्वा तेपे महत् तपः । [२५उ

१. भ—लभे यत्प्रसादेन ।

२. भ—तपास्विता ।

३. ल—यदि मे भगवानाह ततोस्मिन्नजितेन्द्रियः ।

४. भ—कामक्रोधमनिर्जित्य ।

५. ज—जितेन्द्रियाणि ।

६. ल—इन्द्रियाणि जयेत्युक्त्वा जगाम त्रिदिवं पुनः ।
 यतस्वेति मुनिभेष्टमुक्तवांसं दिवं ब्रजेत्

७. ज—परस्व ।

८. ल—विप्रस्थितेषु देवेषु विश्वामित्रो महामुनिः ।

ऊर्ध्वः बाहुर्निरालंबो वायुभक्षस्ततोभवत् ॥

९. कै भ—स्थितः ।

१०. ल—वासित ।

११. ल भ—प्रीप्से ।

१२. कै—पञ्चतपः । ल—पञ्चतपो ।

१३. ल—०. स्वाकाशगोभवत् । भ—०. भ्रावकाशगः ।

- एवं वर्षशतं सांग्रं घोरं तप उपाश्रितः ॥३१॥^३ [२६
 ३१] समेतौ दिवि काकुत्स्थ देवा भयमुपागमन् । [N
 संभ्रमं परमास्थायै ततैः शक्रः सुराधिपैः ॥३२॥^१
 ३२] चिन्तयित्वा तपोविघ्नमुर्पायं रघुनन्दन । [२७
 आहूयाप्सरसं रम्भां मरुद्गणयुतैः प्रभुः ।^१
 ३३] उवाचार्थमहितं वाक्यमहितं कौशिकस्य च^३ ॥^१ ३३ ॥ [२८
 हृत्वार्ये रामायणे बालकाण्डे विश्वामित्रतपो नाम
 एकोनषष्टितमः सर्गः ॥५६॥

१. व—वर्षसहस्रेण ।
 २. भ—उपासतः ।
 ३. ल—सखिके शिशिरं सर्वमहोरात्राणि सर्वशः ।
 एवं वर्षसहस्रेण तपोतप्यत दारुणम् ।
 ४. भ—समस्ता ।
 ५. भ—परमापन्नस्ततः ।
 ६. भ—सुरेश्वरः ।
 ७. ल—उतस्तपसि संसक्ते विश्वामित्रे महासुनौ
 संभ्रमः सुमहानासीत्सुराणां वासवस्य च ।
 ८. कै—०मपायं ।
 ९. भ—०द्रव्यवृतः ।
 १०. ल—रम्भामप्सरसं शक्रः सह सर्वैर्मरुद्वैः ।
 ११. ल—स उवाच हितं ।
 १२. रा—वाक्यं मिहितं । ल—वाक्यं सहितं ।
 १३. भ—तु ।
 १४. ल—अतः परमधिकः पाठः—वरारोहे गुणैः सर्वैरप्सरसि विंशिष्यते ।
 १५. कै—आदि काण्डे भ—नास्ति ।
 १६. कै रा—नास्ति । भ—विश्वामित्रमाहात्म्ये ।
 १७. कै रा—पंचषष्टितमः । ज—एकपंचाशत्तमः । भ—नास्ति ।
 १८. भ—नास्ति ।
 १९. ज—॥५१॥ भ—॥४८॥ व ल—सर्वसमाप्तिर्न दृश्यते ॥

[वं—६६]

[षष्टितमः सर्गः]

[दा—६४]

सुरकार्यविदं रम्भे कर्तुमर्हसि मामिभि' ।

१] लोभयस्व तपस्यन्तं कौशिकं गुण्यसंपदा ॥१॥ [१

एवमुक्त्वा ततो रम्भा सहस्राक्षेण धीमता ।

२] प्राञ्जलिः प्रणतोद्विष्टो प्रत्युवाच सुराधिपम् ॥२॥ [२

कोपनश्च तपस्वी च विश्वामित्रः शचीपते ।

३] स कोपं^० नियतं देव मय्युत्सृक्ष्यति कोपितं ॥३॥^०

तस्मात् त्वं मे सुरपते प्रसादं कर्तुमर्हसि । [३

४] तेनासादयितं व्यानि तेषांसि जयतां वरं ॥४॥ [N

१. ल—कर्त्तव्यं सुमहत्त्वया ।

२. भ—रूपसंपदा ।

३. ल—प्रळोभ्य कौशिकं भद्रे कामकोषधरं नव ।

४. ल—तथोक्त्वा मत्सरा राम ।

५. भ—प्रणता मूर्धना ।

६. ल—विभ्रस्ता प्राञ्जलिर्भूत्वा प्रत्युवाच सुरेश्वरम् ।

७. व—शापं ।

८. कै—मय्युत्सृक्ष्यति । व—मय्युत्सृक्ष्यति ।

भ—समुत्क्षिपति ।

९. भ—कोपनः ।

१०. ल—अयं सुरपते शोची विश्वामित्रो महाद्युतिः ।

यापमुत्सृक्ष्यति देवतायां नवग्रहः ॥

११. ज—तस्मान्मे त्वं सुर० । ल—ततो मे अग्रकम्पात् ।

१२. भ—नाभ्युत्थापयितव्यानि ।

व ल—न मे सदयित० ।

१३. व ल—तेजांसि ।

१४. व ल—व तेषांसि च । भ—तपतां वर ।

- तामुवाच तंतः शक्रो वेपमानां कृताञ्जलिम् । [४ उ
 ५] मा भैषीः कुरु रम्भे त्वं प्रियं मे प्रियभाषिणि ॥५१॥ [५
 कोकिलो हृदयग्राही काले कुसुमितद्रुमे ।
 ६] अहं कन्दर्पसहितः स्थास्ये तव समीपतः ॥६॥ [६
 मनोहरं तु रम्भोरु कृत्वा रूपमथाद्भुतम् ।
 ७] तमृषिं रुचिरापांङ्गे गच्छ लोभयितुं वने ॥७॥ [७
 इत्युक्त्वा देवराजेन रम्भा मुरुचिरानना ।
 ८] कृत्वा रूपं मनोहारि विश्वामित्रमलोभयत् ॥८॥ [८
 इन्द्रोऽपि कोकिलो भूत्वा वल्गु व्याहरते वने^३ ।

१. राज — तमुवाच ।

२. ल — सहास्राक्षो ।

३. भ — त्वं रम्भे कुरु मा भैषीः ।

४. ल — रंभे मा भूत्तव मयं कुरुष्व वचनं मम ।

५. रा — काली । ल — माधये ।

६. ल — रुचिरे चतौ ।

७. व ल — भयं ।

८. ल — स्थितः ।

९. भ — मनोरमम् ।

१०. भ — रुचिरापांगि ।

११. ल — त्वं च रूपं बहुगुणं कृत्वा परममास्वरं ।

तमृषिं कौशिकं भद्रे मोहनार्थमुपाह्वय ॥

१२. ल — सा भूत्वा वचनं तस्य रूपमप्रतिभं मुषि ।

कृत्वा बहुगुणं रूपं विश्वामित्रमुपाह्वयत् ॥

१३. भ — इन्द्रोपि कोकिलो भूत्वा कन्दर्पसहितस्तदा ।

वर्षारागहितस्तत्र तस्थौ राम विकोकयन् ॥

कोकिलस्य वचः श्रुत्वा वर्षा व्याहरतो वने ।

- ६] रम्भागीतस्वनं चैव मधुरं मुमनोहरम् ॥९॥ [N
 मारुतं च मुखस्पर्शं दिव्यपुष्पाधिवासितम् ।
 ११] आयान्तं समभिप्रेत्य कामिनां मदवर्धनम् ॥१०॥ [N
 सहसा हृतचित्तात्मा मदनेन महामुनिः ।
 १२] गीतस्वनेनानुसृतो रम्भां दृष्ट्वा मनोहराम् ॥११॥ [N
 शब्देनापहृतस्तेन रम्भासन्दर्शनेन च ।
 १३] स्मृत्वा चात्मतपोभङ्गं मुनिः शङ्कामुपागमत् ॥१२॥ [१०
 सहस्राक्षस्य तत्कर्म दृष्ट्वा च ध्यानचक्षुषा ।
 १४] रम्भां कोपसमाविष्ट इदं वचनमब्रवीत् ॥१३॥ [१२

१. ज—स्वमनोहरम् ।

२. नवमश्लोकादारभ्य द्वादशश्लोकपर्यन्तमित्थं पाठः--

ब—कोकिलाशब्दसंश्रित्य वसंतपत्रतः स्वनं ।

..... न मन विश्वामित्रो.....

अथ..... गीते..... मन सः ।

..... नन च रंभाया मुनिः मोहमुपागमत् ।

ळ—कोकिलस्व च संश्रित्य वसु व्याहरतः रवनम् ।

तां प्रहृष्टेन मनसा विरवामित्रोभ्यवैचत ।

अथ तस्य सशब्देन गीतेनाप्रतिभेन सः ।

दर्शनेन च रंभाया मुनिः संमोहमागमत् ॥

३. ज—दिव्यगंधाधिवासि० ।

४. भ—भरंभंतमभिप्रेक्ष्य कामिनामपिदूबद्धं ।

५. भ—गीतध्वनिं चानु० ।

६. भ—०पहृतस्तत्र ।

७. भ—०तपोभ्रंशं ।

८. ब ङ—विज्ञाय ।

९. ब ङ—मुनिगुणः । भ—ज्ञानचक्षुः० ।

१०. ङ—नास्ति ।

यस्माल्लोभयसे रम्भे मामात्मगुणसंपदा ।

१५] तस्माच्छैलमयी भृत्वा स्थास्यसीह तपोवने ॥१४॥^१ [१३
वर्षाणामयुतं पूर्णं मच्छापकलुषीकृता ।

१६] ब्राह्मणस्तु तपः सिद्धे उद्धर्ता ते भविष्यति ॥१५॥^२ [१४
रम्भां शैलमयीं कृत्वा विश्वामित्रो महामुनिः ।

१७] सन्तापमगमत् तीव्रं कोपस्यै वशमागतः ॥१६॥^३ [१५
दृष्ट्वा तथागतां रम्भां सद्यः शैलमयीं रुषा ।

१८] कन्दर्पसहितं चैव दृष्ट्वा 'नष्टं पुरन्दरम् ॥१७॥'^४ [N
तपोऽपहारं च पुनः कृतं दृष्ट्वा तया पुनः ।

१. ल—कामक्रोधजयैषिणं । भ—स्वमात्म० ।

२. रा—यास्यसीह । ज—स्थास्यसेह ।

३. ल—दशवर्षसहस्राणि शैले स्थास्यसि दुर्भगे ।

४. अ ल—अतः परमधिकः पाठः—

ब्रह्मादयो महाभागास्तपोबलसमन्विताः ।

उद्धरिष्यन्ति रंभे त्वां मत्क्रोधकलुषीकृताम् ॥

५. ज—ब्रह्मणस्तु तपः सिद्धा ।

६. ल—नास्ति ।

७. भ—क्रोधस्य ।

८. ल—एवमुक्त्वा महातेजा विश्वामित्रो महामुनिः ।

अशक्नुवन्भारवितुं क्रोधसन्तापमागतम् ॥

९. भ—घातां ।

१०. भ—स्ववत्सं च ।

११. ल—तस्य चिताद्युपेतस्य रंभा वै शैलमागता ।

व्रीहितश्चापि कन्दर्पो जगामाशु तथागतम् ॥

१२. ज—तयात्मनः । भ—तपोधनः ।

१६] अजितेन्द्रियोऽस्मीति भृशं जगर्हात्मानमात्मनो ॥१८॥^१[१५

अथ हैपवतीं त्यक्त्वा दिशं रम्यां महामुनिः ।

२०] पूर्वा दिशमुर्पागत्य तपस्तैप्तुं प्रचक्रमे ॥१९॥^८ [६५,१

१. भ—असंयतेंद्रियोस्मीति ।

२. रा—० मात्मनः ।

३. ल—क्रोधेन च महातेजास्तपसो हरयात्कृतः ।
इंद्रियैरजितै राम न लेभे शांतिमात्मनः ॥

४. ल भ—राम ।

५. ल भ—त्यक्त्वा ।

६. ल—० मपाक्रम्य । भ—० मुपागम्य ।

७. ल—तपस्तेपे सुदारुणम् ।

८. व ल—अतः परमाधिकः पाठः—

तां दृष्ट्वा शापसंयुक्तां रंभां शैलमयीं कृतां ।

अभ्यागच्छन्मुनिश्चितां तपोपहरणे कृते ॥

नैव कोपं करिष्यामि संबत्सरशतान्बहून् ।

स्वयं च क्षोषयिष्यामि स्वमात्मानं यतेन्द्रियः ॥

व—सावथावदि मे प्राप्तं ब्राह्मण्यं महदूर्जितम् ।

ल—सावत्यावदि ,, ,, ब्राह्मण्यं महदूर्जितम् ।

व—अनुच्छ्वसन्नं मुंजन्वै तिष्ठेयं शाश्वतीः समाः ।

ल— ,, ,, तिष्ठेय ,, ,, ॥

व ल—न हि मे तप्यमानस्य क्षयं वास्पति वासवः ।

व—मौनं वर्षसहस्रं तु कृत्वा मनसि सुस्थिरं ।

ल—,, वर्षसहस्राय ,, ,, ॥

व—अकरोद्प्रतिसमां प्रतिज्ञां रघुवंदन ।

ल— ,, प्रतिज्ञं ,, ।

न हि मे तप्यमानस्य क्रोधमात्पर्यवर्जितः ॥

मौनं वर्षसहस्रं तु कृत्वा स कृतनिश्चयः ।

२१.] वज्रस्थानमुपाश्रित्य तस्थौ गिरिरिवाचलः ॥२०॥^५ [२

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे रम्भाशापो नाम
षष्ठितमः सर्गः ॥ ६० ॥^५

१. भ—वर्षसहस्राणि ।
२. कै—सु— ।
३. भ—वज्रासनमुपावृत्त्य ।
४. ल—पूर्ववर्षसहस्रे तु काष्ठभूतं महामुनिम् ।
विभ्रैर्वहुभिराभूतं कोपो नांतरमाविशत् ।
गत्वा च परमं हर्षं तप आतिष्ठदुत्तमम् ।
अथ वर्षसहस्रेण ब्रतदीक्षेद्य आगतः ।
हृद्रो द्विजाति गस्वेतं यथादीष्टमयाचत ।
निःशेषमन्नं भगवद्भूक्तं च महातपाः ।
तथैव मौनमकरोदनुष्ठानं च राघवः ।
५. कै व भ—आदिकाण्डे ।
६. कै व भ—रम्भाशापः । रा—रम्भाशाप ।
७. कै रा—वृषाष्टितमः । ज—द्विषंशाश्रितमः ।
व भ—नास्ति ।
८. भ--नास्ति ।
९. ज—॥ २२ ॥ भ— ॥ ४६ ॥
ल—सर्गसनाक्षिर्भे दृश्यते ।

[वं-६७] [एक षष्टितमः सर्गः] [दा-६५]

स्थाणुभूते स्थिते तस्मिन् मुनौ मौनव्रताश्रिते ।

- १] अविश्रान्तरं कामो न क्रोधो ददृशे मुनेः ॥१॥^१ [३
 अक्रोधनमकामं च तं दृष्ट्वा शान्तचेतमम् ।
- २] तपसोग्रेण संसिद्धिं परां गतमैरिन्दम ॥२॥^२ [N
 संभ्रान्तमनसो भीता ब्रह्माणं तपसां निधिम् ।
- ३] ऊचुरभ्येत्य विबुधाः सर्वे शक्रपुरोगमाः ॥३॥^३ [९
 उपायै विविधै विप्रो विश्वामित्रैस्तपोनिधिः ।
- ४] क्रोधितो लोभितश्चैव तपसा च विवर्धितः ॥४॥^४ [१०पृ

१. रा ज भ—मौनव्रताश्रिते ।

२. भ—आवेष्टुं न च तं ।

∴ भ—मुनिं ।

४. ल—अथ वर्षसहस्रेण निरुच्छ्वासो भवं मुनिः ।

निरुच्छ्वासो मुनेस्तस्य मूर्ध्नि धूमो व्यजायत ॥

५. ज भ—गतिम्० । भ—पुनरपरहस्तेन विम्वरतः ।

६. ल—ब्रह्मलोकं येन संभ्रांतमादीपितमिवाभवत् ।

ततो देवविंशधर्माः पञ्चगासुरराक्षसः ॥

७. भ—मूत्वा ।

८. ज—ब्राह्मणं ।

९. रा ज भ - तपसो ।

१०. ल—मोहितास्तेजसैवास्तपसा मंदरमथः ।

कहमखापहताः सर्वे पितामहमयाव्रतन् ॥

११. भ—० मित्रः तपोधनः ।

१२. कै—विबर्धतः ।

१३. ल—बहुभिः कारयैदेव विश्वामित्रो महामुनिः ।

शोभितः क्रोधितश्चैव तपसा...विबर्धते ॥

- न ह्यस्य वृजिनं किञ्चिद् दृश्यते स्वल्पमप्यथ । [१०उ
 ५] न दीयते यदा तस्मै मनसो वैदभीप्सितम् ॥५॥^१
 विनाशयति लोकांस्त्रींस्तेजसा स चराचरौ न ।^२ [११
 ६] व्याकुलाश्च दिशः सर्वा न च सूर्यः प्रकाशते ॥६॥
 सागराः क्षुभिताः सर्वे विदीर्यन्ते च पर्वताः । [१२
 ७] कम्पते पृथिवी चैव वायुर्बाति भृशकुण्डः ॥७॥^३ [१३पू
 बुद्धिं न^४ कुरुते यावदेव वै^५ तपसां निधिः^६ । [१५पू
 ८] देवराज्यपरिप्राप्तौ दीयतां तावदीप्सितम् ॥^७ ८॥^८ [१६उ

१. कै—रंजिनं ।
 २. ल—यदेतस्मै ।
 ३. ल—वि वर्कषितम् ।
 ४. भ—श्लोकादस्मादारभ्य सप्त मश्लोकपर्यन्तं नास्ति पाठः ।
 ५. कै—चराचरम् ।
 ६. ल—नाशयिष्यति लोकांश्च नैव सचराचरम् ।
 ७. ज—क्षुभिताः सर्वे । ल—०श्चैव ।
 ८. ल—सर्वतः ।
 ९. ल—प्रकम्पते च पृथिवी ।
 १०. ज—० र्बाति ।
 ११. ल—भृशाबिलः ।
 १२. ल—भतः परमाधिकः पाठः—
 ब्रह्मविप्रानभजते नास्तिको जायते नरः ।
 त्रैलोक्यमपि संमूर्धं स प्रष्टुभितमानसं ॥
 १३. ज—च ।
 १४. भ—प्रतपतां चर ।
 १५. भ—पूर्वं ब्राह्मं परिप्राप्तं ल...तां तावदीप्सितं ।
 १६. ल—बुद्धिं कुरुते देव यावदेव जगत्पथे ।
 तावत्प्रसाधो भगवानग्निरूपो महाप्युतिः ।
 काकाग्निरिव मिः शेट्टसैकोर्ध्वं प्रवृद्धेयं ।
 देवराज्यं चिकीर्षद्वा दीयतामस्य बद्धितम् ॥

- ततः सुरगणाः सर्वे पितामहपुरःसराः ।
 ९] विश्वामित्रमुपागम्य वाक्यमूचुरिदं तदा १॥६॥ [१७
 ब्रह्मर्षे विनिवर्तस्व तपसोऽग्रयादितः पौरम् ।
 १०] ब्रह्मर्षित्वमनुप्राप्तस्तपसा ह्यसि दुर्लभम् ॥१०॥ [१८पृ
 प्रीतः स्वच्छन्दैरणां दैदानि च तवेप्सितम् ।
 ११] स्वस्तिं प्राप्नुहि भद्रं ते तपसोऽग्रयांदुपारम् ॥११॥ [१८उ
 पितामहवचः श्रुत्वा तत् तदा मधुराक्षरम् ।
 १२] कृताञ्जलिदिदं वाक्यमुवाच मुनिपुङ्गवः ॥१२॥ [१६

१. ल—०पुरोगमाः ।

२. ल—विश्वामित्रं महात्मानमूचुः सानुनयं वचः ।

३. भ—तपसोऽग्रपरंतप ।

४. भ—त्वति ।

५. ल—महर्षे स्वस्ति ते साधो तपसा स्म सुतोषिताः ।

ब्रह्मण्यं रूपमोग्रेण प्राप्तवानसि कौशिक ।

६. भ—० चरयं ।

७. भ—दामि ।

८. कै—स्वस्ति ।

९. भ—चाप्नुहि ।

१०. ल—गच्छ सौम्य यथासुखं । भ—०सोम्राडु० ।

११. भ—विश्वामित्रस्तदा ।

१२. ल—श्लोकादस्मादारभ्याष्टादशश्लोकपर्यन्तमित्थं पाठः—

पितामहवचः श्रुत्वा सर्वेषां च दिवोकसां ।

कृत्वा प्रणामं विधिवद्ब्राह्मणान्महात्मिभिः ॥

श्रींकारश्च वषंकारा वेदारचायांतस्त्वशः ।

क्षत्रवेदविदां श्रेष्ठो ब्रह्मवेदवतामपि ॥

ब्राह्मणुषो वसिष्ठोयमेवमेवमवीतमाशु ।

ततः प्रसाद्य सं देवा विश्वामित्रमथाम्रवन् ।

महर्षिस्त्वं न संदेहः सर्वं संपत्स्यते तव ॥

इत्युक्त्वा देवताः सर्वा जग्मुस्त्रिभुवनास्तदा ।

सर्वे चकार ब्रह्मर्षिरेभमस्त्विति चाब्रवीत् ॥

अपूजयन्तु ब्रह्मर्षिं वासिष्ठं जपतां वरम् ।

ब्राह्मण्यमेवमेतेन प्राप्तं राम महात्मना ॥

यदि प्राप्तं मया ब्रह्मन् ब्राह्मण्यं तपसो बलात् ।

१३] ततो ब्रह्म च वेदाश्च सत्यं च वरयन्तु माम् ॥१३॥ [२०

सिद्धिर्धृतिः स्मृतिश्चैव विद्या मेधा यज्ञैः क्षमा ।

१४] तपो दमश्च शान्तिश्च सर्वज्ञत्वं कृतज्ञतां ॥१४॥ [N

असंमोह इति प्राहु ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ।

१५] अद्रोहः सर्वभूतानामपकर्षसंज्ञितः ॥१५॥ [N

तन्मा भजतु विप्रेशं ब्रह्माव्ययमनुत्तमम् ।

१६] तपसा च यदि प्राप्तं ब्राह्मणत्वं यथेप्सितम् ॥१६॥ [N

तमेवंवादिनं ब्रह्मा प्रत्युवाच तपोनिधिम् ।

१७] प्रतिभास्यन्ति ते वेदा ब्रह्म^१ चाव्ययमुत्तमम् ॥१७॥ [N

अधिकेस्त्वं मतो मेऽद्य^२ सर्वब्रह्मविदां मुने ।

१८] इत्युत्कैनं ततो ब्रह्मा ययौ सुरगणैर्वृतः ॥१८॥ [२३

विश्वामित्रोऽपि धर्मात्मा लब्ध्वा ब्राह्मण्यमुत्तमम् ।

१९] कृतकृत्यश्चचारेमां पृथिवीं सिद्धमांसः ॥^३१९॥ [२४

१. व—ब्रह्मा ।

२. भ—सिद्धिर्बुद्धिः ।

३. भ—शमः ।

४. भ—तपो दमो दया शान्तिः ।

५. कै रा—कृतज्ञया ।

६. भ—०मसंकल्पमसंज्ञिता ।

७. रा भ—तन्मां ।

८. ज—ब्रजतु ।

९. ज - विप्रेशं । भ—विश्वेश ।

१०. ज—०भाष्यंति ।

११. भ—अधिकं त्वामहं मन्ये ।

१२. कै ज—सिद्धिमा० ।

१३. ल—कृतकार्यो महीं सर्वां चचार तपसि स्थितः ।

- एष ब्रह्मविदां श्रेष्ठ एष ब्रह्मविदां वरः ।
 २०] एष विग्रहवान् धर्म एष सिद्धिघतां वरः ॥२०॥^२ [२५
 २१] उ] शतानन्दबचः श्रुत्वा रामलक्ष्मणसन्निधौ ।^१
 जनकः प्राञ्जलिर्भुत्वा विश्वामित्रं ततोऽब्रवीत् ॥^२२१॥ [२७
 २२] धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि यस्य मे त्वं महासुने ।
 यज्ञं काकुत्स्थसहितो द्रष्टुमभ्यागतः स्वयम् ॥२२॥^१ [२८
 २३] गुणाः सुबहवः प्राप्तास्त्वत्सन्दर्शनजा मया ।
 सदश्च पावितमिदं त्वद्गुणौघैस्तेपोनिषे ॥^२२३॥ [N

१. ज भ—तेजास्विनां ।
 २. ल—एष धर्मपरो नित्यं धीर्यस्य च परावयाम् ।
 एष सत्ये दमे द्यौचे वेदे च परिनिष्ठितः ॥
 ३. ल—इत्युवाच शतानन्दो ।
 ४. ल—इत्यार्षे रामायणे विरवामित्रब्राह्मण्यलाभो नाम सर्गः ।
 ५. ल—ततः कथांते वाक्यज्ञो [वाक्यं] मधुरमब्रवीत् ।
 ६. ल—मुनिपुंगव ।
 ७. रा—०मभ्यागतः ।
 ८. ल—यज्ञं काकुत्स्थसहितः प्राप्तवानसि धार्मिक ।
 ल—सहितो द्विजमुख्यैश्च बहुभिः सुमहायशाः ।
 पावितोहं स्वया ब्रह्मदर्शनेन महासुने ।
 भ—काकुत्स्थसहितो द्रष्टुं यज्ञमभ्यागतः स्वयं ।
 ९. ल—गुणा बहुविधाः । भ—गुणाश्च बहवः ।
 १०. रा—प्राप्ता त्वत्संद० । ल भ—प्राप्तास्तव सन्दर्शनाभ्या ।
 ११. भ—सद्गुणैस्ते तपोधन ।
 १२. ल—चास्ति ।

- २४] विप्रभावं च ते ब्रह्मन् कीर्त्यमानो महातपोः ।^१
 श्रुतो मया महातेजा रामेण च महात्मना ॥२४॥ [३०
 २५] सदस्यैः प्राप्य च सदः श्रुतास्ते बहवो गुणाः । [३१
 अपमेयं तव तपो ह्यप्रमेयं च ते बलम् ॥२५॥
 २६] अपमेया गुणाश्चापि नित्यं ते पुरुषर्षभ । [३२
 वृत्तिराश्चर्यभूतानां कैयानां नास्ति मे विभो ॥२६॥
 २७] कर्मकालो मुनिश्रेष्ठं लम्बते रविमण्डलम् । [३३
 २८पृ] श्वः प्रभाते मुनिश्रेष्ठ द्रष्टुमेष्ट्याम्यहं पुनः ॥२७॥^{१२} [३४पृ
 एवमुक्त्वा मुनिश्रेष्ठं वैदेहो मिथिलाधिपः ।
 २८] प्रदक्षिणमुपावृत्य विश्वामित्रं तता ययौ ॥^{१४} २८॥ [३६

१. कै ब—महातपः । भ—महत्तपः ।

२. छ—विप्रभावं च ते ब्रह्मन् कीर्त्यमानं मया श्रुतम् ।

३. छ—ब्रह्मं श्रुति मया चाद्य ।

४. छ—च ते रूपमप्रमेयं ।

५. छ भ—गुणाश्चैव ।

६. छ—० भूतानिः ।

७. छ—कथाभिर्नास्ति ।

८. रा भ—प्रभो ।

९. छ—कर्मकाले ।

१०. अ छ—वरश्रेष्ठ ।

११. छ—द्रष्टुमर्हाम्यहं । भ—द्रष्टुमेष्ट्यामि वै ।

१२. छ—अतः परमधिकः पाठः—

गन्ताहं अपतां श्रेष्ठ मामनुज्ञानुमर्हसि ।

एवमुक्तो मुनिवरः प्रशस्तं पुरुषर्षभं ।

विसर्ज्य शुकं जनकं प्रीतं प्रीतमनास्तदा ॥

१३. छ—रुमितो मुनिव तव ।

१४. छ—प्रदादिनं तमकरोऽक्षोपाध्यायः स्वान्धवः ।

विश्वामित्रोऽपि धर्मात्मा सहरोमः सलक्ष्मणः ।

३०] स्वं वासमुपचक्राम पूज्यमानो द्विजातिभिः ॥२६॥' [३७

इत्यार्षे रामायणे बाळकाण्डे विश्वामित्रप्रज्ञास्वप्नास्तिकयनं
नाम (एकचट्टितमः) संज्ञः ॥११॥

१. ल भ—सरामः सहकचमन्त्रः ।
२. व भ—स्ववास० । ल—सुबाटमभिचक्राम ।
३. ज ल—महर्षिभिः ।
४. ल—मतः परमधिकः पाठः—
ततो जगाम स्वगृहं स राजा
सहर्षचित्तो मुनिमर्षयित्वा ।
स तद्विद्योगतृषितो महर्षिः
कृष्णैश्च रात्रिं गमवांबभूव ॥
५. भ—आदिर्कांठे ।
६. ल—विश्वामित्रचरितं समाह्वयम् ।
भ—विश्वामित्रप्रज्ञास्वप्नाः ।
७. ल भ—वास्ति ।
८. कै रा—सहचट्टितमः । ज—त्रिपंचाशत्तमः ।
व ल भ—वास्ति ।
९. ल भ—वास्ति ।

ततः प्रमाते विमले कृतकर्मा नराधिपः ।

१] विश्वामित्रं महात्मानमुपायात् सहरार्धवम् ॥१॥ [१]

तमर्चयित्वा धर्मात्मा शास्त्रदृष्टेन कर्मणौ ।

२] राघवौ च महात्मानौ ततो वाक्यमुवाच ह ॥२॥ [२]

भगवन् स्वागतं तेऽस्तु किं करोमि महातेपः ।

३] भवानाज्ञापयतु मामाज्ञाप्यो भवतो ह्यहम् ॥३॥ [३]

एवमुक्तस्तु धर्मात्मा जनकेन महात्मना ।

४] प्रत्युवाच मुनिर्धीरो वाक्यं वाक्यविशारदः ॥४॥ [४]

पुत्रौ दशरथस्येमौ सत्रियौ ह्येकविश्रुतौ ।

५] द्रष्टुकामौ धनुर्दिव्यं यदेतव त्वयि तिष्ठति ॥५॥ [५]

एतद् दर्शय भद्रं ते कृतकामौ नृपात्मजौ ।

६] दर्शनादस्य धनुषो यथेष्टं ते कंरिष्यतः ॥६॥ [६]

इत्युक्तो जनको राजा प्रत्युवाच कृताञ्जलिः ।

७] श्रूयतां धनुषस्तत्त्वं यदर्थं मेयि तिष्ठति ॥७॥ [७]

१. ल—कृतकृत्यो ।

२. ल—०माजुहाव साराधवम् ।

३. रा—जनकेन महात्मना ।

४. रा—नास्ति ।

५. ज ल—महासुते । भ—महत्तपः ।

६. रा—नास्ति ।

७. ल—मुनिवरो ।

८. ल—वाक्यविदांबर ।

९. ज—नृपारमज ।

१०. ल—प्रकरिष्यति । भ—वै करिष्यतः ।

११. ल—एवमुक्तस्तु जनकः प्रत्युवाच महासुनिम् ।

१२. ल—यदाहं चेह । भ—यदेतन्मयि ।

देवरात इति ख्यातो निमेः षष्ठो महीपतिः ।

८] न्यासभृतमिदं तस्मै धनुर्दत्तं महात्मना ॥८॥ [=

दक्षयज्ञवधे पृथ्वे धनुर्षोऽनेन शंकरः ।

९] विध्वंस्य त्रिदशान् सर्वानिदं किल तदोक्तवान् ॥९॥ [९
यस्माद् भागार्थिनो भागं न कल्पयथ मे सुराः ।

१०] तस्माद्दङ्गानि सर्वाणि धनुषा शांतयामि वः ॥१०॥'' [१०
तस्मै देवा भयोद्विग्ना रुद्राय प्राणमंस्तदा ।

११] प्रसादयार्मासुरेनं तेषां तुष्टोऽभवद् भवः ॥११॥'' [११
प्रीतश्चापि ददौ तेषां तान्यङ्गानि महौजसाम् । [१२

१२] धनुषा यानि यान्यासन् शान्तितानि महात्मना ॥१२॥'' [N

१. भ—देवराज ।

२. भ—तस्य ।

३. ल—न्यासोयं तस्य तु पुरा हस्ते दत्तं महद्भुः ।

४. ल—धनुरायस्य ।

५. रा—शंकराः । ल—यत्नतः ।

६. रा—विध्वंसि ।

७. ल—विध्वंस्य त्रिदशान् रुद्रः सर्वालमिदमत्रवीत् ।

८. व—यस्माद्गानि ।

९. रा—शांतयामि ।

१०. महार्हं मयि यद्भागं यत्प्रयच्छथ देवताः ।

शांतयामि वराहस्तु तेषामस्त्राणि वै पुनः ।

११. ज—०मासुरेवं । भ—०दवांचक्रुरेनं ।

१२. नास्ति ।

१३. कै रा—शान्तितानि ।

१४. ल—नास्ति ।

भ—प्रीतियुक्तस्तु सर्वेषां ददौ तेषां महात्म ।

शान्तितानि महार्हाणि तेषामंगानि वै मुने ॥

- तदेतद् देवदेवस्य धनुर्दिव्यं महात्मनः । [१३
 १३] तिष्ठत्यद्यापि भगवन् कुलेऽस्माकं सुपूजितम् ॥१३॥
 वीर्यशुल्का च मे कन्या दिव्यरूपगुणान्विता । [१४३
 १४] भूतलादुत्थिता पूर्वं नाम्ना सीतेत्ययोनिजा ॥१४॥^१ [१४४
 तां नृपा वरयामासुरागत्यागत्य वै पुरा ।
 १५] वीर्यशुल्का प्रदेयेति तानहं चाद्भुवं नृपान् ॥१५॥^२ [१५
 ततो नृपतयः सर्वे प्रार्थयन्तः सुतां मम ।^३ [N
 १६] वीर्यजिज्ञासया तेषां मया सन्दर्शितं धनुः ॥१६॥
 न शेकुश्चापि ते ब्रह्मन्नुद्धर्तुं मम ते धनुः ।^४ [१९
 १७] तेषामल्पमहं मत्वाँ वीर्यं तत्र महामुने ॥१७॥ [२०५

१. ल भ—धनूरजं ।

२. ल भ—नास्ति ।

३. ल भ—अथ वाहयतः चेन्नं फलाप्रादुत्थिता मम ।

ल—सर्वलक्षणसंपन्ना नाम्ना सीतेति मे सुता ।

भ—संयुक्ता " " विश्रुता ।

ल भ—भूतलादुत्थितां तां तु वर्धमानां ममात्मजाम्

आगत्यावरयन् सर्वे राजानो मुनिपुंगव ।

तेषां वरयतां कन्यां सर्वेषां पृथिवीक्षितां ।

वीर्यशुल्कामकथयं ते बुभूषश्च तत्स्वतः ॥

४. ल—ततः सर्वे नृपतयः समेत्य मुनिपुंगव ।

भ—ते च " " " "

ल—मिथिकामधुपेयुस्ते वीर्यं जिज्ञासितं स्वकं ।

भ—ममभ्युपेयुस्ते " " " ।

५. ल भ—तेषां जिज्ञासमानानां मया धनुस्सराहृतं ।

६. ज—नास्ति ।

ल—न शक्ता धारय तस्य धारये तोषने तथा ।

भ—" " ग्रहणे " " " " ।

७. ज—तत्र मरवा वीर्यं ।

८. ल भ—तेषां वीर्यवतां वीर्यमरुपं ज्ञात्वा तपोधन ।

- नृपतीन् संहितान् मैवान् प्रत्याख्यायितवांस्तदा । [२०३]
 १६पू] तैतस्ते परमक्रुद्धा राजानस्ते महाबलाः ॥ १८ ॥ [२१पू]
 २०३] रोषेण महताऽऽविष्टा मिथिलामभ्यपीडयन् । [२२उ]
 संवत्सरं च ते पूर्णं रुरुधुः कृतनिश्चयाः ॥ १९ ॥
 २१] अवरोधेन तेषां च यदा क्षीणोऽस्मि सर्वशः । [२३]
 तदा प्रसादयाञ्चक्रे देवदेवमुमापतिम् ॥ २० ॥
 २२] प्रसादाद् भगवान् प्रीतश्चतुरङ्गं बलं ददौ । [२४]
 ततो भग्ना नृपतयः प्रतिजग्मुर्महामुने ॥ २१ ॥
 २३] अल्पवीर्यबलोत्साहा अल्पसत्त्वाभिमानिनः । [२५]
 तदेतन् मुनिशार्दूल दिव्यं परमभास्वरम् ॥ २२ ॥

१. रा—संहितान् ।

२. ल—सर्वास्तांस्तथाख्यातवानहम् ।

भ—सर्वास्तान्प्रत्याख्यातवानहं ।

३. ल भ—ततः परमकोपात्ते ।

४. ज ल भ—राजानः सुमहाबलाः ।

५. ल भ—अतःपरमधिकःपाठः—

अरुन्धन्मिषिष्ठां सर्वे वीर्यसंदेहमागताः ।

आत्मानमवधूतं ते विश्वाय मुनिपुंगव ॥

६. ल—ततः संवत्सरे पूर्णे क्षयं यातानि सर्वशः ।

भ— ,, संवत्सरः पूर्णः ,, ,, ,,

७. ल भ—साधनानि मुनिश्रेष्ठ ततोहं नृशत्रुःक्षितः ।

ततो देवगणाः सर्वे तपसा मे प्रसादिताः ॥

८. ल भ—प्रदुस्ते च सुप्रीताश्चतुरंगं बलं मम ।

ततो नृपतयो भीता बध्यमाना ययुर्दिशः ॥

९. ल—अवीर्या वीर्यसंदिग्धा निःसत्त्वाः पापकारिणः ।

.....अवीर्यसंदिग्धाः निःसत्त्वाः पापकारिणः ॥

१०. ल. भ—धनुः ।

११. कै—०भासुरम् ।

२४] दर्शयाम्यद्य रामाय लक्ष्मणाय च कार्मुकम् ।' [२६
 कुर्यादारोपणं रामो धनुषश्चास्य चेदयम्।^१

२५] ददाम्ययोनिजामिस्मै सीतां दशरथस्तुषाम् ॥ २३ ॥ [२७

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे जनकवाक्यं
 मेम द्विषष्टितमः सर्गः ॥६२॥

१. ल भ—नास्ति ।

२. ल भ—यदि त्वारोपणं कुर्याद्रामोस्य धनुषः स्वयं ।

३. ल भ—सुतामयोनिजां सीतां दद्यां ।

४. कै रा—नामाष्टष्टितमः । ज—नाम चतुःपञ्चाशत्तमः ।

५. ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

[वं=६९] [त्रिषष्टितमः सर्गः] [दा=६७]

- जनकस्य वचः श्रुत्वा विश्वामित्रो महामुनिः ।
 १] धनुर्दर्शय रामाय तदिति प्राब्रवीन्त्पम् ॥ १ ॥^१ [१]
 सुरोपमस्तु जनकः सोऽमार्त्यानादिदेश ह ।
 २] रामसन्दर्शनार्थं तद्भनुरानीयेतामिति ॥ २ ॥ [२]
 जनकेन समादिष्टाः प्रविश्य संचिवाः पुरीम् ।
 ३] धनुरानाययामासुः पुरुषैरात्तकारिभिः ॥ ३ ॥^२ [३]
 पुरुषाणां शतान्यष्टौ व्यापृतानां महौजसाम् ।
 ४] मञ्जूषामष्टचक्रां तां गुर्वीमूढुः कथञ्चन ॥ ४ ॥^३ [४]
 समानीये^४ च^३ मञ्जूषामायसीं यत्र तद्भनुः ।

१. व—तदेतत्

२. ल भ—श्लोकस्यास्यादावयमित्थं पाठः—

पौरुषं ह्यभिरूपं हि शंखे क्षीरमिवापितम् ।

३. भ—सुरोपमोष ।

४. ल—सोमार्थां व्यादिदेश । भ—सोमास्याम्ब्या० ।

५. ज—०रादीयतामिति ।

६. ल भ—धनुरानीयतां दिव्यं रामकचमण्योरिति ।

यत्तद्बलपरीक्षार्थं सर्वेषां पृथिवीक्षिताम् ॥

७. ल भ—मिथिळां ।

८. ल—तद्भनुर्वै पुरस्कृत्य निर्जग्मुः पार्थिवाक्यम् ।

भ— „ „ „ पार्थिवाक्यात् ॥

९. ल भ—कृतानि पंच पुंसां तु स्वायतानां महात्मनां ।

१०. ल—मञ्जूषामष्टचक्राः वामूढुः कृष्णात्कथञ्चन ।

भ— „ चक्रां कामूढुः „

११. ल—समानीय । भ सामानीय ।

१२. ल भ—तु ।

१३. ज ल भ—तत्र ।

- ५] सुरोपमं तु जेनकं तमूचुरिति मन्त्रिणः ॥ ५ ॥ [५
तदेतद्बधनुरानीतमाङ्गया ते नराधिप ।
६] दर्शयैतद्वेषरस्य राघवस्य च भास्वरम् ॥ ६ ॥ [६
तेषामेतदुपश्रुत्य जनकः प्रश्रितं वचः ।
७] विश्वामित्रमुवाचेदं तौ चोभौ रामलक्ष्मणौ ॥ ७ ॥ [७
ब्रह्मन् वनुरुपानीतं यत् तु तिष्ठति नो गृहे ।
८] राजभिर्यन् न शकितमुद्धर्तुमपि सारवत् ॥ ८ ॥ [८
नैतत् पूरयितुं शक्ताः सेन्द्राः सुरगणा अपि ।
९] न यक्षोरगरक्षांसि देवदेवाहते शिवात् ॥ ९ ॥ [९

१. ल भ—जनकमूचुस्ते नृपमंत्रिणः ।

२. ज—तदेतद् ।

३. कै—भास्वरम् ।

४. ल—इदं धनुर्धरं राजन्सर्वलोकेषु पूजितम् ।

भ—,, धनुर्धरं ,, ,, ।

ल—मिथिलेय महाभाग दर्शयैतन्महासुनेः ।

भ—मैथिलेय महाभाग ,, ।

५. ल भ—तेषां तद्वचनं श्रुत्वा कृताञ्जलिस्त्वाह ह ।

६. ल भ—विश्वामित्रं तदा राजा ।

७. कै—धनुरुपानीतं ।

८. ल—इदं धनुर्धरं ब्रह्मं जनकेनाभिपूजितम् ।

भ—,, इदं धनुर्धरं दिव्यं जनकेरभिपूजितम् ।

९. ल—राजभिः सुमहावीर्यैरशक्यं तोषने तदा ।

भ— ,, ,, रशकैः पूरये तदा ।

१०. ल भ—नेदं सुरगणैः शक्यमसुरैर्वा महासुने ।

११. ल भ—गन्धर्ववचप्रवरेः साक्षरमहोरगैः ।

एकैको वा समस्ता वा शक्ता मतिमतां वर

सज्यं कर्तुं मुनिभेष्ट कुल एव तु मानुषाः ।

न शक्तिर्मानुषाणां तु धनुषोऽस्य प्रपूरणे ।

१०] कुत एव हि सन्धाने शक्तिर्वा स्याद्धि कर्षणे ॥१०'॥ [१०

११] इदं मम धनुर्दिव्यं तवानायितमाज्ञया ।

विश्वामित्रस्तु धर्मात्मा श्रुत्वा जनकभाषितम् ॥११॥* [११

१२] अभ्यभाषत काकुत्स्थं प्रहृष्टेनान्तरात्मना ।

गृहाणैतन् महाबाहो यन्नमातिष्ठ राघव ॥१२॥[†] [N

१३] वत्स राम धनुर्दिव्यमिदं पश्येत्युवाच ह ।[‡] [१२

मुनेस्तु वचनाद् रामो यत्र तिष्ठति तद्धनुः ॥१३॥[†]

१४] मञ्जूषां तां समाश्रित्य विश्वामित्रमभाषत । [१३

१. ल भ—अगतिर्मानुषाणां हि धनुषोऽस्य प्रपूरणे ।

ल—आरोपणे समायोगे वेदने तोखनेपि वा ।

भ— ,, ,, वेदने तोखने तथा ।

२. रा—तवानायितमाज्ञया ।

३. ल भ—तदेतद्धनुषां श्रेष्ठमानीतं मुनिगौरवात् ।

दर्शयैतन्महाभाग स्वनयो राजपुत्रयोः ।

४. रा—अभ्यभाषित ।

५. ल भ—गृहाणोदं ।

६. ल भ—दिव्यं धनुरनुपमम् ।

७. अतः परमाधिकः पाठः—

ल—आरोपणे कर्षणे चास्य* यन्नमातिष्ठ राघव ।

८. ल—वत्स राम धनुः परयेत्येवं राघवमब्रवीत् ।

९. ल भ—वचनं श्रुत्वा ।

१०. ल—मञ्जूषां सामुपाश्रित्य दृष्ट्वा च धनुरब्रवीत् ।

भ— ,, सामुपाश्रित्य ,, तद्धनुरब्रवीत् ।

* भ—चास्य ।

‡भ—वत्स ।

- इदं धेनुरहं दिव्यं तोलधिष्यामि पाणिना ॥ १४ ॥ [१४
 १५] यैत्नवांश्च भविष्यामि संज्जोऽस्म्यस्य विकर्षणे ।
 बाढमित्येव तं राजा मुनिश्च समभाषत ॥ १५ ॥ [१५
 १६] सलीलमिव तं रामस्तोलयित्वैकपाणिना ।
 परयतामभितस्तत्र सदस्यानां समन्ततः ॥^१ १६ ॥ [१६
 १७] आनम्य नातियत्रेण सज्यं चक्रे हसन्निव ।^२
 संज्यं कृत्वा ततश्चैतत् पुरयामास वीर्यवान् ॥ १७ ॥^३ [१७
 १८] पूर्यमाणं बभ्रजाथ मध्ये रामबलाद् धनुः ।
 तस्य शब्दो महानासीद् गिरेरिव विदीर्यतः ॥ १८ ॥^४ [१८
 १९] वज्रस्येव विमुक्तस्य शक्रेण नगमूर्धनि ।^५ [१९

१. ल—धनुर्धरं । भ—धनुर्वरं ।

२. ल—संग्रहयाम्यथ । भ—संसृष्टयाम्यथ ।

३. भ—यज्ञवांस्तु ।

४. ल भ—तोलने पूरणे तथा ।

५. ज—तद्गामस्तोत्रं ।

ल भ—तद्गामो जग्राह वचनान्मुनेः ।

६. ल भ—परयतां च सहस्राणां बहूनां रघुनन्दन (भ—०नन्दनः ।) ।

७. भ—भारोपयन् स धर्मात्मा सलीलमरिसूदनः ।

८. ज—०धनुश्चैतत् । ल भ—भारोप्य च महाबाहुः ।

९. कै—अतः परमधिकः पाठः—

बभ्रज पुरयंश्चैतन्मध्ये रामो बलादिव ।

१०. ल भ—बभ्रज च नरश्रेष्ठ धनुर्मध्ये महायज्ञाः ।

तस्य शब्दोभवद्गीमो निर्घातसमनिःस्ववः ॥

११. रा—शक्रेण ।

१२. ल—भूमिश्चकम्पे सुमहां दीर्यमाणो गिरीरिव ।

भ—भूमिश्चकम्पं सुमहान्दीर्यमाणो गिराविव ।

- निपेतुस्तेन शब्देन सर्वशो मोहिता जनाः ॥'१६ ॥
 २०] विश्वामित्रं वर्जयित्वा राजानं तौ च राघवौ ।'^१[१९.
 प्रत्याश्वस्ते जने तस्मिन् राजा विस्मययागतः ॥ २० ॥
 २१] उवाच प्राञ्जलिर्वाक्यं विश्वामित्रमिदं तदा ।[२०
 भगवन् श्रुतपूर्वो मे रामो दशरथात्मजः ॥ २१ ॥
 २२] अत्यद्भुतमिदं कर्म स चायं कर्तुमर्हति ।'^२[२१
 जनकानां कुले कीर्तिमाहरिष्यति मे सुता ॥ २२ ॥
 २३] सीता भर्तारमासाद्य रामं दशरथात्मजम् ।[२२
 वीर्यशुल्का प्रदाने मे प्रतिज्ञा सफलीकृता ॥'२३ ॥
 २४] सीतां दास्यामि रामाय प्राणेभ्योऽपि मियामहम् ।''[२३
 भवतोऽनुमते तस्मादितो यान्तु महामुने ॥''२४ ॥

१. ल भ—निपेतुश्च नराः सर्वे तेन शब्देन मोहिताः ।

२. ल—विश्वामि* च मुनिवरं राजानं तौ च राघवौ ।

३. ल भ—विगतसाध्वसः ।

४. ज—० तथा । ल—वाक्यज्ञो नरपुंगवः ।

भ—वाक्यज्ञो मुनिपुंगवः ।

५. ल भ—अतपूर्व ।

६. कै—अत्यद्भुतम् ।

७. ल—अत्यद्भुतमर्षित्यं च अतर्कितमिदं× मया ।

८. भ—सुतां ।

९. ल—न मे सत्या प्रतिज्ञा च वीर्यशुल्केति कौशिक ।

म—मम " " " "

१०. ल भ—सीता प्राणैर्बहुमता देवा रामाय मे सुता ।

११. ल—भवतोऽनुमता ब्रह्म क्षीत्रं गच्छन्तु मंत्रिणः ।

भ—भवतोऽनुमते ब्रह्मान् " " "

*भ—वर्जयित्वा ।

×भ—अतर्कितमिदं ।

- २५] दृता ममाज्ञया शीघ्रा अयोध्यां जवनेर्ह्यैः ।^२ [२४
 विज्ञाप्य चैव राजानमानयन्तु पुरं मम ॥^३२५ ॥
- २६] प्रदानं वीर्यशुल्कायाः सीतायाः कथयन्तु च । [२५
 त्वया गुप्तौ च काकुत्स्थौ वेदैयन्तु नृपाय वै^४ ॥२६॥
- २७] एभिः प्रह्लादितं वाक्यैरानयन्त्विह तं नृपम् ।^५ [२६
 कौशिकेन तथेत्युक्तो राजा भृत्यानुपस्थितान् ॥२७॥
- २८] अयोध्यां प्रेषयामास 'सं हि राजा त्वराऽन्वितैः । [२७

इत्यार्षे रामायणे बाल्मीकीये धनुर्मन्त्रो नाम
 त्रिषष्टितमः सर्गः, '१९३॥'^६

१. ज—शीघ्रमयोध्यां । व—शीघ्रा अवध्या ।
२. ल भ—मम कौशिक भद्रं ते स्वयोध्यां स्वरिता रथैः ।
३. ल—राजानं प्रश्नितैर्वाक्यैरानयन्तु परं मम ।
 भ— " " पुरं मम ।
४. ल भ—कथयन्तु च सर्पशः ।
५. ल भ—मुनि० ।
६. रा—देवयन्तु ।
७. ल—च नित्यज्ञः । भ—नृपाय तु ।
८. ल—प्रदानयन्तु च राजानं स्वालयं मम चानुगाः ।
 भ—प्रीयमाणं तु राजानमाचंस्वाद्यु शीघ्रगाः ।
९. ल—स्युक्त्वा ।
१०. ल भ—ह्याभाष्य भंस्त्रिणः ।
११. ल भ—धर्मात्मा मुनिश्चासनात् ।
१२. कै व—आदिकाण्डे ।
१३. कै--ऊनसप्ततितमोऽध्यायः ।
 रा—ऊनसप्ततितमो सर्गः ।
 ज--पंचपंचाशत्तमः सर्गः । व भ—सर्गः ।
१४. ल—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

[वं=७०]

[चतुःषष्टितमः सर्गः]

[दा=६८]

जनकेन समादिष्टा दृतास्ते श्रान्तवाहनाः ।

१] मार्गे त्रिरात्रमुषिता अयोध्यां प्राविशन् पुरीम् ॥१॥ [१]

ते राज्ञो विदिता दृता राजवेष्मप्रवेशिताः ।

२] ददृशुस्तं महात्मानं तत्राय नृपसत्तमम् ॥२॥ [३]

दृष्ट्वैव तं च प्रणताः कृताञ्जलिपुटास्ततः ।

५] ऊचुर्दशरथं वाक्यमिदं प्रियनिवेदिनः ॥३॥ [४]

वैदेहो जनको राजा पृच्छति त्वां नराधिप ।

१. अतः पूर्वमित्थं पाठः—

ल—यथा च क्षत्समाख्यातुमानेतुं च नृपं तदा ।

भ— „ च तत्समा० „ „ „ „ ।

२. ल भ—शीघ्रवाहनाः ।

३. ल भ—त्रिरात्रमुषिता मार्गे तेयोष्यां ।

४. ल भ—राजवचनाद् ।

५. ल—ददृशुर्देवसंकाशैर्वशिष्टाद्यैश्च मन्त्रिभिः ।

भ—ददृशुर्देवसंकाशं वृद्धं दशरथं नृपं ।

६. भ—अतः परमधिकः पाठः—

शश्वत्प्रजाः प्रशासन्तं धर्मज्ञैः सचिवैर्वृत्तं ।

ऋत्विग्भिर्देवसंकाशैर्वशिष्टाद्यैश्च मन्त्रिभिः ।

७. ल—आशास्यमानं सुप्रतीतैः शाक्रमांगिरसैरिव ।

भ—आशास्यमानं „ „ ।

ल भ—तं लोकपाकप्रतिमं लोकपाकं सुनिश्चितं ।

चङ्गाञ्जलिपुटाः सर्वे दृता विगतसाध्वसाः ।

ल—राजानं प्रथता वाक्यं मधुरं मधुराक्षरम् ।

भ— „ „ „ वाक्यमद्भुवन् „ ।

८. ल—मैथिलो जनको राजसोभिहोत्रपुरस्कृतः ।

- ६] कुशलानामयं स्निग्धः संसत्या सपुरोहितम् ॥१४॥ [५
मुहुर्मुहुर्मधुरया ल्हेहसंसक्तया गिरा ।
- ७] जनकस्त्वां महाराज पृच्छति त्वामनामयम् ॥१५॥ [६
पृष्ट्वा कुशलमध्यगो वेदेहो भिथिलाधिपः ।
- ७] कौञ्चिकानुमते वाक्यं वाक्यज्ञस्त्वाऽब्रवीदिदम् ॥१६॥ [७
सुता मे वीर्यशुल्केति प्रख्याता विदिता च ते ।
- ८] राजभिर्हीनवीर्यैश्च पुराऽपि प्रथिता तथा ॥१७॥ [८
सेयं मम सुता राजन् द्विश्वाभिन्नस्य शासनात् ।
- ९] पुरीमिमां समागत्य तव मुत्रेण निर्जिता ॥१८॥ [९
औनम्य च धनुर्दिर्घैर्घर्ष्यैर्भग्नं महात्मना ।
- १०] रामेर्णे बलमाश्रितैर्मे महत्यां जनसंसदि ॥१९॥ [१०

१. रा--स्निग्धा ।
 २. ल भ--कुशलं चाभ्ययं चैव सोपाध्यायपुरोहितः ।
 ३. रा--०संसिक्तया । ल भ--०संप्रकृत्या ।
 ४. ज--जनकस्त्वामहं राज ।
 ५. ल भ--नृपतिस्त्वां महाराज राजानं परिपृच्छति ।
 ६. रा--कुशलमावृत्तो ।
 ७. ल भ--०नुमतो ।
 ८. ज--०ज्ञस्त्वब्रवीदिदं । ल भ-- वाक्यज्ञ इदमत्र० ।
 ९. ज--प्रख्यातं ।
 १०. ल--विदिता ते प्रतिज्ञा वै वीर्यशुल्का ममात्मजा ।
 भ--विदिता ते प्रतिज्ञैषा वीर्यशुल्का ,,
 ११. ल भ--राजभिर्घो न विजिता निर्बैषिर्बिभ्रुकीकृतैः ।
 १२. ल भ--तामिमां मस्तुतां राजन्विश्वामित्रपुरःसरः ।
 परब्रह्मणा गतो वीर्वात्तव निर्जितव्यं सुतः ।
 १३. ल भ--तव दिव्यं धनुः शीमन् ।
 १४. ल भ--राघवेण ।
 १५. ल--महातेजो । भ--महाराजन् । पुनः कृतः ।

- तस्मै सीता मया देया वीर्यशुल्का सुताय ते ।
 ११] प्रतिज्ञां तर्तुमिच्छामि तदनुज्ञातुमर्हसि ॥१०॥ [११
 सोपाध्यायः सस्वजनः सर्वैर्गः सपदानुगः ।
 १२] शीघ्रमर्हसि राजर्षे त्वप्रागन्तुमिह प्रभो ॥११॥ [१२
 प्रीतिं च मम राजेन्द्र संवर्धयितुमर्हसि ।
 १३] उभयोः पुत्रयोश्चैव बध्वौ ते कल्पिते मया ॥१२॥ [१३
 इति त्वां जनको राजा विज्ञापयति पार्थिव ।
 १४] विश्वामित्राभ्यनुज्ञातः शतानन्दमते स्थितः ॥१३॥ [१४
 इति तेषां वचः श्रुत्वा राजा परमहर्षितः ।
 १५] उवाचैवं वसिष्ठादीन् सर्वानेव पुरोधसः ॥१४॥ [१५
 गुप्तैः कुशिकपुत्रेण कौसल्याऽऽनन्दवर्धनः ।
 १६] लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा स विदेहेषु तिष्ठति ॥१५॥ [१६

१. ल भ—महाद्युते ।

२. ज—प्रतिज्ञातं तु मिच्छामि ।

३. ज—सर्वैर्गः ।

४. ल भ—नास्ति ।

५. ल भ—पुत्रयोर्बन्धुयोरेवं प्रीतिं समुपलभ्यसि ।

६. ल—एवं विदेहाधिपतिर्वाक्यं मधुरमब्रवीत् ।

भ—नास्ति ।

७. ल भ—दूतवचः ।

८. ल—परमर्षिस्मितः ।

९. ल भ—सोपाध्यायश्च राजेन्द्रः पुरस्कृत्य पुरोधितं ।

वसिष्ठं वामदेवं च मन्त्रिण्योन्वाञ्च सोमवीत् ।

१०. भ—एवं विदेहाधिपतिर्वाक्यं मधुरमब्रवीत् ।

११. ल—गुप्तं ।

१२. भ—कौशल्या० ।

१३. ज ल—भ्राता ।

- दृष्टवीर्ये च काकुत्स्थे जनकः सुमहायुधाः ।
 १७] स संप्रदानं सीतायां रामं कर्तुं किलेच्छति ॥^११६॥ [१७
 यदि वो रोषते क्रुद्धान् जनकः स महीर्षतिः ।
 १८] संबन्धे तत्र गच्छामस्ततः शीघ्रमितो वयम् ॥^११७॥ [१८
 वाढमिसेव तच्छ्रुत्वा वसिष्ठप्रमुखा द्विजाः ।^१
 १९] ऊचुः परमसंहृष्टाः स्वः प्रयास्याम इत्यपि ॥^११८॥ [१९
 ते चापि रजनीं तत्र दृताः परमसत्कृताः ।^१
 २०] ऊषुर्विदेहराजस्य सर्वकामैः प्रपूजिताः ॥^११९॥ [२०

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे जनकदूतवाक्यं नाम
 चतुःषष्टितमः सर्गः ॥१४॥

१. ल—दृष्टमात्रं । भ—दृष्टमात्रे ।
 २. ल भ—संप्रदानं सुतायाश्च राघवे कर्तुमिच्छति ।
 ३. ल भ—दूतं जनकस्य महात्मनः ।
 ४. कै ज व—संबन्धी ।
 ५. ल भ—गण्डामस्तां पुरीं शीघ्रं मा भूत्काळस्य पर्यवः ।
 ६. ल—मन्त्रिणो वाढमित्याहुः सह सर्वैः महर्षिभिः ।
 भ— ,, वाढमित्यूचुः ,, सर्वैर्मनीषिभिः ।
 ७. ल भ—प्रीतस्त्वाप्यजन्मराजा शो भूत इति चात्रर्षीत् ।
 ८. ल भ—मन्त्रिणो जनकस्यापि रामिं परमसत्कृताः ।
 ९. कै—व्यूषुर्वि० । ल भ—ऊचुः प्रमुदितस्तत्र ।
 १०. ल भ—दूतवाक्यं ।
 ११. कै रा—सहसितमः । ज—वदपंचाशत्तमः ।
 व ल भ—वालि ।

[वं-७१]

[पञ्चषष्टितमः सर्गः]

[दा-६९]

तेस्यां रात्रौ व्यतीतायां सोपाध्यायो नराधिपः ।

१] राजा दैशरथः श्रीमान् सुमन्त्रमिदमब्रवीत् ॥१॥ [१]

अद्य सर्वे धनाध्यक्षा धनमार्दाय पुष्कलम् ।

२] निर्यान्त्वग्रे समारोप्य नानारत्नचयान् मम ॥२॥ [२]

चतुरङ्गं च मे सर्वं बलं निर्यातुं सर्वज्ञः ।

३] ममाज्ञासमकालं च युञ्ज्यतां युग्यमुत्तमम् ॥ ३ ॥ [३]

वसिष्ठो वामदेवश्च जोबालिः कश्यपो भृंगुः ।

४] मार्कण्डेयश्च दीर्घायुर्मुनिः कात्यायनस्तथा ॥ ४ ॥ [४]

एते द्विजाः प्रयान्त्वग्रे स्वैन्दनैः सहिता भैया ।

१. ल भ—अथ ।

२. ज ल भ—रात्र्यां ।

३. ल भ—दैशरथो इष्टः ।

४. कै—धनमाधाय ।

५. ल—ब्रजंत्वग्रे सुविहिता नानारत्नसमन्विताः ।

भ—ब्रजंत्वग्रे " "

६. रा—ते ।

७. ज—शीघ्रं ।

८. व—निर्यातुः ।

९. ल भ—चतुरङ्गं बलं चापि शीघ्रं निर्यातुं सर्वज्ञः ।

१०. ल—यातु युग्यमनुत्तमम् । भ—यानयुग्यमनुत्तमं ।

११. रा—सयोरुगः । ल—जाबालिरथ काश्यपः ।

भ—जाबालिरथ काश्यपः ।

१२. कै व—मार्कण्डेयरथ । रा—पुनः शोधनेन मूढसंगताः ।

१३. ल भ—स्वदंनं योजयाद्भु मे ।

- ५] यथा कालात्ययो न स्याद्दृता हि त्वरयन्ति माम्॥५॥ [५
 इत्याकर्ण्य नरेन्द्रस्य सेनां सां चतुरङ्गिणी ।
 ६] राजानमृषिभिः सार्धं व्रजन्तं पृष्ठतोऽन्वगात् ॥ ६ ॥ [७
 चतुर्भिस्तानहोरात्रैर्विदेहानुपजग्मिबान् ।
 ७] ददर्श मिथिलां रम्यां जनकेनोपशोभिताम् ॥ ७ ॥
 ८पृ] प्रत्युद्रम्याथ जनकस्तेषां पूजामकल्पयत् । [८
 ८] सै तं राजानमासाद्य वृद्धं दशरथं नृपम् ॥ ८ ॥
 ८उ] उवाच जनकः प्रीतः शतज्जन्दसमन्वितः । [९
 स्वागतं ते महाराज दिष्ट्या प्राप्तोऽसि मे' गृहम् ॥९॥
 ९] पुत्रयोरुभयोः 'प्रीतिं दिष्ट्या प्राप्स्यसि रोगव । [१०

१. ल भ—वचनात् ।

२. ल भ—निर्ययौ ।

३. ल भ—पृष्ठतोन्वगात् ।

४. ल—०विदेहानभ्युपेयिवान् ।

भ—०विदेहानभ्युपेयिवान् ।

५. व—जनकस्तेजा

६. ल भ—नास्ति ।

७. रा—समं । ल भ—ततो ।

८. ल—तदा ।

९. ल भ—जनको मुदितो राजा प्रहर्षं परमं वचौ ।

उवाच च नरश्रेष्ठो नरश्रेष्ठं मुदान्वितः ।

जनकः श्लक्ष्णया वाचा वृद्धं दशरथं नृपं ।

१०. ल भ—राजव ।

११. ल भ—प्रीतिः प्राप्यतां वीर्यनिर्जिता ।

- दिष्ट्या प्राप्नो महाराज वसिष्ठो भगवानयम् ॥१०॥^१
- १०] मार्कण्डेयादयश्चैव दिष्ट्या प्राप्ता महर्षयः । [११
दिष्ट्या मे निर्जिता विघ्ना दिष्ट्या मे पूजितं कुलम् ॥११॥
- ११] राघवैः सह संबन्धं कृत्वा प्रार्थितसद्गुणैः । [१२
अद्य मे सफलं जन्म प्राप्तं चाद्य क्रियाफलम् ॥१२॥^१ [N
- १२] अद्य पृतोऽस्मि राजर्षे त्वत्संबन्धात् सबान्धवः ।
अमीषां च महर्षीणामद्याभ्यागमनार्दहम् ॥ १३ ॥^१ [N
- १३] सविशेषतरं पृतो राजभाष्यायितस्त्वया ।^१ [N
श्वः प्रभाते महाराज निवर्तयितुंमर्हसि ॥ १४ ॥
- १४] यज्ञस्यावभृथे पुण्यमुद्राहृषिभिः सह ।^१ [१३
तस्य तद्भवचनं श्रुत्वा राजा दशरथस्तदा ॥^१ १५ ॥

१. ल भ—महातेजा ।
२. ल भ—भगवानृषिः ।
३. के—दशमश्लोके एकादशश्लोके चेत्यं पाठः—
पुत्रयोरुभयोः प्रीतिं दिष्ट्या मे पूजितं कुलम् ।
४. व—मार्कण्डेयादयः० ।
५. ल भ—सह सवैर्द्विजगवैर्देवैरिव शतशतः ।
६. ल—संनिर्जिता ।
७. ल—राघवै सह संबन्धाद्वीर्यभैर्यमहाबलैः ।
भ—राघवैः ,, संबन्धाद्वीर्यभैर्यमहाबलैः ।
८. कै रा—०मवाभ्यागमना० ।
९. ल भ—नास्ति ।
१०. ल—निर्वापयतु । भ—निवर्तयितुमर्हसि ।
११. ल—यज्ञस्यांते महाराज विषाहृषिसंमतं ।
भ— ,, ,, ,, समितं ।
१२. ज—दशरथस्तथा ।
१३. ल भ—ततस्तद्भवचनं श्रुत्वा मुनिमन्ये वराधिपः ।

- १५] ऋषिमंध्य उवाचैवं जैनकं मिथिल्लाधिपम् ।^१ [१४
 राजन् प्रतिग्रहीतारः स्मृता दातृवशाः किल ॥१६॥^२ [N
 १६] यद् वक्ष्यसि र्यदा चैवं तत्कर्तारस्तदा वयम् ।
 श्लक्ष्णं चैवानुरूपं च वचनं प्रियवादिनः ॥^३ १७ ॥ [N
 १७] तद्दे रोगो जनकः श्रुत्वा परं विस्मयमागतः ।^४ [१६
 ततः सर्वे मुनिगणाः परस्परसमागमे ॥ १८ ॥
 १८] हर्षमेत्य परं तत्र निशां तामवसंस्तदा ।^५ [१७
 कथयन्तः कथा हृद्याः पुण्यश्रवणकीर्तिनाः ॥^६ १९ ॥
 १९] परस्परप्रभावज्ञाः पूजयन्तः परस्परम् । [N
 विश्वामित्रं च दृष्ट्वा राजा, श्रयस्तदा ॥ २० ॥ [N

१. ज—ऋषिमध्ये ।
 २. कै—मिथिलं जनकाधिपम् ।
 ३. ल भ—वाक्यं वाक्यविदां श्रेष्ठः प्रःनुवाच महीपतिः ।
 ४. रा ज—प्रतिग्रहीतारः ।
 ५. व—दातृवशात् ।
 ६. ल—प्रतिग्रहो दातृवशाः अतमेतत्पुरा मया ।
 भ— ,, ,, न्मया पुरा ।
 ७. ल भ—कथा ।
 ८. ल—धर्मज्ञ । भ—धर्मज्ञ ।
 ९. ज—तत्कारश्च तदा । ल भ—तत्करिष्यामहे ।
 १०. ल—तद्धर्मिष्ठं च वचनं वरिष्ठं सत्यवादिनः ।
 भ—तद्धर्मिष्ठं वरिष्ठं च वचनं सत्यवादिनः ।
 ११. ज ल—तद्वाज्ञे ।
 १२. ल—अस्वा विदेहाधिपतिः परं विस्मयमागमत् ।
 भ— ,, ,, ,, विस्मयमागतः ।
 १३. ल भ—वास्ति ।
 १४. ल भ—कथयन्तः कथां दिव्यां हृद्यां ओन्नतुत्सावहाम् ।
 १५. ल भ—सु ।

- २०] शिरसा प्रेणतः प्रीत्या बबन्दे दृष्टमानसः ।
भवन्तं नाथमासाद्य पौबितोऽस्मीति चाब्रवीत् ॥२१॥ [N
- २१] विश्वामित्रोऽपि चैवेनं प्रीतिमानिदमब्रवीत् ।
पूत एवासि राजर्षे त्वमेतैः कर्मभिः शुभैः ॥२२॥ [N
- २२] अनेन चापि पुत्रेण रामेणाविलष्टकर्मणा ।
पूतोऽसि श्लाघनीयश्च देवानामपि सम्मतैः ॥२३॥ [N
- २३] एष ते नृपते पुत्रो रामो निर्यातितो मया ।
लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा कुशली रघुनन्दन ॥२४॥ [N
- २४] इत्युक्तो मुमुदे राजा विश्वामित्रेण धीमता ।
तौ चापि पुत्रावाघ्राय परिष्वज्य च पीडितैः ॥२५॥^{१०} [N
- २५] उवास स निशां तत्र सुंसुखी दृष्टमानसः ।^{११}

१. ल भ—प्रणतो भूत्वा ।

२. ल—पूर्वतोऽस्मि च तेजसा ।

भ—पूर्वोऽस्मि तव तेजसा ।

३. ल—पूर्व ।

४. ल—सुकृतै । भ—सुकृतैः ।

५. ल भ—रामेश्यामिततेजसा ।

६. ल भ—श्लाघनीयोसि ।

७. ल भ—संगमे ।

८. ज ल—भ्राता ।

९. ल भ—निपीडितौ ।

१०. अतः परमाधिकः पाठः—

ल—इत्येव महताविदृस्तां निशामनबन्धिवाम् ।

भ— ” ” निशामनबन्धिवाम् ।

ल—स तैः पुत्रैः परिवृतो निशां परमहर्षितैः ।

भ— ” ” ” ” ” परमहर्षितैः ।

११. रा—ससुखी ।

१२. ल भ—स उवास श्रुयं प्रीतो जनकेन सुपूजितः ।

जनकोऽपि तंदा राजा क्रिया धर्मेण धर्मवित्
 २६] कृत्वा यज्ञोचिताः सर्वास्तां रात्रिमवसत् सुखम् ॥२६॥ [२०

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे दशरथसमागमो नाम
 पञ्चषष्ठितमः सर्गः ॥६२५॥

१. रा—ततो० । ल भ—महातेजाः ।

२. भ—क्रियां ।

३. ल—यज्ञस्य सुतयोर्द्वैव कृत्वा रात्रिसुवास इ ।

भ—यज्ञस्य " " " ।

ल भ—रामजामातरं खण्ड्या इष्टः परमधार्मिक ।

४. कै रा—नामैकसहिततमः ।

ज—नाम सप्तपंचाशत्तमः । व—नाम ।

५. ल भ—सर्गसनाशिर्न दृश्यते ।

[वं=७२]

[षट्षष्टितमः सर्गः]

[दा=७०]

ततः प्रभाते जनकः कृतपूर्वाह्निकक्रियः ।

१] उवाच मेधुरं वाक्यं शैतानन्दं पुरोधसम् ॥ १ ॥ [१

भ्राता ममानुजः श्रीमान् वीर्यवानाङ्गया मम ।

२] कुशध्वज इति ख्यातो योऽध्यास्ते नगरं शुभम् ॥२॥ [२

चर्यादालकपर्यन्तं पिबन्निक्षुमतीं नदीम् ।

३] सांकाश्यं दिव्यसांकाश्यं विमानमिव पुष्पकम् ॥३॥ [३

तमहं द्रष्टुमिच्छामि नानार्थो हि स मे मृतः ।

४] प्रीयते हि महासत्त्वः स मया राजसत्तमः ॥४॥ [४

तस्याय शासनाद् दूतास्तं गत्वा शीघ्रयायिनः ।

५] आनयामासुरव्यग्रा विष्णुमिन्द्राङ्गया यथा ॥५॥ [५

स तस्य शासनाद् भ्रातुराजगाम कुशध्वजः ।

१. ल—कृतकामः महर्षिभिः । भ—कृतकामो महर्षिभिः ।

२. ल भ—वाक्यं वाक्यज्ञः ।

३. भ—शातानन्दं ।

४. ज—पुरोहितं ।

५. ल भ—भ्राता मम महातेजा वीर्यवानतिर्धामिकः ।

६. कै भ—चर्यादालकपर्यन्तं ।

७. कै—०सांकाशं । ज ल—दिव्यसंकाशं ।

८. ल भ—यज्ञगोसारमेव तु ।

९. ल—प्रीतिं सोऽपि महातेजाः प्रीतियुक्तो महावक्त्राः ।

भ—प्रीतः ,, ,, ,, ,,

१०. ल भ—शासनात् नरेन्द्रस्य प्रयाताः शीघ्रवाहनाः ।

११. ल—आनयामासुरवास्ता विष्णुमिन्द्राङ्गयेव च ।

भ— ,, ख्याग्रा ,, ,,

१२. ल भ—आङ्गया तु नरेन्द्रस्य आगतः स कुशध्वजः ।

- ६] ददर्श चोपसृत्याशु जनकं भ्रातृवत्सलम् ॥ ६ ॥ [८
 सोऽभिवाद्य शतानन्दं जनकं च महीपतिम् ।^{*}
- ७] अध्यतिष्ठदनुज्ञातो राजाहं परमासनम् ॥^{१७} ॥ [९
 सहोपविष्टौ तौ तत्र प्रेषयामासतुस्तदा ।
- ८] मन्त्रिश्रेष्ठं समाहूय सुदामानं समाहितौ ॥^८ ॥ [१०
 गच्छ मन्त्रिवराभ्येत्य शीघ्रं दशरथं नृपम् ।
- ९] आनयेह सहामात्यं सपुत्रं सपुरोधसम् ॥^९ ॥ [११
 उपकार्या स गत्वा तमिक्ष्वाकुकुलनन्दनम् ।
- १०] दृष्ट्वा दशरथं प्रह्वः सोऽभिवाद्ये तब्रवीत् ॥^{१०} ॥ [१२

१. रा.—चोपसृत्याश्च । ल भ—च महात्मानं ।

२. ल भ—धर्मवत्सलं ।

३. ल भ—अभिवाद्य महात्मानं शतानन्दं सपार्थिवं ।

४. ल—राज्याहं परमं दिव्यमध्यारोहत्तदासनम् ।

भ—राजाहं ,, दिव्यमध्यारोहत्तदासनं ।

५. ज—तत्रैव ।

६. ल भ—उपविष्टौ सुखासीनौ महाभागौ महाबलौ ।

ल—मन्त्रिमुख्यं सुदामानं प्रेषयामासतुस्तदा ।

भ—मन्त्रिश्रेष्ठं ,, ,,

७. ल भ—धामं ब्रह्मस्व शीघ्रं तमिक्ष्वाकुममितप्रभं ।

आत्मजैः सह बुद्धयै सोपाध्यायं समन्त्रिणम् ॥

८. रा ज—उपकार्यं ।

९. कै रा—प्राहः ।

१०. ल भ—उपकार्यं कृतं तं तु इक्ष्वाकुकुलनन्दनं ।

ल—दृष्ट्वा दशरथं प्राह सोभिवाद्य महामतिः ।

भ— ,, ,, ,, कृताञ्जलिः ।

अयोध्याऽधिपते देवं वैदेहो मनुजेश्वरः ।

- ११] त्वां द्रष्टुमिच्छति क्षिप्रं सोपाध्यायं सवान्धवम् ॥^१११॥ [१३
मन्त्रिश्रेष्ठवचः श्रुत्वा राजा सर्षिगणस्तदा ।
- १२] सबन्धुरगमत् तत्र यत्र राजा सं मैथिलः ॥१२॥ [१४
तमासाद्य च राजानं राजा दशरथस्ततः ।
- १३] वाक्यं वाक्यविदां श्रेष्ठो वैदेहमिदमब्रवीत् ॥१३ [१५
विदितं ते यथाऽस्माकमिक्ष्वाकुकुलदैवतम् ।^५
- १४] र्वक्ता धर्मकार्येषु वसिष्ठो भगवानृषिः ॥१४॥ [१६
मिश्वामित्राभ्यनुज्ञातः सर्वैश्चैवं महर्षिभिः ।
- १५] एष वक्ष्यति 'नः सर्वे यथाधर्मं यथाक्रमम् ॥१५॥ [१७
दुष्णीभूते दशरथे 'वसिष्ठो भगवानृषिः ।
- १६] उवाचेदं वचो धर्म्यं जनकं सपुरोहितम् ॥^७१६॥ [१८
आकाशप्रभवो ब्रह्मा शाश्वतो नित्यमव्ययः ।
- १७] तस्मान्मरीचिः संजज्ञे मरीचेः कश्यपः सुतः ॥^७१७॥ [१९

१. ल—वीर विदेहस्त्वां नरेश्वर । भ—वीर वैदेहस्त्वां नरेश्वर ।

२. ल भ—द्रष्टुमिच्छति धर्मेण सोपाध्यायः सवान्धवः ।

३. ल भ—स राजा यत्र ।

४. ल भ—समासाद्य ।

५. ज—Orथस्तदा । ल भ—सोपाध्यायगणैर्वृतम् ।

६. ल भ—वै वाक्यकुशलो ।

७. ल भ—विदितोयं यथा राज्ञिक्ष्वाकुकुलं दैवतम् ।

८. ल—वक्ता सर्वेषु लोकेषु । भ—वक्ता सर्वेषु काण्डेषु ।

९. ल भ—सर्वैश्च परमर्षिभिः ।

१०. ल—धर्मात्मा यथायोगं । भ—धर्मात्मा यथायोग्यं ।

११. ल—वसिष्ठं ।

१२—ल भ—वाग्विदां परः ।

१३. ल भ—उवाच वाक्यं वाक्यज्ञो वैदेहं सपुरोचस्य ।

- मारीचादङ्गिरास्तस्मात् प्रचेतास्तनयोऽभवत् ।
 १८] मेनु प्रचेतंसः पुत्र इक्ष्वाकुस्तु मनोः सुतः ॥१८॥ [२०
 स इक्ष्वाकुरयोध्यायां राजाऽभूत् प्रथमः पुरि ।
 १९] इक्ष्वाकोस्तु सुतः श्रीमान् विकुक्षिरुदंपद्यत् ॥१९॥ [२१
 विकुक्षेस्तु महातेजा बाणः पुत्रो व्यजायत । [२२३
 २०] बाणस्य तु महातेजा अनरण्यः प्रतापवान् ॥२०॥ [२३४
 अनरण्यात् पृथुर्जज्ञे त्रिशङ्कुश्च पृथोरपि । [२३५
 २१] त्रिशङ्कोरभवत् पुत्रो धुन्धुमारो महायशाः ॥२१॥
 धुन्धुमारसुतो राजा युवनाश्वो महाबलः ।
 २२] युवनाश्वसुतश्चासीन्मान्धाता पृथिवीपतिः ॥२२॥ [२४
 मान्धातुः सुमहातेजाः सुसन्धिः समपद्यत् ।
 २३] सुसन्धेर्धुवसन्धिश्च द्वितीयश्च प्रसेनजित् ॥२३॥ [२५

१. ल भ—मारीचेः कश्यपाज्जज्ञे विवस्वाङ्गोऽकमावनः ।

२. ल भ—मनुर्विवस्वतः ।

३. भ—आद्देवः प्रतापवान् ।

४. ल—तमिष्वाकुमयोध्यायां राजानं विद्धि पूर्वकम् ।

भ—बाणस्य तु महातेजा ,, ,, ।

५. ल भ—विकुक्षिः समपद्यत् ।

६. ल—बाणः पुत्रः प्रतापवान् ।

भ—बाणपुत्रः ,, ।

७. ज—विकुक्षेस्तु महातेजा अनरण्यः प्रतापवान् ।

८. ल भ—त्रिशङ्कुस्तु ।

९. रा—मांधातुरथ महा० । भ—मांधातुस्तु ।

१०. व भ—सुगन्धिः ।

११. ल—०सन्धिस्तु । भ—सुगन्धेरुदंसन्धिस्तु ।

१२. ल भ—द्वितीयस्तु ।

यज्ञस्वी ध्रुवसन्धेस्तु भरतो नाम वीर्यवान् ।

- २४] भरतात् तु महातेजा असितः समजायत ॥२४॥^१ [२६
 २५उ] सह तेन गरेणैव तैतः सै सगरोऽभवत् ।^२ [३७उ
 सगरादसमञ्जास्तु अंशुमानसमञ्जसः ॥२५॥^३
 २६] दिलीपोंऽशुमतः पुत्रो दिलीपस्य भगीरथः । [३८

१. भ—तूर्णसंधेस्तु ।

२. ल भ—नामतः ।

३. भ—भतः परमधिकः पाठः—

यस्यैते प्रतिराजान उदपद्यन्त शत्रवः ।
 हैहयास्तालजंघाश्च क्षुराश्च शशबिन्दवः ।
 तांस्तु स प्रतियुष्मन्दि युद्धे राजा प्रवासितः ।
 हिमबंतमुपागम्य भार्याभ्यां सहितस्तदा ।
 असितोत्पको राजा मंत्रिभिः सहितस्तदा ।
 द्वे चास्य भार्ये गर्भिण्यौ बभूवतुरिति श्रुतिः ।
 एका गर्भविघातार्थं सपत्न्यै सागरं ददौ ।
 ततः दौल्लवरं रम्यं बभूवाभिरतो मुनिः ।
 भार्गवश्चावनो नाम हिमबंतमुपाश्रितः ।
 तत्र पैका महाभागा भार्गवं देववर्षसं ।
 पद्मपत्रविशाखाची कांक्षती परमं सुतं ।
 तस्मिंसाभ्युपागम्य कालिंदी चाम्यवाद्भवत् ।
 स तामम्यवदद्विप्रो पुत्रेऽपुं पुत्रजन्मनि ।
 तव कुचौ महाभागे सुपुत्रः संभविष्यति ।
 महावीर्यो महातेजा अचिरादुद्भविष्यति ।
 गरेण सहितः श्रीमान्मा शुचः कमलोत्तणे ।
 प्यवनं तु जमस्कृत्य राजपुत्रं व्यजायत ॥

४. भ—तस्मात्स ।

५. ल—महातेन गरेणैव तस्मात्स सुगभोभवत् ।

६. ल भ—सगरस्यासमंजोभूवसमंजसुतोंऽशुमान ।

- मगीरयात् केकुत्स्यश्च केकुत्स्याच्च रघुस्तथा ॥२६॥ [३९
 २७] रघोस्तु वंशे तेजस्वी वैवृद्धः पुरुषादकः ।
 कल्पाषपादो ह्यभवच्छंखैलस्तस्य चात्मजः ॥२७॥ [४०
 २८] सुदर्शनः शंखलस्य अग्निवर्णः सुदर्शनात् ।
 शीघ्रगस्त्वग्निवर्णस्य शीघ्रगादभवन्मनुः ॥२८॥
 २९] मनोस्तु सुश्रुतो ह्यासीदम्बरीषस्तु सुश्रुतात् ।
 अम्बरीषस्य पुत्रोऽभून् नहुषः पृथिवीपतिः ॥२९॥ [४१
 ३०] नहुषस्य ययातिश्च नोभागश्च ययोतिजः ।
 अजो नाभागपुत्रस्तु तस्माद्दशरथोऽभवत् ॥३०॥ [४२
 ३१] राज्ञो दशरथस्यैतौ तेजयो रामलक्ष्मणौ ।
 आमनोरतिशुद्धानां राज्ञाममिततेजसाम् ॥३१॥ [N

१. ल भ—केकुत्स्यस्तु ।

२. ल भ—केकुत्स्यात् ।

३. ल—रघुः स्मृतः । भ—रघुः पुनः ।

४. ल भ—विवृद्धः ।

५. ल भ—राजाभूत्स्वनकस्तस्य ।

६. ल भ—सुदर्शनस्तु कवकादग्निवर्णः ।

७. ल भ—शीघ्रगस्त्वामवन्मनुभिः ।

८. ल भ—पुत्रेः प्रस्तुको ह्यासीदम्बरीषः प्रसुस्तकात् ।

९. ल—नहुषात् ।

१०. ल भ—ययातिस्तु ।

११. भ—नाभागस्तु ।

१२. ल—ययागतः ।

१३. ल भ—दुपाद्दशरथाज्जालो भावरो रामलक्ष्मणौ ।

- ३२] कंकुत्स्थेक्ष्वाकुसगररघुप्रवरजन्मनाम् ।
 उदाराचारसत्त्वानां सत्रधर्मानुपालिनाम् ॥३२॥^१ [N
- ३३] कुले जलनिधिप्रख्ये जातयोर्वृत्तशालिनोः ।^१ [N
 रामलक्ष्मणयोरर्थे वरयाम्यात्मजे तव ॥३३॥ [४५
- ३४] सदृशाभ्यां तु सदृशे सुते त्वं दातुमर्हसि ।^१
 इत्युक्तो जनको राजा कृताञ्जलिरभाषत ॥३४॥ [N
- ३५] अस्माकमपि राजर्षे कुलं त्वं श्रोतुमर्हसि ।^१
- ३६पू] कैन्यादाने 'हि' वक्तव्यं कुलं निरवशेषतः ॥३५॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे कुञ्जप्रशंसनं नाम

षट्षष्टितमः सर्गः ॥६६॥^{१२}

१. रा ज—कंकुत्स्थे० ।
२. ल भ—नास्ति ।
३. ल भ—कुलर्षसांनुरूपिययौ कुलवंशानुरूपयोः ।
४. ल—वरयोराम्भजे ।
५. ल भ—नरभ्रेष्ठ सदृशे ।
६. अतः परमित्थं सर्गसमाप्तिपरः पाठः—
 ल—इत्यार्षे रामायणे भादिवंशकीर्तनं नाम सर्गः ।
 भ—इत्यार्षे रामायणे वंशकीर्तनो नाम सर्गः ॥६६॥
७. ल भ—एवमुक्तोय जनकस्तमुवाच कृताञ्जलिः ।
८. ल भ—श्रोतुमर्हसि धर्मज्ञ कुलं नः शृण्वतां वर ।
९. ल भ—प्रदाने स्वस्य ।
१०. कै—कुलप्रवंशकीर्तनं ।
 ज—रघुवंशवर्णनं ।
११. कै—द्विसप्ततितमः । रा—द्विसप्ततितमः ।
 ज—अष्टपंचाशत्तमः । व—नास्ति ।
१२. ल भ—३४ श्लोकस्य पूर्वार्धे एव समाप्तः ।

[वं=७३] [सप्तषष्टितमः सर्गः] [दा=७१]

तत आभाष्य जनको वसिष्ठं वदतां वरम् ।

१] नृपं दशरथं चेदं प्रोवाच वचनं तदा ॥१॥' [१]

राजाऽभूत् त्रिषु लोकेषु विश्रुतः स्वेन कर्मणा ।

२] निमिः परमधर्मात्मा सर्वसस्त्ववतां वरः ॥२॥' [३]

तस्य पुत्रो मिथिर्नाम बभ्रुवानुपमद्युतिः ।

३] तस्यापि जनको नाम जलकस्याप्युदावसुः ॥३॥ [४]

उदावसोरभूत् पुत्रः प्रथितो नन्दिवर्धनः ।'

४] नन्दिवर्धनतश्चासीत् सुकेतुर्नाम पार्थिवः ॥४॥' [५]

सुकेतोरभवत् पुत्रो देवरातो महाबलः ।

५] देवरातस्य तनयो बृहद्रथ इति श्रुतः ॥५॥' [६]

बृहद्रथस्य च सुतो महावीर्यः प्रतापवान् ।'

१. भ—वक्तव्यं कुलजातेन तद्विबोध नरेश्वर ।

ल—नास्ति ।

२. ल—राजाभूत्त्रिषु लोकेषु निमिः परमदुर्बलः ।

३. ल भ—जनितो नेमिपर्वते ।

४. भ—प्रथमो ।

५. ल भ—राजा ।

६. ज—०प्युदावसुः । ल—जनकात्त गदावसुः ।

भ—जबकात् रुदावसुः ।

७. ल—गदावसोस्तु धर्मात्मा महावीर्यो ज्यजावत ।

भ—रुदा " " " "

८. ल भ—नास्ति ।

९. ल भ—नास्ति ।

- ६] महावीर्यस्य घृतिमान् सुघृतिश्च ततोऽभेवत् ॥६॥ [७
 सुघृतेरपि धर्मात्मा घृष्टकेर्तुः सुतोऽभेवत् ।
- ७] घृष्टकेतोरभृचापि हर्यश्वस्तनयस्तथा ॥७१॥ [=]
 हर्यश्वस्य मरुः पुत्रो मरोः पुत्रः प्रसिद्धकः १ ।
- ८] प्रसिद्धकस्य धर्मात्मा राजा कृतिरथः सुतः ॥७॥ [९]
 पुत्रः कृतिरथस्यापि देवमीढे इति श्रुतः ।
- ९] देवमीढेस्य विबुधो विबुधस्यापि चान्धकः ॥८॥ [१०]
 अन्धकस्य सुतश्चासीत् कृतिरोत्त इति श्रुतः । १०
- १०] कृतिरोत्तस्य च सुतः कृतिरोर्मा व्यजायत ॥९०॥ [११]

१. ल भ—सुघृतिस्तस्य चात्मजः ।
 २. ल भ—०केतुरजायत ।
 ३. ल भ—घृष्टकेतोस्तु काकुत्स्थ हर्यश्व इति विभ्रतः ।
 ४. ल—हर्यश्वस्य महत्पुत्रो महत्पुत्रः प्रसिद्धकः ।
 भ— ,, मरुत्पुत्रो मरुत्पुत्रात्मतन्वकः ।
 ५. ल—प्रसिद्धकस्य । भ—प्रसिद्धकस्य ।
 ६. ज—कृतिरथस्ततः । ल—कीर्तिरथस्ततः ।
 भ—कीर्तिरथः सुतः ।
 ७. ल भ—कीर्तिरथस्यापि ।
 ८. ज—देवमेढ ।
 ९. भ—भ्रतः ।
 १०. ज—देवमेढस्य ।
 ११. ल भ—विबुधस्य महान्धकः ।
 १२. ज—कृतरात ।
 १३. ल भ—महान्धकसुतो राजा कीर्तिराता महान्धकः ।
 १४. ल भ—कीर्तिरातस्य ।
 १५. ल भ—काकुत्स्थ ।
 १६. ज—कृतरामा । ल भ - महारामा ।

कृतिरोमसुतश्चापि स्वर्णरोमेति विश्रुतः ।^३

११] स्वर्णरोमोद्भवश्चापि हस्वरोमा मुतो बली ॥११॥ [१२

तस्य पुत्रद्वयं जज्ञे धर्मज्ञस्य महात्मनः ।

१२] ज्येष्ठोऽहमनुजंश्चायं भ्राता मम कुशध्वजः ॥१२॥ [१३

मां तु ज्येष्ठं ततो राज्ये ह्यभिविच्यं पिता ममे ।

१३] कुशध्वजं यौवैराज्ये संक्त्वा रंज्यं वेनं गतः ॥१३॥ [१४

दृष्टे पितरि स्वयति ततोऽहं रघुनन्दन ।^४

१. ज—कृतिरोमसुतश्चासीत् ।

२. म—महारोजस्तु धर्मात्मा हस्वरोमा व्यजायत ।

ल—नास्ति ।

३. रा व—स्वतो ।

४. ल—सुवर्णरोमा काकुत्स्थ हस्वरोयो व्यजायत ।

म— ,, ,, हस्वरोम्यो ,, ।

५. ल भ—यस्य ।

६. ल भ—राजन् ।

७. म—तस्य ज्येष्ठाहमनुजो ।

८. ल भ—भ्राता मम ।

९. म—भियोज्य सुतं ।

१०. ल भ—विनियुज्य ।

११. ज—पितामह । ल भ—नराधिप ।

१२. ल भ—समावेश्य ।

१३. ल—यौवैराज्ये । म—भ्रातरं मे ।

१४. ज—विना ।

१५. ल भ—गते पितरि तस्मिन् स्वर्णरोमेति विश्रुति ।

- १४] भ्रातरं देवसङ्काशमर्षयं स्वशरीरं वत् ॥१४॥
 कस्यचित् त्वथ कालस्य सांकाश्यादागतो नृपः ।
 १५] सुधन्वा बलवीर्याढ्यो मिथिलामबरोधकः ॥१५॥ [१६
 स च मे प्रेषयँद् दूतं यदेतत् ते धनुर्गृहे ।
 १६] तिष्ठत्यभ्यर्चितं दिव्यमेतद् देहीति राघव ॥१६॥ [१७
 तस्य प्रदाने धनुषः सोऽयुध्यत मया सह ।
 १७] हतश्च सं मया राजा सुधन्वा बलगर्वितः ॥१७॥ [१८
 निहत् संमरे चोहं सुधन्वानं महीपतिम् ।
 १८] सांकाश्ये भ्रातरं शूरमभ्यर्षिषं^० कुशध्वजम् ॥१८॥ [१६

१. ल भ—०शं पाठयामि ।
 २. ल भ—कुशध्वजम् ।
 ३. ब—०संकाशादागतो नृप ।
 ल भ—संकाश्यादागमसुरात् ।
 ४. ज—कस्यचित्त्वथ संकारयागतो नृपसत्तमः ।
 ५. कै—स धन्वा । ज—स्वधन्वा ।
 ६. ल भ—वीर्यवान् राजा ।
 ७. रा ल भ—प्रेषयत् ।
 ८. ल भ—शैवं धनुरनुत्तमम् ।
 ९. ल भ—प्रेषयाद्भु नरश्रेष्ठ रत्नभूतं ममेत्युत ।
 १०. ज—प्रधाने ।
 ११. ल—तस्याप्रधाने काकुत्स्थ युद्धमासीन्मया सह ।
 भ—तस्याप्रदाने । „ „ „ ।
 १२. ल भ—प्रसूतो ।
 १३. ल भ—मिथिलामबरोधकः ।
 १४. ल भ—च नरश्रेष्ठ ।
 १५. ल भ—नराधिपं ।
 १६. ज भ—संकारये । ल—संकाशे ।
 १७. कै—शूरमभ्यर्षिषं । रा—०मभिर्षिषं ।
 ज—०मम्यासिन्व ।

कनीयानेष मे भ्राता सत्यसन्धः कुशध्वजः ।

१९] दैदानि सहितोऽनेन बध्नौ तेऽहं सुते नृप ॥१९॥ [२०

सीतां रामाय तनयार्थमृषिलां लक्ष्मणाय च । [२१

२०] वीर्यशुल्का मम सुतां सीता सुरसुतोपमा ॥२०॥ [२२

अयोनिजा समुत्पन्ना वेदीमर्ध्यात् सुमध्यमा ।

२१] तां रामाय प्रयच्छामि पत्नीं वीर्यबलार्जिताम् ॥२१॥ [N

रामलक्ष्मणयो राजन् कुरु गोदानमङ्गलम् ।

२२] पितृश्रीं च भद्रं ते ततो वैवाहिकं कुरु ॥२२॥ [२३

वर्ततेऽद्य मघी राजन् दिवसे तूत्तरे पुनः ।

१. ज—बन्धीयानेष ।

२. ल भ—ज्येष्ठोऽस्याहं महायशाः ।

३. रा भ भ—ददामि ।

४. ल भ—परमप्रीतो ।

५. ल भ—ते रघुनन्दन ।

६. ल भ—भद्रं ते लक्ष्मणाय तथोर्मिलाय ।

७. ल भ—मया दत्ता ।

८. व—देवीमर्ध्यात् । वस्तुतस्तु मात्राविपर्ययपरो ज्ञम एषः ।

९. ल--इति कन्ये प्रयच्छामि त्रिददामि न संशयः ।

भ—इमे ,, ,, त्रिर्दामि ,, ,, ।

१०. ल भ—प्रदानं चानयोर्वध्नौ धर्मोपेक्षाकुलन्दन ।

११. ल भ—गोदानमुत्तमं ।

१२. पितृकार्यं ।

१३. ज—महा ।

२३] फल्गुन्यः प्रतिपत्स्यन्ते विवाहस्तत्र नोऽस्त्वयम् ॥२३॥^१[२४

इत्यार्षे रामायणे बौद्धकारणे जनककुशाकर्षणं नाम
सप्तषष्ठितमः सर्गः ॥६७॥^६

१. के—फल्गुण्याः । रा—फल्गुण्या ।
२. ल भ—अथापि तु महाबाहो तृतीये दिवसे शुभे ।
ल.—फल्गुष्ठीविषये राजं कार्यं कन्यापवर्जनम् ।
भ—फल्गुनीविषये राजन् ” ”
ल—यथा व भ्रातृयोर्वीरधर्मकार्यसुखोदयम् ।
भ—यथावत्पुत्रयोर्वीर धर्मकार्य सुखोदयम् ।
ल भ—क्रियतां देवपूर्व हि प्रथमं कार्यमुत्तमम् ।
३. कै व—नास्ति ।
४. रा—सप्तशुभाराख्याने । ज—जनकवंशवर्षणम् ।
५. कै रा—त्रिसप्ततितमः । ज—एकोनषष्ठितमः ।
व—नास्ति ।
६. ल भ—सर्गसमाप्तिर्न इत्येते ॥

[वं=७४] [अष्टषष्टितमः सर्गः] [दा=७२]

उक्तवाक्ये तु जेनके विश्वामित्रो महामुनिः ।

१] उवाच वचनं वीर्याम् वसिष्ठसहितस्तदा ॥१॥ [१

उभे महोदधिमुख्ये उभयोरपि वै कुले ।

२] ख्यात इक्ष्वाकुवंशे हि जनकानां तथैव च ॥२॥ [N

सदृशोऽपत्यसंबन्धो युवयोरिति मे मतिः ।

३] सीताया ऊर्मिळायाश्च रामलक्ष्मणयोस्तथा ॥३॥ [३

वक्तव्यमस्ति नः किञ्चिद् भूधाऽपि शृणु तन् नृप । [४

४] भ्राता ते सदृशो योऽयं शूरो राजा कुशध्वजः ॥४॥

तस्यास्ति किंलं धर्मात्मन् रूपेणाप्रतिमं भुवि ।

५] कन्याद्वयं राघवार्थे तद् वयं वरयामहे ॥५॥ [५

१. ल भ—वैदेहे ।

२. ल—वीरं वसिष्ठं सहितं नृपं ।

भ—वीरो वसिष्ठसहितो नृप ।

३. ज—मां ।

४. ल भ—अश्विन्यान्वप्रमेयानि कुळानि कुळपुंगव ।

५. ल भ—नृपेक्ष्वाकुविदेहानां नैषां तुल्योस्ति कश्चन ।

६. ल—सदृशो धर्मसम्बन्धो रूपसम्पत्तयैव च ।

भ—सदृशो धर्मसम्बन्धे " "

७. ल भ—रामलक्ष्मणयोरिति ।

८. ल भ—वक्तव्यं ते नरभेष्ट वचनं श्रवतामिहं ।

९. ल भ—अस्मा श्लेष यवीयांस्ते धर्मात्मा हि कुशध्वजः ।

१०. रा.—कुळ ।

११. ल भ—अस्य धर्मात्मनो जित्यं रूपेणाप्रतिमं भुवि ।

१२. ल—राघवाम् ।

१३. ल भ—सुताद्वयं नरभेष्ट धर्मात्मा वरयामहे ।

- धर्मतो भरतस्यार्थे शत्रुघ्नस्य च धीमतः ।
 ६] वध्वौ मे संप्रयच्छ त्वं यदि ते' रुचिता वयम् ॥६॥^२ [६
 पुत्रा दशरथस्यास्य चत्वारोऽमितपौरुषाः ।^१
 ७] लोकपालोपमा वीराः सर्वे सत्यपराक्रमाः ॥७॥ [७
 ऐषामर्थे वयं राजन् भवन्तं वरयामहे ।
 ८] सदृशोऽसि प्रभावेण राघवाणां महीपते ॥८॥ [N
 सम्बन्ध उभयोर्भ्रात्रो र्युवयोः सदृशस्त्वयम् ।^१
 ९] इक्ष्वाकुभि र्धर्मशीलेः सदृशैर्वा प्रजापते ॥९॥ [८
 इत्युदारं वचः श्रुत्वा विश्वामित्रवसिष्ठयोः ।^१
 १०] जनकः प्राञ्जलिर्वाक्यमुवाच मुनिपुङ्गवौ ॥१०॥ [९
 सदृशः कुलसम्बन्धो भवद्भ्यामुपवर्णितः ।^१ [१०३

१. रा—तैरुचिता ।

२. ल भ—भरतस्य कुमारस्य शत्रुघ्नस्य च धीमतः ।

ल—इत्युक्त्वा मुनिशार्दूलं वरयामासमुर्मुपम् ।

भ— „ मुनिशार्दूलौ „ नृप ।

३. ल—पुत्रौ दशरथस्येतौ रूपयौवनशालिनौ ।

भ— „ दशरथस्येमौ „

४. ल भ—भरतश्च महातेजाः शत्रुघ्नश्चापराजितः ।

५. ल भ—तयोरर्थे महाराज ।

६. कै रा ज भ—राघवानां

७. ल भ—कुशम्बजसुताभ्यां च प्रदानमभिरोचय ।

८. ल भ—उभयं हि नरभेष्ट सम्बन्धेनावुगृह्यतां ।

९. ल—इक्ष्वाकुकुलमस्यप्रथं भवताञ्च यशस्विनः ।

भ—इक्ष्वाकुकुलमप्यग्रं भवतश्च यशस्विनः ।

१०. ल भ—विश्वामित्रवचः श्रुत्वा वसिष्ठस्य च आचिर्त्त ।

११. ल भ—सदृशात्कुलसंबन्धात्कृतवन्तावपुत्रद्वय ।

- ११] एवं भवत्विमे केन्ये कुशध्वजस्रुते डेभे ॥ ११ ॥
 दैदानि भरतायैकां शत्रुघ्नायं तथाऽपरास् ।^१ [११
- १२] इच्छाम्यहमतिभीतिं सम्बन्धं च पुनः पुनः ॥^२ १२ ॥ [N
- १३] एकाहे राजपुत्राणां चत्वारो रघुनन्दनाः ।^३ [१२पू
- १४] विवाहेषु प्रशंसन्ति नक्षत्रं वै विपश्चितः ॥^४ १३ ॥
 एवमस्त्विति तत् तत्र वसिष्ठः प्रत्यभाषत ।^५ [N
 एवमुक्त्वा वचः सौम्यं प्रत्युत्थाय कृताञ्जलिः ॥१४॥
- १५] उभौ मुनिवरौ राजा जनक्रो वाक्यमब्रवीत् । [१४
 वरधर्मः कृतो ब्रह्मन् शिष्योऽस्मि^६ भवतां सदा ॥१५॥ [१५
- १६] सामान्यः सबलश्चैव परवानास्मि चिन्त्यताम् । [N

१. ल—भवतु भद्रं वो । भ—भवतु भद्रं नः ।
 २. ल भ—हमे ।
 ३. कै—ददामि ।
 ४. ज—भरतायैव ।
 ५. ज—शत्रुघ्ना च ।
 ६. ल भ—पत्न्यौ भजेतां सहितौ शत्रुघ्नभरताशुभौ ।
 ७. ल भ—एकाहेनैव सर्वासां कन्यानां मुनिपुंगवौ ।
 ८. रा—एकाहे राज० । ज—० राजपुत्रीयां ।
 ९. ल भ—पार्ष्णि गृह्णन्तु चत्वारो राजपुत्राः महाबलाः ।
 १०. ल—उत्तरे दिक्से ब्रह्मं फल्गुष्पीनां मनीषिण्यः ।
 भ— ,, ,, ब्रह्मन् फल्गुनभियां ,,
 ११. ल—वैबाहिकं प्रशंसन्ते पूषा ह्यत्र तु वैवस्वतम् ।
 भ— ,, प्रशंसन्ति भगो ह्यत्र सुवैवस्वतम् ।
 १२. कै ज—वरधर्मकृतो । ल भ—वरधर्मकृतः ।
 १३. ल भ—सर्वे ।
 १४. ल भ—शिष्योऽहं ।

- प्रभुर्दशरथो राजा ममास्य विषयस्य च ॥'१६॥
- १७] भवन्तश्चापि सर्वे मे सर्वत्र प्रभविष्णवः । [N
विषयस्यास्य सर्वस्य राज्यस्य मम चेश्वराः ॥१७॥^१
- १८] भवन्तः क्रियतां तस्माद् भवद्भिः प्रणयो मम ।^२ [१६
तथा वेदति वैदेहे^३ जनके प्रश्रितं वचः ॥१८॥
- १९] राजा दशरथो हृष्टः प्रत्युवाच इसर्भिव । [१७
- २०] सर्वस्या अवने राजन् प्रभुरस्मि यथाऽऽत्य माम् ॥'१९॥ [N
अहं तव ममापि त्वं यत् तवास्ति ममैव तत् ।
- २१] विश्वामित्रादयश्चापि ममेवं^४ तव चेश्वराः ॥२०॥^५ [N
सर्वतः प्रणयोऽस्माभिः कृतस्त्वयि महीपते ।
- २२] करिष्यामश्च भूयोऽपि नास्ति नः स्वे विचारणा ॥२१॥^६ [N
युवामसंख्येयगुणौ भ्रातरौ मिथिलेश्वरौ ।
- २३] प्रियौ संबन्धिनौ लब्धौ लोकेऽस्मिन् प्रथितौ मया ॥'२२॥ [N

१. ल भ—राज्ञो दशरथस्येयं यथायोध्यापुरी तथा ।
२. ल भ—प्रभुत्वे नास्ति संवेदो यथेष्टं कर्तुमर्हथ ।
३. ल भ—नास्ति ।
४. ल भ—एवं ।
५. ल भ—ब्रुवति ।
६. ज—वैदेही ।
७. ल—रघुनन्दनः । भ—रघुनन्दनाः ।
८. ल—महीपतिम् । भ—महीपतिः ।
९. ल भ—नास्ति ।
१०. ज—ममैव ।
११. ल भ—नास्ति ।
१२. ल भ—नास्ति ।
१३. ल भ—मिथिलेश्वर ।
१४. ल भ—उत्तमो राजवंशोऽयं युवाभ्यामभिपूजितः ।

- स्वस्ति प्राप्नुहि मद्रं ते गमिष्यामि स्वमालयम् । [१६पू
 २४] गोदानादीनि कर्माणि कर्ता सर्वाप्यनन्तरम् ॥२३॥ [N
 धर्मार्थं वृद्धिकामानां मा नः कालोऽत्यगादयम् ।
 २५] सर्वेषामेव चास्माकमाज्ञां त्वं दातुमर्हसि ॥२४॥^१ [N
 आपृच्छथैव दशरथो राजानं मिथिलेश्वरम् ।
 २६] पुरस्कृत्य वसिष्ठादीन् निर्जगाम मुनींस्ततः ॥२५॥^२ [N
 स गत्वा निलयं राजा कृत्वा श्राद्धं महत्तदौ ।
 २७] पुत्राणां प्रियंपुत्रः स चक्रे गोदानमङ्गलम् ॥२६॥^३ [२२
 गवां शतसहस्रं हि ब्राह्मणेभ्यो नरेश्वरः ।^४
 २८] एकैकशो ददौ तत्रे पुत्रानुद्दिश्य तान् प्रयंक् ॥२७॥ [२२

१. ल—शेषकर्माणि सर्वाणि विधास्ये इति चाब्रवीत् ।

भ—शेषकर्माणि पवाणि विधास्य इति चाब्रवीत् ।

२. कै रा—कालोतिगादयम् ।

३. ल भ—नास्ति ।

४. ल भ—आपृच्छथ तं पुरस्कृत्य मुनिं दशरथो ययौ ।

५. ल भ—श्राद्धं कृत्वा सुपुष्कलं ।

६. ल भ—पुत्रार्थे ।

७. रा—प्रियपुत्रस्य ।

८. ज—गोदानसंक्रुलं । ल भ—०मुत्तमम् ।

९. ल भ—अतः परमाधिकः पाठः—

गवां शतसहस्राणां विधास्ये इति चाब्रवीत् ।

ल—आपृच्छथ जनकं राजा दानमस्यद्भुतं तथा ॥

भ— „ „ „ दानमस्युदयं „ ॥

१०. ल—गवां शतसहस्राणां चत्वारि पुरुषर्षभ ।

भ— „ „ „ पुरुषर्षभः ।

११. ल भ—राजा ।

१२. ल भ—धार्मिकः ।

पयस्विनीनां हि गवां सवत्सानां सुवर्चसाम् ।^२

२९] ददौ शतसहस्राणि चत्वारि रघुनन्दनः ॥२८॥ [२३

ततश्च कृतगोदानो वृतः पुत्रैर्महीपतिः ।

३०] लोकपालैरिव बभौ वृतः साक्षात् प्रजापतिः ॥२९॥ [२५

इत्यार्षे रामायणे बाह्यकाण्डे गोदान-
विधिर्नाम अष्टादशितमः सर्गः ।

१. ज—स्ववर्चसां ।

२. ल भ—सुवर्णशृंगीः सुछन्दाः सवत्साः कांश्यदोहनाः ।

३. ल—वित्तमन्वच्च सुबहु द्विजेभ्यो रघुनन्दनः ।

भ—वित्तमन्वद्बहु वसु " " ।

४. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

ददौ गोदानमुद्दिष्य पुत्राणां पुत्रवत्सलः ।

५. ल—स सुतेः कृतगोदानैर्बृत्तस्तु नृपतिस्तदा ।

भ—सुकृतः " " ।

६. ल भ—विमुर्ध्वतः सौम्यः ।

७. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

मुमुदे तत्र सुप्रीतः स्वर्गे अक इवामरैः ।

८. कौ—चतुः सहस्रितमः । रा—चतुःसप्तति ।

ज—बह्वितमः । व—नास्ति ।

९. ल भ—सर्गसमाप्तिर्न इत्येते ।

[वं=७५] [एकोनसप्ततितमः सर्गः] [दा=७३]

- यमेव दिवसं राजा चक्रे गोदानसत्क्रियाम् ।
 १] तमेव दिवसं तत्र युधाजित् प्रैत्यपद्यत ॥१॥ [१]
 पुत्रः केकेयराजस्य शूरो भरतमातुलः ।
 २] दृष्ट्वा पृष्ट्वा च कुशलं राजानं परिष्वजे ॥२॥ [२]
 युधाजिञ्चापि संपूज्य पर्यपृच्छदनामयम् ।
 ३] पृष्ट्वा चानामयं पश्चादिदं वचनमब्रवीत् ॥३॥ [N]
 N] केकयादिनिवासानामन्धेष्वांमनि पार्थिवः ।° [N]
 केकयाधिपती राजन् स्नेहात् कुशलमब्रवीत् ॥४॥
 ४] येषां कुशलकामोऽसि तेषां कुशलमुत्तमम् ।° [३]
 स्वस्त्रेयं द्रष्टुकामो हि'° त्वां राजन् सहबान्धवम् ॥५॥

१. ज—गोदानमंगलं । ल भ—गोदानमुत्तमं ।

२. ल—द्वारैः । शूरो ।

३. ज—०प्रत्यपद्यत । ल भ—जितुपयात्तवान् ।

४. कै ल—केकय० ।

५. भ—साक्षाद् ।

६. कै—०परिष्वजे । ज—पश्चाद्गोदानमब्रवीत् ।
 भ—राजानमिदमब्रवीत् ।

७. ल भ—नास्ति ।

८. ल—येषां कुशलकामः स तेषां पृच्छन्त्यनामयं ।
 भ—, , , , पृच्छन्त्यनामयं ।

९. कै रा—स्वभ्रेयं । भ—स्वस्त्रीयं ।

१०. ल भ—मम राजेन्द्र ।

११. रा—०स सर्वाभयं । ज—त्वां च राजन् सर्वाभयम् ।

ल भ—द्रष्टुकामो महीपतिः ।

- ५] स्वपुरादागतः शीघ्रमयोध्यां रघुनन्दन । [४
 श्रुत्वा चाहमयोध्यायामिहस्थं त्वां सबान्धवम् ॥६॥ [५पु
 ६] त्वरावानुपयातोऽहं द्रष्टुं ते वृद्धिमीप्सिताम् । [६पु
 तं सै राजा दशरथः प्रियातिथिसुपार्गतम् ॥७॥
 ७] दृष्ट्वा परमसत्कारैः पूजाऽहं प्रत्यपूजयत् । [७
 ततस्तामुषितो रात्रिं सह पुत्रैर्महीपतिः ॥८॥
 ८] पुरस्कृत्य वसिष्ठादीन् मुनीन् यज्ञमुपाययौ । [८
 युक्ते मुहूर्ते वैवाहे महाऽर्हाम्बरभूषणैः ॥९॥
 ९] कृतकौतुकमङ्गल्यैः पुत्रैः दशरथो वृतः । [९
 वसिष्ठं पुरतः कृत्वा तांश्चैवान्यान् महामुनीन् ॥१०॥ [१०पु

१. ल भ—तदर्थमुपयातोहमयोध्यां ।

२. ल भ—श्रुत्वा स्वहमयोध्यायां विवाहेषु समागमं ।

३. ज—वृद्धिमीप्सितं ।

४. ल भ—त्वराभ्युपयातोस्मि द्रष्टुकामः स्वसुः सुतम् ।

५. ल भ—अथ ।

६. ल भ—प्रियातिथिसुपस्थितं ।

७. ल भ—पूजार्हमपूजयत् । म—पूजार्हमपूजयत् ।

८. ल भ—०मुषितो ।

९. ल भ—पुत्रैर्महात्माभिः ।

१०. ल भ—मुनिं तदा पुरस्कृत्य यज्ञवाटमुपागमत् ।

११. ल भ—विजये ।

१२. ज—वरावराभिभूषणैः । ल—सर्वाभिरवपूजितैः ।

म—०भूषितैः ।

१३. ल भ—वसिष्ठमग्रतः कृत्वा सर्वाश्चैव द्विजर्षभान् ।

- १०] यथान्यायमुपागम्य राजा वैदेहमब्रवीत् । [११
 प्राप्ताः स्म राजन् भद्रं ते विवाहार्थं सदस्तव ॥११॥ [N
 ११] तत् साधु चिन्तयित्वाऽस्मान् प्रवेशयितुमर्हसि ।^२
 स्थिता हि ते वशे सर्वे वयमद्य सबान्धवाः ॥१२॥ [N
 १२] स्ववंशधर्माद्युचितं कुरु वैवाहिकं क्रमम् । [१३उ
 इत्युक्तः मरमोदारं वाक्यं वाक्यविशारदः ॥१३॥
 १३] प्रत्युवाच ततो राजा मैथिलस्तं नराधिपम् ।^३ [१४
 कः स्थितः प्रतिहारो मे कस्याज्ञा प्रतिपाल्यते ॥१४॥
 १४] स्वगृहे को विचारस्ते विश्रंभेणं प्रविश्यंताम् । [१५
 यद्गभूमिमिमां प्राप्ताः कृतकौतुकमङ्गलाः ॥१५॥

१. ल भ—उपागम्य वसिष्ठस्तु वैदेहमिदमब्रवीत् ।

राजा दशरथो राजन् कृतकौतुकमंगलः ॥

२. कै—तत्साधु चिन्तयितुमर्हसि ।

३. ल भ—पुत्रैर्नरवरश्रेष्ठ दातारमामिकां चति ।

दातृप्रतिगृहीतृभ्यां सर्वार्थाः प्रभवन्ति हि ।

४. रा—०धर्मायुचितं । ल—स्वधर्मे प्रतिपद्यस्व ।

भ—स्वधर्मं प्रतिपद्यस्व ।

५. ज—वैवाहिकं क्रमं । ल भ—वैवाहमुत्तमं ।

६. रा—इत्युक्त्वा ।

७. ज—०वाक्यविदां वरः । ल भ—वसिष्ठेन महात्मना ।

८. ल—प्रत्युवाच महातेजा वाक्यं परमधर्मवित् ।

भ— „ „ „ परमधर्मतः ।

९. ल—प्रतीहारः स्थितः को मे । कस्याज्ञां संप्रतीक्ष्यः ।

भ— „ „ „ „ „ संप्रतीक्ष्यथ ।

१०. ल भ—यदा राज्यमिदं तव ।

११. ल भ—कृतकौतुककस्यास्तु वेदीमूलमुपागताः ।

- १५] मम कन्याभ्यतप्तो हि' बह्वेदीप्ता ईवार्चिषः । [१६
 सज्जोऽहं त्वत्प्रतीक्षश्च वेद्यामस्यां स्थितो नृप ॥^११६॥
- १६] अविघ्नं कुरु राजेन्द्र किमर्थं त्वं विलम्बसे । [१७
 श्रुत्वैतज्जनकेनोक्तं वाक्यं दशरथो नृपः ॥१७॥
- १७] प्रवेशयामास तदा वसिष्ठादीन् द्विजर्षभान् । [१८
 ततो राजा विदेहानामुवाच रघुनन्दनम् ॥१८॥ [३२पृ
- १८] रामं कमलपत्राक्षं पूर्वं वेदीमुपागतम् । [N
 इयं सीता भयं भृता सहधर्मचरी तव ॥१९॥
- १९] गृहाण पाणिना पाणि त्वमस्या रघुनन्दन । [३३
 लक्ष्मणागच्छ पुत्र त्वमूर्धिलाया मयोर्धृताम् ॥^२२०॥^३

१. ल भ—मम कन्या मुनिभेद ।

२. ल भ—इव त्विषः ।

३. ल भ—सज्जोसि त्वत्प्रतीक्षोस्मि वेद्यामस्यामवास्थितः ।

४. ल भ—च ।

५. ल—तव्यं जन० । भ—तद्वाक्यं जन० ।

६. ल भ—मत्वा ।

७. ल भ—ततः सर्वानृषिगणान्कृत्यः ।

८. ल—रघुनन्दन ।

९. ल भ—पूर्वमेव महापत्न्याः ।

१०. ल भ—नरभेदः ।

११. व—मयोद्धत ।

१२. ज भ—लक्ष्मणागच्छ भद्रं ते त्वमूर्धिलायाः परंतप ।

१३. ल—वादि ।

- २०] गृहाणोपेत्य धर्मेण पार्ष्णि राघव पाणिना । [३७
 तमेवमुक्त्वा जनको भरतं केकयीसुतम् ॥२१॥
- २१] नोदयामास धर्मात्मा माण्डव्याः पाणिसंग्रहे । [३८
 शत्रुघ्नमपि चापीदं जनको वाक्यमब्रवीत् ॥२२॥
- २२] श्रुतकीर्तेर्गृहाण त्वं पाणिना पार्ष्णिमुद्यतम् । [३९
 सर्वे भवन्तु सदृशैर्दरैर्युक्ता यतव्रताः ॥२३॥
- २३] कुलोचितं वै चरंत धर्मं कल्याणमस्तु नः । [४०
 जनकस्य वचः श्रुत्वा पाणींस्त्राञ्जगृहुस्तंदा ॥२४॥
- २४] चत्वारस्ते चतसृणां शतानन्दानुमोदिताः । [४१
 अग्निं प्रदक्षिणं चक्रुस्ततः सर्वे द्वायोक्रमम् ॥२५॥ [४२पृ

१. ज ल भ—गृहाण पाणिना पार्ष्णि मामूक्त्वाकस्य पर्ययः ।

२. ल—साधेवमुक्त्वा ।

३. ल—प्रत्यभाषत ।

४. ज—नोदयामास ।

५. ल भ—गृहीष्व पाणिना पार्ष्णि माण्डव्या रघुनन्दन ।

६. ल—शत्रुघ्नाय धर्मात्मा यथापूर्वं नरेश्वरः ।

भ—शत्रुघ्नाय च धर्मात्मा ,, जनेश्वरः ।

७. रा ज व—भवतः ।

८. ल भ—श्रुतकीर्त्या महाबाहो पार्ष्णि गृहीष्व पाणिना ।
 सर्वे भवतः संहिताः दीर्घकाशमार्गिणिताः ।

९. कै—कुलोचितं ।

१०. व—परित ।

११. रा व—वः ।

१२. भ ल—पत्नीः संपरिगृहीष्वं मा मूक्त्वाकस्य पर्ययः ।

१३. ल भ—कुमारा रघुनन्दनाः ।

१४. ल भ—शतानन्दमते स्थिताः ।

१५. ल भ—शत्रेः ।

१६. ल भ—चक्रुर्वेदी राजानमेव च ।

- २५] राज्ञा कृतस्वस्सयनाः तैश्च सर्वैर्षर्षिभिः ।
पपात पुष्पवृष्टिश्च लाजैर्मिश्रा नमश्चुता ॥ २६॥ [N
२६] तेषामुपरि सर्वेषां विवाहे पुण्यकर्मणाम् ।
देवदुन्दुभयो नेदुरम्बरे मधुरस्वनाः ॥ २७॥ [N
२७] शुश्रुवे मधुरश्चैव वीणावेणुस्वनो महान् ।
जगुश्च देवगन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ २८॥ [४३
२८] विवाहे रघुमुख्यानां तदद्भुतमिवाभवत्
सदृशे वर्तमाने च काले रतिकरे शुभे ॥ २९॥ [४४
२९] त्रिरर्षिं ते परिक्रम्य तास्तद्गुर्वधूः पृथक् ।
स्वानि यानानि चारोप्य दारांस्ते प्रययुस्ततः । [३५
[N

१. ल म—कधीच सुमहात्मानः समार्या रघुनन्दन ।

२. ल म—पुष्पवृष्टिर्महत्वासीदंतारिणेषु भास्वराः ।

३. ज—मधुरस्वराः ।

४. ल म—नास्ति ।

५. ल—शंखदुन्दुभिर्निर्घोषः शंखरावदश्च शुश्रुवे ।

म—, शांतिशब्दश्च ,,

६. ल—ननृतुश्चाप्सरःसंघा गंधर्वाश्च जगुः कळम् ।

म—ननृतुश्चाप्सरो इष्टा ,, ,, ,, ।

७. ल म—साद्ये वर्तमाने तु त्र्योक्कृष्टमिवादिते ।

८. कै—प्रययुस्ततः ज—० स्तदा ।

९. ल—त्रिरर्षीस्ते परिक्रम्य प्रतिजग्युर्षंखस्त्रिवः ।

म—त्रिरर्षीस्ते ,, ,, ।

ल—शंखोपकार्या विविधः प्रहृष्टः रघुनन्दनः ।

म— ,, ,, प्रहृष्टा रघुनन्दनाः ।

३०] राजाऽप्यनुययौ पश्चात् सर्षिसंघः सबान्धवः ॥'३०॥[४६८

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे दशरथपुत्राणां विवाहो नाम
एकोनसप्ततितमः सर्गः ॥६९॥

१. अतः परमधिकः पाठः—

ल भ—अथ दशरथनामा भूपतिः सं बभासे
परिवृत इति पुत्रैर्बन्धुभाभिः समेतैः ।

ल—शशधर इव मेघैर्मुकुटविबोधकज्ञि—
अमवक्ष्याकुवेरैरात्मकांतासमेतैः ॥

भ—शशधर इव मेघैर्मुकुटविबो धसज्ञि—
अमवक्ष्याकुवेरैरात्मकांतासनाथैः ॥

२. ल भ—नास्ति ।

३. अ—दशरथपुत्र ।

४. कै रा—विवाहः । ल—बालवैवाहिको नाम ।

भ—वैवाहिको नाम ।

५. कै. रा— पंचसप्ततितमः । अ—एकसप्तितमः ।

ब ल भ—नास्ति ।

[वं=७६] [सप्ततितमः सर्गः] [दा=७४]

अथ रात्र्यां व्यतीतायां विश्वामित्रो महामुनिः ।

१] आमन्त्र्य तौ नरव्याघ्रौ जगामोत्तरपर्वतम् ॥ १ ॥ [१

विश्वामित्रे गते तैस्मिन् जैनकं मिथिलाधिपम् ।

२] आपृच्छंथ तं ययौ चापि राजा दशरथः पुरम् ॥२॥ [२

अथ राजा विदेहानां तत्र कन्यार्थनं ददौ । [४

३] कंबलाजिनरत्नानि दुर्गूलानि बहूनि च ॥''३॥ [६३

नानारंगीणि वासांसि शुभान्याभरणानि च ।''

४] रत्नानि च मंहाऽर्हाणि यानानि विविधानि च ॥४॥'' [N

गवां शतसहस्राणि चत्वारि पृथगेव च । [५५

१. ल म—आपृच्छथ ।

२. ल—नरव्याघ्रो ।

३. ल म—चापि ।

४. ल म—ददौ ।

५. ल म—आपृच्छथाव जगामाद्य ।

६. ल म—पुरीं ।

७. ल म—ददौ ।

८. कै—कन्याधनो ।

९. ल म—बहु ।

१०. कै—दुर्गूलाणि । ज—दुर्गूलाणि ।

व—दुर्गूलाणि ।

११. ल म—कम्बलादीनि वजाधि चौरपट्टांवरानि च ।

१२. दा—नानारंगीणि ।

१३. कै—नास्ति ।

१४. ज—महाघाति ।

१५. ल म—नास्ति ।

- ५] ददौ राजा महाऽर्हाणि कन्याधनमैभीप्सितम् ॥५॥* [७३
 चतुरङ्गं बलं चान्यर्दभपानं महद् ददौ ।
- ६] दासीनां निष्ककण्ठीनां सहस्रमपि चाददत्ते ॥६॥' [N
 सुवर्णस्यायुतं पूर्वं हिरण्यस्य च मैथिलः ।'
- ७] ददौ प्रीतेन मनसा कन्याधनमनुत्तमम् ॥७॥ [N
 एवं दत्त्वा बहुविधं तमनुज्ञाप्य पार्थिवः ।''
- ८] प्रविवेश 'पुरीं रंभ्यां मिथिलां मिथिलेश्वरः ॥८॥ [८
 राजाऽप्ययोध्याऽधिपतिः सह पुत्रैर्महात्मैभिः ।
- ९] पुरस्कृत्य वसिष्ठादीन् गुरुंस्तान् प्रययौ ततः ॥'९॥ [९
 तं गच्छन्तं कृतोद्गाहं स्वपुरं संपदानुगम् ।''

१. ज—महार्हाणि ।

२. रा—कन्यादानमभिप्सितम् ।

३. ल म—गवां शतसहस्राणि बहूनि मिथिलाधिपः ।

४. रा—०दभपानं ।

५. कै—चारुक्त ।

६. ल—पदातीक्ष द्विपरथा दिग्भरूपानलंकृतान् ।

म—पदात्यश्चद्विपरथाभिदध्यरूपानलंकृतान् ।

७. ज—पूर्ण ।

८. ल—हिरण्यस्य सुवर्णस्य दासीनां च शतशतम् ।

म— " " " शतं शतम् ।

९. ल म—परमसंहृष्टः ।

१०. रा—कन्यादानमनुत्तमं ।

११. ल म—दत्त्वा बहुविधं राजा समनुज्ञाप्य पार्थिवं ।

१२. ल म—स्वमिच्छयं ।

१३. ल—सहस्रपुत्रैर्महा० ।

१४. ल म—क्षपीन् सर्वान्पुरस्कृत्य जगामाहु महाबलः ।

१५. ल—कृतोद्गाहं तं गच्छन्तं सर्षितं सुबान्धवम् ।

म— " तु " " सबान्धवम् ।

- १०] अपसव्यं ततो जग्मुः पक्षिणो मयवेदिनः ॥'१०॥ [N
 युगाश्च शमयन्तस्तान् प्रतिजग्मुः प्रदक्षिणम् । [१०
 ११] तान् दृष्ट्वा व्यथितो राजा वसिष्ठं पर्यपृच्छते ॥११॥' [११
 असौम्याः पक्षिणः कस्मान् युगाश्चेमे प्रदक्षिणाः ।
 १२] अकस्माच्चैव साकम्पं हृदयं केन मे मुने ॥'१२॥ [१२

१. ल भ—बोराः पक्षिगणा वाग्भिः प्रत्याशंसुः समंततः ।

२. ल भ—सौम्याश्चापि युगा भौमा गच्छन्ति स्म प्रदक्षिणं ।

३. कै व ल—तां ।

४. ल भ—राजशार्दूलो ।

५. ल भ—प्रत्यभाषत ।

६. अतः परमधिकः पाठः—

ल भ—भगवन्पश्यतामेतानुत्पातांश्च सुदाह्यान् ।

ल—दिशश्च सर्वा भगवन्भूमोत्पातसमाकुलाः ।

भ—, , भगवन्महोत्पातसमाकुलाः ।

ल—परिवेष्टतथा सूर्ये हरयते तु महागपि ।

भ—परिवेष्टतथा , , सुमहानपि ।

ल भ—तमसा च तमः सर्वं न प्राज्ञायत किञ्चन ।

दृष्ट्वा भयमुपपिष्टं हृदयं मम चामवत् ।

ब्रूहि मे विदितज्ञान भगवन्को ह्ययं विधिः ।

नाम्नो वक्तुमिदं शकस्ववृते मुनिसत्तम ।

किमनिष्टं महद्ब्रह्मण् परयामि सुमहन्नयं ।

७. व—असौम्यः ।

८. ल भ—सम्या ।

९. ल—युगाश्चापि । भ—युगरथाय ।

१०. ल—किमयं हृदयोत्कंपे हृदयं मे विधीदति ।

भ—, , कंपो , , ,

राज्ञो दशरथस्येदं श्रुत्वा वाक्यं तदा मुनिः ।

- १३] वसिष्ठस्तैमुवाचेदं श्रूयतामस्य यत्कलम् ॥१३॥ [१३
 उपस्थितं भयं घोरं पक्षिणो वेदयन्ति ते ।
 १४] प्रदक्षिणं युगाः सौम्यास्तदेव श्रमयन्ति ते ॥१४॥ [१४
 तयोः संबदतोरेवं वायुः प्रादुरभुन्महान् ।
 १५] प्रचण्डः शर्करावर्षी कम्पयन्निव मेदिनीम् ॥१५॥ [१५
 दिशः सतिमिरांश्चासन्नुत्ताप दिवाकरः ।
 १६] रजसा च जगत् सर्वं भस्मनेन्न व्यदीप्यत ॥१६॥ [१६
 सर्वे चाप्यभवंस्तत्र सैनिका मूढचेतसः ।
 १७] वर्जयित्वा वसिष्ठादीनृषींस्तांश्चैव राघवान् ॥१७॥ [१७

१. ल भ—ऽरथस्येतच्छ्रुत्वा ।

२. ल भ—महावृषिः ।

३. ल भ—उवाच महुरां वाषीं ।

४. ल—दिव्यं पक्षिमुत्प्लुतं ।

भ—दिव्यपक्षिमुत्प्लुतं ।

५. ल—युगाः प्रशंसयन्त्येते संतापस्त्वभ्यतामहम् ।

भ— ,, प्रशमयन्त्येते ,, कामयम् ।

६. ल भ—संबदतोस्तत्र ।

७. ल भ—प्रादुर्भूय ह ।

८. ल भ—कंपयन्मेदिनीं शर्का सपर्वतवर्णां शुभां ।

९. ज—सुतिमिरा० ।

१०. ल भ—रजसा संवृतः सूर्यो न प्राज्ञायत किंचन ।

भस्मनेवावृतं सर्वं संमूढभिष तद्दृश्य ॥

११. ल—वसिष्ठ ऋषयश्चाभ्ये राजा च समुत्तस्तदा ।

भ—वसिष्ठो " " " "

१२. ल भ—विसंज्ञा इव तत्रासत्सर्वेभ्ये च विचेतसः ।

- ततो रजसि संज्ञान्ते सैनिका लब्धचेतसः ।
 १८] आयान्तं ददृशुस्तत्र जटामण्डलधारिणम् ॥१८॥ [१८
 महेन्द्रमिव दुर्धर्ष कालान्तर्कयमोपमम् ।
 १९] दुर्निरीक्षं नरैरन्यैर्ज्वलितानलवर्चसम् ॥१९॥ [१९
 स्कन्धे परशुमादाय धनुश्चेन्द्रायुधप्रभम् ।
 २०] प्रगृह्यैकं शरं घोरं रुद्रं साक्षादिवागतम् ॥२०॥ [२०
 रोषामर्षसमाविष्टं सधूममिव पावकम् ।
 २१] जमदग्निमुतं रामं दृष्ट्वाऽभ्याशमुर्षागतम् ॥२१॥ [N
 वसिष्ठप्रमुखा विप्रा जेषुः शान्तिपरायणाः । [२१उ
 २२] सङ्गताश्चर्षयः सर्वे संजर्जल्पुरथो मियः ॥२२॥
 कश्चित् पितृवधामर्षात् पुनर्नोत्सादयिष्यति । [२२

१. ल भ—वर्धिमस्तमसि चोरे तु भस्मकृषेव सा चमूः ।

२. ल भ—ददर्श भीमकर्माणं ।

३. ल—कैलासमिव । भ—कैलासमिव ।

४. ल भ—काळाग्निसिद्धदुःसहं ।

५. ज—दुर्निरीक्ष्यं ।

६. ल भ—ज्वलन्तमिव तेजोभिर्दुर्निरीक्ष्यं पृथक् जगैः ।

७. ज—स्कन्धे ।

८. ल—स्कन्धावसकपरशुं चतुर्भिद्युद्गुण्योपमम् ।

भ--स्कन्धावसकपरशुं " "

ल भ—प्रगृहीतशरं रामं त्रिपुरसं यथा हरं ।

९. ज—दृष्ट्वाभ्याशं समागतं ।

१०. ल भ—तं दृष्ट्वा भीमकर्माणं ज्वलन्तमिव पावकं ।

११. ल भ—जपहोमपरायणाः ।

१२. भ—समजल्पुरथो ।

१३. ल—कश्चित्प्रवधामर्षीत्पुत्रं नोत्सादयेन्पुनः ।

भ--कश्चित्प्रवधामर्षी " " ।

- २३] क्षत्रं रामोऽयमागत्य शान्तमन्युर्गतज्वरः ॥'२३॥ [२२
 सर्वक्षत्रवधं घोरमसकृत् कृतवान् पुरा । [२३
 २४] कश्चिदद्यापि सक्रोधः क्षत्रमुत्सादयिष्यति ॥२४'॥ [२३
 इत्युक्त्वा चार्घ्यमुद्यम्य भगवन्तं ततो ऽद्भुवन् ।'
 २५] वसिष्ठप्रमुखा विप्राः सान्त्वपूर्वमिदं वचः ॥'२५॥ [२४
 राम सुस्वागतं तेऽस्तु गृहाणार्घ्यमिदं प्रभो ।
 २६] मुने भार्गव संशाम्य न क्रौद्धं पुनरर्हसि ॥२६॥' [N
 प्रतिगृह्य स तां पूजां प्रतिनन्द्य च तानृषीन् ।'
 २७] रामं दाशरथिं रामं उवाचेदमन्तंरम् ॥२७॥ [२५
 इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे रामरामसंभोगमो नाम
 सप्ततितमः सर्गः ॥७०॥''

१. ल—पूर्वं क्षत्रवधं कृत्वा भार्गवो विगतज्वरः ।
 भ— „ „ „ गतमन्युर्गतज्वरः ।
 २. ल भ—क्षत्रयोस्सादनं भूयो मा क्त्वत्य चिकीर्षितम् ।
 ३. ज—मादाय ।
 ४. ल—पुत्रमुक्त्वाऽर्घ्यमादाय भार्गवं भिमदर्शनं ।
 भ— „ र्घ्यमादाय „ „
 ५. ल भ—ऋषयो राम रामेति तदा मधुरमब्रुवन् ।
 ६. व—स्वस्वागतं ।
 ७. ज—क्रोधं ।
 ८. ल भ.—नास्ति ।
 ९. ल भ—प्रतिगृह्य तु तां पूजां नामदन्द्यः प्रतापवान् ।
 उवत्तज्ज्वरवधंकाशस्तेजसा मोहयन्निव ।
 १०. ल भ—रामः समुपेत्याम्यभाषत ।
 ११. ज—परशुराम० ।
 १२. कै रा—पदसप्ततितमः । भ—द्विषष्टितमः ।
 १३. ल भ—सर्गसमाप्तिर्नास्ति

वं=७७] [एकसप्ततितमः सर्गः] [दा=७५

राम दाशरथे वीरं वीर्यं ते श्रूयतेऽद्भुतम् ।

१] धनुः किल त्वया भग्नं दिव्यं यत् तच्छ्रुतं मया ॥१॥' [१

२उ] श्रुत्वैवाहमनुभास आदायेदं महद् धनुः ।' [२उ

अनेन धनुषा राम मया कृत्स्ना मही जिता ॥२॥ [N

३] पूरयेदपि क्षिप्रं बलं दर्शय राघव । [३उ

विकर्ष चापं सन्धाय बाणेनानेन राघव ॥३॥' [N

४] गृहाणेदं धनुर्दिव्यं शरं चेयं मयोद्यतम् ।'

शक्रोषि चेद् योजयितुं बाणेनानेन कार्मुकम् ॥४॥' [N

५] ततो दास्यामि चापं ते वीर्यश्लाघ्यमनुचमम् ।' [४उ

१. रा—दाशरथी ।

२. ल भ—शूर श्रूयते ते महद्वदम् ।

३. ल—धनुषो भेदनं सर्वं निश्चिन्नेन मया श्रुतम् ।

भ— " " " निश्चिन्नेन च " "

४. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

तद्वत्श्रुतमधिकं च धनुषो भेदनं त्वया ।

५. ल—अस्वाहं समनुभासो गृहीत्वेयं महद्वदुः ।

भ— " " " गृहीत्वेतन्महद्वदुः ।

६. ल भ—वास्ति ।

७. कै रा—बाणेनानेन ।

८. ल भ—तदिदं समनुभासं आमदन्त्यं महद्वदुः ।

९. ल भ—सगरं परय राम त्वं स्वबलं दर्शयस्व मे ।

१०. कै रा—बाणेनानेन ।

११. ल भ—तदहं ते बलं ज्ञात्वा धनुषोस्य प्रपश्ये ।

१२. ल—धनुं राम प्रदास्यामि वीर्यश्लाघ्यमिदं तव ।

भ— " " " वीर्यश्लाघ्यवदस्तव ।

- तस्येदं वचनं श्रुत्वा राजा दक्षरथस्तदा ॥३॥
- ६] विषण्णवदनो भूत्वा प्राञ्जलिः प्रणतोऽब्रवीत् । [५
राम रोषः प्रश्नान्तस्ते ब्राह्मणस्त्वं शमात्मकः ॥६॥^०
- ७] बाळानां मम पुत्राणामर्भयं दौतुमर्हसि । [६
भृगूणां हि कुले जातः शान्तानां त्वं महात्मनाम् ॥७॥
- ८] तपःस्वाध्यायशीलानां न क्रोदुं पुनरर्हसि । [७
ऋचीकच्यर्वनादीनां पितॄणां सभिधौ पुरा ॥८॥^०
- ९] न योत्स्यामीति सन्त्यज्य शस्त्रमुत्सृष्टुमर्हसि ।^० [N
तपोदर्भरतो भूत्वा कश्यप्यथ वृन्धराप् ॥९॥
- १०] दत्त्वा वनमुपागम्य संन्यासं कृतवान् कैथम् । [८
मम सर्वविनाशाय भूयो योद्धुमिहेच्छसि ॥१०॥

१. ल भ—सस्य तद्वचनं ।

२. ज—०रथस्तथा ।

३. ल भ—विषण्णवदनदक्षरथस्तः प्राञ्जलिर्द्विनमब्रवीत् ।

चात्राहोपाख्यातस्तं ब्राह्मणरथ महायथाः ।

४. ल भ—पुत्राणां नामयं ।

५. ल भ—कृतुमर्हसि ।

६. ल भ—स्वाध्यायव्रतशालिनाम् ।

७. ज—क्रोधं ।

८. कै—०रथवनादीनां । रा—०कश्यपवाही० ।

ज—०कश्यपवना० ।

९. कै व—पितॄणां । रा—पितॄणां ।

१०. ल भ—बाळित ।

११. ल भ—सहस्राद्ये प्रविश्यात् कश्चि विचिह्नयावति ।

१२. ल—वत्सं चर्मरतो । भ—स त्वं चर्मरतो ।

१३. ल भ—महैत्रं कृतकेतव ।

१४. ल भ—संप्राप्तः किं महाशुभे ।

- ११] न ह्येतस्मिन् हते राम जीवामः सर्व एव हि ।
प्रसीद भृगुशार्दूल त्रायस्व शरणागतम् ॥ ११ ॥ [६
- १२] राम पुत्रं न मे बालं रामं सन्दग्धुर्षसि ।
वैदत्येवं दशरथे जामदग्न्यः प्रतापवान् ॥ १२ ॥ [N
- १३] अनाहत्यैवं तद् वाक्यं भूयो राममभाषत ।
द्वे ईमे धैनुषी राम दिव्ये लोकेत्रये भ्रुते ॥ १३ ॥ [१०
- १४] दृढे बलवती मुख्ये निर्मिते विश्वकर्मणा ।
तयोरेकं श्र्यम्बकाय दत्तं राम युयुत्सवे ॥ १४ ॥ [११
- १५] त्रिपुरं जघ्नुषो देवैर्भग्नं कौकुत्स्य तत् त्वया । [१२३

१. ल भ—न वैकस्मिन् हते रामे सर्वे जीवामहे वचं ।
२. ज—गुरुशार्दूल ।
३. ल भ—नास्ति ।
४. ल भ—प्रवत्येवं ।
५. ल भ—अनाहत्य गु ।
६. ल भ—एव ।
७. ज—बभूवे ।
८. ल भ—रथे ।
९. ल भ—त्रेयोक्त्वभिभ्रुते ।
१०. ल भ—सुहृते ।
११. ल भ—अतिदृढं दुरैरेकं श्र्यम्बकाय युयुत्सवे ।
१२. अलः परमधिकः पाठः—
ल—भग्नं कर्मणः विश्वोदय प्रायश्चामितीवोः ।
भ— ” ” श्र्यम्बकायमितीवोः ॥
१३. ल भ—पुराहते वरमेव मयि ।
१४. कै रा—कामुत्सव । अ—कामुत्सव ।

- इदं द्वितीयमपरं विष्णवे यद् ददुः सुराः ॥१५॥ [१३]
 १६] द्रव्यसारबलमाणप्रमाणाकृतिभिः समम् । [N
 ब्रह्माणं यत्र पप्रच्छुः सुराः कौतूहलान्विताः ॥१६॥^१
 १७] शितिकण्ठस्य विष्णोश्च धनुषोर्ध्वं बलाबलम् । [१५
 अभिप्रायं विदिस्वा तं देवानां च पितामहः ॥१७॥^२
 १८] विरोचयामास मियो विष्णुं ऋक्षमेव च । [१६
 विरोधे च महद् युद्धमभवत् तत्र देवयोः ॥१८॥^३
 १९] शितिकण्ठस्य विष्णोश्च परस्परजिगीषया । [१७
 तथैतत् पूरितं शैवं धनुर्भीमपराक्रमम् ॥१९॥
 २०] हुङ्कारेण महादेवं स्तम्भयामास केशवः । [१८
 देवतैस्तु समागम्य सर्षिसंघैः सचारणैः ॥२०॥

१. ल भ—द्वितीयमपि दुर्ध्वं ।
 २. ल भ—समानसारं काकुत्स्थ रौद्रेण धनुषान्वितं ।
 दत्त्वा च देवताः सर्वाः पृष्णान्ति स्म पितामहं ।
 ३. भ—धनुषोर्ध्वं बलाबले ।
 ४. भ—तु देवताप्रपितामहः ।
 ५. ल—वास्ति ।
 ६. ज—तदा ।
 ७. रा—विरोधेन ।
 ८. भ—विरोधं जल्पयामास तयोः सत्ववतां वरः ।
 विरोधे सुमहद्युद्धमभवत्सोमहर्षेण ।
 ल—वास्ति ।
 ९. ल भ—परस्परजैविष्णोः
 १०. ल भ—सत्यं तत्पूरितं ।
 ११. ज—महादेव ।
 १२. रा ज—देवतैस्तु ।

- २१] याचितो न प्रहृतवान् विष्णुर्बलवतां वरः । [१९
जिते' हि धनुषा सार्धं शिवे' विष्णुपराक्रमात् ॥२१॥
- २२] अधिकं मेनिरे विष्णुं विबुधा धनुषा सह । [२०
धेनुस्तु जृम्भितं रुद्रो विदेहेषु महायशाः ॥२२॥
- २३] देवरातस्य राजर्षेर्ददौ न्यासमनुत्तमम् । [२२
इदं च वैष्णवं राम धनुरभ्यधिकं तैतः ॥२३॥
- २४] ऋचीके भार्गवे न्यासं निदधे धनुरुर्जितम् । [२४
ऋचीकोऽपि महातेजाः पुत्रायामिततेर्जसे ॥२४॥
- २५] पित्रे' मम 'ददौ दिव्यं कार्मुकं जमदग्नये । [२५
न्यस्तशस्त्रे तु' पितरि' 'भेदीये शर्ममास्थिते ॥२५॥

१. ज—जितो ।

२. ज—जितो ।

३. कै—० पराक्रमम् ।

४. ल भ—देवाः सार्विगणास्तदा ।

५. ल—तदा तु रुद्रः संक्रुद्धो ।

भ—ततस्तु " " ।

६. ल—देवरात्राय देवेशो रुद्रो स न्यासमायुत्तमम् ।

भ—देवरात्राय " " " " ।

७. ल भ—शत्रुः परमपूजितम् ।

८. ल—ऋचीके भार्गवे प्रादाद्विष्णुः सन्वासमायुत्तमम् ।

भ—" " " सन्वासमायुत्तमम् ।

९. ल भ—ऋचीकस्तु ।

१०. ल भ—पुत्रायामिततेर्जसे ।

११. ल भ—पुत्रेऽयमपि ?

१२. भ—विष्णुः ।

१३. ल—पितरि मे । भ—पितरि मे ।

१४. ल—तपोव्रतसमास्थिते ।

भ—तपोव्रतसमास्थिते ।

- २६] अर्जुनो विदधे मृत्युं प्राकृतां बुद्धिमास्थितः । [२६
 तं रामासदृशं श्रुत्वा पितुस्तस्य बधं मया ॥२६॥ [२७पृ
 २७] असकृत् सूदितं क्षत्रं जातं जातमनेन हि ।^१ [२९उ
 पृथिवी चापि विजिता मयाऽस्य धनुषो बलात् ॥२७॥
 २८] दत्ता चेयं विनिर्जित्य कश्यपाय महात्मने ।^२ [२९पृ
 कश्यपाय च दत्त्वेमामखिलां सागराम्बराम् ॥२८॥^३
 २९] न्यस्तश्चस्तपस्तप्तुं गतोऽहं येरुपर्वतम् ।
 तत्र संन्यस्तशस्त्रोऽपि तपस्मभिरतोऽर्भवम् ॥२९॥^४ [३०
 ३०] श्रुत्वाऽस्य धनुषो भङ्गं द्रष्टुं त्वां समुपागतः [३१
 तदिदं वैष्णवं राम पितृपर्यौर्गतं मम ॥३०॥^५

१. ज—प्रकृतां ।

२. ल भ—बधमप्रतिभं श्रुत्वा पितुस्तस्य महात्मनः ।

३. ल—क्षत्रमुत्सादितं क्रोधाजातं जातमनेकधा ।

भ—क्षत्रमुत्सादितं " "

४. ल भ—नास्ति ।

५. ल भ—पृथिवीमखिलां जित्वा कश्यपाय महात्मने ।

६. ल—यज्ञस्यांतेहमदत्तं दक्षिणां पुत्रकर्मणे ।

भ—यज्ञस्यांतेहमदा " पुत्र्यकर्मणः ।

७. घतः परमाधिकः पाठः—

ल—ततो महौर्भगिण्यर्थं तपोबलासमान्वितः ।

भ— " " विक्रयो बलवीर्यसमन्वितः ।

८. भ—०ऽण्वहं ।

९. ल—नास्ति ।

१०. भ—श्रुत्वा च ।

११. भ—पितृपाणिगतं ।

१२. ल—नास्ति ।

- ३१] क्षत्रधर्ममुपश्रित्य गृहाण धनुरुत्तमम् । [३२
 योजयस्व गृहीत्वा च शरेण रघुनन्दन ॥३१॥^२
- ३२] यदि शक्यसि सन्धातुं युद्धं दास्यामि ते ततः ।^३ [३३
 तच्छ्रुत्वा जामदग्न्यस्य रामो रामस्य भाषितम् ॥३२॥
- ३३] गौरवाद्यन्वितस्तस्य पितुर्वचनमब्रवीत् ।^४ [७६, १
 श्रुतवानस्मि ते कर्म घोरं यत् तत्कृतं त्वया ॥३३॥
- ३४] न तेऽभ्यसूये तव कर्म पितुरानृण्यकारिणः ।^५ [२
 वीर्यशक्तिपरिक्षीणं क्षत्रमुत्संदिदं त्वया ॥३४॥ [३५
- ३५] माऽतिक्लृरेण तेन त्वं कर्मणा गर्वितो भव ।

१. भ--क्षत्रधर्मं समाश्रित्य ।

२. ल--नास्ति ।

३. कै--संधानं ।

४. अतः परमधिकः पाठः—

ल भ—एवं ब्रुवाणे वचनं महामुने ।

ल—युगान्तकालोच्छ्रुत्वाऽपि तादृशकर्मणौ ।

भ— ,, श्रुत्वाऽपि तादृशकर्मणौ ।

ल भ—श्रुत्वेन सर्वं सचराचरं जगद्गयाण्यस्ये सह देवदानवैः ॥

भ—इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे रामरामसमागमो नाम सर्गः ॥५२॥

५. ल भ—तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य वाक्यं दशरथात्मजः ।

६. ल भ—गौरवाद्यन्वितकथो रामो राममयाब्रवीत् ।

७. ल भ—कृतं यत्तच्छ्रुत्वा तवम् ।

८. ल भ—य ते सूयामि ते ब्रह्मन्पितुरानृण्यकारिणः ।

९. ल भ—वीर्यहीनमिदं यत् ।

१०. रा—० युत्सारितं० । भ—क्षत्रधर्मोऽथ मार्गव ।

११. रा व—माते क्लृरेण ।

- आनयैतद् धनुर्दिव्यं पश्य मे बलपौरुषम् ॥३५॥ [N
 ३६] क्षत्रस्यापि महत् तेजः पश्य मे भृगुनन्दन । [N
 इत्युक्त्वा तद् धनुर्दिव्यं रामो जग्राह वीर्यवान् ॥३६॥ [४४
 ३७] रामस्य जामदग्न्यस्य हस्तादीपवक्रतस्मितः ।
 शरं च हस्तादादाय ततो लघुपराक्रमः ॥३७॥ [४३
 ३८] सन्धाय च शरं चापं प्रंचकर्ष महायशाः ।
 प्रकृष्य बलवञ्चापि तद् धनुः सशरं तदा ॥३८॥ [४४
 ३९] रामो दाशरथि वक्रियमिदं राममुवाच ह । [४३
 ब्राह्मणोऽसीति पूज्यो मे विश्वामित्रकृतेन च ॥३९॥
 ४०] शक्तोऽपि ते न मुञ्चैर्यमिमं प्रह्णहरं शरम् । [६
 इमां तु ते गतिं दिव्यां निहन्मि तपसाऽर्जिताम् ॥ ४०॥

१. के—आनयैस्तद्धनुर्दिव्यं ।

२. ल—नास्ति ।

३. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

प्रतिगृह्णामि तेजोस्य परय मे तत्र पौरुषम् ।

४. ज भ—पश्यथ ।

५. ल—नास्ति ।

६. ल भ—इत्युक्त्वा राघवो वाक्यं भार्गवस्य वरायुधम् ।

७. ल—स तत्राप्रतिसंहस्ताद् गृहीत्वात्र पराक्रमात् ।

भ—,, ,, ,, गृहीत्वा सुपराक्रमः ।

८. रा—चापि ।

९. ज—प्रकर्ष च ।

१०. ल भ—आरोप्य रामस्तु धनुः शरमारोप्य कांचनं ।

११. ल भ—जामदग्न्यमसंभ्रातो राघवो वाक्यमब्रवीत् ।

१२. ल भ—मुञ्चेयमहं ।

१३. ज—इमं ।

१४. के—गतं ।

१५. ल भ—इमांस्तव कृते राम तपोबलसंमन्विताम् ।

- ४१] लोकान्मतिमान् पुण्यान् निहन्मि शरतेजसा ।
न ह्ययं वैष्णवो राम शक्यो दिव्यो महाशरः ॥४१॥ [७
- ४२] मयाऽमोघः समुत्सृष्टं बलदर्पविनाशनः ।
ततो वरायुधधरं रामं दशरथात्मजम् ॥४२॥ [८
- ४३] द्रष्टुं ब्रह्मादयो देवाः समाजग्मुर्मनोजवाः ।
देवानुपरि तांस्तत्र दृष्ट्वा दिव्येन चक्षुषा ॥४३॥ [१०
- ४४] बुद्ध्या च ध्यानयोगेन समं नारायणेन तान् ।
रामामिभृतवीर्यैर्जां जामदग्न्यस्ततोऽब्रवीत् ॥४४॥ [N
- ४५] कृताञ्जलिरिदं वाक्यं रामं दशरथात्मजम् ।
कश्यपाय यदा रामं मया देता वसुधरा ॥४५॥ [१२

१. ल म—वापि बधिष्यामि यदीच्छसि ।
२. ल म—दिव्यः शरः परपुत्रजयः ।
३. ल म—मोघः पतति वीरेषु ।
४. ल म—वरायुधधरं रामं देवाः सर्धिगणास्तदा ।
५. ल म—अतः परमधिकः पाठः—
पितामहं पुरस्कृत्य समेतास्तत्र सर्वशः ।
गन्धर्वाप्सरसश्चैव सिद्धचारुकिचराः ॥
६. ज—देवानुपरतांस्तत्र ।
७. ल—यशराक्षसनागाश्च तद्वृष्टुं महदद्भुतम् ।
म— " " समुपागतं ।
ल म—एकीभूते तदा लोके रामे चापि धनुर्धरे ॥
८. कै रा—बुद्ध्यावध्यान० । ज—बुद्ध्यावधान० ।
९. ल म—निर्वीर्ये जामदग्न्येष रामो राममुदैकत ।
१०. कै रा—०वीर्योजा ।
११. ल—यशराक्षसनागाश्च जामदग्न्यो अब्रवीत्कृतः ।
म—तेजोपहतवीर्येष " " ।
१२. ल म—रामं कमलपत्राक्षं मन्दं मन्त्रबुधाद्य इ ।
१३. ल म—पुरा दत्ता ।
१४. ल म—राम ।

- ४६] विषये मे न वस्तव्यं त्वयेत्यथ स माऽन्वेक्षात् ।^१ [१५
 सोऽहं तदामर्ष्यत्यस्यां न वसामि क्षितौ क्वचित् ॥^{४६} ॥
- ४७] मिथ्याप्रतिज्ञः काकुत्स्थ मा भूवमिति निश्चितः ।^२ [१६
 ततो नार्हसि मे हन्तुं^३ गतिं दिव्यां मनोजवाम् ॥^{४७} ॥ [१७
- ४८] लोकांस्तु जहि मे पुण्यान् श्रेणानेन राघव ।^४ [१८
 अस्यं मेधुहन्तारं जाने त्वां पुरुषोत्तमम् ॥४८॥
- ४९] धनुषोऽस्य परामर्षात् स्वस्ति तेऽस्तु प्रेसीद मे^५ । [१९
 एते सुरगणा रीम पश्यन्ति त्वां समागताः ॥४९॥
- ५०] वरायुधधरं वीरं माझाद् विष्णुमिवापरम् ।^६ [२०

१. व—करयपः ।

२. ल—विषये मे [न] वास्तव्यमिति वे कारयपोग्रवीत् ।

भ— „ „ वस्तव्यमिति „ „

३. ज—० प्रभृत्येतां ।

४. ल भ—सोहं गुरुवचः कुर्वन्निवसाम्यवशो मुवि ।

५. ल भ—हीनप्रतिज्ञः काकुत्स्थ तस्य करयपसंस्थया ।

६. कै—इतुं ।

७. ल भ—इमां मम गतिं तात हंतुं नार्हसि राघव ।

८. ल भ—अतः परमधिकं पाठः—

मनोजवो गमिष्यामि महेंद्रं पर्वतोत्तमं ।

ल—लोकास्त्वप्रतिमा राम तपसा निर्जिता मया ।

भ— „ „ निर्जितास्तपसा „

९. ल—जहि तां शरमोक्षेण मा भूत्काकस्व पर्यवः ।

भ— „ तान् शरमुक्त्वेव „ „ „

१०. कै ल—मपुहर्तारं ।

११. ल भ—त्वाहं सुरोत्तमम् ।

१२. ल भ—परंतप ।

१३. ल—सर्वे निरीक्ष्यते । भ—सर्वे विरीच्यते ।

१४. ल भ—त्वामप्रतिमकर्माश्चमप्रतिहृद्गमाहये ।

न चेर्यं मम काकुत्स्थ व्रीडा भवितुमर्हति ॥६०॥

५१] त्वया त्रैलोक्यनाथेन यदहं विमुखीकृतः । [२१

इत्युक्तः स शरं रामो मुपोच रघुनन्दनः ॥५१॥ [२२

५२] लोकेषु जामदग्न्यस्य रामस्यामिततेजसः

५३] मुक्ते तस्मिन् शरे देवाः प्रशंसन्मुञ्च राघवम् ॥५२॥ [२४

आकाशगा विमानेषु स्वेषु दिव्येष्ववस्थिताः ।

५४] आसन् वितिमिराः सर्वा दिशोर्धे विदिशस्तदा ॥५३॥ [२५

रामोऽपि जामदग्न्यः स रामं दशरथात्मजम् ।

१. ल भ—भवति कर्हिचित् ।

२. ल—त्रिलोकनाथेन ।

३. कै—यद्यं ।

४. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

ल भ—शरं चाप्रतिभं राम त्यक्तमर्हसि धार्मिक ।

शरमोक्षे गमिष्यामि मर्हद्ग्रे पर्वतोत्तमम् ।

ल—रामोऽपि प्रवृत्ति होवं जामदग्न्ये प्रतापवान् ।

भ—रामेपि ,, ,, ,, ,, ।

५. रा—इत्युक्त्वा ।

६. ज—शरं ।

७. ल भ—रामो दशरथिः श्रीमंत्रिक्षेप शरमुत्तमं ।

८. ल भ—नास्ति ।

९. ल—दिशः प्रातिदिशस्तथा ।

भ—दिशः प्रातिदिशस्तथा ।

१०. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

प्रबुद्ध शिवा वाता युगात्त शुभसंनिवः ।

सुराः सर्वाङ्गवाद्यैव प्रशंसन्मुर्मुपात्मजं ॥

इत्यार्षे रामायणे कलकावन्ते श्रीमद्भ्यकोकवचो नोम
एकसप्ततितमः सर्गः ॥३१॥

१. ल भ—रामो दाशरथिं रामं प्रथस्य रघुमन्दनं ।
प्रदक्षिणीकृत्य ततो जगामात्मगतं तदा ।
२. कै भ—वास्ति ।
३. कै—जमदग्निकोकवचः ।
रा—जामदग्निकोकवचः ।
भ—रामरामविवादे ।
४. कै रा ज—वास्ति ।
५. कै रा—सप्तसप्ततितमः ।
ज—त्रिषष्टितमः ।
व भ—वास्ति ।
६. ज—॥६३॥ भ—॥५६॥
ल—सर्गसमाप्तिर्ब एष्यते ।

[वं=७८] [द्विसप्ततितमः सर्गः] [दा=७७]

जामदग्न्ये गते रामे' रामो दाशरथिर्धनुः । [१५

१] लब्ध्वा सन्दर्शयामास पितुः स्वबलनिर्जितम् । ११॥' [N
ततोऽभिवाद्याश्चक्रे वसिष्ठप्रमुखानृषीन् ।

२] प्रोवाच पितरं चेदं रामागमनविह्वलम् ॥ २॥ [२
जामदग्न्यो गतो रामः प्रयातु चतुरङ्गिणी ।

३] अयोध्याऽभिमुखी सेना त्वया नाथेन नाथिनी ॥ ३॥ [३
रामस्याथ वचः श्रुत्वा प्रहृष्टवदनो नृपः ।'

४] बाहुभ्यां संपरिष्वज्य मूर्ध्नि चाघ्राय राघवम् ॥ ४॥ [४
गतो राम इति श्रुत्वा प्राप्य हर्षमनुत्तमम् ।

५] योजयित्वा पुनः सैन्यं जगाम स्वपुरीं प्रति ॥ ५॥' [६
समुच्छ्रितध्वजवतीं तूर्यस्वनविनादिताम् ।'

१. ल भ—गते रामे प्रशातात्तमा ।

२. ल भ—वरुणाद्याप्रमेयाय ददौ हस्ते महायज्ञाः ।

३. ल भ—अभिवाच्य ततो रामो । कं—० अभिवाद्याश्चक्रे ।

४. ल भ—पितरं विह्वलं वाक्यमुवाच रघुनन्दनः ।

५. रा—अयोध्याधिपते ।

६. ल भ—पाञ्जिता ।

७. ल भ—रामस्य तद्वचः श्रुत्वा राजा दशरथः सुतम् ।

८. रा—नास्ति ।

ल—नोदयामास तां सेनां जगामाद्यु ततः पुरीम् ।

भ—,, ,, ,, जगाम ससुताः पुरीं ।

९. ल भ—पताकाध्वजिनीं रम्यां तूर्योत्कृष्टविनादितां ।

- ६] सित्तराजपयां रम्यां प्रकीर्णकुसुमोत्कराम् ॥६॥ [८
 राजप्रवेशाभिमुखैः पौरैर्मङ्गलवादिभिः ।
 ७] प्रकीर्णां प्राविशद् राजा पुरीं स्वं च निवेशनम् ॥७॥ [६
 कौसल्या च सुमित्रा च कैकेयी च सुमध्यमा ।
 ८] बधूपतिग्रहे युक्ता याश्चान्या राजयोषितः ॥८॥ [१२
 ततः सीतां श्रीप्रतिमामूर्मिलां च यज्ञस्विनीम् ।
 ९] कुशध्वजसुते चोभे प्रतिगृह्णानुगृह्य चं ॥९॥ [१४
 ततः प्रवेशयामासुर्नृपवेश्म स्वलंकृताः । [N
 १०] मङ्गलालभनीयैश्च शोभिताः क्षौमवाससः ॥१०॥ [१५पृ
 उपनिन्युश्च ता एतां देवताऽऽप्यत न्यपि । [१५उ
 ११] अभिवाद्याभिवाद्यांश्च तत्रै पृज्यान् गुहंस्तथा ॥११॥ [१६पृ

१. ल भ—कृष्णा ।

२. भ—०कुसुमोत्करां ।

३. रा—नास्ति ।

४. ल भ—प्रकीर्णं ।

५. ल भ—पुरं ।

६. रा—मुं च । ल भ—बके ।

७. भ—कौशल्या ।

८. रा—कैकेये ।

९. रा व—बधूपतिग्रहे । ल—बधुप्रतिग्रहे ।

१०. ल भ—अपुन्युष्यन्वः ।

११. ल भ—वास्ति ।

१२. ल भ—देवतावतनान्वादी सर्वास्ताः परिचक्षुः ।

१३. ल—सर्वा राजसुताः तथा ।

भ—सर्वा राजसुतास्तथा ।

- रेमिरे मुदितास्तत्र भर्तृप्रियहितै रताः । [१७३
 १२] तैसां भूयो विक्षेपेण वैशिली जनकात्मजा ॥१२॥ [१५५
 रमयामास भर्तारं विष्णुं श्रीरिव रूपिणी ।
 १३] प्रकृत्यैव प्रिया सीता रामस्यासीन् महात्मनः ॥१३॥ [N
 प्रियभावः स तु तया स्वगुणैरभिवर्धितः ।
 १४] तथैव रामः सीतायाः प्राणेभ्योऽपि प्रियोऽभवत् ॥१४॥ [३२
 हृदयं ह्येव जानाति प्रीतियोगं पुरातनम् ।
 सीतया तु तया रामः प्रियया सह सङ्गतः H [N
 १५] प्रियोऽधिकतरस्तस्या विजहारामरोपमः ॥१५॥
 तया स राजर्षिसुतोऽनुरूपया,
 समेषिंशानुत्तमराजकन्यया ।

१. अतः परमधिकः पाठः—

ल म—कृतदाराः कृतास्त्राश्च शचना ससुहृजनाः ।

शुभ्रयमाणाः वितरं वर्तयन्ति नरर्षिणाः ।

तेषामेतियशा क्रीडे राज्ञः सत्स्वपराक्रमः ।

स्वयंभूरिव भूतावां बभूव गुणवधरः ।

रामस्तु सीतया सार्द्धं विजहार बहुनृपन् ।

मनश्च तद्गतं तस्य नित्यं हृदि समर्पितम् ।

त्रिधा तु सीता रामस्व दाराः प्रियकृता इति ।

ल—गुणाद्रपगुणाद्यापि पुनर्भूयोपि वर्धिता ।

म—गुणरूपगुणैश्चापि ,, हृदिस्थितः ।

ल—तस्याः स भर्ता द्विगुणं पुनर्भूयो हृदि स्थितः ।

म—तस्यापि ,, ,, ,, ,, ,,

ल—अनाक्यालमपि व्यक्तं व्याख्यातकृतं हृदि ।

म— ,, व्यक्तमाक्याति हृदि ।

२. ल म—तस्य । ३. ल म—द्वेषताभिः समा कर्तुं कर्तुः ।

४. ल म—नास्ति । ५. ल म—नास्ति ।

६. ज—०मरोत्तमः । ७. ल म—नास्ति । ८. ल—ततः ।

९. ज—०सुतः सुरूपया । ल—०वरोनिकाव्यया । म—०वरोनिकाव्यया ।

१०. रा ज ल—समीचिदा० ।

अतीव रामः शुशुभे सुकान्तया

१६]

युक्तः श्रिया विष्णुरिवापैराजितः ॥१६॥^१ [३६

इत्थार्थं रामायणे बालकाण्डे अयोध्याप्रवेशो नाम

द्विसंस्तुतमः सर्गः ॥ ७२ ॥

॥ संमासमिदं बालकाण्डम् ॥

१. ल भ—ऽभिरामया ।

२. ज—युक्ता० । व—वधुः भिया ।

ल भ—अशीव पूर्णों ।

३. ल भ—दिवि दृष्टकन्यया ।

४. ज—अतः परमधिकः पाठः—

आदिकांडमिदं प्रोक्तं सर्वाभ्युदयकारकं ।

वस्य भवणमात्रेण ब्रह्महत्यां व्यपोहति ।

आपुरारोग्यजनकं समृद्धिचकारकं ।

पुत्रपौत्रादिदृष्टिभ्य तथैवांते परा गतिः ।

५. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

ल—महर्षिवाक्यमीकविरचिते चतुर्विंशतिसाहस्र्यां संहितायां ।

भ—महर्षिवाक्यमीकविरचिते ।

६. व—आदिकांडे । भ—नास्ति ।

७. कै रा—अयोध्याप्रवेशोद्युसस्तुतमः ।

ज—चतुःस्तुतमः । व—अयोध्याप्रवेशो नाम ।

ल—दशरथप्रवेशप्रमोदो नाम ।

भ—दशरथप्रमोदो नाम पंचाक्षरमः ।

८. भ—सर्गः समाप्तः ।

९. रा ज व—समाप्तोपमादिकांडः ।

ज ल— ,, बाळकांडः ।

कै—नास्ति ।

सूचीपत्राणि

सूची (१)

शब्दविशेषसूची ।

अकुण्डलो	६।११॥	आजानुबाहुः	१।१५॥
अग्निप्रवेशनम्	३।११५॥	इतिहासः	४।४९॥
अतिथयः	६।२०॥	इन्द्रलोकः	३९।११॥४३।५॥
अतिथला	२०।१२, १६॥	इष्टापूर्णे	१६।८॥
अध्वर्युः	१०।२६॥	ओषध्यानयनम्	३।१०२॥
अनाहिताग्निः	६।१३॥	अंशावतरणम्	३।१५॥
अनिष्कधुक	६।१२॥	कर्मान्तिकाः	९।६६॥
अमोर्यामः	१०।३३॥	कल्पमूत्रम्	१०।३०॥
अप्सरोगणाः	६।२१॥	कालत्रयज्ञः	१।९॥
अबहुप्रजः	६।९॥	किजराः	१५।१४॥
अभिजित्	१०।३३॥	किरातकाः	५०।३॥
अभिज्ञानम्	४।३३॥	कृतयुगम्	१।९, १॥
अमहात्मा	६।९॥	कृत्तिकाः	३४।२५, २८॥
अमुकुटी	६।११॥	कूपणः	१।६२॥
अमृष्टभूषणधरः	६।१२॥	कुराश्वः	१९।१५॥
अयत्वा	६।१३॥	कृत्यभोजिनः	४५।९॥
अर्थः	३।५, ५॥	क्रौञ्चः	२।१२, १७, ३१, ३२॥
अष्टापदाः	५।१३॥	क्रौञ्ची	२।१४, १६, ३०॥
असुराः	९।९॥	खनकाः	९।६३॥
अस्रन्धी	६।११॥	गङ्गावतरणम्	३०।४१।
अश्वमेधः	३।९, १३, १३७॥४। ६३॥९।५५॥१०। २, ३०, ५२, ५५॥ ३५।२२॥	गणका	५।६७॥
अश्विनौ	२०।८॥४४।४॥	गन्धर्वाः	४।५१॥९, ९॥ १८।१७।१५।१४॥
आचारसङ्करः	६।२२॥	गरुडः	१०।२१॥
		गोदानम्	६।८।२३, २६, २९॥
			६९, १०

चतुरङ्गम्	६३।२१॥६५।३॥ ७०।३॥	परस्वोपजीवकः	३।९॥
चतुरङ्गिणी	१५।३॥७२।३॥	पशुपतिः	४०।३॥
चारणाः	१५।८॥	पायसोत्पत्तिः	३।१५॥
चातुर्वर्ण्यम्	१।९४॥	पितरः	३।२०॥४५।८॥
जम्बुद्वीपः	३६।२४॥	पितृगणाः	४४।५॥
त्रयी	३।६॥	पितृदेवताः	२।११॥
त्रिदशाक्षयः	२।२॥	पितृभ्रातृम्	६७।२२॥
त्रिदिवः	३२।२७॥४३।१२॥ ५५।५।	पिशुनाः	६।९॥
दक्षयज्ञवधः	५०।१७॥	पुत्रीयेष्टिः	३२।१॥
दण्डनीतिः	३।६॥	पुष्पकम्	१।८६॥४।२९॥
दानवाः	१८।१७॥	प्रावृट्	३।६४॥
दिवाकरः	७०।१६॥	फल्गुन्वी	६७।२३॥
देवाः	६।२०॥१८।१७॥	बला	२०।१२, १३॥
देवतायतनानि	७३।११॥	ब्रह्म	३।२१॥
देवदुन्दुभयः	१।८३॥	ब्रह्मस्वस्याविहिंसकाः	७।१०॥
देवलोकः	२।४॥४४।४॥	ब्रह्मचोषस्वनः	५।१६॥
द्यौः	५९।३२॥	ब्रह्मराक्षसाः	९।५५॥
धनुर्वेदः	५०।१७॥	ब्रह्मलोकः	३।१।४॥४३।५॥
धर्मः	३।७, ९॥	ब्रह्मवादिनः	४।५०॥
धर्मपाशः	१।२६०॥	मघा	६७।२३॥
धर्मप्रधानः	८।१॥	मानी	६।८॥
धर्माचारविवेकज्ञाः	७।१७॥	मायावी	१।५२॥
नरमेधः	५७।३॥	मिहारयुद्धम्	३।१११॥
नास्तिकः	६।१२॥	मृदङ्गः	५।१५॥
नास्तिकवाक्	६।१५॥	मेघनादास्त्रमोहः	३।११०॥
निषादः	२।१३, १५॥	यक्षाः	१८।१७॥३१।१८॥
निषादाधिपः	३।३२॥	यज्ञाभ्ययननिष्ठाः	६।१४॥
नृरांसः	६।८॥	यवनाः	५०।३॥
परदारामिमर्षकः	७।१५॥	युपोच्छ्रयः	१०।१७॥
		योनिसङ्करः	३।२२०॥
		रसातलम्	३।१३८॥

राजमार्गः	५१४॥	स्रुवः	१०१६३, ३०॥
लाङ्गुलोदीपनम्	३१८३॥	हयमेधः	१६११॥
लेपकराः	९१६६॥	होता	१०१२६
वपा	१०१२७, २८॥	अकम्पनः	३११६॥
वरदानम्	१०१६३॥	अध्वः	११०५॥
वर्धकाः	९१६६॥	अगस्त्यः	११७११७२॥
वाजिमेधः	८१२॥	अग्निः	४१२२१३३३, १०, १२॥
वानररूपिणः	१५१७	अग्निवसुः	१८७॥
विमानः	५११०॥६६३३॥	अग्निवसुः	६६१२८॥
विश्वजित्	१०१३३॥	अङ्गदः	३॥८५
विष्णुलोकः	११५५॥	अङ्गराजः	९१३॥
वेदाः	३१२॥४१४६॥	अङ्गेश्वरः	६१८२॥
वेदाङ्गानि	४१४९॥	अजः	१११८॥६६३०॥
वेदषडङ्गपारगाः	५११९॥	अतिकायः	३११२०॥
वैश्याः	६१२१॥	अत्रिः	४१६६॥
शरबन्धः	३११०५॥	अदितिः	१४१७॥
शिल्पिनः	६१६७॥	अनरण्यः	६३१००॥
शिशिरः	५९१३१॥३१४२॥	अनसूया	३१४७॥४१२१॥
शूद्राः	६१२१॥	अन्धकः	६७१८॥
शिशुमारः	४११८॥	अम्बरीषः	५७५, १२॥५८१२१॥
अमणाः	१०१८॥	अरिष्टनेमिः	३५४॥
आद्यम्	६३१२६॥	अर्जुनः	७१, २६॥
ऋषोक्तः	२१३३॥	अर्थसाधकः	७३॥
सप्तजातयः	४१४३॥	अलम्बुषा	४३१६४
सप्तस्वराः	२११२॥	अशाकः	७३१,
सवनानि	१०१५॥	अश्विनौ	४६११७॥
सलिलक्रिया	४१६॥	असमन्त्राः	३५१३, १, २१॥
सागराः	६११७॥		६३१४४॥
सूचकः	६११५॥	अहल्या	३१२३॥४४११५, १६, १७॥
सूत्रभाष्यविदः	९१४२॥		४५१११, २०, २२॥४७३३॥
संरंभी	६१८॥	अंशुमान	३५१२१॥३६१६३८॥

	१२, २३, २५॥ ३९॥ १, २, ३॥ ६६॥ २५॥	करयपः	८६७॥ ९५४५॥ ४९॥ १५॥ ४२॥ ४॥ ६५४॥ ६६॥ १७॥ ७१॥ २८॥
इक्ष्वाकुः	१॥ ९॥ ३॥ ३९॥ ५॥ १९॥ ९॥ १॥ ६६॥ १८॥	कामः	२१॥ १०॥ १५॥ २१॥ १३, १४॥ ५९॥ १८॥
इन्द्रः	४१॥ ३॥ २२॥ २०॥ ३४॥ २॥ ४४॥ २१॥ ४५॥ ८॥ ५९॥ १७॥ ६०॥ ६॥	कामधुकु	४८॥ २३, २६
इत्थः	३॥ ७॥	कामधेनुः	४९॥ १॥
उरुचैश्रवाः	४१॥ २९, ३०॥	कार्तिकेयः	३, २१॥ ३३॥ २२॥ ३४॥ २६, २९॥
उदावसुः	६७॥ ३॥	कीत्यायनः	६५॥ ४॥
उन्मत्तः	३१॥ १४	कालदूर्वासाः	३१॥ ३६॥ ४३॥ ३३॥
उपसुन्दः	१८॥ २०॥	कारिपतिः	६॥ ८०॥
उपाधिः	३१॥ ०४॥	किन्नराः	१५॥ ८॥
उमा	३२॥ २१, २७॥ ३३॥ ३, ७, १४, १६॥ ३३॥ ३, ७, २७॥ ३४॥ ३, ६, ७, ९, १०॥	किन्नरी	१५॥ ११॥
ऊर्णायुः	३०॥ ३७॥	कुम्भः	२१॥ ११॥ २३॥ ७॥
ऊर्मिला	६७॥ २०॥ ६८॥ ३॥ ७२॥ ९॥	कुम्भकर्णः	११॥ ७७, १०८॥ ४२॥ ८॥
शुभीकः	३१॥ ७॥ ५७॥ ११, १७, १८॥ ५८॥ १२॥ ७१॥ २४॥	कुम्भयोनिः	३१॥ ३६॥
शुष्टिषेणः	३३॥	कुमारः	३३॥ ३०॥ ४२॥ २४, ३०, ३२॥ ३४॥ ३०, ३२॥
शुष्यशृङ्गः	८॥ ७॥ ८॥ १६, २०, २६, ३०, ३१, ३३, ४६, ६०, ६३, ७५॥ ९८, ६, ५०, ९४॥	कुराः	३०॥ १॥ २७॥ १७॥ ३१॥ २, ४॥ ४७॥ १७॥
क		कुराध्वजः	१४॥ १०॥ ६६॥ २, ६॥ ६६॥ १२, १३॥ ६७॥ १९॥ ६८॥ २, १२॥ ७१॥ १९॥
ककुम्भः	६६॥ २६॥	कुरानामः	३०॥ २, ६, १०, १७, २३, २८, ४५, ४६॥ ३१॥ २॥ ४५॥ १८॥
कन्दर्पः	६०॥ ६॥ २१॥ १०॥	कुरान्धः	३०॥ २, ५॥
कपिलः	३७॥ २, ४॥ ३८॥ १८॥	कुरिकः	३३॥ २०॥ ३३॥
कबन्धः	१५४, ५५॥ ३१५५, ५६॥ ४१५॥	कुरिकपुत्रः	१९॥ ११॥ ३४॥ १॥
कलमावपादः	६६॥ २७॥	कुरिकात्मजः	५९॥ १७॥ ५९॥ २१॥

कुरीलबौ ३।१३५॥४।३९,४८,
५४,५६,७०।

कृताश्वः (कृशाश्वः) ४३।१८॥

कृतिरथः ६७।७॥

कृतिरातः ६७।१०॥

कृतिरोमाः ६७।१०॥

कृशाश्वः १९।१६॥२४।२-॥

केकयरराजः १४।३०॥६।=१॥

६९।२॥

केशवः ७।१२०।।

केशिनी ३।५।३,१३॥

कैकेयी ३।१६,३२,४६॥१६।५॥

४।५॥११।२७॥१२।१२॥

१४।४,१३।७२।८॥

कोहलम् ३।३॥

कौशिकः ३।२४॥१६।११,३४॥

१८।८॥१९।१,१५॥

२४।१८॥३५।१॥४७।

७,१६॥५३।२,७॥५९।

२७,३३॥६३।२७॥

६४।६॥

कौसल्या ३।१६॥१०।२४,२६॥

११।२६॥१२।१२॥१६।

३॥१४।४,६॥२१।२॥

७२।=॥

[स्व]

कारः १।४६॥३।५०॥४।१३॥

[ग]

गाधिः ३।१।३,५,६॥४७।१९॥

गाधिगन्धनः १६।११॥

गौतमः ४४।१४,२२,२३,२६॥

४५।२,११,१६,१७,

२१,२३॥४७।२॥

[घ]

घृताची ३०।११॥

[ज]

जटायुः १।५४॥३।४८॥४।१४॥

जनकः ३।२५॥९।७८॥१४।२०॥

२९।६॥४६।२,७,१०,१९,

२२॥६१।२१॥६२।४७।

६३।१,२,३,५,७,११,

२२॥६४।१,४,५,१३,

१६,१७॥६५।७,

८,९,१३,१८,२६॥

६६।१,६,१६,३१,३४॥

६७।१॥३॥=१०।६९।

१७,२२,२४॥२।६०॥

जनमेजयः ४३।१८॥

जमदग्निः ७।१२५।

जमदग्निमुत्तः ७०।२१॥

जयन्तः ७।३॥

जया १६।१७,१८॥

जाबालिः ३।३८॥५।४५॥६४।४॥

जामदग्न्यः ३।२६॥७।१२,३२,

३७,४४,५२,५४॥

७२।३॥

जाम्बवान् ३।८४॥

[त]

तादिका ३।१६॥२।२५,२६,२७॥

२३।५,९,१२।२६॥

३, १३, १३, २३॥
 तारा ५१७॥३६२॥
 त्रिपुरः ७११५॥
 त्रिशङ्कः ५३॥७५४१, २८॥
 ५५१॥५६१, १२, १५,
 १७, २५, २६, २९॥६६
 २१॥

त्रिशिराः १, ४६॥३५०॥४१३॥
 त्र्यम्बकः ३४१॥ ७११४॥

(द)

वनुः ११४॥
 वशरथः १२४, २६, ५३, ५७, ५८,
 ७२, ८९॥२३७॥३१७,
 २५, २६, ३२, १२७॥४॥
 ५७, १९॥६४॥ ७१६॥
 ८२७, २९॥९२, ४, ६, ९,
 १५, २३, २९, ३०, ४६,
 ६१॥१०२४॥११७, २४,
 ३४, ४१॥१३६, ७॥१४॥
 १०, १६॥१६५, १४॥२०॥
 १, ३॥६२५, ९, २३॥६४॥
 ३॥६५१, ८, १५, २०॥
 ६६३०॥६७१॥६९॥७,
 १०, १७॥७१५, १२, ४२,
 ४५, ५४॥

दितिः ४१२६॥४२१, ११, १२,
 २०, २२॥४३१॥

दिलीपः ३९२, ३, ६, ९॥३६१६॥

दीर्घजिह्वा २३१८॥

दुन्दुभिः १६३॥

दूषणः १४६॥३५०॥
 दृढनेत्रः ५३५॥
 देवमीढः ६७८॥
 देवराजः ६०७॥
 देवरातः ६१८॥३७५॥७१३३॥
 देवान्तकः ३१०९॥

(ध)

धनदः १२२॥
 धर्मपालः ७३॥
 धन्धुमारः ६६२१॥
 धूम्राक्षः ३१०६॥
 धूम्राश्रः ४३१६॥
 धृतिमान् ६७६॥
 धृष्टकेतुः ६७७॥
 धौम्यः ३३॥
 ध्रुवसन्धिः ६६३३॥

(न)

नन्दिवर्धनः ६७४॥
 नलः ३१९॥४२७॥
 नरान्तकः ३१०९॥
 नहुषः ६६२६॥
 नारदः २११, २, ३, ४॥३१०॥
 ४१॥

नाभागः ६६३०॥
 नारायणः १०५३॥७१४४॥
 निकुम्भः ३१११॥
 निमिः ६७२॥

(प)

पाकरासनः ८७१॥२१२२॥

	प		५३, ५४॥६६॥२६॥
पितामहः	३३॥८॥३४:१, २,४,१०॥६१। ९,१२॥	भद्रः	३७।२१॥
		भरतः	१।३८॥३।२८,२६,४०, १३०,१३४॥४।९,२९॥ १४।५,२०,२९॥१६।८॥ ६६।२४॥६८।६ १४॥
पुरन्दरः	४२।११॥४४।१६॥	भारद्वाजः[भरद्वाजः]	२।६,१९, २३।३।३४,३७।४।८॥
पृथुः	६६।२१॥	भार्गवः	४७ ११॥७०।८६॥
प्रचेताः	६६।१८॥	भृगुः	३५।६,१६॥६५।४॥
प्रजापतिः	४०।१॥६८।२९॥	भृगुनन्दनः	७१।३६॥
प्रसिद्धकः	६७।७॥		म
प्रसेनजित्	६६।२३॥		
प्रहस्तः	३।१०६॥		
	ब		
बली	२७।३,४,६॥	मकराक्षः	३।११३॥
बाणः	६६।२०॥	मत्तः	३।११४॥
बाली	१।६१,६२,६९॥३।६१, ६२॥	मधुः	१८।१५॥
		मधुच्छन्दाः	५८।१३॥
बृहद्रथः	६७।५॥	मधुप्यन्द्ः	५२।५॥
ब्रह्मदत्तः	३०।४३,४४,४५, ४६,४७,५०॥३१।१॥	मनुः	५।१,२॥
			६६।१८,२८॥
ब्रह्मा	१।५२॥२।२५,३२॥ ३।१०॥४।२०॥१०।५८, ६५,६८॥११।३।२३,४॥ ३४।४॥३९।१४,१८॥ ४०।६४॥५९।२,३,२२, २४,२६,२८॥६१।३, १७,१९॥	मनोरमा	३२।२०॥
		मन्दकर्णः	३।४६॥
		मयः	११।१३॥
		मरीचिः	६६।१७॥
		मरुः	६७।७॥
		महादेवः	३५।२४॥४०।६॥
		महापत्न्या	३७।१६॥
		महापार्वर्षः	३।२१०॥
		महावीर्यः	६७।६॥
	म	महेन्द्रः	१।४४॥३।४४॥४५॥६॥
भगीरथः	३९।८,११,१२,१७, १८,२३॥४०।३,९, २६,३०,३१,३६,	महेश्वरः	३३।३,२७॥
		महोदयः	५५।२१॥५६।१॥

महोदरः	५२।५॥
माण्डवी	६९।२२
माण्डव्यः	३।३॥
मातलिः	३।११७॥
मान्धाता	६६।२२॥
मारीचः	१।४६, ५०, ५१॥३।५२, ५३॥४।१४॥१७।५॥ १८।२१॥२३।१०॥२८। ८, १२, १५, १६॥
मार्कण्डेयः	६५।४, ११॥
माल्यवान्	३।१, २॥
मिथिः	६७।३॥
मिथिलेश्वरः	७०।८॥
मिथिलाधिपः	७०।२
मेघनादः	३।८१, ११२॥४।२८॥
मेनका	५९।५, ६, ७, १३॥
मैथिलः	६९।१४॥७०।७॥
मैथिली	३।४५॥
य	
यज्ञकः	३।१०४॥
ययातिः	६६।३०॥
युधाजित्	६९।१, ३॥
युवनाश्वः	६६।२२॥
र	
रघुः	६६।२६॥
रम्भा	५६।३३॥६०।१, २, ५, ८, ११।१३, १४, १६॥
रामः	१।१२, १९, २३॥ २।२, ३४, ३५, ३६, ४७॥१।१, १६, १८, २४,

२७ ३२, ३६, ३७, ३८, ४३, ५५, ६१, ६५, ६७, ६३, ९५, ९८, ६९, १२४, १३२॥४।३, ४, ६, ३१, ३२, ३४, ३६, ४८, ५५, ६४, ६५, ६९, ७१॥१४। ५, ६, १२, १४, १६, २०, २१, २३, ३६, ३९॥१६।३॥ १७।९, १२, १३, १४, १५, १७, १९॥१८।२, ७, ८, १२, २१॥२०।१, ४, ६, ७ ८, १०, ११ १३, १६, २० २१॥२२।७, ९, १५, ३६॥ २३।१, ३, ५, १३, १८, २०॥ २४।८, १८, २१, २३॥ २५।१, २, ३, ५, २०, २०, २४, २५, २६॥२६। १, ३ १४, १५, १६, १७॥ ३७।२, १९, २०, २३॥ २८।१, ३, ४, ५, ९, १२, १५, २०, २१॥२६।१, ५, १२, २०, २२॥३०। १, २२, २९, ३६, ३८॥ ३१।४, ६, १०, १३, २०॥ ३३, १, ६, ८, २३, २६॥ ३५।१, १३॥३६।३, १९॥ ३९।४०, ४३, ४४, ४७, ५२, ५६, ५७, ५६, ६०, ६१, ६२, ६३, ६७, ७०, ८२॥ ४१।५॥४४।३७॥ ४५।१६, १८, २०, २१,

२३॥४३॥१,२,४,२१॥
 ४०३,४,६,१२॥६१॥
 २१,२४॥६२॥२३॥
 ६३॥१३,१६,१८,२३,
 २४॥६४॥१६॥६५॥२३,
 २४॥६६॥३१॥६७॥२०.
 २१॥६८॥३॥६९॥१६॥
 ७२॥३,४,५,१३,१४,
 १५,१६॥

रावणः १॥४८,४९,५०,५१,५२,
 ५३,७३,७४,७५,७६॥
 ३॥५१,७५,७६,
 ७८,७९,९४,९७,१०६,
 १०७,११२,११३,११४,
 ११५,११७,११८,१२२,
 १२३॥४॥१३,२३॥
 १४१॥

कट्टः २१॥११,१२॥३२'
 २६॥६२,११॥७१॥२२॥

क

लक्ष्मणः १॥५६॥३॥१८,५३,
 ६३,६५ ६६,८५, ११५,
 ११६,१३४,१३९॥
 १४५,११,२५,२६.
 २९॥१६॥४॥२०॥८,
 २१॥२२॥१५॥२४॥८,९॥
 २०॥१९,२०,२३॥२८॥
 ५,९,१०,१५,१६॥२५॥
 १३॥४०३॥६१॥२१॥
 ६२॥२३॥३॥१५॥३५॥

२४॥६३॥३॥३॥३॥३॥
 ३८॥३०६९॥२०॥

लवणः ३॥१३५॥४३२॥१८१९॥
 लोमपादः ८॥११,२६,३२,४५॥९॥
 ४,१७,१८,२२,३३॥
 १२॥२५॥१३॥१०॥

(ब)

बरुणः ३३॥२३॥४१॥२५॥
 बसिष्ठः ४॥६६॥८॥४॥६॥

१४,२७,४५,४९,६१,
 ७४,८५,८७,९१,९५॥
 १६॥१८॥१०॥१,२,१६,
 १९॥१९॥५॥२०॥१३॥
 ४०॥२२,२०॥४८॥१,२
 ४,६,१०,१२,१५,१६,
 २०,२५,३०,३३,३६,
 ४२॥४६॥१,३,५,९,
 १३,१७॥५०॥१,५,६,
 ७,१२,२४,२६,२७॥
 ५१॥१,२,१२,१६,१७,
 १८,१९॥५२॥३॥५३॥
 १८,१९॥५४॥५,७,
 १५॥५५॥१३॥६४॥१४,
 १८॥६५॥७,१०॥
 ६६॥१४,१६॥७७॥१॥
 ३८॥१,१०,१४,२५॥
 ६९॥९,१०,१९॥७०॥
 ६,११,१७,२२,२५॥
 ७२॥२॥

बानरदासः १॥६०,६६॥

बाल्मीकिः १११, ९, ९६, ९७॥
 ३११, १४४॥४७०॥
 बामदेवः ३१३८॥७१॥१५४५॥
 ६५॥४॥
 बामनः २७०, ३, ७, १८॥
 बाली ४११७॥१५१२०॥
 बासवः ४१११॥२०॥७॥२२१२२॥
 ४२१२१॥५॥३०॥
 बिकुम्भिः ६६१५॥
 बिजयः ७३॥
 बिदेहराजः ६४१९॥
 बिभायडकः ८७, १५, ४०, ४५,
 ४८॥१३१६॥
 बिभीषणः ३१५५, ९६, ६७, ९८,
 १२३॥४१७, २५॥
 बिराधः ११४१॥३१४४॥४१२॥
 बिरुपाक्षः ३११३॥३७१२॥
 ३८॥३॥
 बिरोचनः २३१३॥
 विशालः ३१२२१॥४११३, १३॥
 ४३१४, १५॥४६१२०॥
 विमवा १८१४॥
 विश्वकर्मा ७११४॥
 विश्वामित्रः ३१२१॥४५४१६७,
 १०, १३, २०, २२॥१७
 १॥१६१४, २०॥२०३,
 ३, ७, ८, १०, २०॥२१
 १, ४॥२२११, २, ४॥२३,
 ३॥२४१२, २२, २३॥
 २५११, २६॥२४१२, २७
 ११३॥२७११, १८,

२०, २२, २३॥२८११, ३,
 २०, २२॥२९१२, ५, १२,
 १३, १७, १९, २०, २२॥
 ३३११, ५॥३६११, ३॥
 ४१११, ४, ५, ६॥४२१
 २०॥४४११, १२॥४५१२२॥
 ४६११, ४, ७, १०, २३॥
 ४७११, ३, १०, १२, १४,
 १२, १९, २७॥४८११,
 ३, ५, ११, १३, १५, ३०,
 ३२, ३७, ४२, ४७॥४९॥
 १२, १८, २३॥५०११,
 ५, ८, १५, १६, २३, २८॥
 ५१११, १२, २०, २१॥
 ५२११५३॥५४११६,
 २२॥५५११, ११, १५,
 २३॥५६११, ४, ७, ८, १०,
 ११, १८, २२, ३०॥५७
 ११५८१२, ७, २८॥५९॥
 ३, ५, १०, १३, १५, २३,
 २४, २६॥६०३३॥६१६॥
 ६११९, १९, २१, २८,
 २९॥६२११॥६३११,
 ७, ११, १४, २०, २१॥
 ६४१८, १३॥६५१२०,
 २२, २५॥६६१२५॥६८
 १, १०, २०॥७०१०॥
 ७१॥७१॥
 विष्णुः १०१६९, ७०, ७१, ७३, ७४॥
 ११११, ३, ७॥१४१६, १२,
 १३॥१५११, २, ३॥१६१४॥

२३।२०।२७।३,५,६,११॥	७९।२,९॥
७१।१५,१७,१९,२१,२२॥	शरभङ्गः १।७१॥
वृषभजः ३।१२६॥३३।६,१८॥	शम्बूकः ३।१३६॥
वृष्टिः ७।३॥	शबरी १।५६,५७॥३।५६॥
वेणुः ५।१५॥	४।१५॥
वैदेहः ६।१२८॥६४।४॥६९।११॥	शान्ता ८।१६,२५,७४,
वैदेही ३।३६॥	७५,७६॥९।३,५,६,
वैभवणः १८।१४॥	२०,२४,२६,२९,३०॥
वा	१२।१,३,८,१२,१३,
शक्रः ३।७६,११७॥	१८॥१३।२३,२४॥
१०।६२॥२३।१९, २०॥	शितिकण्ठः ३।३।६,९॥
४।२।९, ११, १७, २१,	७।१, १७, १९॥
२३॥४३।७॥४४।८, २५॥	शिवः ३।३।१५, २२॥३।३।
४५।१, ६॥५६।३२॥६०।	९।१०।१।२१॥
५॥६।१।३॥६३।१९॥	शीघ्रगः ६।६।२।८॥
शङ्करः ३।६।३।१४०।१२,	शुकः ३।१०१॥
२०॥७।१।१८॥	शुनःशेपः ५।७।२१, २३, २४॥
शचीपतिः ६०।३॥	५।८।१, ७, १८, २१,
शतक्रतुः १।५।२।१॥४।५॥	२४, २६॥
४९।२३॥	शूर्पणखा १।४।४, ४६॥३।४।९,
शतानन्दः ३, २४॥४।३॥	५०॥३।५०॥४, १३॥
६।४।७।१, ३, २०, १२,	शुली ३०।३।५, ७३॥
६।१।२।१॥६।४।१३॥६५	समणा १।५६॥
९॥६।६।७०॥६९।	सुतकीर्तिः ६।९।२३॥
२४॥	स्यङ्गुलः ६।६।२७॥
शत्रुघ्नः ३।४।१, १३।५॥४।३।२॥	श्वेता ३।१३।६॥
१।७।५, ११, २९॥	सदाननः ३।४।२९॥
१६।४॥६।८।६॥	सगरः ४।३।७, ३९॥५।३॥
शबला ४।७।२१, २४, २५, ३१,	३।५।२, ६, १९।३।६।२, ३,
३५, ३६, ३८, ३९, ४०॥	५, ६, १९, २७, २८॥

सगरः ३७३, ५, ६, ९॥३८१,
५॥३९१॥४१॥

६६२४॥

सजयः ४३१६॥

सत्यकीर्तिः २६५॥

सत्यवती ३१७॥

सनत्कुमारः ३२८॥९१२॥

सप्तमः ३१०४॥

सम्पातिः १७३॥३७०॥४२०॥

सरमा ३१०२॥

सरस्वती २३३॥

सहदेवः ४३१७॥

सहास्राक्षः २२१७॥४२१२॥

४३१७४४२७॥

५८२६॥६०२॥

६०१३॥

सारणः ३१०१॥

सिद्धार्थः ७३॥

सिद्धिका ३७४॥४१२॥

सीता १५२, ७३, ८२, ३४,

८६, ८७॥३२६ ४६,

५१, ५३, ७८, ८६,

८६, ८७, १०२, ११६,

१२४, १३४॥४१२॥

२८, ३०, २३, ३९॥

१४१२३, ३२६२१४,

३३६६३३३॥६४

१६॥६३३॥६९१९॥

७३९॥७२२३॥७२॥

१४, १५॥१६७२०॥

सुकेतुः ६७४४॥

सुमीषः १५८, ६२, ६५, ६७,

६८, ६९, ७९॥३५६,

६१, ६२, ६३, ६५,

६७, ८९, १०८॥४१६,

१७॥१५२०॥

सुबन्द्रः ४३१५॥

सुतीक्ष्णः १४१॥४१०॥

सुदरानः ६६२८॥

सुवामा ६६८॥

सुधन्वा ६७१७.१८॥

सुधृतिः ६७६॥

सुम्हः १८२०॥२२१५॥

२३७, ९॥

सुपर्णः ३१६॥३५१६॥

३८२३॥३२०५॥

सुप्रभा २६१७, १९॥

सुबाहुः ३२०॥१७५॥

१८२१॥२८८,

१०, १८॥

सुमतिः ३५२४, १७४४६॥

१९, २२॥४४१८॥

सुमन्त्रः ३३५॥७३॥

८४॥८१६,

३१६६५१॥

सुमिषा ३१ (६१११२९॥

१२२२॥२४७॥

१४१०॥३६१४७२॥

सुबहः	६।४५॥	कौशाम्बी	३०।५॥
सुरसा	३।७३॥	गिरिब्रजः	३०।७॥
सुरेश्वरः	१०।५२॥	चम्पा	१२।२५।१३।१०॥
सुप्रतः	१।८३॥१३।२॥	नन्दिग्रामः	१।३९, ८७॥४।१०॥
सुभ्रतः	६६।२६॥	प्राग्ज्योतिः	३०।६॥
सुसन्धिः	६६।२३॥	भोगवती	५।१८॥
सूर्यः	६१।६॥	मिथिला	३।२३।४।४॥२।१६॥
सोमः	१।२२॥		४।४।६, १०॥३।५।७।६।७।
सोमदत्तः	४३।१८॥		१५।।७०।८॥
सोमपा	३०।३७, ५१॥	लङ्का	१।७१, ७३, ८१॥३।७१, ७४, ७५, ८३, ९४, ९८, १०२, १०३॥
सौमनः	३७।१६॥		४।२१, २६॥
स्कन्दः	३४।२८॥	विशाला	४१।१०॥
स्थाणुः	१०।५२॥२१।१०॥	वैशाली	४३।१४॥
स्वयम्भूः	१५।२१॥	सांकाश्यम	६६।३।६७।१४, १५॥
स्वर्णरोमा	६७।११॥	(सूची—४)	
हनुमान्	१।५८।।३।६८॥	॥ नदनदीनाम ॥	
हरीश्वरः	१।६८॥	इक्षुमती	६६।३॥
हर्यश्वः	६७।७॥	कौशिकी	३।१८, १०, ११॥५।५।१९॥
हृषिक्यन्दः	५२।२॥	गङ्गा	३।२१, ३४॥१।४।८॥२।५॥
हेमचन्द्रः	४३।१५॥		१३।४, ३०॥३।२।८, १७, १८, २१, २२, २३, २४, २७, २८॥
हस्वरोमा	६७।११॥		३४।७, १२, १३, १४, १५, २४, ३२॥३।१।१९, २०, २१, २६॥४०, ५, ७, ८, ९, १०, ११, २७, ४०, ४२, ४३, ४५, ४६॥

(सूची—३)

॥ पुरनाम ॥

अमरावती	५।१३॥६।५॥	जाह्नवी	२२।५॥२९।१४॥३।२।
अयोध्या	१।८।।३।२८, १३१॥४।		७, १२, १५॥
	२६॥५. १॥१६।, १०॥	तमसा	६।४, ५, ७, ११, १२॥
	२२।८।।६३।२५, २७।।६४।	शोणः	२९।१८।।३।२।१, ४, १०॥
	१॥६६।१८॥७।३।३॥६९।६॥		
कान्यकुब्जम्	३०।३५॥		
काञ्चिप्लम्	३०।४४॥		
किष्किन्धा	१।६७, ७०॥		

सदयूः ५।१॥१०।१॥२०।१०॥२१।

५।२।४,८॥

(सूची-५)

॥ पर्वत नाम ॥

शुद्धयमूकः	३।५९,६०।४।१६॥
कैलासः	२२।७।३४।१७।
भृगुप्रसन्नवणः	३५।५॥
मन्दरः	३७।१६॥
मेरुः	७१।२९।
मैनाकः	३।७४।
विन्ध्यः	३।६८।६।२६॥
	३६।४।
श्वेतपर्वतः	३३।२१।
सुबेलः	३।१००,१०३॥
हिमवान्	१।३०॥-९।१४॥
	३१।६,१०॥
	३२।१९,२०,
	२१,२२॥३६।४॥
	३८,१९॥४०।५॥

(सूची-६)

॥ वनोपवनादिनाम ॥

अशोकवनिका	१।७३॥३।७८,
	८८।४।२२॥
तपोवनम्	५९।१॥६०।१४॥
दण्डकः	१।४०,४३॥
दण्डकारण्यम्	४।१०॥
धर्मारण्यम्	३०।७॥
पुण्डरारण्यम्	५७।२,४॥५६।१८॥
प्रमदावनम्	३।७८॥
मधुवनम्	३।८४,८५॥
शरवणम्	३४।१८॥

(सूची-७)

॥ देशनाम ॥

अङ्गः	८।११॥
अनङ्गः	२१।१४॥
करुषाः	२२।१६,२१,२३॥
काम्भोजः	६।२५॥
कांभोजाः	५०।२॥
केकयः (कैकेयः)	६५।४॥
कोसलः	५।१॥
दाक्षिणात्याः	९।८४॥
पङ्कवाः	५०।२॥
मागधाः	३०।९॥
मालवाः	२२।१६,२१,२३॥
वसुः	३०।७॥
विदेहाः	६४।१५॥६९।१८॥७०
	३॥७।१२२॥
सुमागधाः	३०।८॥
सुराष्ट्राः	९।८३॥

(सूची-८)

॥ स्थानविशेषनाम ॥

अगस्त्याश्रमः	३।४७।४।१२॥
अनङ्गाश्रमः	३।१९॥
आपानभूमिः	४।२२॥
कामाश्रमः	२१।१८,२१॥
गोकर्णः	३९।१३॥
चित्रकूटः	३।३४॥४।८॥
जनस्थानम्	१।४५॥३।४८॥
पञ्चवटः	४।२२॥
पञ्चवटी	३।४८॥
पुण्डरम्	५८।२८॥
वज्रस्थानम्	६०।२०॥

शरभङ्गाश्रमः	३।४५॥	कामरूपः	२६।९॥
सिद्धाश्रमः	३।९०॥२६।२१॥२७। २,१०,१७,१८,१९॥ २८।२३॥२९।१५, १७॥३१।१२॥४४।७॥ ४६।२०॥	कामहाः	२६।९।
सुतीक्ष्णाश्रमः	३।४६॥	कालः	२५।१३॥
स्वयंप्रभा (गु०)	३।६९॥	कालकल्पः	२५।५॥
		कालपाशः	२५।९॥५१।५॥
		कालास्त्रम्	२५।६॥५१।११॥

(सूची--९)

॥ शस्त्रास्त्रादिनाम ॥

अङ्गदः	२६।७॥	किङ्किणी	२५।२३॥
अदम्भः	२६।५॥	कुण्डधरः	२६।८॥
अनिद्रः	२६।८॥	कुहालः	३६।२१॥
अनृतम	२५।१९॥	कुम्भः	२६।७॥
अपराजितः	२५।१२॥	कौमोदकी	२५।९॥
अमोचः	२५।१३॥	कौबेरः	२५।१॥
अरिकम्पनः	२५।१८॥	क्रकरः	२६।७॥
अरिविदारणः	२५।१८॥	क्रथः	२६।१,७॥
अवाङ्मुखः	२६।५॥	क्रौञ्चास्त्रम्	२५।१२।५१।८॥
आग्नेयः	२५।११॥२८।१८॥	गन्धर्वास्त्रम्	२५।१६॥
आमिषः	२५।१७॥	गांधर्वम्	५१।६॥
इन्द्रवज्रः	२५।६॥	गदे	२५।८॥
उम्मादनः	२५।१६॥	जम्भकः	२६।५॥
ऐषीकः	२५।७॥५१।६॥	जम्भणः	५१।७॥
कङ्कालः	२५।१३॥५१।१०॥	ज्योतिनाभः	२६।७॥
कम्पनः	२५।१८॥	त्वाष्ट्रः	२५।२०॥
कामगमः	२६।९॥	त्रिशूलास्त्रम्	५१।११॥
कामनम्बनः	२६।९॥	दण्डास्त्रम्	५१।८॥
		दशराङ्गः	२६।६॥
		दशशीर्ष	२६।६॥
		दशास्रः	२६।६॥
		दारणम्	५१।७॥
		दुन्दुभिस्वनः	२६।६७॥
		धरः	२६।८॥

धर्मोत्तमम्	२५।५॥	महामायास्त्रम्	२५।१९॥
धर्मचक्रः	५१।८॥	मानवः	२५।२०॥५१।६॥
धर्मपाराः	२५।९॥	मानसः	५१।६॥
धर्मोत्तमम्	५१।८॥	मुरालम्	२५।१३॥
धर्षणः	२५।१५॥	मुमुलम्	५१।१०॥
धान्यः	२६।८॥	मूर्च्छनम्	२५।१८॥
नन्दकः	२५।१५॥	मोहनम्	२५।१६॥
नारायणास्त्रम्	२५।११॥	युगन्धरः	२६।८॥
पद्मनाभः	२६।७॥	रतिः	२६।८॥
पराङ्मुखः	२६।५॥	रुधिरम्	२५।१७॥
परिघः	३६।२१॥	रूणुकः	२६।६॥
पवनास्त्रम्	२८।१२, १५, १६॥	रौद्रम्	५१।५॥
पाशुपतम्	५१।५॥	ब्रह्मस्त्रम्	२५।७॥
पुरुषादकः	२६।६॥	वज्रम्	४२।२१॥५१।७॥
पैनाकमस्त्रम्	२५।११॥	वायव्यमस्त्रम्	२५।११॥
पैनाकम्	५१।९॥	वायव्यम्	५१।१०॥
पैशाचम्	२५।१७॥५१।८॥	वारिनिहन्तम्	२५।१५॥
प्रणिपातरसः	२६।५॥	वारुणः पाशः	२५।१०॥
प्रमर्दनः	२५।१२॥	वारुणिः	२६।९॥
प्रमथनः	२५।१२, १५॥	वारुणम्	५१।५, ९॥
	२६।८॥	विजया	२५।१३॥
प्रस्वापनः	२५।१५॥	विलापनम्	५१।७॥
ब्रह्मदण्डः	५१।१३॥	विष्णुचक्रम्	२५।६॥५१।८॥
ब्रह्मपाराः	५१।९॥	वृषचर्मा	२६।६॥
ब्रह्मशिरः	२५।७॥	वृषाक्षः	२६।६॥
ब्रह्मास्त्रम्	३।८२॥	वैद्याधरम्	२५।१४॥
भर्ता	२६।८॥	शङ्करास्त्रम्	२५।८॥
भकरः	२६।७॥	शक्तिः	३६।२१॥
भदनः	२५।१६॥	शतश्री	५।९॥
भन्धनः	५१।१०	शतोदरः	२६।६॥
महानाभः	२६।७॥		

शिशिरम्	२५।२०॥	लिखितामिब	५।१३॥
शूलम्	२५।७॥३६।२१॥	इन्द्रस्येवामरावतीम्	५।१३॥
शैवम्	५१।५॥	उपरक इवादित्यः सद्यो	
शोषणम्	२५।१५॥५१।७॥	निश्चेष्टतां गतः	५०।९॥
सत्यम्	२५।१९॥	कालकूटोपमा रणे	१७।१३॥
सत्यवाक्	२६।५॥	कुमाराविब पावकी	२०।९॥
मन्तापनम्	५१।७॥	ग्रहनक्षत्रताराभिः काञ्चनी-	
सुनाभः	२६।७॥	भिरिवावृत्तम्	३१।१६॥
सोमास्त्रम्	२५।२०॥	चारुप्रोष्ठपक्षोपमाः	१४।३॥
स्तम्भनम्	२५।१५॥	तस्थौ गिरिरिवाचलः	६०।३०॥
स्थिरः	२६।८॥	तुषारणावृत्तां सामां पूर्ण-	
स्यन्दनः	२६।५॥	चन्द्रप्रभाभिब	४५।१५॥
स्वर्णनाभः	२६।९॥	त्रिदशोपमः	६।४॥
स्वापनम्	२५।१८॥५१।६॥	दिवाकरनिभाकाराम्	११।१२।
हयशिरः	२५।१२॥	दीप्तवह्निसमप्रभम्	११।१३॥
हृष्टः	२६।५॥	नागैर्भोगवतीमिब	५।१८॥

(सूची—१०)

॥ वृक्षलतादिनाम ॥

अतिन्दुः	३२।१४॥	क्लिन्नमिबानलम्	४४।२४॥
अश्वकर्णः	२२।१४॥	पुरे महन्द्रस्य यथा	
कुटजः	३२।१४॥	वृहस्पतिः	८।७६॥
तालः	१।६४॥	पौलोमीब पुरन्दरम्	१२।५ ॥
तिन्दुकः	२२।१४॥	प्रजापतिसुतोपमाः	१९।१६॥
धवः	२२।१४॥	प्राप्य विन्तमिवाचनः	११।२६॥
पाटलः	२२।१४॥	बभूव परमप्रीतो वैदैरिब	
		पितामहः	१७।१५॥
		प्रद्याणमिब वासवः	१६।१४॥

(सूची—११)

॥ अलङ्काराः ॥

अध्विनामिब रूपेण	४४।४॥	भूषयन्तमिमं देशं चन्द्र-	
आदिराजो मनुरिब	६।४॥	सूर्याविवाञ्चरम्	४४।५॥
अष्टापदपदालेकै रन्ध्यामा-		मध्येऽम्भसो दुराचर्चा वीतां	
		सूर्यप्रभाभिब	४५।१५॥

मयो मायाभिवापुरीम् ११।३३॥	विष्णुतुल्यपदाक्रमम् १४।६॥
महेन्द्रमिब दुर्धर्ष कालान्तक-	विष्णुमिन्द्राद्या बधा ६३।५॥
यमोपमम् ७०।१९॥	शक्रवैभवजोपमः ६।३॥
युक्तःत्रिया विष्णुरिवा-	शक्रणेवामरावती ६।५॥
पराजितः ७२।१६॥	त्रिया शक्र इवामराधिपः १४।३३॥
रमयामास भर्तारं विष्णुं	सखनानां बधा मनः २।६॥
श्रीरिब रूपिणी ७२।१३॥	सधूममिब कालार्ति यम-
रात्रा देवसमद्युतिः ११।३२॥	दण्डमिवापरम् ५०।२९॥
रुद्रं साक्षादिवागतम् ७०।२०॥	समुद्र इव गाम्भीर्यं १।२०॥
तूनपक्ष इव द्विजः ५०।१०॥	समुद्रमिब रम्यार्थं
बध्नस्येव विमुक्तस्य शक्रेण	लोकेष्वतिरसायनम् २।४६॥
नगमूर्धनि ६३।११॥	सीता श्रीरिब रूपिणो १४।२२॥
वरायुधधरं वीरं साक्षाद्विष्णु-	सीतां सुरसुवोपमाम् १।५२॥
मिवापरम् ७१।५०॥	सूक्ष्मेणाञ्जनचूर्णेन नभः
बिमानचयसंबाधामिन्द्र-	कृत्स्नमिवाञ्जितम् ३१।१६॥
स्येवामरावतीम् ५।१३॥	स्थाणुवत् स्थिरः ५९।३०॥
बिमानमिब पुष्पकम् ६६।३॥	स्वयम्भूरिब धर्मतः १४।१६॥
विबिधैश्चाप्यलङ्कारैर्भूषिता	स्वयम्भूरिब भूतानां बभूव
श्रीरिवापरा १२।४॥	गुणवत्तरः १४।२१॥



दयानन्द महाविद्यालय संस्कृत-ग्रन्थमाला

प्रकाशित ग्रन्थ *

१—अथर्ववेदीया पञ्चपटलिका	१॥)
२—ऋग्वेद पर व्याख्यान	११)
३—जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण	२॥)
४—दन्तयोष्टविधि	॥)
५—अथर्ववेदीया माण्डूकी शिक्षा	१)
६—अथर्ववेदीया बृहत्सर्वानुक्रमणिका	४)
७—रामायण, अयोध्या-काण्ड	७॥)
८—वैदिक कोष प्रथम भाग	१२)
९—काठकगृह्यसूत्र with extracts from three com. ed. by Dr. W. Caland.	
१०—वैदिक वाङ्मय का इतिहास भाग द्वितीय	५)
११—चारायणीय मन्त्रार्थाध्याय	१)
१२—रामायण, बालकाण्ड	५)
१३—वैदिक वाङ्मय का इतिहास भाग १ खण्ड २	५)

अन्य ग्रन्थ

१—संस्कृत साहित्य का इतिहास	३)
२—विशाल भारत	३)

* यन्त्रस्थ *

१—ऋग्वेदभाष्य-उद्गीथाचार्यकृत	
२—रामायण, आरण्यकाण्ड	

SUPDT. RESEARCH DEPARTMENT,
D. A. V. College Lahore